हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला ८

सचित्र-

पुष्टिमार्गीयस्तोत्ररत्नाकरः

(संशोधित एवं परिवर्द्धित)

श्रीहरिशङ्करशास्त्रिणा

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी

सङ्गणकसंस्करणं दासाभासेन हरिपार्षददासेन कृतम्

हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला

८

सचित्र-

पुष्टिमार्गीयस्तोत्ररत्नाकर:

पुरुषोत्तमनामसहस्त्रषोडशग्रन्थसर्वोत्तमस्तोत्र-प्रभृति (१२४) स्तोत्रग्रन्थात्मक:।

श्रीहरिशङ्करशास्त्रिणा

वेदान्तविशारदेन सुसंस्कृत्य संशोधित:

(महाप्रभुश्रीमद्वल्लभाचार्यचरणविरचित 'श्रीसुदर्शनकवच'
'श्री वल्लभनामादिस्तोत्र' एवं मनप्रबोधपाठआदि
सहित परिवर्धितं संस्करणम्)

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

वाराणसी

प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी
मुद्रक : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी
संस्करण : चतुर्थ

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस
के० ३७/९९ गोपाल मन्दिर लेन
गोलघर (मैदागिन) के पास
(गोपाल मंदिर के उत्तरी फाटक पर)
पो० बा० १००८, वाराणसी-२२१००१ (भारत)
फोन : आफिस : (०५४२) २३३३४५८
आवास : (०५४२) २३३४०३२, २३३५०२०
फैक्स : (०५४२) २३३३४५८
e-mail : cssoffice@satyam.net.in
web-site : www.chowkhambaseries.com

अपरं च प्राप्तिस्थानम्
चौखम्बा कृष्णदास अकादमी
पो० बा० १११८
के० ३७/११८, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी - २२१००१ (भारत)

HARIDAS SANSKRIT SERIES
8

PUṢṬIMĀRGĪYASTOTRARATNĀKARA

A COLLECTION OF PURUSHOTTAMSAHASR-
ANAMASARVOTTAMA (124) STOTRAS

Edited by
PT. HARIŚAṆKARA ŚASTRI
Vedanta Visharada

CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE
VARANASI - 221001

Chowkhamba Sanskrit Series Office
K. 37/99, Gopal Mandir Lane,
Post Box 1008,
Varanasi - 221001 (india)
Phone : Office : (0542) 2333458
Res. : (0542) 2334032, 2335020
Fax : (0542) 2333458
e-mail : cssoffice@satyam.net.in
web-site : www.chowkhambaseries.com

Also can be had of
CHOWKHAMBA KRISHNADAS ACADEMY
Publishers and Oriental Book-Sellers
Post Box. 1118
K. 37/99, Gopal Mandir Lane,
Varanasi - 221001
Phone : (0542) 2335020

श्रीनाथजी

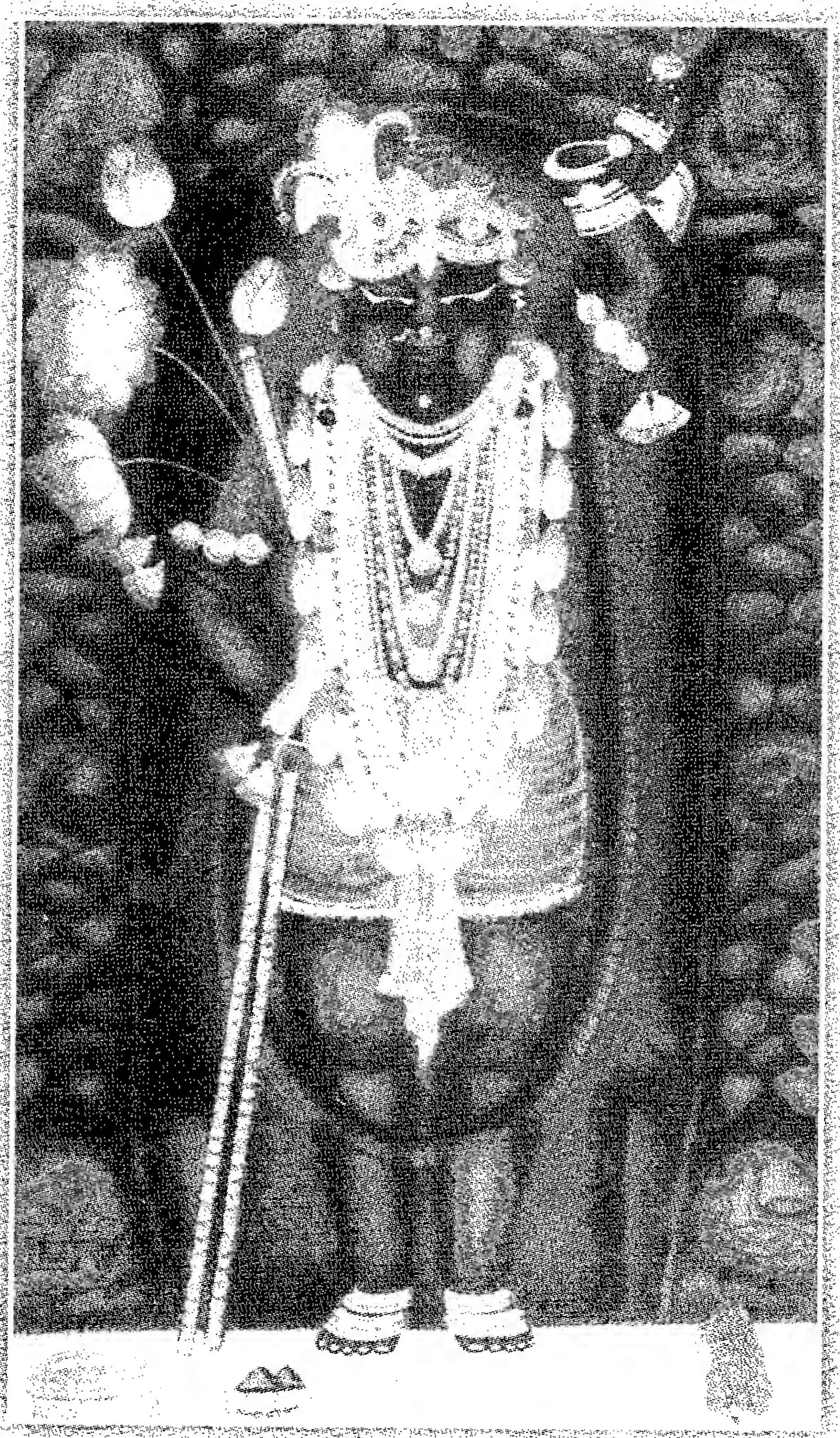

● श्री गोकुलेशो विजयते ●

श्री वल्लभ-स्तुति

जय श्री वल्लभ देव धनी।
रास विलास करत गोवर्धन मूरति ललित बनी।।
पुरुषोत्तम मुखकमल विकसित रसिकनि मध्यबनी।
वरन निवेदन दैवी जीवनी को कृपा करोजु धनी।।
श्रीभागवत सुधानिधि मथिके बानी निगम बनी।
लीला सृष्टि सिन्धु सब पूरित दैवी निज अपनी।।
श्रीविट्ठल प्रगटित परमानन्द भजन प्रचार बनी।
श्रीजमुना पुलिन केलि वृन्दावन गिरधर गुनित गुनी।।
'धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे'।।(गीता)

परिस्थितिवश भगवान् को अनेक रूपों में प्रकट होना पड़ा है। भारत में जब धर्मविप्लव उपस्थित हो गया था, यवनों के दुर्दान्त अत्याचारों से सर्वत्र त्राहि-त्राहि मच गयी थी, उसी समय अनन्त श्रीविभूषित अखण्ड भूमण्डलाचार्य चक्रचूडामणि महाप्रभु श्रीमद्वल्लभाचार्य चरणों ने भूतल पर सन्मनुष्याकृति स्वरूप में प्रकट होकर शुद्धाद्वैत निर्गुण पुष्टिमार्ग के माध्यम से भेदभावरहित अपने सम्प्रदाय के वैष्णवधर्म का सर्जन किया। शुद्ध सनातन वैदिक धर्म के संरक्षण एवं प्रचारार्थ महाप्रभु श्रीमद्वल्लभाचार्य जी ने भारत वर्ष की परिक्रमा करते हुये ८४ पीठों की स्थापना की। महाप्रभु के स्वरूप, चरित्र एवं उपदेशामृत के विषय में हम ज्यों-ज्यों विचार करते हैं, त्यों-त्यों हमें सर्वत्र परिपूर्णता एवं सर्वोत्तमता के दर्शन होते

हैं। आर्य संस्कृति, आर्य सदाचार एवं आर्य जाति के गौरव तथा उत्कर्ष एवं संरक्षण के लिये आपने अपने प्रमेय बल से जो कार्य किये हैं वे इतिहास में अद्वितीय हैं। यवनों के अत्याचारों से सन्तप्त धर्मिष्ठ जनों की जिस पद्धति से आपने सान्त्वना के साथ संरक्षण योजनाएँ चालू की वह भारतीय इतिहास में अमिट रहेगीं। उस समय सन्त कबीर भी आपके प्रवचन से प्रभावित हो उठे थे। महात्माओं को कौन कहे अगणित यवनों ने भी पैशाचिक वृत्ति से विमुख होकर आप श्री के शिष्यत्व को अपना लिया था। उस समय समस्त भारत में पुष्टिमार्गीय वैष्णवजन उत्त्वोलित हो उठा था, और मन्दिरों में निर्बाध रूप से भजन-कीर्तन होने लगे थे।

स्वतन्त्र भारत के 'धर्मनिरपेक्ष' राष्ट्रनाद से आज पुनः धर्मसापेक्ष हिन्दू जनता त्रस्त हो उठी है। धर्माधर्म का संघर्ष दिनप्रति जोर पकड़ता जा रहा है। धर्मप्राण हिन्दू समाज ग्राम, नगर, वन, उपवन सर्वत्र आर्तनाद से भगवत् कीर्तन-भजन कर रहा है। उसे विश्वास है कि इस आर्त्तनाद से भगवद्-वाक्य साकार हो उठेगा.........
"...धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे"

प्रस्तुत 'स्तोत्ररत्नाकर' पुष्टिमार्गीय वैष्णवों के नित्य पाठ करने की वस्तु है। आचार्य श्री के चरणों में भक्ति रखने वाले जनसाधारण के हित के लिये इस चतुर्थ संस्करण के अन्त में नित्य गाने योग्य लोकभाषा के भी अनेक पद दिये गये हैं। वे पद जिन भगवदियों की कीर्ति से लिये गये हैं, प्रकाशक नतमस्तक होकर उनका कृतज्ञ है।

श्रीवल्लभ जयन्ती
वि० सं० २०२८

विनीत
प्रकाशक

तृतीय संस्करण

आज हमें अपने पुष्टिमार्गीय भक्त वैष्णव जनों को सूचित करते हुए परम हर्ष हो रहा है कि इस तृतीय संस्करण में महाप्रभु श्रीमद्वल्लभाचार्यचरण-विरचित 'श्रीसुदर्शन कवच', गोस्वामी श्रीगिरधरजी कृत 'श्रीमुकुन्दरायाष्टक' तथा 'श्रीगोपाललालाष्टक' से विभूषित है एवं गोस्वामी श्रीरमणलालजी महाराज विरचित 'श्रीवल्लभनामस्तोत्र' तथा 'श्रीवल्लभनामावली जिसमें 'अविर्भाव-प्रकरण' और 'विजय-प्रकरण' सम्मिलित हैं, दोनों दुर्लभ पुस्तकें यथास्थान परिवर्धित की गयी हैं। तथा पृथक् -पृथक् भी छापी गई हैं आशा है पुष्टिमार्गीय वैष्णववृन्द इसे पढ़कर अत्यानन्दित होंगे।

श्री वल्लभ-जयन्ती
वि. सं. २०३९

विनयावनत
प्रकाशक

अनुक्रमणिका

	स्तोत्राणि		रचयितार:
१.	मङ्गलाचरणम्	:	संगृहीत:
२.	पुरूषोत्तमसहस्रनामस्तोत्रम्	:	श्री मन्महाप्रभु:
३.	यमुनाष्टकम्	:	,,
४.	बालबोध:	:	,,
५.	सिद्धान्तमुक्तावली	:	,,
६.	पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेद:	:	,,
७.	सिद्धान्तरहस्यम्	:	,,
८.	नवरत्नस्तोत्रम्	:	,,
९.	अन्त:करणप्रबोध:	:	,,
१०.	विवेकधैर्याश्रय:	:	,,
११.	कृष्णाश्रय:	:	,,
१२.	चतु:श्लोकी	:	,,
१३.	भक्तिवर्धिनी	:	,,
१४.	जलभेद:	:	,,
१५.	पञ्चपद्यानि	:	,,
१६.	संन्यासनिर्णय:	:	,,
१७.	निरोधलक्षणम्	:	,,
१८.	सेवाफलम्	:	,,
१९.	परिवृढाष्टकम्	:	,,
२०.	श्रीमधुराष्टकम्	:	श्रीमन्महाप्रभु:
२१.	शिक्षाश्लोका:	:	,,
२२.	मंगलाचरणम्	:	श्रीविट्ठलेश:

२३.	श्रीसर्वोत्तमस्तोत्रम्	: अग्निकुमारप्रोक्तः
२४.	श्रीवल्लभाष्टकम्	: श्रीविट्ठलेशः
२५.	स्फुरत्कृष्णप्रेमामृतस्तोत्रम्	: ,,
२६.	यमुनाष्टपदी	: ,,
२७.	भुजङ्गप्रयाताष्टकम्	: ,,
२८.	राधाप्रार्थनाचतुःश्लोकी	: ,,
२९.	श्रीकुलाष्टकम्	: ,,
३०.	श्रीगोकुलेशाष्टकम्	: श्रीरघुनाथजी
३१.	नामरत्नाख्यस्तोत्रम्	: ,,
३२.	नवनीतप्रियाष्टकम्	: श्रीहरिदासजी
३३.	जन्मवैफल्यनिरूपणाष्टकम्	: ,,
३४.	कामाख्यदोषविवरणम्	: ,,
३५.	वल्लभशरणाष्टकम्	: श्रीहरिरायजी
३६.	वल्लभपञ्चाक्षरस्तोत्रम्	: श्रीहरिदासजी
३७.	वल्लभभावाष्टकम्	: ,,
३८.	श्रीकृष्णशरणाष्टकम्	: ,,
३९.	दैन्याष्टकम्	: ,,
४०.	पुष्टिमार्गलक्षणानि	: ,,
४१.	चतुःश्लोकी	: ,,
४२.	स्वप्रभुस्वरूपनिरूपणाष्टकम्	: ,,
४३.	श्रीकृष्णप्रेमामृतम्	: श्रीमन्महाप्रभुः
४४.	श्रुतिगीता	: ,,
४५.	श्रीस्वामिन्यष्टकम्	: श्रीविट्ठलेशः
४६.	दानलीलाष्टकम्	: ,,
४७.	द्वितीया चतुःश्लोकी	: ,,

४८.	वृत्रचतु:श्लोकी	:	संगृहीत: (श्री. भा.)
४९.	वृत्तचतु:श्लोकीकारिका:	:	श्रीमन्ममहाप्रभु:
५०.	विठ्ठलेशस्तव:	:	श्रीरघुनाथजी
५१.	वह्निसूनुस्तव:	:	,,
५२.	श्रीकृष्णचन्द्राष्टकम्	:	,,
५३.	श्रीगोपालस्तव:	:	,,
५४.	श्रीयमुनाष्टकम्	:	,,
५५.	श्रीविट्ठलस्तोत्रम्	:	,,
५६.	श्रीकृष्णशरणाष्टकम्	:	,,
५७.	श्रीवल्लभचरणविज्ञप्ति:	:	श्रीहरिदासजी
५८.	स्वस्वामियुगलाष्टकम्	:	,,
५९.	श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकम्	:	,,
६०.	श्रीस्मरणाष्टकम्	:	,,
६१.	स्वप्रभुविज्ञप्ति:	:	,,
६२.	श्रीपञ्चाक्षरमन्त्रगर्भस्तोत्रम्	:	,,
६३.	श्रीमद्राधाष्टकम्	:	,,
६४.	श्रीयमुनाविज्ञप्ति:	:	,,
६५.	गर्वापहाराष्टकम्	:	,,
६६.	श्रीवैश्वानराष्टकम्	:	श्रीहरिरायजी
६७.	श्रीबालकृष्णाष्टकम्	:	श्रीजीवनलालजी
६८.	श्रीबालकृष्णप्रार्थनाष्टकम्	:	,,
६९.	गङ्गाद्विपदी	:	,,
७०.	यमुनाचतुष्पदी	:	,,
७१.	नैवेद्यसमर्पणप्रार्थना	:	,,
७२.	अष्टपदी	:	श्रीदेवकीनन्दनजी

७५.	नन्दकुमाराष्टकम्	:	श्रीमन्महाप्रभुः
७६.	श्रीगिरिराजधार्यष्टकम्	:	,,
७८.	श्रीकृष्णाष्टकम्	:	,,
७९.	श्रीगुसाईजीकृतदण्डकः	:	श्रीगुसाईजी
८०.	श्रीगोपालस्तवः	:	श्रीरघुनाथजी
८१.	सन्नामभूषणस्तोत्रम्	:	सगृहीतः
८२.	बालमुकुन्दस्तोत्रम्	:	,,
८३.	आरार्तिका	:	श्रीविट्ठलेशः
८४.	श्रीमदाचार्यचरणानां सकलावतारसाम्यरूपम्	:	श्रीहरिदासतजी
८५.	मङ्गलाचरणम्	:	संगृहीतः
८६.	श्रीवल्लभस्तोत्रम्	:	श्रीकल्याणभट्टः
८७.	श्रीगोकुलेशाष्टकम्	:	श्रीकृष्णरायजी
८८.	श्रीरुचिराष्टकम्	:	श्रीकृष्णरायजी
८९.	श्रीगोकुलेशशयनाष्टकम्	:	,,
९०.	श्रीगोकुलेश-द्वात्रिंशन्नामाष्टकं	:	,,
९१.	श्रीगोकुलेशाष्टकम्	:	,,
९२.	श्रीबाललीलाष्टकम्	:	संगृहीतः
९३.	श्रीपादुकाष्टकम्	:	श्रीमदुद्धवजी
९४.	श्रीगोकुलेशोत्सववर्णनम्	:	श्रीकृष्णरायजी
९५.	श्रीगोकुलेशाष्टकम्	:	श्रीहरिरायजी
९६.	श्रीगोकुलेशाष्टोत्तरशतनाम	:	श्रीविष्णुदासजी
९७.	श्रीगोकुलेशस्तवः	:	श्रीकृष्णरायजी
९८.	श्रीगोकुलनाथाष्टकम्	:	संगृहीतः
९९.	श्रीवल्लभाष्टकम्	:	श्रीगोकुलदासजी
१००.	श्रीरूचिराष्टकम्	:	श्रीहरिदासनाथभाई

१०१.	नामरत्नमालावलिस्तोत्रम्	: श्रीकृष्णरायजी
१०२.	८४वैष्णवनामावलीस्तोत्रम्	: श्रीगोकुलनाथजी
१०३.	श्रीगोकुलेशनामावलि:	: श्रीहरिदासजी
१०४.	विज्ञप्तिश्लोका:	: श्री कल्याणभट्टजी
१०५.	श्रीतात्पर्यबोध:	: श्री माहावदास जी
१०६.	श्री वल्लभनामस्तोत्रम्	: गो० श्रीरमणलालजी
१०७.	श्री वल्लभनामावली	: ,,
१०८.	श्रीसुदर्शनकवचम्	: श्रीमद्वल्लभाचार्यचरण
१०९.	श्रीमुकुन्दरायाष्टकम्	: श्रीगिरिधरजी
११०.	श्रीगोपाललालाष्टकम्	: ,,
१११.	श्रीवल्लभगीतम्	: श्रीमाहवदासजी
११२.	श्रीवल्लभाष्टकम्	: श्रीतारासेवकजी
११३.	मधुराष्टकम्	: श्रीरूपावाई
११४.	श्रीजी नू निर्मल रस	: प्रकीर्ण:
११५.	भक्ति का डंका भारत में	: ,,
११६.	भक्ति की दुन्दुभि	: ,,
११७.	श्रीयमुनाजी को स्वरूप	: ,,
११८.	श्रीवल्लभकुल	: ,,
११९.	श्रीयमुनाजी के पद	: ,,
१२०.	आश्रम के पद	: ,,
१२१.	श्रीकृष्ण: शरणं मम	: ,,
१२२.	रंगीला श्रीनाथजी	: ,,
१२३.	मन प्रबोध नूं पाठ	: श्री गोपालदास भाई
१२४.	ज्येष्ठाभिषेक	: प्रकीर्ण:

श्री गोकुलेशपुर (वल्लभघाट) श्री गोकुल

अखण्डभूमण्डलाचार्य श्रीमद्वल्लभाचार्य महाप्रभुः

श्रीकृष्णाय नमः

श्रीमदाचार्यचरणकमलेभ्यो नमः

पुष्टिमार्गीयस्तोत्ररत्नाकरः

अथ मंगलाचरणम्

(१)

श्रीगोवर्धननाथपादयुगलं हैयङ्गवीनप्रियं
नित्यं श्रीमथुराधिपं सुखकरं श्री विट्ठलेशं मुदा।
श्रीमद्द्वारवतीशगोकुलपती श्रीगोकुलेन्दुं विभुं
श्रीमन्मन्मथमोहनं नटवरं श्रीबालकृष्णं भजे।।

(२)

श्री मद्वल्लभविट्ठलौ गिरिधरं गोविन्दरायाभिधं
श्रीमद्बालककृष्णगोकुलपती नाथं रघूणां तथा।
एवं श्रीयदुनायकं किल घनश्यामं च तद्वंशजान्
कालिन्दीं स्वगुरूं गिरिं गुरुविभूं स्वीयप्रभूंश्च स्मरेत्।।

(३)

चिन्तासन्तानहन्तारो यत्पादाम्बुजरेणवः।
स्वीयानां तान्निजाचार्यान् प्रणमामि मुहुर्मुहुः।।

(४)

यदनुग्रहतो जन्तुः सर्वदुःखातिगो भवेत्।
तमहं सर्वदा वन्दे श्रीमद्वल्लभनन्दनम्।।

(५)

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

(६)

नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धिशायिनम्।
लक्ष्मीसहस्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम्।।

(७)

चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च त्रिभिस्तथा।
षड्भिर्विराजते योऽसौ पञ्चधा हृदये मम।।

अथपुरुषोत्तमसहस्त्रनामस्तोत्रम्

पुराणपुरुषो विष्णुः पुरुषोत्तम उच्यते।
नाम्नां सहस्त्रं वक्ष्यामि तस्य भागवतोद्धृतम्।।१।।

(एतन्माहात्म्यम्)

यस्य प्रसादाद्वागीशाः प्रजेशा विभवोन्नताः।
क्षुद्रा अपि भवंत्याशु श्रीकृष्णं तं नतोऽस्म्यहम्।।२।।

अनन्ता एव कृष्णस्य लीला नामप्रवर्तिकाः।
उक्ता भागवते गूढाः प्रकटा इति कुत्रचित्।।३।।

अतस्तानि प्रवक्ष्यामि नामनि मुरवैरिणः।
सहस्त्रं यैस्तु पठितैः पठितं स्याच्छुकामृतम्।।४।।

(ऋष्यादयः)

कृष्णनामसहस्त्रस्य ऋषिरग्निर्निरूपितः।
गायत्री च तथा छन्दो देवता पुरुषोत्तमः।।५।।

विनियोगः समस्तेषु पुरुषार्थेषु वै मतः।
बीजं भक्तप्रियः शक्तिः सत्यवागुच्यते हरिः।।६।।

भक्तोद्धरणयत्नस्तु मन्त्रोऽत्र परमो मतः।
अवतारितभक्तांशः कीलकं परिकीर्तितम्।।७।।

अस्त्रं सर्वसमर्थश्च गोविन्दः कवचं मतम्।
पुरुषो ध्यानमत्रोक्तं सिद्धिः शरणसंस्मृतिः।।८।।

(श्रीसहस्रनामस्तोत्रम्)

(तत्रादौ प्रथमस्कन्धीयनामानि)

श्रीकृष्णः सच्चिदानन्दो नित्यलीलाविनोदकृत्।
सर्वागमविनोदी च लक्ष्मीशः पुरुषोत्तमः।।९।।

आदिकालः सर्वकालः कालत्मा मायया वृतः।
भक्तोद्धारप्रयत्नात्मा जगत्कर्ता जगन्मयः।।१०।।

नामलीलापरो विष्णुर्व्यासात्मा शुकमोक्षदः।
व्यापिवैकुण्ठदाता च श्रीमद्भगवतागमः।।११।।

शुकवागमृताब्धीन्दुः शौनकाद्यखिलेष्टदः।
भक्तिप्रवर्तकस्त्राता व्यासचिन्ताविनाशकः।।१२।।

सर्वसिद्धान्तवागात्मा नारदाद्यखिलेष्टदः।
अन्तरात्मा ध्यानगम्यो भक्तिरत्नप्रदायकः।।१३।।

मुक्तोपसृप्यः पूर्णात्मा मुक्तानां रतिवर्द्धनः।
भक्तकार्यैकनिरतो द्रौण्यस्त्रविनिवारकः।।१४।।

भक्तस्मयप्रणेता च भक्तवाक्परिपालकः।
ब्रह्मण्यदेवो धर्मात्मा भक्तानां च परीक्षकः।।१५।।

आसन्नहितकर्ता च मायाहितकरः प्रभुः।
उत्तराप्राणदाता च ब्रह्मास्त्रविनिवारकः।।१६।।

सर्वतः पाण्डवपतिः परीक्षिच्छुद्धिकारणम्।
गूढात्मा सर्ववेदेषु भक्तैकहृदयङ्गमः।।१७।।
कुन्तीस्तुत्यः प्रसन्नात्म परमाद्भुतकार्यकृत्।
भीषममुक्तिप्रदः स्वामी भक्तमोहनिवारकः।।१८।।
सर्वावस्थासु संसेव्यः समः सुखहितप्रदः।
कृतकृत्यः सर्वसाक्षी भक्तस्त्रीरतिवर्द्धनः।।१९।।
सर्वसौभाग्यनिलयः परमाश्चर्यरूपधृक्।
अनन्यपुरुषस्वामी द्वारकाभाग्यभाजनम्।।२०।।
बीजसंस्कारकर्ता च परीक्षिज्ज्ञानपोषकः।
सर्वत्र पूर्णगुणकः सर्वभूषणभूषितः।।२१।।
सर्वलक्षणदाता च धृतराष्ट्रविमुक्तिदः।
सन्मार्गरक्षको नित्यं विदुरप्रीतिपूरकः।।२२।।
लीलाव्यामोहकर्ता च कालधर्म प्रवर्तकः।
पांडवानां मोक्षदाता परीक्षिद्भाग्यवर्धनः।।२३।।
कलिनिग्रहकर्ता च धर्मादीनां च पोषकः।
सत्सङ्गज्ञानहेतुश्च श्रीभागवतकारणम्।।२४।।
प्राकृतादृष्टमार्गश्च, श्रोतव्यः सकलागमैः।

(अतः परं द्वितीयस्कन्धीयनामानि)

कीर्तितव्यः शुद्धभावैः स्मर्तव्यश्चात्मवित्तमैः।।२५।।

पु.मा.-२

अनेकमार्गकर्ता च नानाविधगतिप्रदः।
पुरुषः सकलाधरः सत्त्वैकनिलयात्मभूः।।२६।।

सर्वध्येयो योगगम्यो भक्त्या ग्राह्यः सुरप्रियः।
जन्मादिदसार्थककृतिर्लीलाकर्ता पतिः सताम्।।२७।।

आदिकर्ता सत्त्वकर्ता सर्वकर्ता विशारदः।
नानावतारकर्ता च ब्रह्माविर्भावकारणम्।।२८।।

दशलीलाविनोदी च नानासृष्टिप्रवर्तकः।
अनेककल्पकर्ता च सर्वदोषविवर्जितः।।२९।।

(अतः परं तृतीयस्कन्धीयनामानि)

वैराग्यहेतुस्तीर्थात्मा सर्वतीर्थफलप्रदः।
तीर्थशुद्धैकनिलयः स्वमार्गपरिपोषकः।।३०।।

तीर्थकीर्तिर्भक्तगम्यो भक्तानुशयकार्यकृत्।
भक्ततुल्यः सर्वतुल्यः स्वेच्छासर्वप्रवर्तकः।।३१।।

गुणातीतोऽनवद्यात्मा सर्वलीलाप्रवर्तकः।
साक्षात्सर्वजगत्कर्ता महदादिप्रवर्तकः।।३२।।

मायाप्रवर्तकः साक्षी मायारतिविवर्द्धनः।
आकाशत्मा चर्तुमूर्तिश्चतुर्द्धाभूतभावनः।।३३।।

रजःप्रवर्तको ब्रह्मा मरीच्यादिपितामहः।
वेदकर्ता यज्ञकर्ता सर्वकर्ताऽमितात्मकः।।३४।।

अनेकसृष्टिकर्ता च दशधा सृष्टिकारकः।
यज्ञाङ्गो यज्ञावाराहो भूधरो भूमिपालकः।।३५।।

सेतुर्विधरणो जैत्रो हिरण्याक्षान्तकः सुरः।
दितिकश्यपकामैकहेतुसृष्टिप्रवर्तकः ।।३६।।

देवाभयप्रदाता च वैकुण्ठाधिपतिर्महान्।
सर्वगर्वप्रहारी च सनकाद्यखिलार्थदः।।३७।।

सर्वाश्वासनकर्ता च भक्ततुल्याहवप्रदः।
काललक्षणहेतुश्च सर्वार्थज्ञापकः परः।।३८।।

भक्तोन्नतिकरः सर्वप्रकारसुखदायकः।
नानायुद्धप्रहरणो ब्रह्मशापविमोचकः।।३९।।

पुष्टिसर्गप्रणेता च गुणसृष्टिप्रवर्तकः।
कर्दमेष्टप्रदाता च देवहूत्यखिलार्थदः।।४०।।

शुक्लो नारायणः सत्यकालधर्मप्रवर्तकः।
ज्ञानावतारः शान्तात्मा कपिलः कालनाशकः।।४१।।

त्रिगुणाधिपतिः सांख्यशास्त्रकर्ता विशारदः।
सर्गदूषणहारी च पुष्टिमोक्षप्रवर्तकः।।४२।।

लौकिकानन्ददाता च ब्रह्मानन्दप्रवर्तकः।
भक्तिसिद्धान्तवक्ता च सगुणज्ञानदीपकः।।४३।।

आत्मप्रदः पूर्णकामो योगात्मा योगभावितः।
जीवन्मुक्तिप्रदः श्रीमाननन्यभक्तिप्रवर्तकः।।४४।।

कालसामर्थ्यदाता च कालदोषनिवारकः।
गर्भोत्तमज्ञानदाता कर्ममार्गनियामकः।।४५।।

सर्वमार्गनिराकर्ता भक्तिमार्गैकपोषकः।
सिद्धिहेतुः सर्वहेतुः सर्वाश्चर्यैककारणम्।।४६।।

चेतनाचेतनपतिः समुद्रपरिपूजितः।
सांख्याचार्यस्तुतः सिद्धपूजितः सर्वपूजितः।।४७।।

(अतः पर चतुर्थस्कन्धीयनामानि)

विसर्गकर्ता सर्वेशः कोटिसूर्यसमप्रभः।
अनन्तगुणगम्भीरो महापुरुषपूजितः।।४८।।

अनन्तसुखदाता च ब्रह्मकोटिप्रजापतिः।
सुधाकोटिस्वास्थ्यहेतुः कामधुक्कोटिकामदः।।४९।।

समुद्रकोटिगम्भीरस्तीर्थकोटिसमाह्वयः।
सुमेरुकोटिनिष्कम्पः कोटिब्रह्माण्डविग्रहः।।५०।।

कोट्यश्वमेधपापघ्नो वायुकोटिमहाबलः।
कोटीन्दुजगदानन्दी शिवकोटिप्रसादकृत्।।५१।।

सर्वसद्गुणमाहात्म्यः सर्वसद्गुणभाजनम्।
मन्वादिप्रेरको धर्मो यज्ञनारायणः परः।।५२।।

आकूतिसूनुर्देवेन्द्रो रुचिजन्माभयप्रदः।
दक्षिणापतिरोजस्वी क्रियाशक्तिः परायणः।।५३।।

दत्तत्रेयो योगपतिर्योगमार्ग प्रवर्तकः।
अनसूयागर्भरत्नमृषिवंशविवर्धनः ।।५४।।

गुणत्रयविभागज्ञश्चतुर्वर्ग विशारदः।
नारायणो धर्मसूनुर्मूर्तिपुण्ययशस्करः।।५५।।

सहस्रकवचच्छेदी तपःसारो नरप्रियः।
विश्वानन्दप्रदः कर्मसाक्षी भारतपूजितः।।५६।।

अनन्ताद्भुतमाहात्म्यो बदरीस्थानभूषणम्।
जितकामो जितक्रोधो जितसङ्गो जितेन्द्रियः।।५७।।

उर्वशीप्रभवः स्वर्गसुखदायी स्थितिप्रदः।
अमानी मानदो गोप्ता भगवच्छास्त्रबोधकः।।५८।।

ब्रह्मादिवन्द्यो हंसः श्रीर्मायावैभवकारणम्।
विविधानन्तसर्गात्मा विश्वपूरणतत्परः।।५९।।

यज्ञजीवनहेतुश्च यज्ञस्वामीष्टबोधकः।
नानासिद्धान्तगम्यश्च सप्ततन्तुश्च षड्गुणः।।६०।।

प्रतिसर्गजगत्कर्ता नानालीलाविशारदः।
ध्रुवप्रियो ध्रुवस्वामी चिन्तिताधिकदायकः।।६१।।

दुर्लभानन्तफलदो दयानिधिरमित्रहा।
अङ्गस्वामी कृपासारो वैन्यो भूमिनियामकः।।६२।।

भूमिदोग्धा प्रजाप्राणपालनैकपरायणः।
यशोदाता ज्ञानदाता सर्वधर्मप्रदर्शकः।।६३।।

पुरञ्जनो जगन्मित्रं विसर्गान्तप्रदर्शकः।
प्रचेतसां पतिश्चित्रभक्तिहेतुर्जनार्दनः।।६४।।

स्मृतिहेतुर्ब्रह्मभावसायुज्यादिप्रदः शुभः।
(अतः परं पञ्चमस्कन्धीयनामानि)
विजयी स्थितिलीलाब्धिरच्युतो विजयप्रदः।।६५।।

स्वसामर्थ्यप्रदो भक्तकीर्तिहेतुरधोक्षजः।
पियव्रतप्रियस्वामी स्वेच्छावादविशारदः।।६६।।

सङ्ख्यगम्यः स्वप्रकाशः सर्वसङ्गविवर्जितः।
इच्छायां च समर्यादस्त्यागमात्रोपलम्भनः।।६७।।

अचिन्त्यकार्यकर्ता च तर्कागोचरकार्यकृत्।
शृङ्गाररसमर्यादा आग्नीध्ररसभाजनम्।।६८।।

नाभीष्टपूरकः कर्ममर्यादादर्शनोत्सुकः।
सर्वरूपोऽद्भुततमो मर्यादापुरुषोत्तमः।।६९।।

सर्वरूपेषु सत्यात्मा कालसाक्षी शशिप्रभः।
मेरुद्देवीव्रतफलमृषभो भगलक्षणः।।७०।।

जगत्सन्तर्पको मेघरूपी देवेन्द्रदर्पहा।
जयन्तिपतिरत्यन्तप्रमाणाशेषलौकिकः।।७१।।

शतधान्यस्तभूतात्मा शतानन्दो गुणप्रसूः।
वैष्णवोत्पादनपरः सर्वधर्मोपदेशकः।।७२।।

परमहंसक्रियागोप्ता योगचर्याप्रदर्शकः।
चतुर्थाश्रमनिर्णेता सदानन्दशरीरवान्।।७३।।

प्रदर्शितान्यधर्मश्च भरतस्वाम्यपारकृत्।
यथावत्कर्मकर्ता च सङ्गानिष्टप्रदर्शकः।।७४।।

आवश्यकपुनर्जन्मकर्ममार्गप्रदर्शकः।
यज्ञरूपमृगः शान्तः सहिष्णुः सत्पराक्रमः।।७५।।

रहूगणगतिज्ञश्च रहूगणविमोचकः।
भवाटवीतत्त्ववक्ता बहिर्मुखहिते रतः।।७६।।

गयस्वामी स्थानवंशकर्ता स्थानविभेदकृत्।
पुरुषावयवो भूमिविशेषविनिरूपकः।।७७।।

जम्बुद्वीपपतिर्मेरुनाभिपद्मरुहाश्रयः।
नानाविभूतिलीलाढ्यो गङ्गोत्पत्तिनिदानकृत्।।७८।।

गङ्गामाहात्म्यहेतुश्च गङ्गारूपोऽतिगूढकृत्।
वैकुण्ठदेहहेत्वम्बुजन्मकृत्सर्वपावनः।।७९।।

शिवस्वीमी शिवोपास्यो गूढः सङ्कर्षणात्मकः।
स्थानरक्षार्थमत्स्यादिरूपः सर्वैकपूजितः।।८०।।

उपास्यनानारूपात्मा ज्योतीरूपो गतिप्रदः।
सूर्यनारायणो वेदकान्तिरुज्ज्वलवेषधृक्।।८१।।

हंसोन्तरिक्षगमनः सर्वप्रसवकारणम्।
आनन्दकर्ता वसुदो बुधो वाक्पतिरुज्ज्वलः।।८२।।

कालात्मा कालकालश्च कालच्छेदकृदुत्तमः।
शिशुमारः सर्वमूर्तिराधिदैविकरूपधृक्॥८३॥

अनन्तसुखभोगाढ्यो विवरैश्वर्यभाजनम्।
सङ्कर्षणो दैत्यपतिः सर्वाधारो बृहद्वपुः॥८४॥

अनन्तनरकच्छेदी स्मृतिमात्रार्तिनाशनः।
सर्वानुग्रहकर्ता च, मर्यादाभिन्नशास्त्रकृत्॥८५॥

(अतः परं षष्ठस्कन्धीयनामानि)

कालान्तकभयच्छेदी नामसामर्थ्यरूपधृक्।
उद्धारानर्हगोप्त्रात्मा नामादिप्रेरकोत्तमः॥८६॥

अजामिलमहादुष्टमोचकोऽघविमोचकः।
धर्मवक्ताऽक्लिष्टवक्ता विष्णुधर्मस्वरूपधृक्॥८७॥

सन्मार्गप्रेरको धर्त्ता त्यागहेतुरधोक्षजः।
वैकुण्ठपुरनेता च दाससंवृद्धिकारकः॥८८॥

दक्षप्रसादकृद्धंसगुह्यस्तुतिविभावनः।
स्वाभिप्रायप्रवक्ता च मुक्तजीवप्रसूतिकृत्॥८९॥

नारदप्रेरणात्मा च हर्यश्वब्रह्मभावनः।
शबलाश्वहितो गूढवाक्यार्थज्ञापनक्षमः॥९०॥

गूढार्थज्ञापकः सर्वमोक्षानन्दप्रतिष्ठितः।
पुष्टिप्ररोहहेतुश्च दासैकज्ञातहृद्गतः॥९१॥

शान्तिकर्त्ता सुहितकृत्स्त्रीप्रसूः सर्वकामधुक्।
पुष्टिवंशप्रणेता च विश्वरूपेष्टदेवता।।९२।।

कवचात्मा पालनात्मा वर्मोपचितिकारणम्।
विश्वरूपशिरश्छेदी त्वाष्ट्रयज्ञविनाशकः।।९३।।

वृत्रस्वामी वृत्रगम्यो वृत्रव्रतपरायणः।
वृत्रकीर्तिर्वृत्रमोक्षो मघवत्प्राणरक्षकः।।९४।।

अश्वमेधहविर्भोक्ता देवेन्द्रामीवनाशकः।
संसारमोचकश्चित्रकेतुबोधनतत्परः ।।९५।।

मन्त्रसिद्धि सिद्धिहेतुः सुसिद्धिफलदायकः।
महादेवतिरस्कर्ता भक्त्यै पूर्वार्थनाशकः।।९६।।

देवब्राह्मणाविद्वेषवैमुख्यज्ञापकः शिवः।
आदित्यो दैत्यराजश्च मरुत्पतिरचिन्त्यकृत्।।९७।।

मरुतां भेदकस्त्राता व्रतात्मा पुंप्रसूतिकृत्।

(अतः परं सप्तमस्कन्धीयनामानि)

कर्मात्मा वासनात्मा च ऊतिलीलापरायणः।।९८।।

समदैत्यसुरस्वात्मा वैषम्यज्ञानसंशयः।
देहाद्युपाधिरहितः सर्वज्ञः सर्वहेतुवित्।।९९।।

ब्रह्मवाक्स्थापनपरः स्वजन्मावधिकार्यकृत्।
सदसद्वासनाहेतुस्त्रिसत्यो भक्तमोचकः।।१००।।

हिरण्यकशिपुद्वेषी प्रविष्टात्मातिभीषणः।
शान्तिज्ञानादिहेतुश्च प्रह्लादोत्पत्तिकारणम्॥१०१॥

दैत्यसिद्धान्तसद्वक्ता तपःसार उदारधीः।
दैत्यहेतुप्रकटनो भक्तिचिह्नप्रकाशकः॥१०२॥

सद्द्वेषहेतुः सद्द्वेषवासनात्मा निरन्तरः।
नैष्ठुर्यसीमा प्रह्लादवत्सलः सङ्गदोषहा॥१०३॥

महानुभावः साकारः सर्वाकारः प्रमाणभूः।
स्तम्भप्रसूतिर्नृहरिर्नृसिंहो भीमविक्रमः॥१०४॥

विकटास्यो ललज्जिह्वो नखशस्त्रो जवोत्कटः।
हिरण्यकशिपुच्छेदी क्रूरदैत्यनिवारकः॥१०५॥

सिंहासनस्थः क्रोधात्मा लक्ष्मीभयविवर्धनः।
ब्रह्माद्यत्यन्तभयभूरपूर्वाचिन्त्यरूपधृक् ॥१०६॥

भक्तैकशान्तहृदयो भक्तस्तुत्यः स्तुतिप्रियः।
भक्ताङ्गलेहनोद्धूतक्रोधपुञ्जप्रशान्तधीः॥१०७॥

स्मृतिमात्रभयत्राता ब्रह्मबुद्धिप्रदायकः।
गोरूपधार्यमृतपाः शिवकीर्तिविवर्धनः॥१०८॥

धर्मात्मा सर्वकर्मात्मा विशेषात्मऽऽश्रमप्रभुः।
संसारमग्नस्वोद्धर्ता सन्मार्गाखिलतत्त्ववाक्॥१०९॥

आचारात्मा सदाचारो, मन्वन्तरविभावनः।

(अत: परमष्टमस्कन्धीयनामानि)

स्मृत्याऽशेषाशुभहरो गजेन्द्रस्मृतिकारणम्।।११०।।

जातिस्मरणहेत्वेकपूजाभक्तिस्वरूपद: ।
यज्ञो भयान्मनुत्राता विभुर्ब्रह्मव्रताश्रय:।।१११।।

सत्यसेनो दुष्टघाती हरिर्गजविमोचक:।
वैकुण्ठो लोककर्त्ता च अजितोऽमृतकारणम्।।११२।।

उरुक्रमो भूमिहर्ता सार्वभौमो बलिप्रिय:।
विभु: सर्वहितैकात्मा विष्वक्सेन:शिवप्रिय।।११३।।

धर्मसेतुर्लोकधृति: सुधामान्तरपालक:।
उपहर्ता योगपतिर्बृहद्भानु: क्रियापति:।।११४।।

चतुर्दशप्रमाणात्मा धर्मो मन्वादिबोधक:।
लक्ष्मीभोगैकनिलयो देवमन्त्रप्रदायक:।।११५।।

दैत्यव्यामोहक: साक्षाद्गरुडस्कन्धसंश्रय:।
लीलामन्दरधारी च दैत्यवासुकिपूजित:।।११६।।

समुद्रोन्मथनायत्तोऽविघ्नकर्त्ता स्ववाक्यकृत्।
आदिकूर्म: पवित्रात्मा मन्दराऽऽघर्षणोत्सुक:।।११७।।

श्वासैजदब्धिवार्वीचि: कल्पान्तावधिकार्यकृत्।
चतुर्दशमहारत्नो लक्ष्मी सौभाग्यवर्धन:।।११८।।

धन्वन्तरि: सुधाहस्तो यज्ञभोक्तार्तिनाशन:।
आयुर्वेदप्रणेता च देवदैत्याखिलार्चित:।।११९।।

बुद्धिव्यामोहको देवकार्यसाधनतत्परः।
स्त्रीरूपो मायया वक्ता दैत्यांतःकरणप्रियः।।१२०।।

पायितामृतदेवांशो युद्धहेतुस्मृतिप्रदः।
सुमालिमालिवधकृन्माल्यवत्प्राणहारकः।।१२१।।

कालनेमिशिरश्छेदी दैत्ययज्ञविनाशकः।
इन्द्रसामर्थ्यदाता च दैत्यशेषस्थितिप्रियः।।१२२।।

शिवव्यामोहको मायी भृगुमन्त्रस्वशक्तिदः।
बलिजीवनकर्त्ता च स्वर्गहेतुव्रतार्चितः।।१२३।।

अदित्यानन्दकर्ता च कश्यपादितिसम्भवः।
उपेन्द्र इन्द्रावरजो वामनो ब्रह्मरूपधृक्।।१२४।।

ब्रह्मादिसेवितवपुर्यज्ञपावनतत्परः।
याच्ञोपदेशकर्त्ता च ज्ञापिताशेषसंस्थितिः।।१२५।।

सत्यार्थप्रेरकः सर्वहर्ता गर्वविनाशकः।
त्रिविक्रमस्त्रिलोकात्मा विश्वमूर्तिः पृथुश्रवाः।।१२६।।

पाशबद्धबलिः सर्वदैत्यपक्षोपमर्दकः।
सुतलस्थापितबलिः स्वर्गाधिकसुखप्रदः।।१२७।।

कर्मसम्पूर्तिकर्ता च स्वर्गसंस्थापितामरः।
ज्ञातत्रिविधर्मात्मा महामीनोऽब्धि संश्रयः।।१२८।।

सत्यव्रतप्रियो गोप्ता मत्स्यमूर्तिर्धृतश्रुतिः।
श्रृंगबद्धधृतक्षोणिः सर्वार्थज्ञापको गुरुः।।१२९।।

(अतः परं नवमस्कन्धीयनामानि)

ईशसेवकलीलात्मा सूर्यवंशप्रवर्तकः।
सोमवंशोद्भवकरो मनुपुत्रगतिप्रदः।।१३०।।

अम्बरीषप्रियः साधुर्दुर्वासोगर्वनाशकः।
ब्रह्मशापोपसंहर्ता भक्तकीर्तिविवर्द्धनः।।१३१।।

इक्ष्वाकुवंशजनकः सगराद्यखिलार्थदः।
भगीरथमहायत्नो गङ्गाधौताङ्घ्रिपङ्कजः।।१३२।।

ब्रह्मस्वामी शिवस्वामी सगरात्मजमुक्तिदः।
खट्वाङ्गमोक्षहेतुश्च रघुवंशविवर्द्धनः।।१३३।।

रघुनाथो रामचन्द्रो रामभद्रो रघुप्रियः।
अनन्तकीर्तिः पुण्यात्मा पुण्यश्लोकैकभास्करः।।१३४।।

कोशलेन्द्रप्रमाणात्मा सेव्यो दशरथात्मजः।
लक्ष्मणो भरतश्चैव शत्रुघ्नो व्यूहविग्रहः।।१३५।।

विश्वामित्रप्रियो दान्तस्ताटकावधमोक्षदः।
वायव्यास्त्राब्धिनिक्षिप्तमारीचश्च सुबाहुहा।।१३६।।

वृषध्वजधनुर्भङ्गप्राप्तसीतामहोत्सवः।
सीतापतिर्भृगुपतिगर्वपर्वतनाशकः।।१३७।।

अयोध्यास्थमहाभोगयुक्तलक्ष्मीविनोदवान्।
कैकेयीवाक्यकर्त्ता च पितृवाक्यपरिपालकः।।१३८।।

वैराग्यबोधकोऽनन्यसात्त्विकस्थानबोधकः।
अहल्यादुःखहारी च गुहस्वामी सलक्ष्मणः॥१३९॥

चित्रकूटप्रियस्थनो दण्डकारण्यपावनः।
शरभङ्गसुतीक्ष्णादिपूजितोऽगस्त्यभाग्यभूः॥१४०॥

ऋषिसम्प्रार्थितकृतिर्विराधवधपंडितः।
छिन्नशूर्पणखानासः खरदूषणघातकः॥१४१॥

एकबाणहतानेकसहस्त्रबलराक्षसः।
मारीचघाती नियतसीतासंबंधशोभनः॥१४२॥

सीतावियोगनाट्यश्च जटायुवधमोक्षदः।
शबरीपूजितो भक्तहनुमत्प्रमुखाहृतः॥१४३॥

दुन्दुभ्यस्थिप्रहरणः सप्ततालविभेदनः।
सुग्रीवराज्यदो वालिघाती सागरशोषणः॥१४४॥

सेतुबन्धनकर्त्ता च विभीषणहितप्रदः।
रावणादिशिरश्छेदी राक्षसाघौघनाशकः॥१४५॥

सीताऽभयप्रदाता च पुष्पकागमनोत्सुकः।
अयोध्यापतिरत्यन्तसर्वलोकसुखप्रदः॥१४६॥

मथुरापुरनिर्माता सुकृतज्ञस्वरूपदः।
जनकज्ञानगम्यश्च एलांतप्रकटश्रुतिः॥१४७॥

हैहयान्तकरो रामो दुष्टक्षत्रविनाशकः।
सोमवंशहितैकात्मा यदुवंशविवर्द्धनः॥१४८॥

(अतः परं दशमस्कन्धीयनामानि)

परब्रह्मावतरणः केशवः क्लेशनाशनः।
भूमिभारावतरणो भक्तार्थाखिलमानसः।।१४९।।

सर्वभक्तविरोधात्मा लीलानंतनिरोधकृत्।
भूमिष्ठपरमानन्दो देवकीशुद्धिकरणम्।।१५०।।

वसुदेवज्ञाननिष्ठसमजीवनिवारकः।
सर्ववैराग्यकरणस्वलीलाधारशोधकः।।१५१।।

मायाऽऽज्ञापनकर्ता च शेषसम्भारसम्भृतिः।
भक्तक्लेशपरिज्ञाता तन्निवारणतत्परः।।१५२।।

आविष्टवसुदेवांशो देवकीगर्भभूषणम्।
पूर्णतेजोमयः पूर्णः कंसाधृष्यप्रतापवान्।।१५३।।

विवेकज्ञानदाता च ब्रह्माद्यखिलसंस्तुतः।
सत्यो जगत्कल्पतरुर्नानारूपविमोहनः।।१५४।।

भक्तिमार्गप्रतिष्ठाता विद्वन्मोहप्रवर्तकः।
मूलकालगुणद्रष्टा नयनानन्दभगजनम्।।१५५।।

वसुदेवसुखाब्धिश्च देवकीनयनामृतम्।
पितृमातृस्तुतः पूर्वसर्ववृत्तान्तबोधकः।।१५६।।

गोकुलागतिलीलाप्तवसुदेवकरस्थितिः।
सर्वेशत्वप्रकटनो मायाव्यतययकारकः।।१५७।।

ज्ञानमोहितदुष्टेशः प्रपञ्चास्मृतिकारणम्।
यशोदानन्दनो नन्दभाग्यभूगोकुलोत्सवः।।१५८।।

नन्दप्रियो नन्दसूनुर्यशोदायाः स्तनन्धयः।
पूतनाऽसुपयःपाता मुग्धभावातिसुन्दरः।।१५९।।

सुन्दरीहृदयानन्दो गोपीमन्त्राभिमन्त्रितः।
गोपालाश्चर्यरसकृत् शकटासुरखण्डनः।।१६०।।

नन्दव्रजजनानन्दी नन्दभाग्यमहोदयः।
तृणावर्तवधोत्साहो यशोदाज्ञानविग्रहः।।१६१।।

बलभद्रप्रियः कृष्णः सङ्कर्षणसहायवान्।
रामानुजो वासुदेवो गोष्ठाङ्गणगतिप्रियः।।१६२।।

किङ्किणीरवभावज्ञो वत्सपुच्छावलम्बनः।
नवनीतप्रियो गोपीमोहसंसारनाशकः।।१६३।।

गोपबालकभावज्ञश्चौर्यविद्याविशारदः।
मृत्साभक्षणलीलास्यमाहात्म्यज्ञानदायकः।।१६४।।

धराद्रोणप्रीतिकर्ता दधिभाण्डविभेदनः।
दामोदारो भक्तवश्यो यमलार्जुनभञ्जनः।।१६५।।

बृहद्वनमहाश्चर्यो वृन्दावनगतिप्रियः।
वत्सघाती बालकेलिर्बकासुरनिषूदनः।।१६६।।

अरण्यभोक्ताऽप्यथवा बाललीलापरायणः।
प्रोत्साहजनकश्चैवमघासुरनिषूदनः ।।१६७।।

व्यालमोक्षप्रदः पुष्टो ब्रह्ममोहप्रवर्द्धनः।
अनन्तमूर्तिः सर्वात्मा जङ्गमस्थावराकृतिः॥१६८॥

ब्रह्ममोहनकर्ता च स्तुत्य आत्मा सदाप्रियः।
पौगण्डीलीलाभिरतिर्गोचारणपरायणः ॥१६९॥

वृन्दावनलतागुल्मवृक्षरूपनिरूपकः ।
नादब्रह्मप्रकटनो वयः प्रतिकृतिस्वनः॥१७०॥

बर्हिनृत्यानुकरणो गोपालानुकृतिस्वनः।
सदाचारप्रतिष्ठाता बलश्रमनिराकृतिः॥१७१॥

तरुमूलकृताशेषतल्पशायी सखिस्तुतः।
गोपालसेवितप्रदः श्रीलालितपदाम्बुजः॥१७२॥

गोपसम्प्रार्थितफलदाननाशितधैनुकः ।
कालीयफणिमाणिक्यरञ्जितश्रीपदाम्बुजः॥१७३॥

दृष्टिसञ्जीविताशेषगोपगोगोपिकाप्रियः ।
लीलासम्पीतदावाग्निः प्रलम्बवधपण्डितः॥१७४॥

दावाग्न्यावृतगोपालदृष्ट्याच्छादनवह्निपः ।
वर्षाशरद्विभूतिश्रीगोपीकामप्रबोधकः ॥१७५॥

गोपीरत्नस्तुताशेषवेणवाद्यविशारदः ।
कात्यायनीव्रतव्याजसर्वभावाऽऽश्रिताङ्गनः॥१७६॥

सत्सङ्गतिस्तुतिव्याजस्तुतवृन्दावनाङ्घ्रिपः।
गोपक्षुच्छान्तिसंव्याजविप्रभायाप्रसादकृत्॥१७७॥

हेतुप्राप्तेन्द्रयागस्वकार्यगोसवबोधकः ।
शैलरूपकृताशेषरसभोगसुखावहः ॥१७८॥

लीलागोवर्द्धनोद्धारपालितस्वव्रजप्रियः ।
गोपस्वच्छन्दलीलार्थगर्गवाक्यार्थबोधकः॥१७९॥

इन्द्रधेनुस्तुतिप्राप्तगोविन्देन्द्राभिधानवान् ।
व्रतादिधर्मसंसक्तनन्दकलेशविनाशकः ॥१८०॥

नन्दादिगोपमात्रेष्टवैकुण्ठगतिदायकः ।
वेणवादस्मरक्षोभमत्तगोपीविमुक्तिदः ॥१८१॥

सर्वभावप्राप्तगोपीसुखसंवर्द्धनक्षमः ।
गोपीगर्वप्रणाशार्थतिरोधानसुखप्रदः ॥१८२॥

कृष्णभावव्याप्तविश्वगोपीभावितवेषधृक्।
राधाविशेषसम्भोगप्राप्तदोषनिवारकः ॥१८३॥

परमप्रीतिसङ्गीतसर्वाद्भुतमहागुणः ।
मानापनोवनाक्रन्दगोपीदृष्टिमहोत्सवः ॥१८४॥

गोपिकाव्याप्तसर्वाङ्ग स्त्रीसम्भाषाविशारदः।
रासोत्सवमहासौख्यगोपीसम्भोगसागरः॥१८५॥

जलस्थलरतिव्याप्तगोपीदृष्ट्यभिपूजितः।
शास्त्रानपेक्षकामैकमुक्तिद्वारविवर्द्धनः॥१८६॥

सुदर्शनमहासर्पग्रस्तनन्दविमोचकः ।
गीतमोहितगोपीधृक् शङ्खचूडविनाशकः॥१८७॥

गुणसङ्गीतसन्तुष्टिगोपीसंसारविस्मृतिः ।
अरिष्टमथनो दैत्यबुद्धिव्यामोहकारकः ॥१८८॥

केशिघाती नारदेष्टो व्योमासुरविनाशकः ।
अक्रूरभक्तिसंराद्धपादरेणुमहानिधिः ॥१८९॥

रथावरोहशुद्धात्मा गोपिमानसहारकः ।
ह्रदसन्दर्शिताशेषवैकुण्ठक्रूरसंस्तुतः ॥१९०॥

मथुरागमनोत्साहो मथुराभाग्यभाजनम् ।
मथुरानगरीशोभादर्शनोत्सुकमानसः ॥१९१॥

दुष्टरंजकघाती च वायकार्चितविग्रहः ।
वस्त्रमालासुशोभाङ्गःकुब्जाऽऽलेपनभूषितः ॥१९२॥

कुब्जासुरूपकर्ता च कुब्जारतिवरप्रदः ।
प्रसादरूपसन्तुष्टहरकोदण्डखण्डनः ॥१९३॥

शकलाहतकंसाप्तधनूरक्षकसैनिकः ।
जाग्रत्स्वप्नभयव्याप्तमृत्युलक्षणबोधकः ॥१९४॥

मथुरामल्ल ओजस्वी मल्लयुद्धविशारदः ।
सद्यः कुवलयापीडघाती चाणूरमर्दनः ॥१९५॥

लीलाहतमहामल्लः शलतोशलघातकः ।
कंसान्तको जितामित्रो वसुदेवविमोचकः ॥१९६॥

ज्ञाततत्त्वपितृज्ञानमोहनामृतवाङ्मयः ।
उग्रसेनाप्रतिष्ठाता यादवाऽऽधिविनाशकः ॥१९७॥

नन्दादिसान्त्वनकरो ब्रह्मचर्यव्रते स्थितः।
गुरुशुश्रूषणपरो विद्यापारमितेश्वरः।।१९८।।

सान्दीपिनिमृतापत्यदाता कालान्तकादिजित्।
गोकुलाश्वासनपरो यशोदानन्दपोषकः।।१९९।।

गोपिकाविरहव्याजमनोगतिरतिप्रदः ।
समोद्धवभ्रमरवाक् गोपिकामोहनाशकः।।२००।।

कुब्जारतिप्रदोऽक्रूरपवित्रीकृतभूगृहः ।
पृथादुःखप्रणेता च पाण्डवानां सुखप्रदः।।२०१।।

(इति दशमस्कंधपूर्वार्द्धनामानि)

जरासन्धसमानीतसैन्यधाती विचारकः।
यवनव्याप्तमथुराजनदत्तकुशस्थलिः ।।२०२।।

द्वारकाद्भुतनिर्माणविस्मायितसुरासुरः ।
मनुष्यमात्रभोगार्थभूम्यानीतेन्द्रवैभवः ।।२०३।।

यवनव्याप्तमथुरानिर्गमानन्दविग्रहः ।
मुचुकुन्दमीहाबोधयवनप्राणदर्पहा ।।२०४।।

मुचुकुन्दस्तुताशेषगुणकर्ममहोदयः ।
फलप्रदानसन्तुष्टिर्जन्मान्तरितमोक्षदः ।।२०५।।

शिवब्राह्मणवाक्याप्तजयभीतिविभावनः।
प्रवर्षणप्रार्थिताग्निदानपुण्यमहोत्सवः ।।२०६।।

रुक्मिणीरमणः कामपिता प्रद्युम्नभावनः।
स्यमन्तकमणिव्याजप्राप्तजाम्बवतीपतिः।।२०७।।

सत्यभामाप्राणपतिः कालिन्दीरतिवर्धनः।
मित्रविन्दापतिः सत्यापतिर्वृषनिषूदनः।।२०८।।

भद्रवाञ्छितभर्ता च लक्ष्मणावरणक्षमः।
इन्द्रादिप्रार्थितवधनरकासुरसूदनः ।।२०९।।

मुरारिः पीठहन्ता च ताम्रादिप्राणहारकः।
षोडशस्त्रीसहस्रेशश्छत्रकुण्डलदानकृत् ।।२१०।।

पारिजातापहरणो देवेन्द्रमदनाशकः ।
रुक्मिणीसमसर्वस्त्रीसाध्यभोगरतिप्रदः ।।२११।।

रुक्मिणीपरिहासोक्तिवाक्तिरोधानकारकः ।
पुत्रपौत्रमहाभाग्यगृहधर्मप्रदर्शकः ।।२१२।।

शम्बरान्तक सत्पुत्रविवाहहतरुक्मिकः।
उषापहृतपौत्रश्रीर्बाणबाहुनिवारकः ।।२१३।।

शीतज्वरभयव्याप्तज्वरसंस्तुतषड्गुणः ।
शङ्करप्रतियोद्धा च द्वन्द्वयुद्धविशारदः।।२१४।।

नृगपापप्रभेत्ता च ब्रह्मस्वगुणदोषदृक्।
विष्णुभक्तिविरोधैकब्रह्मस्वविनिवारकः।।२१५।।

बलभद्राहितगुणो गोकुलप्रीतिदायकः।
गोपीस्नेहैकनिलयो गोपीप्राणस्थितिप्रदः।।२१६।।

वाक्यातिगामी यमुनाहलाकर्षणवैभवः।
पौण्ड्रकत्याजितस्पर्द्धः काशीराजविभेदनः।।२१७।।

काशीनिदाहकरणः शिवभस्मप्रदायकः।
द्विविदप्राणघाती च कौरवाखर्वगर्वनुत्।।२१८।।

लाङ्गूलाकृष्टनगरीसंविग्नाखिलनागरः।
प्रपन्नाभयदः साम्बप्राप्तसन्मानभाजनम्।।२१९।।

नारदान्विष्टचरणो भक्तिविक्षेपनाशकः।
सदाचारैकनिलयः सुधर्माध्यासितासनः।।२२०।।

जरासन्धावरुद्धेन विज्ञापितनिजक्लमः।
मन्त्र्युद्धवादिवाक्योक्तप्रकारैकपरायणः।।२२१।।

राजसूयादिमखकृत्सम्प्रार्थितसहायकृत्।
इन्द्रप्रस्थप्रयाणार्थमहत्सम्भारसम्भृतिः।।२२२।।

जरासन्धवधव्याजमोचिताशेषभूमिपः।
सन्मार्गबोधको यज्ञक्षितिवरणतत्परः।।२२३।।

शिशुपालहतिव्याजजयशापविमोचकः।
दुर्योधनाभिमानाब्धिशोषबाणवृकोदरः।।२२४।।

महादेववरप्राप्तपुरशाल्वविनाशकः।
दन्तवक्त्रवधव्याजविजयाघौघनाशकः।।२२५।।

विदूरथप्राणहर्त्ता न्यस्तशस्त्रास्त्रविग्रहः।
उपधर्मविलिप्ताङ्गसूतघाती वरप्रदः।।२२६।।

बल्वलप्राणहरणपालितर्षिश्रुतिक्रियः ।
सर्वतीर्थाघनाशार्थतीर्थयात्राविशारदः ॥२२७॥

ज्ञानक्रियाविभेदेष्टफलसाधनतत्परः ।
सारथ्यादिक्रियाकर्ता भक्तवश्यत्वबोधकः॥२२८॥

सुदामरङ्कभार्यार्थभूम्यामीतेन्द्रवैभवः ।
रविग्रहनिमित्तप्तकुरुक्षेत्रैकपावनः ॥२२९॥

नृपगोपीसमस्तस्त्रीपावनार्थाखिलक्रियः।
ऋषिमार्गप्रतिष्ठाता वसुदेवमखक्रियः॥२३०॥

वसुदेवज्ञानदाता देवकीपुत्रदायकः।
अर्जुनस्त्रीप्रदाता च बहुलाश्वस्वरूपदः॥२३१॥

श्रुतदेवेष्टदाता च सर्वश्रुतिनिरूपितः।
महादेवाद्यतिश्रेष्ठो भक्तिलक्षणनिर्णयः॥२३२॥

वृकग्रस्तशिवत्राता नानावाक्यविशारदः।
नरगर्वविनाशार्थनतब्राह्मणबालकः ॥२३३॥

लोकालोकपरस्थानस्थितबालकदायकः।
द्वारकास्थमहाभोगनानास्त्रीरतिवर्द्धनः ॥२३४॥

मनस्तिरोधानकृतव्यग्रस्त्रीचित्तभावितः।
(अतः परं एकादशस्कंधीयनामानि)
मुक्तिलीलाविहरणो मौसलव्याजसंहृतिः॥२३५॥

श्रीभागवतधर्मादिबोधको भक्तिनीतिकृत्।
उद्धवज्ञानदाता च पंचविंशतिधा गुरुः।।२३६।।

आचारमुक्तिभक्त्यादिवक्ता शब्दोद्धवस्थितिः।
हंसो धर्मप्रवक्ता च सनकाद्युपदेशकृत्।।२३७।।

भक्तिसाधनवक्ता च यागसिद्धिप्रदायकः।
नानाविभूतिवक्ता च शुद्धधर्मावबोधकः।।२३८।।

मार्गत्रयविभेदात्मा नानाशंकानिवारकः।
भिक्षुगीताप्रवक्ता च शुद्धसांख्यप्रवर्तकः।।२३९।।

मनोगुणविशेषात्मा ज्ञापकोक्तपुरूरवाः।
पूजाविधिप्रवक्ता च सर्वसिद्धांतबोधकः।।२४०।।

लघुस्वमार्गवक्ता च स्वस्थानगतिबोधकः।
यादवांगोपसंहर्ता सर्वाश्चर्यगतिक्रियः।।२४१।।

(अतः परं द्वादशस्कंधीयनामानि)

कालधर्मविभेदार्थवर्णनाशनतत्परः ।
बुद्धो गुप्तार्थवक्ता च नानाशास्त्रविधायकः।।२४२।।

नष्टधर्ममनुष्यादिलक्षणज्ञापनोत्सुकः ।
आश्रयैकगतिज्ञाता कल्किः कलिमलापहः।।२४३।।

शास्त्रवैराग्यसम्बोधो नानाप्रलयबोधकः।
विशेषतः शुकव्याजपरीक्षिज्ज्ञानबोधकः।।२४४।।

शुकेष्टगतिरूपात्मा परिक्षिद्देहमोक्षदः।
शब्दरूपो नादरूपो वेदरूपो विभेदनः।।२४५।।

व्यासः शाखाप्रवक्ता च पुराणार्थप्रवर्तकः।
मार्कण्डेयप्रसन्नात्मा वटपत्रपुटेशयः ।।२४६।।

मायाव्याप्तमहामोहदुःखशान्तिप्रवर्तकः।
महादेवस्वरूपश्च भक्तिदाता कृपानिधिः।।२४७।।

आदित्यान्तर्गतः कालो द्वादशात्मसुपूजितः।
श्रीभागवतरूपश्च सर्वार्थफलदायकः।।२४८।।

इतीदं कीर्तनीयस्य हरेर्नामसहस्रकम्।
पञ्चसप्ततिविस्तीर्णं पुराणान्तरभाषितम्।।२४९।।

य एतत्प्रातरुत्थाय श्रद्धावान् सुसमाहितः।
जपेदर्थाहितमतिः स गोविन्दपदं व्रजेत्।।२५०।।

सर्वधर्मविनिर्मुक्तः सर्वसाधनवर्जितः।
एतद्धारणमात्रेण कृष्णस्य पदवीं व्रजेत्।।२५१।।

हर्यावेशितचित्तेन श्रीभागवतसागरात्।
समृद्धृतानि नामानि चिन्तामणिनिभानि हि।।२५२।।

कण्ठस्थितान्यर्थदीप्त्या बाधन्तेऽज्ञानजं तमः।
भक्तिं श्रीकृष्णदेवस्य साधयन्ति विनिश्चितम्।।२५३।।

किं बहूक्तेन भगवान् नामभिः स्तुतषड्गुणः।
आत्मभावं नयत्याशु भक्तिं च कुरुते दृढाम्।।२५४।।

यः कृष्णभक्तिमिह वांछति साधनौघै-
र्नामानि भासुरयशांति जपेत्स नित्यम्।
तं वै हरिः स्वपुरुष कुरुतेऽतिशीघ्र-
मात्मार्पणं समधिगच्छति भावतुष्टः।।२५५।।

श्रीकृष्ण कृष्णसख वृष्ण्यृषभावनिध्रुग्-
राजन्यवंशदहनानघवर्गवीर्य ।
गोविन्द गोपवनिताब्रजभृत्यगीत
तीर्थश्रवः श्रवणमङ्गल पाहि भृत्यान्।।२५६।।

इति श्रीभागवतसारसमुच्चये
वैश्वानरोक्तपुरुषोत्तमनामसहस्रं सम्पूर्णम्।

अथ यमुनाष्टकम्।

श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः।

नमामि यमुनामहं सकलसिद्धिहेतुं मुदा
मुरारिपदपङ्कजस्फुरदमन्दरेणूत्कटाम् ।
तटस्थनवकाननप्रकटमोदपुष्पाम्बुना
सुरासुरसुपूजितस्मरपितुः श्रियं बिभ्रतीम्।।१।।

कलिन्दगिरिमस्तके पतदमन्दपूरोज्ज्वला।
विलासगमनोल्लसत्प्रकटगण्डशैलोन्नता ।

श्रीयमुनामहाराणीजी

श्रीयमुनामहाराणीजी

सघोषगतिदन्तुरा समधिरूढदोलोत्तमा।
मुकुन्दरतिवर्द्धिनी जयति पद्मबन्धोः सुता।।२।।

भुवं भुवनपावनीमधिगतामनेकस्वनैः
प्रियाभिरिव सेवितां शुकमयूरहंसादिभिः।
तरङ्गभुजकङ्कणप्रकटमुक्तिकावालुका
नितम्बतटसुन्दरीं नमत कृष्णतुर्यप्रियाम्।।३।।

अनन्तगुणभूषिते शिवविरञ्चिदेवस्तुते
घनाघननिभे सदा ध्रुवपराशराभीष्टदे।
विशुद्धमथुरातटे सकलगोपगोपीवृते
कृपाजलधिसंश्रिते मम मनः सुखं भवाय।।४।।

यया चरणपद्मजा मुररिपोः प्रियंभावुका
समागमनतोऽभवत्सकलसिद्धिदा सेवताम्।
तया सदृशतामियात्कमलजा सपत्नीव य-
द्धरिप्रियकलिन्दया मनसि मे सदा स्थीयताम्।।५।।

नमोऽस्तु यमुने सदा तव चरित्रमत्यद्भुतम्,
न जातु यमयातना भवति ते पयःपानतः।
यमोऽपि भगिनीसुतान्कथमुहन्ति दुष्टानपि
प्रियो भवति सेवनात्तव हरेर्यथा गोपिकाः।।६।।

ममास्तु तव सन्निधौ तनुनवत्वमेतावता
न दुर्लभतमा रतिर्मुररिपौ मुकुन्दप्रिये।

अतोऽस्तु तव लालना सुरधुनी परं सङ्गमा-
त्तवैव भुवि कीर्तिता न तु कदापि पुष्टिस्थितैः।।७।।

स्तुतिं तव करोति कः कमलजासपत्निप्रिये
हरेर्यदनुसेवया भवति सौख्यमामोक्षतः।
इयं तव कथाधिका सकलगोपिकासङ्गमः
स्मरश्रमजलाणुभिः सकलगात्रजैः सङ्गमः।।८।।

तवाष्टकमिदं मुदा पठति सूरसूते सदा
समस्तदुरितक्षयो भवति वै मुकुन्दे रतिः।
तया सकलसिद्धयो मुररिपुश्च सन्तुष्यति
स्वभाववविजयो भवेद्वदति वल्लभः श्रीहरेः।।९।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं
श्रीयमुनाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।१।।

अथ बालबोधः

नत्वा हरिं सदानन्दं सर्वसिद्धान्तसंग्रहम्।
बालप्रबोधनार्थाय वदामि सुविनिश्चितम्।।१।।

धर्मार्थकाममोक्षाख्याश्चत्वारोऽर्था मनीषिणाम्।
जीवेश्वरविचारेण द्विधा ते हि विचारिताः।।२।।

अलौकिकास्तु वेदोक्ताः साध्यसाधनसंयुताः।
लौकिका ऋषिभिः प्रोक्तास्तथैवेश्वरशिक्षया।।३।।

लौकिकांस्तु प्रवक्ष्यामि वेदादाद्या यतः स्थिताः।
धर्मशास्त्राणि नीतिश्च कामशास्त्राणि च क्रमात्।।४।।

त्रिवर्गसाधकानीति न तन्निर्णय उच्यते।
मोक्षे चत्वारि शास्त्राणि लौकिके परतः स्वतः।।५।।

द्विधे द्वे द्वे स्वस्तत सांख्ययोगौ प्रकीर्तितौ।
त्यागात्यागविभागेन सांख्ये त्यागः प्रकीर्तितः।।६।।

अहंताममतानाशे सर्वथा निरहंकृतौ।
स्वरूपस्थो यदा जीवः कृतार्थः स निगद्यते।।७।।

तदर्थं प्रक्रिया काचित्पुराणेऽपि निरूपिता।
ऋषिभिर्बहुधा प्रोक्ता फलमेकमबाह्यतः।।८।।

अत्यागे योगमार्गो हि त्यागोऽपि मनसैव हि।
यमादयस्तु कर्तव्याः सिद्धे योगे कृतार्थता।।९।।

पराश्रयेण मोक्षस्तु द्विधा सोऽपि निरूप्यते।
ब्रह्मा ब्राह्मणतां यातस्तद्रूपेण च सेव्यते।।१०।।

ते सर्वार्था न चाद्येन शास्त्रं किञ्चिदुदीरितम्।
अतः शिवश्च विष्णुश्च जगतो हितकारकौ।।११।।

वस्तुनः स्थितिसंहारौ कार्यौ शास्त्रप्रवर्तकौ।
ब्रह्मैव तादृशं यस्मात्सर्वात्मकतयोदितौ।।१२।।

निर्दोषपूर्णगुणता तत्तच्छास्त्रे तयोः कृता।
भोगमोक्षफले दातुं शक्तौ द्वावपि यद्यपि।।१३।।

भोगः शिवेन मोक्षस्तु विष्णुनेति विनिश्चयः।
लोकेऽपि यत्प्रभुर्भुंक्ते तन्न यच्छति कर्हिचित्।।१४।।

अतिप्रियाय तदपि दीयते क्वचिदेव हि।
नियतार्थप्रदानेन तदीयत्वे तदाश्रयः।।१५।।

प्रत्येकं साधनं चैतद् द्वितीयार्थे महान् श्रमः।
जीवाः स्वभावतो दुष्टा दोषाभावाय सर्वदा।।१६।।

श्रवणादि ततः प्रेम्णा सर्वं कार्यं हि सिद्ध्यति।
मोक्षस्तु सुलभो विष्णोर्भोगश्च शिवतस्तथा।।१७।।

समर्पणेनात्मनो हि तदीयत्वं भवेद् ध्रुवम्।
अतदीयतया चापि केवलश्चेत्समाश्रितः।।१८।।

तदाश्रयतदीयत्वबुद्ध्यै किंचित्समाचरेत्।
स्वधर्ममनुतिष्ठन् वै भारद्वैगुण्यमन्यथा।।
इत्येवं कथितं सर्वं नैतज्ज्ञाने भ्रमः पुनः।।१९।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितो
बालबोधः संपूर्णः।।२।।

अथ सिद्धान्तमुक्तावली

नत्वा हरिं प्रवक्ष्यामि स्वसिद्धान्तनिश्चयम्।
कृष्णसेवा सदा कार्या मानसी सा परा मता।।१।।

चेतस्तत्प्रवणं सेवा तत्सिद्ध्यै तनुवित्तजा।
ततः संसारदुःखस्य निवृत्तिर्ब्रह्मबोधनम्।।२।।

परं ब्रह्म तु कृष्णो हि सच्चिदानन्दकं बृहत्।
द्विरूपं तद्धि सर्वं स्यादेकं तस्माद्विलक्षणम्।।३।।

अपरं तत्र पूर्वस्मिन् वादिनो बहुधा जगुः।
मायिकं सगुणं कार्यं स्वतन्त्रं चेति नैकधा।।४।।

तदेवैतत्प्रकारेण भवतीति श्रुतेर्मतम्।
द्विरूपं चापि गंगावज्ज्ञेयं सा जलरूपिणी।।५।।

माहात्म्यसंयुता नृणां सेवतां भुक्तिमुक्तिदा।
मर्यादामार्गविधिना तथा ब्रह्मपि बुद्ध्यताम्।।६।।

तत्रैव देवतामूर्तिर्भक्तया या दृश्यते क्वचित्।
गंगायां च विशेषेण प्रवाहाभेदबुद्धये।।७।।

प्रत्यक्षा सा न सर्वेषां प्राकाम्यं स्यात्तया जले।
विहिताच्च फलात्तद्धि प्रतीत्यापि विशिष्यते।।८।।

यथा जलं तथा सर्वं यथा शक्ता तथा बृहत्।
यथा देवी तथा कृष्णस्तत्राप्येतदिहोच्यते।।९।।

जगत्तु त्रिविधं प्रोक्तं ब्रह्मविष्णुशिवास्ततः।
देवतारूपवत्प्रोक्ता ब्रह्मणीत्थं हरिर्मतः।।१०।।

कामचारस्तु लोकेऽस्मिन् ब्रह्मादिभ्यो न चान्यथा।
परमानन्दरूपे तु कृष्णे स्वात्मनि निश्चयः।।११।।

अतस्तु ब्रह्मवादेन कृष्णे बुद्धिर्विधीयताम्।
आत्मनि ब्रह्मरूपे तु छिद्रा व्योम्नीव चेतनाः।।१२।।

उपाधिनाशे विज्ञाने ब्रह्मात्मत्वावबोधने।
गङ्गातीरस्थितो यद्वद्देवतां तत्र पश्यति।।१३।।

तथा कृष्णं परं ब्रह्म स्वस्मिन् ज्ञानी प्रपश्यति।
संसारी यस्तु भजते स दूरस्थो यथा तथा।।१४।।

अपेक्षितजलादीनामभावात्तत्र दुःखभाक्।
तस्माच्छ्रीकृष्णमार्गस्थो विमुक्तःसर्वलोकतः।।१५।।

आत्मानन्दसमुद्रस्थं कृष्णमेव विचिन्तयेत्।
लोकार्थी चेद्भजेत्कृष्णं क्लिष्टो भवति सर्वथा।।१६।।

क्लिष्टोऽपि चेद्भजेत्कृष्णं लोको नश्यति सर्वथा।
ज्ञानाभावे पुष्टिमार्गी तिष्ठेत्पूजोत्सवादिषु।।१७।।

मर्यादास्थस्तु गंगायां श्रीभागवततत्परः।
अनुग्रहः पुष्टिमार्गे नियामक इति स्थितिः।।१८।।

उभयोस्तु क्रमेणैव पूर्वोक्तैव फलिष्यति।
ज्ञानाधिको भक्तिमार्ग एवं तस्मान्निरूपितः।।१९।।

भक्त्यभावे तु तीरस्थो यथा दुष्टैः स्वकर्मभिः।
अन्यथा भावमापन्नस्तस्मात्स्थानाच्च नश्यति।।२०।।

एवं स्वशास्त्रसर्वस्वं मया गुप्तं निरूपितम्।
एतद् बुद्ध्वा विमुच्येत पुरुषः सर्वसंशयात्।।२१।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचिता
सिद्धान्तमुक्तावली समाप्ता।।३।।

अथ पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेदः।

पुष्टिप्रवाहमर्यादा विशेषेण पृथक्पृथक्।
जीवदेहक्रियाभेदैः प्रवाहेण फलेन च।।१।।

वक्ष्यामि सर्वसन्देहा न भविष्यन्ति यच्छ्रुतेः।
भक्तिमार्गस्य कथनात्पुष्टिरस्तीति निश्चयः।।२।।

द्वौ भूतसर्गावित्युक्तेः प्रवाहोऽपि व्यवस्थितः।
द्वौ भूतसर्गावित्युक्तेः प्रवाहोऽपि व्यवस्थिता।।३।।

कश्चिदेव हि भक्तो हि यो मद्भक्त इतीरणात्।
सर्वत्रोत्कर्षकथनात्पुष्टिरस्तीति निश्चयः।।४।।

न सर्वोऽतः प्रवाहाद्धि भिन्नो वेदाच्च भेदतः।
यदा यस्येति वचनान्नाहं वेदैरितीरणात्।।५।।

मार्गैकत्वेऽपि चेदन्त्यौ तनू भक्तत्यागमौ मतौ।
न तद्युक्तं सूत्रतो हि भिन्नो युक्त्या हि वैदिकः।।६।।

जीवदेहकृतीनां च भिन्नत्वं नित्यताश्रुतेः।
यथा तद्वत्पुष्टिमार्गे द्वयोरपि निषेधतः।।७।।

प्रमाणभेदाद्भिन्नो हि पुष्टिमार्गो निरूपितः।
सर्गभेदं प्रवक्ष्यामि स्वरूपङ्गक्रियायुतम्।।८।।

इच्छामात्रेण मनसा प्रवाहं सृष्टवान् हरिः।
वचसा वेदमार्गं हि पुष्टिं कायेन निश्चयः।।९।।

मूलेच्छातः फलं लोके वेदोक्तं वैदिकेऽपि च।
कायेन तु फलं पुष्टौ भिन्नेच्छातोऽपि नैकता।।१०।।

तानहंद्विषतो वाक्याद्भिन्ना जीवाः प्रवाहिणः।
अत एवेतरौ भिन्नौ सान्तौ मोक्षप्रवेशतः।।११।।

तस्माज्जीवाः पुष्टिमार्गे भिन्ना एव न संशयः।
भगवद्रूपसेवार्थं तत्सृष्टिर्नान्यथा भवेत्।।१२।।

स्वरूपेणावतारेण लिङ्गेन च गुणेन च।
तारतम्यं न स्वरूपे देहे वा तत्क्रियासु वा।।१३।।

तथापि तावता कार्यं यावत्तस्य करोति हि।
ते हि द्विधा शुद्धमिश्रभेदान्मिश्रास्त्रिधा पुनः।।१४।।

प्रवाहादिविभेदेन भगवत्कार्यसिद्धये।
पुष्ट्या विमिश्राःसर्वज्ञाः प्रवाहेण क्रियारताः।।१५।।

मर्यादया गुणज्ञास्ते शुद्धाः प्रेम्णातिदुर्लभाः।
एवं सर्गस्तु तेषां हि फलं त्वत्र निरूप्यते।।१६।।
भगवानेव हि फलं स यथाऽऽविर्भवेद्भुवि।
गुणस्वरूपभेदेन तथा तेषां फलं भवेत्।।१७।।
आसक्तौ भगवानेव शापं दापयति क्वचित्।
अहङ्कारेऽथवा लोके तन्मार्गस्थापनाय हि।।१८।।
न ते पाषण्डतां यान्ति न च रोगाद्युपद्रवाः।
महानुभावाः प्रायेण शास्त्रं शुद्धत्वहेतवे।।१९।।
भगवात्तरतम्येन तारतम्यं भजन्ति हि।
वैदिकत्वं लोकिकत्त्वं कापट्यात्तेषु नान्यथा।।२०।।
वैष्णवत्वं हि सहजं ततोऽन्यत्र विपर्ययः।
सम्बन्धिनस्तु ये जीवाः प्रवाहस्थास्तथापरे।।२१।।
चर्षणीशब्दवाच्यास्ते ते सर्वे सर्ववर्त्मसु।
क्षणात्सर्वत्वमायान्ति रुचिस्तेषां न कुत्रचित्।।२२।।
तेषां क्रियानुसारेण सर्वत्र सकलं फलम्।
प्रवाहस्थान् प्रवक्ष्यामि स्वरूपाङ्गक्रियायुतान्।।२३।।
जीवास्ते ह्यासुराः सर्वे प्रवृत्तिं चेति वर्णिताः।
ते च द्विधा प्रकीर्त्यन्ते ह्यज्ञदुर्ज्ञविभेदतः।।२४।।
दुर्ज्ञास्ते भगवत्प्रोक्ता ह्यज्ञास्ताननु ये पुनः।
प्रवाहेऽपि समागत्य पुष्टिस्थस्तैर्न युज्यते।

सोऽपि तैस्तत्कुले जातः कर्मणा जायते यतः।।२५।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितः
पुष्टिप्रवाहमर्यादाभेदः समाप्तः।।४।।

अथ सिद्धान्तरहस्यम्

श्रावणस्यामले पक्षे एकादश्यां महानिशि।
साक्षाद्भगवता प्रोक्तं तदक्षरश उच्यते।।१।।

ब्रह्मसम्बन्धकरणात् सर्वेषां देहजीवयोः।
सर्वदोषनिवृत्तिर्हि दोषाः पञ्चविधाः स्मृताः।।२।।

सहजा देशकालोत्था लोकवेदनिरूपिताः।
संयोगजाः स्पर्शजाश्च न मन्तव्याः कथंचन।।३।।

अन्यथा सर्वदोषाणां न निवृत्तिः कथंचन।
असमर्पितवस्तूनां तस्माद्वर्जनमाचरेत्।।४।।

निवेदिभिः समर्प्यैव सर्वं कुर्यादिति स्थितिः।
न मतं देवदेवस्य सामिभुक्तं समर्पणम्।।५।।

तस्मादादौ सर्वकार्ये सर्ववस्तुसमर्पणम्।
दत्तापहारवचनं तथा च सकलं हरेः।।६।।

न ग्राह्यमिति वाक्यं हि भिन्नमार्गपरं मतम्।
सेवकानां यथा लोके व्यवहारः प्रसिद्ध्यति।।७।।

तथा कार्यं समर्प्यैव सर्वेषां ब्रह्मता ततः।
गङ्गात्वं सर्वदोषाणां गुणदोषादिवर्णना।
गंगात्वेन निरूप्या स्यात्तद्वदत्रापि चैव हि।।८।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं
सिद्धान्तरहस्यं समाप्तम्।।५।।

अथ नवरत्नस्तोत्रम्

चिंता कापि न कार्या
निवेदितात्मभिः कदापीति।
भगवानपि पुष्टिस्थो न करिष्यति
लौकिकीं च गतिम्।।१।।

निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः।
सर्वेश्वरश्च सर्वात्मा निजेच्छातः करिष्यति।।२।।

सर्वेषां प्रभुसम्बन्धो न प्रत्येकमिति स्थितिः।
अतोऽन्यविनियोगेऽपि चिन्ता का स्वस्य सोऽपिचेत्।।३।।

अज्ञानादथ वा ज्ञानात् कृतमात्मनिवेदनम्।
यैः कृष्णसात्कृतप्राणैस्तेषां का परिवेदना।।४।।

तथा निवेदने चिन्ता त्याज्या श्रीपुरुषोत्तमे।
विनियोगेऽपि सा त्याज्या समर्थो हि हरिः स्वतः।।५।।

लोके स्वास्थ्यं तथा वेदे हरिस्तु न करिष्यति।
पुष्टिमार्गस्थितो यस्मात्साक्षिणो भवताऽखिलाः।।६।।

सेवाकृतिर्गुरोराज्ञाबाधनं वा हरीच्छया।
अतः सेवापरं चित्तं विधाय स्थीयतां सुखम्।।७।।

चित्तोद्वेगं विधायापि हरिर्यद्यत् करिष्यति।
तथैव तस्य लीलेति मत्वा चिन्तां द्रुतं त्यजेत्।।८।।

तस्मात्सर्वात्मना नित्यं श्रीकृष्णः शरणं मम।
वदद्भिरेवं सततं स्थेयमित्येव मे मतिः।।९।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं
नवरत्नस्तोत्रं समाप्तम्।।६।।

अथान्तःकरणप्रबोधः

अंतःकरण! मद्वाक्यं सावधानतया शृणु।
कृष्णात्परं नास्ति दैवं वस्तुतो दोषवर्जितम्।।१।।

चाण्डाली चेद्राजपत्नी जाता राज्ञा च मानिता।
कदाचिदपमानेऽपि मूलतः का क्षतिर्भवेत्।।२।।

समर्पणादहं पूर्वमुत्तमः किं सदा स्थितः।
का ममाधमता भाव्या पश्चात्तापो यतो भवेत्।।३।।

सत्यसंकल्पतो विष्णुर्नान्यथा तु करिष्यति।
आज्ञैव कार्या सततं स्वामिद्रोहोऽन्यथा भवेत्।।४।।

सेवकस्य तु धर्मोऽयं स्वामी स्वस्य करिष्यति।
आज्ञा पूर्वं तु या जाता गंगासागरसंगमे।।५।।

यापि पश्चान्मधुवने न कृतं तद्द्वयं मया।
देहदेशपरित्यागः तृतीयो लोकगोचरः।।६।।

पश्चात्तापः कथं तत्र सेवकोऽहं न चान्यथा।
लौकिकप्रभुवत्कृष्णो न द्रष्टव्यः कदाचन।।७।।

सर्वं समर्पितं भक्तया कृतार्थोऽसि सुखी भव।
प्रौढापि दुहिता यद्वत्स्नेहान्न प्रेष्यते वरे।।८।।

तथा देहे न कर्तव्यं वरस्तुष्यति नान्यथा।
लोकवच्चेत्स्थितिर्मे स्यात्किं स्यादिति विचारय।।९।।

अशक्ये हरिरेवास्ति मोहं मा गाः कथंचन।
इति श्रीकृष्णदासस्य वल्लभस्य हितं वचः।
चित्तं प्रति यदाकर्ण्य भक्तो निश्चिन्ततां व्रजेत्।।१०।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितोऽन्तः
करणप्रबोधः समाप्तः।।७।।

अथ विवेकधैर्याश्रयः

विवेकधैर्ये सततं रक्षणीये तथाश्रयः।
विवेकस्तु हरिः सर्वं निजेच्छातः करिष्यति।।१।।

प्रार्थिते वा ततः किं स्यात् स्वाम्यभिप्रायसंशयात्।
सर्वत्र तस्य सर्वं हि सर्वसामर्थ्यमेव च।।२।।

अभिमानश्चसंत्याज्यःस्वाम्यधीनत्वभावनात्।
विशेषतश्चेदाज्ञा स्यादन्तःकरणगोचरः।।३।।

तदा विशेषगत्यादि भाव्यं भिन्नं तु दैहिकात्।
आपद्गत्यादिकार्येषु हठस्त्याज्यश्च सर्वथा।।४।।

अनाग्रहश्च सर्वत्र धर्माधर्माग्रदर्शनम्।
विवेकोऽन्यं समाख्यातो धैर्यं तु विनिरूप्यते।।५।।

त्रिदुःखसहनं धैर्यमामृतेः सर्वतः सदा।
तक्रवद्देहवद्भाव्यं जडवद् गोपभार्यवत्।।६।।

प्रतीकारो यदृच्छातः सिद्धश्चेन्नाग्रही भवेत्।
भार्यादीनां तथान्येषामसतश्चाक्रमं सहेत्।।७।।

स्वयमिन्द्रियकार्याणि कायवाङ्मनसा त्यजेत्।
अशूरेणापि कर्तव्यं स्वस्यासामर्थ्यभावनात्।।८।।

अशक्ये हरिरेवास्ति सर्वमाश्रयतो भवेत्।
एतत्सहनमत्रोक्तमाश्रयोऽतो निरूप्यते।।९।।

ऐहिके पारलोके च सर्वथा शरणं हरिः।
दुःखहानौ तथा पापे भये कामाद्यपूरणे।।१०।।

भक्तद्रोहे भक्त्यभावे भक्तैश्चातिक्रमे कृते।
अशक्ये वा सुशक्ये वा सर्वथा शरणं हरिः।।११।।

अहंकारकृते चैव पोष्यपोषणरक्षणे।
पोष्यातिक्रमणे चैव तथान्तेवास्यतिक्रमे।।१२।।

अलौकिकमनःसिद्धौ सर्वार्थां शरणं हरिः।
एवं चित्ते सदा भाव्यं वाचा च परिकीर्तयेत्।।१३।।

अन्यस्य भजनं तत्र स्वतो गमनमेव च।
प्रार्थना कार्यमात्रेऽपि ततोऽन्यत्र विवर्जयेत्।।१४।।

अविश्वासो न कर्तव्यः सर्वथा बाधकस्तु सः।
ब्रह्मास्त्रचातकौ भाव्यौ प्राप्तं सेवेत निर्ममः।।१५।।

यथाकथंचित्कार्याणि कुर्यादुच्चावचान्यपि।
किं वा प्रोक्तेन बहुना शरणं भावयेद्धरिम्।।१६।।

एवमाश्रयणं प्रोक्तं सर्वेषां सर्वदा हितम्।
कलौ भक्त्यादिमार्गा हि दुःसाध्याइति मे मतिः।।१७।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितो
विवेकधैर्याश्रयः समाप्तः।।८।।

अथ कृष्णाश्रयः

सर्वमार्गेषु नष्टेषु कलौ च खलधर्मिणि।
पाषण्डप्रचुरे लोके कृष्ण एव गतिर्मम।।१।।

म्लेच्छाकान्तेषु देशेषु पापैकनिलयेषु च।
सत्पीडाव्यग्रलोकेषु कृष्ण एव गतिर्मम।।२।।

गंगादितीर्थवर्येषु दुष्टैरेवावृतेष्विह।
तिरोहिताधिदैवेषु कृष्ण एव गतिर्मम।।३।।

अहंकारविमूढेषु सत्सु पापानुवर्तिषु।
लोभपूजार्थयत्नेषु कृष्ण एव गतिर्मम।।४।।

अपरिज्ञाननष्टेषु मंत्रेष्वव्रतयोगिषु।
तिरोहितार्थदैवेषु कृष्ण एव गतिर्मम।।५।।

नानावादविनष्टेषु सर्वकर्मव्रतादिषु।
पाषण्डैकप्रयत्नेषु कृष्ण एव गतिर्मम।।६।।

अजामिलादिदोषाणां नाशकोऽनुभवे स्थितः।
ज्ञापिताखिलमाहात्म्यः कृष्ण एव गतिर्मम।।७।।

प्राकृताः सकला देवा गणितानन्दकं बृहत्।
पूर्णानन्दो हरिस्तस्मात्कृष्ण एव गतिर्मम।।८।।

विवेकधैर्यभक्त्यादिरहितस्य विशेषतः।
पापासक्तस्य दीनस्य कृष्ण एव गतिर्मम।।९।।

सर्वसामर्थ्यसहितः सर्वत्रैवाखिलार्थकृत्।
शरणस्थसमुद्धारं कृष्णं विज्ञापयाम्यहम्।।१०।।

कृष्णाश्रयमिदं स्तोत्रं यः पठेत्कृष्णसन्निधौ।
तस्याश्रयो भवेत्कृष्ण इति श्रीवल्लभोऽब्रवीत्।।११।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं
कृष्णाश्रयस्तोत्रं समाप्तम्।।९।।

अथ चतु:श्लोकी

सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिपः।
स्वस्यायमेव धर्मो हि नान्यः क्वापि कदाचन।।१।।

एवं सदा स्म कर्तव्यं स्वयमेव करिष्यति।
प्रभु सर्वसमर्थो हि ततो निश्चिन्ततां व्रजेत्।।२।।

यदि श्रीगोकुलाधीशो धृतः सर्वात्मना हृदि।
ततः किमपरं ब्रूहि लौकिकैर्वैदिकैरपि।।३।।

अतः सर्वात्मना शश्वद्गोकुलेश्वरपादयोः।
स्मरणं भजनं चापि न त्याज्यमिति मे मतिः।।४।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचिता चतु:श्लोकी समाप्ता।।१०।।

अथ भक्तिवर्धिनी

यथा भक्तिः प्रवृद्धा स्यात्तथोपायो निरूप्यते।
बीजभावे दृढे तु स्यात्त्यागाच्छ्रवणकीर्तनात्।।१।।

बीजदार्ढ्यप्रकारस्तु गृहे स्थित्वा स्वधर्मतः।
अव्यावृत्तो भजेत्कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः।।२।।

व्यावृत्तोऽपि हरौ चित्तं श्रवणादौ यतेत्सदा।
ततः प्रेम तथा सक्तिर्व्यसनं च यदा भवेत्।।३।।

बीजं तदुच्यते शास्त्रे दृढं यन्नापि नश्यति।
स्नेहाद्रागविनाशः स्यादासक्त्या स्याद् गृहारुचिः।।४।।

गृहस्थानां बाधकत्वमनात्मत्वं च भासते।
यदा स्याद् व्यसनं कृष्णे कृतार्थःस्यात्तदैव हि।।५।।

तादृशस्यापि सततं गृहस्थानं विनाशकम्।
त्यागं कृत्वा यतेद्यस्तु तदर्थार्थैकमानसः।।६।।

लभते सुदृढां भक्ति सर्वतोऽप्यधिकां पराम्।
त्यागे बाधकभूयस्त्वं दुःसंसर्गात्तथाऽन्नतः।।७।।

अतः स्थेयं हरिस्थाने तदीयैः सह तत्परैः।
अदूरे पिप्रकर्षे वा यथा चित्तं न दुष्यति।।८।।

सेवायां वा कथायां वा यस्यासक्तिर्दृढा भवेत्।
यावज्जीवं तस्य नाशो न क्वापीति मतिर्मम।।९।।

बाधसंभावनायं तु नैकान्ते वास इष्यते।
हरिस्तु सर्वतो रक्षां करिष्यति न संशयः।।१०।।

इत्येवं भगवच्छास्त्रं गूढतत्त्वं निरूपितम्।
य एतत्समधीयीत तस्यापि स्याद् दृढा रतिः।।११।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचिता
भक्तिवर्धिनी समाप्ता।।११।।

अथ जलभेदः

नमस्कृत्य हरिं वक्ष्ये तद्गुणानां विभेदकान्।
भावान् विंशतिधा भिन्नान् सर्वसन्देहवारकान्।।१।।

गुणभेदास्तु तावन्तो यावन्तो हि जले मताः।
गायकाः कूपसंकाशा गन्धर्वा इति विश्रुताः।।२।।

कूपभेदास्तु यावन्तस्तावन्तस्तेपि संमताः।
कुल्याः पौराणिकाः प्रोक्ताः पारम्पर्ययुता भुवि।।३।।

क्षेत्रप्रविष्टास्ते चापि संसारोत्पत्तिहेतवः।
वेश्यादिसहिता मत्ता गायका गर्तसंज्ञिताः।।४।।

जलार्थमेव गर्तास्तु नीचा गानोपजीविनः।
ह्रदास्तु पण्डिताः प्रोक्ता भगवच्छास्त्रतत्पराः।।५।।

सन्देहवारकास्तत्र सूदा गम्भीरमानसाः।
सरःकमलसंपूर्णाः प्रेमयुक्तास्तथा बुधाः।।६।।
अल्पश्रुताः प्रेमयुक्ता वेशन्ताः परिकीर्तिताः।
कर्मशुद्धाः पल्वलानि तथाल्पश्रुतिभक्तयः।।७।।
योगध्यानादिसंयुक्ता गुणा वर्ष्याः प्रकीर्तिताः।
तपोज्ञानादिभावेन स्वेदजास्तु प्रकीर्तिताः।।८।।
अलौकिकेन ज्ञानेन ये तु प्रोक्ता हरेर्गुणाः।
कादाचित्काः शब्दगम्याः पतच्छब्दाः प्रकीर्तिताः।।९।।
देवाद्युपासनोद्भूताः पृष्ट्वा भूमेरिवोद्गताः।
साधनादिप्रकारेण नवधाभक्तिमार्गतः।।१०।।
प्रेमपूर्त्या स्फुरद्धर्माः स्यन्दमानाः प्रकीर्तिताः।
यादृशास्तादृशाः प्रोक्ता वृद्धिक्षयविवर्जिताः।।११।।
स्थावरास्ते समाख्याता मर्यादैकप्रतिष्ठिताः।
अनेकजन्मसंसिद्धा जन्मप्रभृति सर्वदा।।१२।।
सङ्गादिगुणदोषाभ्यां वृद्धिक्षययुता भुवि।
निरन्तररोद्गमयुता नद्यस्ते परिकीर्तिताः।।१३।।
एतादृशाः स्वतन्त्राश्चेत्सिन्धवः परिकीर्तिताः।
पूर्णा भगवदीया ये शेषव्यासाग्निमारुताः।।१४।।
जडनारदमैत्राद्यास्ते समुद्राः प्रकीर्तिताः।
लोकवेदगुणैर्मिश्रभावेनैके हरेर्गुणान्।।१५।।

वर्णयन्ति समुद्रास्ते क्षाराद्याः षट् प्रकीर्तिताः।
गुणातीततया शुद्धान् सच्चिदानन्दरूपिणः।।१६।।

सर्वानेव गुणान् विष्णोर्वर्णयन्ति विचक्षणाः।
तेऽमृतोदाः समाख्यातास्तद्वाक्पानं सुदुर्लभम्।।१७।।

तादृशानां क्वचिद्वाक्यं दूतानामिव वर्णितम्।
अजामिलाकर्णनवद्विन्दुपानं प्रकीर्तितम्।।१८।।

रागज्ञानादिभावानां सर्वथा नाशनं यदा।
तदा लेहनमित्युक्तं स्वानन्दोद्गमकारणम्।।१९।।

उद्धृतोदकवत्सर्वे पतितोदकवत्तथा।
उक्तातिरिक्तवाक्यानि फलं चापि तथा ततः।।२०।।

इति जीवेन्द्रियगता नानाभावं गता भुवि।
रूपतः फलतश्चैव गुणा विष्णोर्निरूपिताः।।२१।।

इति श्रीवल्लभाचार्य विरचितो
जलभेदः समाप्तः।।१२।।

अथ पंचपद्यानि

श्रीकृष्णरसविक्षिप्तमानसा रतिवर्जिताः।
अनिर्वृता लोकवेदे ते मुख्याः श्रवणोत्सुकाः।।१।।

विक्लिन्नमनसो ये तु भगवत्स्मृतिविह्वलाः।
अर्थैकनिष्ठास्ते चापि मध्यमाः श्रवणोत्सुकाः।।२।।

निःसन्दिग्धं कृष्णतत्त्वं सर्वभावेन ये विदुः।
ते त्वावेशात्तु विकला निरोधाद्वा न चान्यथा।।३।।

पूर्ण भावेन पूर्णार्थाः कदाचिन्न तु सर्वदा।
अन्यासक्तास्तु ये केचिदधमाः परिकीर्तिताः।।४।।

अनन्यमनसो मर्त्या उत्तमाः श्रवणादिषु।
देशकालद्रव्यकर्तृमन्त्रकर्मप्रकारतः ।।५।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितानि
पञ्चपद्यानि समाप्तानि।।१३।।

अथय संन्यासनिर्णयः

पश्चात्तापनिवृत्त्यर्थं परित्यागो विचार्यते।
स मार्गद्वितये प्रोक्तो भक्तौ ज्ञाने विशेषतः।।१।।

कर्ममार्गे न कर्त्तव्यः सुतरां कलिकालतः।
अत आदौ भक्तिमार्गे कर्तव्यत्वाद्विचारणा।।२।।

श्रवणादिप्रवृत्त्यर्थं कर्तव्यत्वेन नेष्यते।
सहायसङ्गसाध्यत्वात्साधनानां च रक्षणात्।।३।।

अभिमानान्नियोगाच्च तद्धर्मैश्च विरोधतः।
गृहादेर्बाधकत्वेन साधनार्थं तथा यदि।।४।।
अग्रेऽपि तादृशैरेव सङ्गो भवति नान्यथा।।
स्वयं च विषयाक्रान्तपाषण्डी स्यात्तु कालतः।।५।।
विषयाक्रान्तदेहानां नावेशः सर्वथा हरेः।
अतोऽत्र साधने भक्तौ नैव त्यागः सुखावहः।।६।।
विरहानुभवार्थं तु परित्यागः प्रशस्यते।
स्वीयबन्धनिवृत्त्यर्थं वेशः सोऽत्र न चान्यथा।।७।।
कौण्डिन्यो गोपिकाः प्रोक्ता गुरवः साधनं च तत्।
भावो भावनया सिद्धः साधनं नान्यदिष्यते।।८।।
विकलत्त्वं तथाऽस्वाथ्यं प्रकृतिः प्राकृतं न हि।
ज्ञाने गुणाश्च तस्यैव वर्तमानस्य बाधकाः।।९।।
सत्यलोके स्थितिर्ज्ञानात्संन्यासेन विशेषितात्।
भावना साधनं यत्र फलं चापि तथा भवेत्।।१०।।
तादृशाः सत्यलोकादौ सिध्यन्त्येव न संशयः।
बहिश्चेत्प्रकटः स्वात्मा बह्निवत्प्रविशेद्यदि।।११।।
तदैव सकलो बन्धो नाशमेति न चान्यथा।
गुणास्तु सङ्गराहित्याज्जीवनार्थं भवन्ति हि।।१२।।
भगवान् फलरूपत्वान्नात्र बाधक इष्यते।
स्वास्थ्यवाक्यं न कर्तव्यं दयालुर्न विरुध्यते।।१३।।

दुर्लभोऽयं परित्यागः प्रेम्णा सिद्ध्यति नान्यथा।
ज्ञानमार्गे तु सन्यासो द्विविधोऽपि विचारितः।।१४।।

ज्ञानार्थमुत्तरांगं च सिद्धिर्जन्मशतैः परम्।
ज्ञानं च साधनापेक्षं यज्ञादि श्रवणान्मतम्।।१५।।

अतः कलौ स संन्यासः पश्चत्तापाय नान्यथा।
पाषण्डित्त्वं भवेच्चापि तस्माज्ज्ञाने न संन्यसेत्।।१६।।

सुतरां कलिदोषाणां प्रबलत्वादिति स्थितिः।
भक्तिमार्गेऽपि चेद्दोषस्तदा किं कार्यमुच्यते।।१७।।

अत्रारम्भेन नाशः स्याद् दृष्टान्तस्याप्यभावतः।
स्वास्थ्यहेतोः परित्यागाद्बाधः केनास्य सम्भवेत्।।१८।।

हरिरत्र न शक्नोति कर्तुं बाधां कुतोऽपरे।
अन्यथा मातरो बालान्नस्तन्यैः पुपुषुः क्वचित्।।१९।।

ज्ञानिनामपि वाक्येन न भक्तं मोहयिष्यति।
आत्मप्रदः प्रियश्चापि किमर्थं मोहयिष्यति।।२०।।

तस्मादुक्तप्रकारेण परित्यागो विधीयताम्।
अन्यथा भ्रश्यते स्वार्थादिति में निश्चिता मतिः।।२१।।

इति कृष्णप्रसादेन वल्लभेन विनिश्चितम्।
संन्यासवरणं भक्तावन्यथा पतितो भवेत्।।२२।।

इति श्रीवल्लभाचार्यकृतः संन्यासनिर्णयः समाप्तः।।१४।।

अथ निरोधलक्षणम्।

यच्च दुःखं यशोदाया नन्दादीनां च गोकुले।
गोपिकानां तु यद्दुःखं तद्दुःखं स्यान्मम क्वचित्।।१।।

गोकुले गोपिकानां च सर्वेषां व्रजवासिनाम्।
यत्सुखं समभूत्तन्मे भगवान् किं विधास्यति।।२।।

उद्धवागमने जात उत्सवः सुमहान्यथा।
वृंदावने गोकुले वा तथा मे मनसि क्वचित्।।३।।

महतां कृपया यावद्भगवान् दययिष्यति।
तावदानन्दसन्दोहः कीर्त्यमानः सुखाय हि।।४।।

महतां कृपया यद्वत्कीर्तनं सुखदं सदा।
न तथा लौकिकानां तु स्निग्धभोजनरूक्षवत्।।५।।

गुणगाने सुखावाप्तिर्गोविन्दस्य प्रजायते।
यथा तथा शुकादीनां नैवात्मनि कुतोऽन्यतः।।६।।

क्लिश्यमानाञ्जनान् दृष्ट्वा कृपायुक्तो यदा भवेत्।
तदा सर्वं सदानन्दहृदिस्थं निर्गतं बहिः।।७।।

सर्वानन्दमयस्यापि कृपानंदः सुदुर्लभः।
हृद्गतः स्वगुणाञ्छ्रुत्वापूर्णः प्लावयते जनान्।।८।।

तस्मात्सर्वं परित्यज्य निरुद्धैः सर्वदा गुणाः।
सदानन्दपरैर्गेयाः सच्चिदानन्दता ततः।।९।।

अहं निरुद्धो रोधेन निरोधपदवीं गतः।
निरुद्धानां तु रोधाय निरोधं वर्णयामि ते।।१०

हरिणा ये विनिर्मुक्तास्ते मग्ना भवसागरे।
ये निरुद्धास्त एवात्र मोदमायान्त्यहर्निशम्।।११।।

संसारावेशदुष्टानामिन्द्रियाणां हिताय वै।
कृष्णस्य सर्ववस्तूनि भूम्न ईशस्य योजयेत्।।१२।।

गुणेष्वाविष्टचित्तानां सर्वदा मुरवैरिणः।
संसारविरहक्लेशौ न स्यातां हरिवत्सुखम्।।१३।।

तदा भवेद्दयालुत्वमन्यथा क्रूरता मता।
बाधशङ्कापि नास्त्यत्र तदध्यासोपि सिद्ध्यति।।१४।।

भगवद्धर्मसामर्थ्याद्विरागो विषये स्थिरः।
गुणैर्हरेः सुखस्पर्शान्न दुःखं भाति कर्हिचित्।।१५।।

एवं ज्ञात्वा ज्ञानमार्गादुत्कर्षो गुणवर्णने।
अमत्सरैरलुब्धैश्च वर्णनीयाः सदा गुणाः।।१६।।

हरिमूर्तिः सदा ध्येया सङ्कल्पादपि तत्र हि।
दर्शनं स्पर्शनं स्पष्टं तथाकृतिगती सदा।।१७।।

श्रवणं कीर्तनं स्पष्टं पुत्रे कृष्णप्रिये रतिः।
पायोर्मलांशत्यागेन शेषभागं तनौ नयेत्।।१८।।

यस्य वा भगवत्कार्यं यदा स्पष्टं न दृश्यते।
तदा विनिग्रहस्तस्य कर्तव्य इति निश्चयः।।१९।।

नातः परतरो मन्त्रो नातः परतरः स्तवः।
नातः परतरा विद्या तीर्थं नातः परात्परम्।।२०।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं
निरोधलक्षणं समाप्तम्।।१५

अथ सेवाफलम्

यादृशी सेवना प्रोक्ता तत्सिद्धौ फलमुच्यते।
अलौकिकस्य दाने हि चाद्यः सिद्ध्येन्मनोरथः।।१।।

फलं वा ह्यधिकारो वा न कालोऽत्र नियामकः।
उद्वेगः प्रतिबन्धो वा भोगो वा स्यात्तु बाधकम्।।२।।

अकर्तव्यं भगवतः सर्वथा चेद्गतिर्न हि
यथा वा तत्त्वनिर्द्धारो विवेकः साधनं मतम्।।३।।

बाधकानां परित्यागो भोगेऽप्येकं तथापरम्।
निष्प्रत्यूहं महान् भोगः प्रथमे विशते सदा।।४।।

स विघ्नोऽल्पो घातकः स्याद्बलादेतौ सदा मतौ।
द्वितीये सर्वथा चिंता त्याज्या संसारनिश्चयात्।।५।।

नन्वाद्ये दातृता नास्ति तृतीये बाधकं गृहम्।
अवश्येयं सदा भाव्या सर्वमन्यन्मनोभ्रमः।।६।।

तदीयैरपि तत्कार्यं पुष्टौ नैव विलम्बयेत्।
गुणक्षोभोऽपि द्रष्टव्यमेतदेवेति मे मतिः।
कुसृष्टिरत्र वा काचिदुत्पद्येत स वै भ्रमः।।७।।

इति श्रीवल्लभाचार्यकृतंसेवाफलनिरूपणं
समाप्तम्।।१६।।

अथ परिवृढाष्टकम्

कलिन्दोद्भूतायास्तटमनुचरन्तीं पशुपजां
रहस्येकां दृष्ट्वा नवसुभगवक्षोजयुगलाम्।
दृढं नीवीग्रन्थिं श्लथयति मृगाक्ष्या हटतरं
रतिप्रादुर्भावो भवतु सततं श्रीपरिवृढे।।१।।

समायाते स्वस्मिन्सुरनिलयसाम्यं गतवति
व्रजे वैशिष्ट्यं यो निजपदगताब्जांकुशयवैः।
अकार्षीत्तस्मिन्मे यदुकुलसमुद्भासितमणौ
रतिप्रादुर्भावो भवतु सततं श्रीपरिवृढे।।२।।

हिहीहीहीकारान्प्रतिपशु वने कुर्वति सदा
नमद्ब्रह्मर्शेद्रप्रभृतिषु च मौनं धृतवति।
मृगाक्षीभिः स्वेक्षानवकुवलयैरर्चितपदे
रतिप्रादुर्भावो भवतु सततं श्रीपरिवृढे।।३।।

सकृत्स्मृत्वा कुम्भी यमिह परमं लोकमगम-
च्चिरं ध्यात्वा धाता समाधिगतवान्यं न तपसा।
विभौ तस्मिन्मह्यं सजलजलदालीनिभतनौ,
रतिप्रादुर्भावो भवतुं सततं श्रीपरिवृढे।।४।।

परा काष्ठा प्रेम्णां पशुपतरुणीनां क्षितिभुजां
सुदृक्तानां त्रासास्पदमखिलभाग्यं यदुपतेः।
विभुर्यस्तस्मिन्मे दरविकचजम्बालजमुखे
रतिप्रादुर्भावो भवतु सततं श्रीपरिवृढे।।५।।

दरप्रादुर्भूतद्विजगणमहः पूरितवने
चरं कुह्वां राका-रुचिरतरशोभाधिकरुचि।
हरिर्यस्तस्मिन्स्त्रीगणपरिवृतो नृत्यति सदा-
रतिप्रादुर्भावो भवतु सततं श्रीपरिवृढे।।६।।

स्फुरद्गुञ्जापुञ्जाकलितनिजपादाब्जविलुठत्-
स्त्रजि श्यामाकामास्पदपदयुगे मेचकरुचि।
वरांगे शृङ्गारं दधति शिखिनां पिच्छपटलै-
रतिप्रादुर्भावो भवतु सततं श्रीपरिवृढे।।७।।

दुरन्तं दुःखाब्धिं हसितसुधया शोषयति यो
यदास्येन्दुर्गोपीनयननलिनानन्दकरणम् ।
अनङ्गः साङ्गत्वं व्रजति मम तस्मिन् मुररिपौ
रतिप्रादुर्भावो भवतु सततं श्रीपरिवृढे।।८।।

इदं यः स्तोत्रः श्रीपरिवृढसमीपे पठति वा
श्रृणोति श्रद्धावान् रतिपतिपितुः पादयुगले।
रतिं प्रेप्सुः शश्वत्कुवलयदलश्यामलतनौ
रतिः प्रादुर्भूता भवति न चिरात्तस्य सुदृढा।।९।।

इति श्रीवल्लभाचार्यकृतं
श्रीपरिवृढाष्टकं समाप्तम्।१७।।

अथ श्रीमधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं
नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।१।।

वचनं मधुरं चरितं मधुरं
वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।२।।

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः
पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।

नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।३।।
गीतं मधुरं पीतं मधुरं
भक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।४।।
करणं मधुरं तरणं मधुरं
हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।५।।
गुञ्जा मधुरा माला मधुरा
यमुना मधुरा वीचिर्मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।६।।
गोपी मधुरा लीला मधुरा
युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम्।
इष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।७।।
गोपा मधुरा गावो मधुरा
यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।

दलितं मधुरं फलितं मधुरं
मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।८।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं मधुराष्टकं समाप्तम्।।१८।।

अथ शिक्षाश्लोकाः।

यदा बहिर्मुखा यूयं भविष्यथ कथंचन।
तदा कलाप्रवाहस्था देहचित्तादयोऽप्युत।।१।।
सर्वथा भक्षयिष्यन्ति युष्मानिति मतिर्मम।
न लौकिकः प्रभुः कृष्णो मनुते नैव लौकिकम्।।२।।
भावस्तत्राप्यस्मदीयः सर्वस्वश्चैहिकश्च सः।
परलोकश्च तेनायं सर्वभावेन सर्वथा।
सेव्यः स एव गोपीशो विधास्यत्यखिलं हि नः।।३।।

इतिश्रीवल्लभाचार्यविरचिताः शिक्षाश्लोकाः समाप्ताः।।१९।।

अथ मङ्लाचरणम्।

श्रीकृष्णाय नमः।। श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः।।
चिन्ताचसन्तानहन्तारो यत्पादाम्बुजरेणवः।
स्वीयानां तान्निजाचार्यान्प्रणमामि मुहुर्मुहुः।।१।।

यदनुग्रहतो जन्तुः सर्वदुःखातिगो भवेत्।
तमहं सर्वदा वन्दे श्रीमद्वल्लभनन्दनम्।।२।।

यदुक्तं तातचरणैः श्रीकृष्णः शरणं मम।
अत एवास्ति नैश्चिन्त्यमैहिके पारलौकिके।।३।।

मम चित्तस्य विश्वासः श्रीगोपीजनवल्लभे।
यदा तदा कृतार्थोऽहं शोचनीयो न कर्हिचित्।।४।।

इति श्रीविट्ठलेशविरचितं
मंगलाचरणं समाप्तम्।।२०।।

अथ श्रीसर्वोत्तमस्तोत्रम्।

प्राकृतधर्मानाश्रयमप्राकृतनिखिलधर्मरूपमिति।
निगमप्रतिपाद्यं यतच्छुद्धं साकृति स्तौमि।।१।।

कलिकालतमश्छन्नदृष्टित्वाद्विदुषामपि ।
सम्प्रत्यविषयस्तस्य माहात्म्यं समभूद् भूवि।।२।।

दयया निजमाहात्म्यं करिष्यन् प्रकटं हरिः।
वाण्या यदा तदा स्वास्यं प्रादुर्भूतं चकार हि।।३।।

तदुक्तमपि दुर्बोधं सुबोधं स्याद्यथा तथा।
तन्नामाष्टोत्तरशतं प्रवक्ष्याम्यखिलाघहृत्।।४।।

ऋषिरग्निकुमारस्तु नाम्नां छन्दो जगत्यसौ।
श्रीकृष्णाऽस्यं देवता चबीजं कारुणिकःप्रभु।।५।।

विनियोगो भक्तियोगप्रतिबन्धविनाशने।
कृष्णाधरामृतास्वादसिद्धिरत्र न संशयः।।६।।

आनन्दः परमानन्दः श्रीकृष्णास्यं कृपानिधिः।
दैवोद्धारप्रयत्नात्मा स्मृतिमात्रार्तिनाशनः।।७।।

श्रीभागवतगूढार्थप्रकाशनपरायणः ।
साकारब्रह्मवादैकस्थापको वेदपारगः।।८।।

मायावादनिराकर्ता सर्ववादिनिरासकृत्।
भक्तिमार्गाब्जमार्तण्डःस्त्रीशूद्राद्युद्धृतिक्षमः ।।९।।

अङ्गीकृत्यैव गोपीशवल्लभीकृतमानवः।
अङ्गीकृतौ समर्यादो महाकारुणिको विभुः।।१०।।

अदेयदानदक्षश्च महोदरचरित्रवान्।
प्राकृतानुकृतिव्याजमोहितासुरमानुषः ।।११।।

वैश्वानरो वल्लभाख्यः सद्रूपोहितकृत्सताम्।
जनशिक्षाकृते कृष्णभक्तिकृन्निखिलेष्टदः।।१२।।

सर्वलक्षणसम्पन्नः श्रीकृष्णज्ञानदो गुरुः।
स्वानन्दतुन्दिलः पद्मदलायतविलोचनः।।१३।।

कृपादृग्वृष्टिसंहृष्टदासदासीप्रियः पतिः।
रोषदृक्पातसंप्लुष्टभक्तद्विड् भक्तसेवितः।।१४।।

सुखसेव्यो दुराराध्यो दुर्लभांघ्रिसरोरुहः।
उग्रप्रतापो वाक्सीधुपूरिताशेषसेवकः।।१५।।

श्रीभागवतपीयूषसमुद्रमथनक्षमः।
तत्सारभूतरासस्त्रीभावपूरितविग्रहः।।१६।।

सान्निध्यमात्रदत्तश्रीकृष्णप्रेमा विमुक्तिदः।
रासलीलैकतात्पर्यः कृपयैतत्कथाप्रदः।।१७।।

विरहानुभवैकार्थसर्वत्यागोपदेशकः।
भक्त्याचारोपदेष्टा च कर्ममार्गप्रवर्तकः।।१८।।

यागादौ भक्तिमार्गैकसाधनत्वोपदेशकः।
पूर्णानन्दः पूर्णकामो वाक्पतिर्विबुधेश्वरः।।१९।।

कृष्णनामसहस्रस्य वक्ता भक्तपरायणः।
भक्त्याचारोपदेशार्थनानावाक्यनिरूपकः।।२०।।

स्वार्थोज्झिताखिलप्राणप्रियस्तादृशवेष्टितः।
स्वदासार्थकृताशेषसाधनः सर्वशक्तिधृक्।।२१।।

भुवि भक्तिप्रचारैककृते स्वान्वयकृत्पिता।
स्ववंशे स्थापिताशेषस्वमाहात्म्यः स्मयापहः।।२२।।

पतिव्रतापतिः पारलौकिकैहिकदानकृत्।
निगूढहृदयोऽनन्यभक्तेषु ज्ञापिताशयः।।२३।।

उपासनादिमार्गातिमुग्धमोहनिवारकः।
भक्तिमार्गे सर्वमार्गवैलक्षण्यानुभूतिकृत्।।२४।।

पृथक्शरणमार्गोपदेष्टा श्रीकृष्णहार्दवित्।
प्रतिक्षणनिकुञ्जस्थलीलारससुपूरितः ॥२५॥

तत्कथाक्षिप्तचित्तस्तद्विस्मृतान्यो व्रजप्रियः।
प्रियव्रजस्थितिः पुष्टिलीलाकर्ता रहःप्रियः॥२६॥

भक्तेच्छापूरकः सर्वाज्ञातलीलोऽतिमोहनः।
सर्वासक्तो भक्तमात्रासक्तः पतितपावनः॥२७॥

स्वयशोगानसंहृष्टहृदयाम्भोजविष्टरः।
यशःपीयूषलहरीप्लावितान्यरसः परः॥२८॥

लीलामृतरसार्द्रार्द्रीकृताखिलशरीरभृत्।
गोवर्धनस्थित्युत्साहस्तल्लीलाप्रेमपूरितः॥२९॥

यज्ञभोक्ता यज्ञकर्ता चतुर्वर्गविशारदः।
सत्यप्रतिज्ञस्त्रिगुणातीतो नयविशारदः॥३०॥

स्वकीर्तिवर्धनस्तत्त्वसूत्रभाष्यप्रदर्शकः।
मायावादाख्यतूलाग्निर्ब्रह्मवादनिरूपकः॥३१॥

अप्राकृताऽखिलाकल्पभूषितः सहजस्मितः।
त्रिलोकीभूषणं भूमिभाग्यं सहजसुन्दरः॥३२॥

अशेषभक्तसम्प्रार्थ्यचरणाब्जरजोधनः।
इत्यानन्दनिधेः प्रोक्तं नाम्नामष्टोत्तरंशतम्॥३३॥

श्रद्धाविशुद्धबुद्धिर्यः पठत्यनुदिनं जनः।
स तदेकमनाः सिद्धिमुक्तां प्राप्नोत्यसंशयम्॥३४॥

तदप्राप्तौ वृथा मोक्षस्तदाप्तौ तद्गतार्थता।
अतः सर्वोत्तमस्तोत्रं जप्यं कृष्णरसार्थिभिः।।३५।।

इति श्रीमदग्निकुमारप्रोक्तं
सर्वोत्तमस्तोत्रं संपूर्णम्।।२१।।

अथ श्रीवल्लभाष्टकम्।

श्रीमद्वृन्दावनेन्दुप्रकटितरसिकानन्दसन्दोहरूप-
स्फूर्जद्रासादिलीलाऽमृतजलधिभराक्रान्तसर्वोऽपिशश्वत्
तस्यैषात्मानुभावप्रकटनहृदयस्याज्ञया प्रादुरासीद्-
भूमौ यः सन्मनुष्याकृतिरतिकरुणस्तं प्रपद्ये हुताशम्।।१।।

नाविर्भूयाद्भवांश्चेदधिधरणितलं भूतनाथोदितास-
न्मार्गध्वान्तांधतुल्यानिगमपथपतौ देवसर्गेऽपि जाताः।
घोषाधीशं तदेमे कथमपि मनुजाः प्राप्नुयुर्नैव देवी-
सृष्टिर्व्यर्था च भूयान्निजफलरहिता देववैश्वानरैषा।।२।।

न ह्यन्यो वागधीशाच्छ्रुतिगणवचसां भावमाज्ञातुमीष्टे
यस्मात्साध्वी स्वभावं प्रकटयति वधूरग्रतः पत्युरेव।
तस्माच्छ्रीवल्लभाख्यत्वदुदितवचनादन्यथा रूपयन्ति
भ्रान्ता ये ते निसर्गत्रिदशरिपुतया केवलांधन्तमोगाः।।३।।

प्रादुर्भूतेन भूमौ व्रजपतिचरणाम्भोजसेवाख्यवर्त्म-
प्राकट्यं यत्कृतं ते तदुत निजकृते श्रीहुताशेति मन्ये।

यस्मादस्मिन्स्थितोयत्किमपि कथमपि क्वाप्युपाहर्तुमि-
च्छत्यद्धा तद्गोपिकेशः स्ववदनकमले चारुहासे करोति।।४।।

उष्णत्वैकस्वभावोऽप्यतिशिशिरवचःपुञ्जपीयूषवृष्टी-
रार्तेष्वत्युग्रमोहासुरनृषु युगपत्तापमप्यत्र कुर्वन्।
स्वस्मिन्कृष्णास्यतां त्वं प्रकटयसि च नो भूतदेवत्वमेत-
द्यस्मादानन्ददं श्रीव्रजजननिचये नाशकं चासुराग्नेः।।५।।

आम्नायोक्तं यदंभोभवनमनलतस्तच्च सत्यं विभोर्य-
त्सर्गादौ भूतरूपादभवदनलतः पुष्करं भूतरूपम्।
आनन्दैकस्वरूपात्त्वदधिभु यदभूत्कृष्णसेवारसाब्धि-
श्चानन्दैकस्वरूपस्तदखिलमुचितं हेतुसाम्यं हि कार्ये।।६।।

स्वामिञ्छ्रीवल्लभाग्नेक्षणमपि भवतः सन्निधाने कृपातः
प्राणप्रेष्ठव्रजाधीश्वरवदनदिदृक्षार्तितापो जनेषु।
यत्प्रादुर्भावमाप्नोत्युचिततरमिदं यत्तु पश्चादपीत्थं
दृष्टेऽप्यस्मिन्मुखेन्दौ प्रचुरतरमुदेत्येव तच्चित्रमेतत्।।७।।

अज्ञानाद्यंधकारप्रशमनपटुताख्यापनाय त्रिलोक्या-
मग्नित्वं वर्णितं ते कविभिरपि सदा वस्तुतः कृष्ण एव।
प्रादुर्भूतो भवानित्यनुभवनिगमाद्युक्तमानैरवेत्य
त्वां श्रीश्रीवल्लभे मे निखिलबुधजना गोकुलेशं भजन्ते।।८।।

इति श्रीमद्विट्ठलदीक्षितविरचितं श्रीवल्लभाष्टकम् ।।२२।।

अथ स्फुरत्कृष्णप्रेमामृतस्तोत्रम्

स्फुरत्कृष्णप्रेमामृतरसभरेणातिभरिता
विहारान्कुर्वाणा व्रजपतिविहाराब्धिषु सदा।
प्रिया गोपीभर्तुः स्फुरतु सततं वल्लभ इति
प्रथावत्यस्माकं हृदि सुभगमूर्तिः सकरुणा।।१।।

श्रीभागवतप्रतिपदमणिवरभावांशुभूषिता मूर्तिः।
श्रीवल्लभाभिधानस्तनोति निजदास्यसौभाग्यम्।।२।।

मायावादतमो निरस्य मधुभित्सेवाख्यवर्त्माद्भुतं
श्रीमद्गोकुलनाथसंगमसुधासंप्रापकंतत्क्षणात्।
दुःप्रापं प्रकटीचकार करुणारागादिसंमोहनः
स श्रीवल्लभभानुरुल्लसति यः श्रीवल्लवीशांतरः।।३।।

क्वचित्पांडित्यं चेन्न निगमगतिः सापि यदि न
क्रिया सा सापि स्याद्यदि न हरिमार्गे परिचयः।
यदि स्यात्सोऽपि श्रीव्रजपतिरतिर्नेति निखिलै-
र्गुणैरन्यः को वा विलससि विना वल्लभवरम्।।४।।

मायावादिकरीन्द्रदर्पदलनेनास्येन्दुराजोद्गत-
श्रीमद्भागवताख्यदुर्लभसुधावर्षेण वेदोक्तिभिः।
राधावल्लभसेवया तदुचितप्रेम्णोपदेशैरपि
श्रीमद्वल्लभनामधेयसदृशो भावी न भूतोस्त्यपि।।५।।

यदंघ्रिनखमंडलप्रसृतवारिपीयुषयुग्-
वरांगहृदयैः कलिस्तृणमिवेह तुच्छीकृतः।
व्रजाधिपतिरिन्दिराप्रभृतिमृग्यपादांबुजः
क्षणेन परितोषितस्तदनुगत्वमेवास्तु मे।।६।।

अघौघतमसावृतं कलिभुजंगमासादितं
जगद्विषयसागरे पतितमस्वधर्मे रतम्।
यदीक्षणसुधानिधिः समुदितोऽनुकंपामृता-
दमृत्युमकरोत्क्षणादरणमस्तु मे तत्पदम्।।७।।

इति श्रीविट्ठलेश्वरविरचितं
स्फुरत्कृष्णप्रेमामृतस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।२३।।

अथ यमुनाष्टपदी

नमो देवि यमुने नमो देवि यमुने
हर कृष्णामिलनांतरायम्।
निजनाथमार्गदायिनि कुमारी-
कामपूरिके कुरु भक्तिरायम् ।।ध्रु०।।

मधुपकुलकलितकमलीवलीव्य-
पदेशधारितश्रीकृष्णयुतभक्तहृदये ।

सततमतिशयितहरिभावना-
जाततत्सारूप्यगदितहृदये ।।१।।
निजकूलभवविविधतरुकुसुम-
युतनीरशोभर्या विलसदलिवृंदे।
स्मारयसि गोपीवृन्दपूजित-
सरसमीशवपुरानंदकंदे ।।२।।
उपरि बलदमलकमलारुण-
द्युतिरेणुपरिमलितजलभरेणामुना।
व्रजयुवतिकुचकुम्भकुंकुमारुण-
मुरः स्मारयामि मारपितुरधुना।।३।।
अधिरजनि हरिविहृतिमीक्षितुं
कुवलयाभिधसुभगनयनान्युशति तनुषे।
नयनयुगमल्पमिति बहुतराणि
च तानि रसिकतानिधितया कुरुषे।।४।।
रजनिजागरजनितरागरंजित-
नयनपंकजैरहनि हरिमीक्षसे।
मकरंदरभरमिषेणानंदपूरिता
सततमिह हर्षाश्रु मुंचसे।।५।।
तटगतानेकशुकसारिकामुनि-
गणस्तुतविविधगुणसीधुसागरे।

संगता सततमिह भक्तजन-
तापहृति राजसे रासरससागरे।।६।।

रतिभरश्रमजलोदितकमल-
परिमलव्रजयुवतिमोदे ।
ताटंकचलनसुनिरस्तसंगीत-
युतमदमुदितमधुपकृतविनोदे।।७।।

निजव्रजजनावनात्तगोवर्द्धने
राधिकाहृदयगतहृदयकमले ।
रतिमतिशयितरसविट्ठलस्याशु
कुरु वेणुनिनदाह्वानसरले।।८।।

श्लोकौ।

व्रजपरिवृढवल्लभे कदा त्व-
च्चरणसरोरुहमीक्षणास्पदं मे।
तव तटगतवालुकाः कदाहं
सकलनिजांकगता मुदा करिष्ये।।१।।

वृन्दावने चारुबृहद्वने म-
न्मनोरथं पूरय सूरसूते।
दृग्गोचरः कृष्णविहार एव
स्थितिस्त्वदीये तट एव भूयात्।।२।।

इति श्रीविट्ठलेश्वरविरचिता यमुनाष्टपदी समाप्ता।२४

अथ भुजङ्गप्रयाताष्टकम्

सुधाधामनैजाधराधारवेणुं
करारग्रैरुदग्रैरतिव्यग्रशीलैः ।
सदा पूरयंश्चारयन् गोवरूथान्
पुनः प्रादुरास्तां ममाभीरवीरः ।।१।।

यशोदायशोदानदक्षांबुजाक्ष
प्रतीपप्रमादप्रहाणप्रवीण ।
निजापांगसङोद्भवानङ्गगोपां-
गनापांगनृत्यांगणीभूतदेह ।।२।।

सदा राधिकाराधिकासाधिकाय
प्रतापप्रसादप्रभो कृष्णदेव।
अनङ्गीकृतानङ्गसेव्यन्तरङ्ग
प्रविष्टप्रतापाघहन्मे प्रसीद।।३।।

रमाकांत शांतप्रतीपान्त मेऽतः-
स्थिरीभूतपादांबुजस्त्वं भवाशु।
सदा कृष्णकृष्णोति नाम त्वदीयं
विभो गृह्णतो हे यशोदाकिशोर।।४।।

स्फुरद्रङ्गभूमिष्ठमञ्चोपविष्टो-
च्छलच्छत्रपक्षे भयं चानिनीषो।

अलिव्रातजुष्टोत्तमस्त्रग्धर श्री-
मनोमन्दिर त्वं हरे मे प्रसीद।।५।।

स्मरस्मेर कस्मात्त्वमस्मान् स्वतो न
स्मरस्यम्बुजस्मेरनेत्रानुकम्पिन् ।
स्मितोद्भावितानङ्गगोपांगनांगो-
ल्लसत्स्वांगसत्सङ्गलम्भेश पाहि।।६।।

रमाराम रामामनोहारिवेशी-
द्रुतक्षोणिपालौघपापक्षयेश ।
दरोत्फुल्लपंकेरुहस्मेरहास-
प्रपन्नार्तिहन्नन्दसूनो प्रसीद।।७।।

कुरङ्गीदृशामङ्गसङ्गेन शश्व-
न्निजानन्ददानन्दकन्दातिकाल ।
कलिन्दोद्भवोद्भूतपंकेरुहाक्ष
स्वभक्तानुरक्ताक्तपाद प्रसीद।।८।।

भुजङ्गप्रयाताष्टकेनानुयातो
भुजङ्गे शयानं हरिं संस्तवीति।
रतिस्तस्य कृष्णे भवत्याशु नित्या
किमन्यैः फलैः फल्गुभिः सेवकस्य।।९।।

इति श्रीविट्ठलेश्वरविरचितं भुजंगप्रयाताष्टकम्।।२५।।

अथ राधाप्रार्थनाचतुःश्लोकी

कृपयति यदि राधा बाधिताशेषबाधा
किमपरमवशिष्टं पुष्टिमर्यादयोर्मे।
यदि वदति च किञ्चित्स्मेरहासोदितश्री-
र्द्विजवरमणिपंक्त्या भुक्तिशुक्त्या तदा किम्।।१।।

श्यामसुन्दर शिखण्डशेखर
स्मेरहास्य मुरलीमनोहर।
राधिकारसिक मां कृपानिधे
स्वप्रियचरणकिंकरं कुरू।।२।।
प्राणनाथ वृषभानुनंदिनी
श्रीमुखाब्जरसलोलषट्पद ।
राधिकापदतले कृतस्थिति-
स्त्वां भजामि रसिकेन्द्रशेखर।।३।।

संविधाय दशने तृणां विभो
प्रार्थये व्रजमहेन्द्रनंदन।
अस्तु मोहन तवातिवल्लभा
जन्मजन्मनि मदीश्वरी प्रिया।।४।।

इति श्रीविट्ठलेश्वरविरचिता राधाप्रार्थनाचतुः
श्लोकी सम्पूर्णा।।२६।।

अथ श्रीगोकुलाष्टकम्

श्रीमद्गोकुलसर्वस्वं श्रीमद्गोकुलमण्डनम्।
श्रीमद्गोकुलदृक्तारा श्रीमद्गोकुलजीवनम्।।१।।
श्रीमद्गोकुलमात्रेशः श्रीमद्गोकुलपालकः।
श्रीमद्गोकुललीलाब्धिः श्रीमद्गोकुलसंश्रयः।।२।।
श्रीमद्गोकुलजीवात्मा श्रीमद्गोकुलमानसः।
श्रीमद्गोकुलदुःखघ्नः श्रीमद्गोकुलवीक्षितः।।३।।
श्रीमद्गोकुलसौन्दर्यं श्रीमद्गोकुलसत्फलम्।
श्रीमद्गोकुलगोप्राणः श्रीमद्गोकुलकामदः।।४।।
श्रीमद्गोकुलराकेशः श्रीमद्गोकुलतारकः।
श्रीमद्गोकुलराकेशः श्रीमद्गोकुलसंस्तुतः।।५।।
श्रीमद्गोकुलसंगीतः श्रीमद्गोकुललास्यकृत्।
श्रीमद्गोकुलभावात्मा श्रीमद्गोकुलपोषकः।।६।।
श्रीमद्गोकुलहृत्स्थानं श्रीमद्गोकुलसंवृतः।
श्रीमद्गोकुलदृक्पुष्टः श्रीमद्गोकुलमोदितः।।७।।
श्रीमद्गोकुलगोपीशः श्रीमद्गोकुललालितः।
श्रीमद्गोकुलभोग्यश्रीः श्रीमद्गोकुलसर्वकृत्।।८।।
इमानि श्रीगोकुलेशनामानि वदने मम।
वसन्तु सन्ततं चैव लीला च हृदये सदा।।९।।

इति श्री विट्ठलेश्वरविरचितं
श्रीगोकुलाष्टकं सम्पूर्णम् ।।२७।।

अथ श्रीगोकुलेशाष्टकम्

नन्दगोपभूपवंशभूषणं विदूषणं
भूमिभूतिभूरिभाग्यभाजनं भयापहम्।
धेनुधर्मरक्षणावतीर्णपूर्णविग्रहम्
नीलवारिवाहकांतिगोकुलेशमाश्रये ।।१।।

गोपबालसुन्दरीगणावृतं कलानिधिं
रासमण्डलीविहारकारिकामसुन्दरम् ।
पद्मयोनिशङ्करादिदेववृन्दवन्दितं
नीलवारिवाहकान्तिगोकुलेशमाश्रये ।।२।।

गोपराजरत्नराजिमन्दिरानुरिङ्गणं
गोपबालबालिकाकलानुरुद्धगायनम् ।
सुन्दरीमनोजभावभाजनाम्बुजाननं
नीलवारिवाहकान्तिगोकुलेशमाश्रये ।।३।।

कंसकेशिकुञ्जराजदुष्टदैत्यदारणम्
इन्द्रसृष्टवृष्टिवारिवारणोद्धृताचलम् ।
कामधेनुकारिताभिधानगानशोभितं
नीलवारिवाहकान्तिगोकुलेशमाश्रये ।।४।।

गोपिकागृहांतगुप्तगव्यचौर्यचंचलं
दुग्धभाण्डभेदभीतलज्जितास्यपंकजम् ।

धेनुधूलिधूसरांगशोभिहारनूपुरं
नीलवारिवाहकान्तिगोकुलेशमाश्रये ।।५।।

वत्सधेनुगोपबालभीषणास्यवह्निपं
केकिपिच्छकल्पितावतंसशोभिताननम् ।
वेणुवादमत्तघोषसुन्दरीमनोहरं
नीलवारिवाहकान्तिगोकुलेशमाश्रये ।।६।।

गर्वितामरैन्द्रकल्पकल्पितान्नभोजनं
शारदारविन्दवृन्दशोभिहंसजारतम् ।
दिव्यगन्धलुब्धभृङ्गपारिजातमालिनं
नीलवारिवाहकान्तिगोकुलेशमाश्रये ।।७।।

वासरावसानगोष्ठगामिगोगणानुगं
धेनुदोहदेहमोहविस्मयक्रियम् ।
स्वीयगोकुलेशदानदत्तभक्तरक्षणं
नीलवारिवाहकान्तिगोकुलेशमाश्रये ।।८।।

इति श्रीरघुनाथजीकृतगोकुलेशाष्टकं सम्पूर्णम्।।२८।।

अथ नामरत्नाख्यस्तोत्रम्

यन्नामार्कोदयात्पापध्वांतराशिः प्रशाम्यति।
विकसन्ति हृदङ्गानि तन्नामानि सदाश्रये।।१।।

आनुष्टुभमिह च्छन्द ऋषिरग्निकुमारजः।
सर्वशक्तिसमायुक्तो देवः श्रीवल्लभात्मजः।।२।।

विनियोगः समस्तेष्टसिद्ध्यर्थे विनिरूपितः।
श्रीविट्ठलः कृपासिन्धुर्भक्तवश्योऽतिसुन्दरः।।३।।

कृष्णलीलारसाविष्टः श्रीमान्वल्लभनन्दनः।
दुर्दृश्यो भक्तसन्दृश्यो भक्तिगम्यो भयापहः।।४।।

अनन्यभक्तहृदयो दीनानाथैकसंश्रयः।
राजीवलोचनो रासलीलारसमहोदधिः।।५।।

धर्मसेतुर्भक्तिसेतुः सुखसेव्यो व्रजेश्वरः।
भक्तशोकापहः शान्तः सर्वज्ञः सर्वकामदः।।६।।

रुक्मिणीरमणः श्रीशो भक्तरत्नपरीक्षकः।
रुभक्तरक्षैकदक्षः श्रीकृष्णभक्तिप्रवर्तकः।।७।।

महासुरतिरस्कर्ता सर्वशास्त्रविदग्रणीः।
कर्मजाड्यभिदुष्णांशुर्भक्तनेत्रसुधाकरः ।।८।।

महालक्ष्मीगर्भरत्नं कृष्णवर्त्मसमुद्भवः।
भक्तचिंतामणिर्भक्तिकल्पद्रुमनवांकुरः ।।९।।

श्रीगोकुलकृतावासः कालिन्दीपुलिनप्रियः।
गोवर्धनागमरतः प्रियवृन्दावनाचलः।।१०।।

गोवर्धनाद्रिमखकृन्महेन्द्रमदभित्प्रियः ।
कृष्णलीलैकसर्वस्वः श्रीभागवतभाववित्।।११।।

पितृप्रवर्तितपथप्रचारसुविचारकः ।
व्रजेश्वरप्रीतिकर्ता तन्निमन्त्रणभोजनः ॥१२॥

बाललीलादिसुप्रीतो गोपीसम्बन्धिसत्कथः ।
अतिगम्भीरतात्पर्यः कथनीयगुणाकरः ॥१३॥

पितृवंशोदधिविभुः स्वानुरूपसुतप्रसूः ।
दिव्यचक्रवर्ती सत्कीर्तिर्महोज्ज्वलचरित्रवान् ॥१४॥

अनेकक्षितिपश्रेणीमूर्धासिक्तपदाम्बुजः ।
विप्रदारिद्र्यदावाग्निर्भूदेवाग्निप्रपूजकः ॥१५॥

गोब्राह्मणप्राणरक्षापरः सत्यपरायणः ।
प्रियश्रुतिपथः शश्वन्महामखकरः प्रभुः ॥१६॥

कृष्णानुग्रहसंलभ्यो महापतितपावनः ।
अनेकमार्गसंक्लिष्टजीवस्वास्थ्यप्रदो महान् ॥१७॥

नानाभ्रमनिराकर्ता भक्ताज्ञानभिदुत्तमः ।
महापुरुषसत्ख्यातिर्महापुरुषविग्रहः ॥१८॥

दर्शनीयतमो वाग्मी मायावादनिरासकृत् ।
सदा प्रसन्नवदनो मुग्धस्थितमुखाम्बुजः ॥१९॥

प्रेमार्द्रदृग्विशालाक्षः क्षितिमण्डलमण्डनः ।
त्रिजगद्व्यापिसत्कीर्तिर्धवलीकृतमेचकः ॥२०॥

वाक्सुधाकृष्टभक्तान्तःकरणः शत्रुतापनः ।
भक्तसम्प्रार्थितकरो दाससदासीप्सितप्रदः ॥२१॥

अचिन्त्यमहिमाऽमेयो विस्मयास्पदविग्रहः।
भक्तक्लेशासहः सर्वसहो भक्तकृते वशः।।२२।।

आचार्यरत्नं सर्वानुग्रहकृन्मंत्रवित्तमः।
सर्वस्वदानकुशलो गीतसंगीतसागरः।।२३।।

गोवर्धनाचलसखो गोपगोगोपिकाप्रियः।
चिंतितज्ञो महाबुद्धिर्जगद्वन्द्यपदांबुजः।।२४।।

जगदाश्चर्यरसकृत् सदा कृष्णकथाप्रियः।
सुखोदर्ककृतिः सर्वसन्देहच्छेददक्षिणः।।२५।।

स्वपक्षरक्षणे दक्षः प्रतिपक्षभयंकरः।
गोपिकाविरहाविष्टः कृष्णात्म स्वसमर्पकः।।२६।।

निवेदिभक्तसर्वस्वशरणाध्वप्रदर्शकः ।
श्रीकृष्णानुगृहीतैकप्रार्थनीयपदाम्बुजः ।।२७।।

इमानि नामरत्नानि श्रीविट्ठलपदाम्बुजम्।
ध्यात्वा तदेकशरणो यः पठेत्स हरिं लभेत्।।२८।।

यद्यन्मनस्यभिध्यायेत्तत्तदाप्नोत्यसंशयम् ।
नानारत्नाभिधभिदं स्तोत्रं यः प्रपठेत्सुधीः।।२९।।

तदीयत्वं गृहाणाशु प्रार्थ्यमेतन्मम प्रभो।
श्रीविट्ठलपदांभोजमकरन्दजुषोऽनिशम्।।३०।।

इति श्रीरघुनाथजीविरचितनामरत्नाख्यं स्तोत्रम्।२१

अथ नवनीतप्रियाष्टकम्

अलकावृतलसदलिके विरचितकस्तूरिकातिलके।
चपलयशोदावाले शोभितमाले मतिर्मेऽस्तु।।१।।

मुखरितनूपुरचरणे कटिबद्धक्षुद्रघंटिकाभरणे।
दीपिकारजकृतभूषणभूषिहृदये मतिर्मेऽस्तु।।२।।

करघृतनवनवनीते हितकृतजननीविभीषिकाभीते।
रतिमुद्वहताच्चेतोगोपीभिर्वश्यतां नीते।।३।।

बालदशामतिमुग्धे चोरितदुग्धे व्रजांगनाभवनात्।
तदुपालंभवचोभयविभ्रमनयने मतिर्मेऽस्तु।।४।।

व्रजकर्दमलिप्तांगे स्वरूपसुषमाजितानंगे।
कृतनंदांगणरिंगणविविधविहारे गतिर्मेऽस्तु।।५।।

करवरधृतलघुलकुटे विचित्रमयूरचन्द्रिकामुकुटे।
नासागतमुक्तामणिजटितविभूषे मतिर्मेऽस्तु।।६।।

अभिनन्दनकृतनृत्ये विरचितनिजगोपिकाकृत्ये।
आनन्दितनिजभृत्ये प्रहसनमुदिते मतिर्मेऽस्तु।।७।।

कामादपि कमनीये नमनीये ब्रह्मरुद्राद्यैः।
निःसाधनभजनीये भवतनौ मे मतिर्भूयात्।।८।।

इति श्रीहरिदासोदितं नवनीतप्रियाष्टकम्।।३०।।

अथ जन्मवैफल्यनिरूपणाष्टकम्

नाश्रितो वल्लभाधीशो न च दृष्टा सुबोधिनी।
नाराधि राधिकानाथो वृथा तज्जन्म भूतले।।१।।

न गृहीतं हरेर्नाम नात्माद्यखिलमर्पितम्।
न कृष्णसेवा विहिता वृथा तज्जन्म भूतले।।२।।

न लीलाचिंतनं नैव दीनता विरहाद्धरेः।
नवा कृष्णाश्रयः पूर्णो वृथा तज्जन्म भूतले।।३।।

न नीता वार्तया घस्राः साधवो नैव सेविताः।
न गोविन्दगुणा गीता वृथा तज्जन्म भूतले।।४।।

न कृष्णरूपसौन्दर्यमनो नैव विरागिता।
न दुःसंगपरित्यागो वृथा तज्जन्म भूतले।।५।।

न भक्तिः पुष्टिमार्गीया न निःसाधनता हृदि।
न विस्मृतिः प्रपंचस्य वृथा तज्जन्म भूतले।।६।।

न धर्मपरता नैव धर्ममार्गे मनोगतिः।
न भक्तिज्ञानवैराग्ये वृथा तज्जन्म भूतले।।७।।

न निजस्वामिविरहपरितापो न भावना।
न दैन्यं परमं यस्य वृथा तज्जन्म भूतले।।८।।

इति श्रीहरिदासोदितं जन्मवैफल्यनिरूपणाष्टकम् ।।३१।।

अथ कामाख्यदोषविवरणम्

दोषेषु प्रथमः कामो विविच्य विनिरूप्यते।
यस्मिन्नुत्पद्यते तस्य नाशकः सर्वथा मतः।।१।।

विषयावेशहेतुत्वाद्विक्षेपोत्पत्तिकारणम् ।
रजोगुणसमुत्पन्नो रजःप्रक्षेपको मुखे।।२।।

ब्रह्मावेशविरोधी च सद्बुद्धेर्बाधको मतः।
सत्कर्मनाशकः सर्वप्राकृतसक्तिसाधकः।।३।।

चित्ताशुद्धिनिदानत्वाच्चिदुत्पत्तौ च बाधकः।
भक्तिमार्गमहाद्वेष्टा वैराग्याभावसाधनात्।।४।।

सर्वत्रापरितोषश्चानेन लोभसमुद्भवात्।
यथाकथञ्चित् सांमुख्येंद्रियवैमुख्यकारकः।।५।।

कामलोभौ हरिप्राप्तिप्रतिबन्धकपर्वतौ।
तावुल्लंघ्य न शक्नोति गंतुं कृष्णांतिकं जनः।।६।।

संसारमोहहेतुत्वान् मनोदूषणसाधनम्।
अतः सेवाविरोधी च यतः सा मानसी मता।।७।।

निरोधस्य महाञ्छत्रुरन्यस्फूर्तिकरो यतः।
गुणगानसपत्नोऽपि न रोचंते गुणा यतः।।८।।

वैराग्यसाधकाः सर्वे कामिनस्ते कथं प्रियाः।
अत एव हि दृश्यंते गुणश्रवणवैरिणः।।९।।

क्रोधः स्वकार्यकरणाल्लोभः प्राप्त्याऽपि शाम्यति।
घृतहोमे वह्निरिव कामो भोगेन वर्धते।।१०।।

कामेन नाशितमतिः प्रतिषिद्धे प्रवर्तते।
अगम्यागमने चौर्ये तथैवाभक्ष्यभक्षणे।।११।।

यत उत्पद्यते क्रोधो महद्द्रोहसमुद्भवः।
लोभोऽपि जायते तस्मात्सचार्थविषये भवेत्।।१२।।

सोऽर्थः पञ्चदशानर्थमूलं तत्र प्रवर्तते।
कामेनैव हि कार्पण्यं कामिनीषु सतां मतम्।।१३।।

प्रार्थयंति यतस्तुच्छां प्रवेश्य वदने करम्।
प्रियव्रतसुतो राजा भ्रष्टः कामेन सत्फलात्।।१४।।

आग्नीध्रो विषयावेशादूर्वशीलोकमापितः।
कामेन काश्यपो दैत्योत्पादने हेतुतां गताः।।१५।।

निवृत्तसंध्यानियमः पत्नीप्रार्थनमोहितः।
कामेन च शिवः कृष्णायुवतीरूपवंचितः।।१६।।

कामेन नारदः षष्ठिपुत्रानजनयत्स्वतः।
गर्वाभावाय हरिणा दत्तः कामो महाशनः।।१७।।

कामेन भरतस्यापि हरिणत्त्वं भवांतरे।,
पुरंजनोऽपि कमने स्त्रीयोनिमुपलब्धवान्।।१८।।

कामेन वेदगर्भोऽपि स्वसुतायां तथाऽकरोत्।
तेनैव रावणो बुद्धिं रमायामन्यथाऽकरोत्।।१९।।

एवं हि बहवो नष्टाः कामेनैव हि साधवः।
भक्तिमार्गे विरोधस्तु तत्र कामकृतो महान्।।२०।।
कामितः फलवांच्छतः शरणं नैव सिद्ध्यति।
सापेक्षस्य तु सर्वत्र दुर्लभं हि समर्पणम्।।२१।।
तदभावे तदीयत्वं सर्वथैव हि दुर्लभम्।
साधारण्येन बुद्धिः स्यात्तेन!लीलास्थितेष्वपि।।२२।।
कामलेन यथा पीतप्रतीतिरखिले भवेत्।
पञ्चाध्याय्यामतः प्रोक्तं हृद्रोगत्त्वं शुकैरपि।।२३।।
दोषबुद्धिः कामिनस्तु भवेल्लीलाकृतो हरेः।
निबन्धे श्रीमदाचार्यैरत इन्द्रियनिग्रहे।।२४।।
अत्यागः सर्वथा प्रोक्तो भगवद्भक्तिसाधकः।
कौतुकार्थमपि त्यागो धर्मार्थमपि वर्जितः।।२५।।
स्वयमिन्द्रियकार्याणीत्युक्त्या धैर्यविभंजनः।
विवेकस्य विरोध्येव तदस्फूर्तिकरो यतः।।२६।।
आश्रयस्तु कथं सिध्येन्मनोविक्षेपसंभवात्।
भक्तिमार्गोपि मूलत्वात्त्यागस्य नहि सिद्ध्यति।२७।।
बाह्यपक्षे कृष्णयोगः सर्वथा त्वांतरे मतः।
परं तूभयथा त्यागो मूलमन्त्र न संशयः।।२८।।
कामे सति कथं त्यागः सापेक्षस्य प्रसिद्ध्यति।
तस्माद्विचार्य तद्रूपं दुरतिक्रमणं स्वतः।।२९।।

शरणीकरणीयं श्रीनिजाचार्यपदांबुजम्।
साधनानामभावेऽपि स्ववलाऽखिलसाधनम्।।३०।।

तत एव त निस्तारो दोषपोषयुतात्मनाम्।
नान्या गतिर्गोकुलेशभजनानंदकांक्षिणाम्।।३१।।

इति श्रीहरिदासविरचितं कामाख्यदोषविवरणं संपूर्णम्

अथ वल्लभशरणाष्टकम्

निःसाधनजनोद्धारकरणप्रकटीकृतः ।
गोकुलेशस्वरूपः श्रीवल्लभः शरणं मम।।१।।

भजनानन्ददानार्थं पुष्टिमार्गप्रकाशकः।
करुणावरणीयः श्रीवल्लभः शरणं मम।।२।।

स्वामिनीभावसंयुक्तभगवद्भावभावितः ।
अत्यलौकिकमूर्तिः श्रीवल्लभः शरणं मम।।३।।

श्रीकृष्णावदनानन्दो वियोगानलमूर्तिमान्।
भक्तिमार्गाब्जभानुः श्रीवल्लभः शरणं मम।।४।।

रासलीलारसभरसमक्रान्ताऽखिलांगभृत् ।
भावरूपाखिलांगः श्रीवल्लभः शरणं मम।।५।।

श्रीभागवतभावार्थविर्भावार्थानतारितः ।
स्वामिसंतोषहेतुः श्रीवल्लभः शरणं मम।।६।।

वल्लवीवल्लभांतःस्थलीलानुभववल्लभः।
अन्यास्फुरणरूपः श्रीवल्लभः शरणं मम।।७।।

जितांभोजपदांभोजविभूषितवसुंधरः ।
सदा गोवर्धनस्थः श्रीवल्लभः शरणं मम।।८।।

अनन्यस्तन्मना नित्यं पठेद्यः शरणाष्टकम्।
स लभेत्साधनाभावयुक्तोऽप्येतत्पदाश्रयः।।९।।

इति श्रीहरिरायजीविरचितं
श्रीवल्लभ शरणाष्टकं संपूर्णम्।

अथ वल्लभपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

श्रीवल्लवीवल्लभास्य वियोगाग्ने कृपाकर।
अलौकिकनिजानन्द श्रीवल्लभ तवास्म्यहम्।।१।।

कृष्णाधरसुधाधारभरितावयवावृत ।
श्रीभागवतभावाब्धे श्रीवल्लभ तवास्म्यहम्।।२।।

भावात्मकस्वरूपार्तिभावसेवाप्रदर्शक ।
भाववल्लभ्यपादाब्ज श्रीवल्लभ तवास्म्यहम्।।३।।

करुणायुतदृक्प्रांतपातपातकनाशक ।
निःसाधनजनाधीश श्रीवल्लभ तवास्म्यहम्।।४।।

मधुरास्यातिमधुरदृगन्त मधुराधर।
स्वरूपमधुराकार श्रीवल्लभ तवास्म्यहम्।।५।।

दीनतामात्रसंतुष्ट दीनतामार्गबोधक।
दीनतापूर्णहृदय श्रीवल्लभ तवास्म्यहम्।।६।।

अङ्गीकृतकृतानेकापराधविहतिक्षम।
गृहीतहस्तनिर्वाह श्रीवल्लभ तवास्म्यहम्।।७।।

अशेषहरिदासैकसेवितस्वपदांबुज।
अदेयफलदानर्थं श्रीवल्लभ तवास्म्यहम्।।८।।

इतिश्रीहरिदासोक्तंश्रीवल्लभपंचाक्षरस्तोत्रसंपूर्णम्।।

अथ वल्लभभावाष्टकम्

पतिः श्रीवल्लभोऽस्माकं गतिः श्रीवल्लभः सदा।
मतिः श्रीवल्लभे ह्यस्तां रतिः श्रीवल्लभेऽस्तु मे।।१।।

वृत्तिः श्रीवल्लभीयैव कृतिः श्रीवल्लभार्थिनी।
दर्शनं श्रीवल्लभस्य स्मरणं वल्लभप्रभोः।।२।।

त्वत्प्रसादसुधाघ्राणं त्वदुच्छिष्टरसाग्रहः।
श्रवणं त्वद्गुणानां हि स्मरणं त्वत्पदाब्जयोः।।३।।

गृणनं तन्महित्वस्य सेवनं करयोर्भवेत्।
त्वत्स्वरूपांतरो भोगो गमनं तव सन्निधौ।।४।।

त्वदग्रे सर्वदा स्थानं संगस्त्वत्सेवकैः सदा।
त्वद्वार्ताऽतिरुचिर्निष्ठा भूयात्त्वद्वाक्यमात्रगा।।५।।

श्रद्धा त्वदेकसंबंधे विश्वासस्त्वत्पदाब्जयोः।
दास्यं त्वदीयमेवास्तु भूयात्तवच्चरणाश्रयः।।६।।

मस्तके श्रीवल्लभोस्तु हृदि तिष्ठतु वल्लभः।
अभितः श्रीवल्लभोऽस्तु सर्वं श्रीवल्लभो मम।।७।।

नमः श्रीवल्लभायैव दैन्यं श्रीवल्लभे सदा।
प्रार्थना श्रीवल्लभेऽस्तु तत्पदाधीनता मम।।८।।

एतदष्टकपाठेन श्रीवल्लभपदांबुजे।
भवेद्भावो विनायासं भक्तिमार्गवृतात्मनाम्।।९।।

इति श्रीहरिदासोक्तं श्रीवल्लभभावाष्टकम् संपूर्णम्।।

अथ श्रीकृष्णाशरणाष्टकम्

सर्वसाधनहीनस्य पराधीनस्य सर्वतः।
पापपीनस्य दीनस्य श्रीकृष्णः शरणं मम।।१।।

संसारसुखसंप्राप्तिसन्मुखस्य विशेषतः।
बहिर्मुखस्य सततं श्रीकृष्णः शरणं मम।।२।।

सदा विषयकामस्य देहारामस्य सर्वथा।
दुष्टस्वभाववामस्य श्रीकृष्णः शरणं मम।।३।।

संसारसर्पदष्टस्य धर्मभ्रष्टस्य दुर्मतेः।
लौकिकप्राप्तिकष्टस्य श्रीकृष्णः शरणं मम।।४।।

विस्मृतस्वीयधर्मस्य कर्ममोहितचेतसः।
स्वरूपज्ञानशून्यस्य श्रीकृष्णः शरणं मम।।५।।

संसारसिंधुमग्नस्य भग्नभावस्य दुष्कृतेः।
दुर्भावलग्नमनसः श्रीकृष्णः शरणं मम।।६।।

विवेकधैर्यभक्त्यादिरहितस्य निरंतरम्।
विरुद्धकरणासवतेः श्रीकृष्णः शरणं मम।।७।।

विषयाक्रांतदेहस्य वैमुख्यहृतसन्मतेः।
इंद्रियाश्वगृहीतस्य श्रीकृष्णः शरणं मम।।८।।

एतदष्टकपाठेन ह्येतदुक्तार्थभावनात्।
निजाचार्चपदांभोजसेवकोदैन्यमाप्नुयात् ।।९।।

इति श्रीहरिदासविरचितं श्रीकृष्णाशरणाष्टकंसंपूर्णम्।

अथ दैन्याष्टकम्

श्रीकृष्ण गोकुलाधीश नंदगोपतनूद्भव।
यशोदागर्भसंभूत मयि दीने कृपां कुरु।।१।।

व्रजानंद व्रजावास व्रजस्त्रीहृदयस्थित।
व्रजलीलाकृते नित्यं मयि दीने कृपां कुरु।।२।।

श्रीभागवतभावार्थरसात्मन् रसिकात्मक।
नामलीलाविलासार्थं मयि दीने कृपां कुरु।।३।।

यशोदाहृदयानंद विहितांगणरिंगण।
अलकावृतवक्त्राब्ज मयि दीने कृपां गुरु।।४।।
विरहार्तिव्रतस्थात्मन् गुणगानश्रुतिप्रिय।
महादैन्यदयोद्भूत मयि दीने कृपां कुरु।।५।।
अत्यासक्तजनासक्त परोक्षभजनप्रिय।
परमानंदसंदोह मयि दीने कृपां कुरु।।६।।
निरोधशुद्धहृदय दयितागीतमोहित।
आत्यंतिकवियोगात्मन्मयि दीने कृपां कुरु।।७।।
स्वाचार्यहृदयस्थायिलीशतयुतं प्रभो।
सर्वथा शरणं याते मयि दीने कृपां कुरु।।८।।

इति श्रीहरिदासोक्तं दैन्याष्टकं संपूर्णम्।।

अथ पुष्टिमार्गलक्षणानि

सर्वसाधनराहित्यं फलाप्तौ यत्र साधनम्।
फलं वा साधनं यत्र पुष्टिमार्गः स कथ्यते।।१।।
अनुग्रहेणैव सिद्धिर्लौकिकी यत्र वैदिकी।
यत्नादन्यथा विघ्नः पुष्टिमार्गः सः कथ्यते।।२।।
स्वरूपमात्रपरता तात्पर्यज्ञानपूर्वकम्।
धर्मनिष्ठा यत्र चैव पुष्टिमार्गः स कथ्यते।।३।।

यत्रांगीकरणेनैव योग्यतादिविचारणम्।
अविलंबः प्रभुकृतः पुष्टिमार्गः स कथ्यते।।४।।

यत्र प्रभुकृतं नैव गूणदोषविचारणम्।
अविलंबः प्रभुकृतः पुष्टिमार्गः स कथ्यते।।५।।

न लोकवेदसापेक्षं सर्वथा यत्र वर्तते।
सापेक्षता स्वामिमुखे पूष्टिमार्गः स कथ्यते।।६।।

वरणे दृश्यते यत्र हेतर्नाणुरपि स्वतः।
वरणं च निजेच्छातः पुष्टिमार्गः स कथ्यते।।७।।

यत्र स्वतंत्रता भक्तेराविर्भावानपेक्षणात्।
सानुभावस्वरूपत्वं पुष्टिमार्गः स कथ्यते।।८।।

लोकवेदभयाभावो यत्र भावातिरेकतः।
सर्वबाधकतास्फूर्तिः पुष्टिमार्गः स कथ्यते।।९।।

संबंधः साधनं यत्र फलं संबंध एव हि।
सोऽपि कृष्णेच्छया जातः पुष्टिमार्गः सकथ्यते।।१०।।

तत्संबंधिषु तद्भावस्तद्भिन्नेषु विरोधिता।
उदासीनेषु समता पुष्टिमार्गः स कथ्यते।।११।।

विद्यमानस्य देहादेर्न स्वीयत्वेन भावनम्।
परोक्षेऽपि तदर्थित्वं पुष्टिमार्गः स कथ्यते।।१२।।

भजने यत्र सेव्यस्य नोपकारकृतिः क्वचित्।
पोषणं भावमात्रस्य पुष्टिमार्गः स कथ्यते।।१३।।

भजनस्यापवादो न क्रियते फलदानतः।
प्रभुणा यत्र तद्भावात्पुष्टिमार्गः स कथ्यते।।१४।।
यत्र वा सुखसंबंधो वियोगे संगमादपि।
सर्वलीलानुभावेन पुष्टिमार्ग सः कथ्यते।।१५।।
फले च साधने चैव सर्वत्र विपरीतता।
फलाभावः साधनस्य पुष्टिमार्गः स कथ्यते।।१६।।
पश्चात्तापः सदा यत्र तत्संबंधिकृतावपि।
वैन्योद्भावाय सततं पुष्टिमार्गः स कथ्यते।।१७।।
आविर्भावाय सापेक्षं दैन्यं यत्र हि साधनम्।
फलं वियोगजं दैन्यं पुष्टिमार्गः स कथ्यते।।१८।।
विषयत्वेन तत्त्यागःस्वस्मिन् विषयातास्मृतेः।
यत्र वै सर्वभावेन पुष्टिमार्गः स कथ्यते।।१९।।
एवंविधैर्विशेषेण प्रकारैस्तु सदाश्रितैः।
हृदि धृत्वा निजाचार्यान्पुष्टिमार्गो हि बुध्यताम्।।२०।।

इतिश्रीहरिदासनिरूपितपुष्टिमार्गलक्षणानिसंपूर्णानि।।

अथ चतुःश्लोकी

निजाचार्येषु सततं मनस्तत्प्रियसुनुषु।
स्थापनीयं न चान्येषु सममत्या कदाचन।।१।।

विधेया कृष्णसेवैव स्वमार्गेण स्वभावतः।
अन्याश्रयः परित्याज्यो ह्यसमर्पितभक्षणम्।।२।।

स्वमार्गे वसतामेव सतां संगो विधीयताम्।
मनसा नाऽसता कार्यो वलवद्वाधकत्वतः।।३।।

निवेदनानुसंधानं देहादेरन्ययोगतः।
जातान्यथाभावबाधभावाय क्रियतां वशी।।४।।

इति श्रीहरिदासोदिता चतुःश्लोकी समाप्ता।।

अथ स्वप्रभुस्वरूपनिरूपणाष्टकम्

स्वामिनीभावगौरस्य स्वस्वरूपं प्रपश्यतः।
कटाक्षैर्विट्ठलेशस्य श्यामताचित्रितं वपुः।।१।।

स्वास्मिन्नभयभावेन स्वेषामुभयरूपताम्।
स्पष्टं बोधयितुं गौरश्यामः श्रीविट्ठलेश्वरः।।२।।

निजाचार्योदितस्वीयमार्गसेव्यस्वरूपताम्।
बोधयन्नभयात्माऽयं गौरश्यामो विराजते।।३।।

रसस्य द्विविधस्यापि स्वरूपे बोधयन् स्थितिम्।
ऐक्यं विरुद्धधर्मत्वाद्गौरश्यामः कृपानिधिः।।४।।

स्त्रीभावभगवद्भावोभयात्मेति विबोधितुम्।
स्वस्वरूपं हरिर्गौरश्यामः श्रीविट्ठलेश्वरः।।५।।

भावात्मकत्वतो दृष्टिर्हासलीला कृतिस्तथा।
अतोविलोक्यते गौरश्यामः श्रीविट्ठलेश्वरः।।६।।

निजानंदप्रदानेन व्यवधाने दिवानिशम्।
न करोति व्रजस्थानमिति श्रीमत्प्रभुस्तथा।।७।।

सर्वात्मकामभावात्मस्वरूपं बोधयन्प्रभुः।
श्रीविट्ठलेश्वरोऽस्माकं गौरश्यामो विराजते।।८।।

इति श्रीहरिदासोदितं स्वप्रभुस्वरूप-
निरूपणाष्टकं संपूर्णम्।।

अथ श्रीकृष्णप्रेमामृतम्

एकदा कृष्णविराहाद्ध्यान्ती प्रियसङ्गमम्।
मनोवाष्पनिरासाय जल्पन्तीदं मुहुर्मुहुः।।१।।

कृष्णः कृष्णेन्दुरानन्दो गोविन्दो गोकुलोत्सवः।
गोपालो गोपगोपीशो वल्लभेन्द्रो व्रजेश्वरः।।२।।

प्रत्यहं नूतनतरस्तरुणानन्दविग्रहः।
आनन्दकन्दसुखस्वामी सन्तोषाक्षयकोषभूः।।३।।

आभीराविभनवानन्दः परमानन्दकन्दलः।
वृन्दावनकलानाथो व्रजानङ्गनवांकुरः।।४।।

नयनानन्दकुसुमो व्रजभाग्यफलोदयः।
प्रतिक्षणातिसुखदो मोहनो मधुरद्युतिः॥५॥

सुधानिर्यासनिचयः सुन्दरः शीतलाकृतिः।
नवयौवनसम्भिन्नश्यामामृतरसार्णवः॥६॥

इन्द्रनीलमणिस्वच्छो दलिताञ्जनचिक्कणः।
इन्दीवरसुखस्पर्शो नीरदस्निग्धसुन्दरः॥७॥

कर्पूरागरुकस्तूरीकुङ्कुमाक्ताङ्गधूसरः।
सङ्कुचितकचग्रस्तोल्लसच्चारुशिखण्डकः॥८॥

मत्तालिविभ्रमात्पारिजातपुष्पावतंसकः।
आननेन्दुजितानन्तपूर्णशारदचन्द्रमाः॥९॥

श्रीमल्ललाटपाटीरतिलकालकरञ्जितः।
लीलोन्नतभ्रूविलासोमदालसविलोचनः॥१०॥

आकर्णारक्तसौन्दर्य लहरिदृष्टिमन्थरः।
घूर्णायमाननयनः संवीक्षणविचक्षणः॥११॥

अपाङ्गेरितसौभाग्यतरलीकृतलोचनः।
ईषन्मुद्रितलोलाक्षःसुनासापुटसुंदरः॥१२॥

गण्डप्रान्तोल्लसत्कर्णमकराकृतिकुण्डलः।
प्रसन्नागत्ववदनो जगदाह्लादकाननः॥१३॥

सस्मेराधरलावण्यकाशीकृतदिन्मुखः।
सिन्दूरारुणसुस्निग्धमाणिक्यदशनच्छदः॥१४॥

पीयूषाधिकमाध्वीकसूक्तश्रुतिरसायनः ।
त्रिभङ्गललितस्तिर्यग्ग्रीवस्त्रैलोक्यमोहनः ॥१५॥

कुंचिताधरसंसक्तकूजद्वेणुविनोदवान् ।
कंकणाङ्गदकेयूरमुद्रिकाविलसद्भुजः ॥१६॥

स्वर्णसूत्रसुविन्यस्तकौस्तुभामुक्तकन्धरः ।
मुक्ताहारलसद्वक्षःस्फुरच्छ्रीवत्सलांच्छनः ॥१७॥

आपीनहृदयो नीपमाल्यवान्बन्धुरोदरः ।
सेवितपीतवसनो रशनाविलसत्कटिः ॥१८॥

अन्तरीयपटीबन्धप्रपदान्दोलिताञ्चलः ।
अरविन्दपदद्वंद्वकलक्वणितनूपुरः ॥१९॥

बन्धूकारुणमाधुर्यसुकुमारपदाम्बुजः ।
नखचन्द्रजिताशेषदर्पणेन्द्रमणिप्रभः ॥२०॥

ध्वजवज्रांकुशाम्भोजराजच्चरणपल्लवः ।
त्रैलोक्याद्भुतसौन्दर्यपरिपाकमनोहरः ॥२१॥

साक्षत्केलिकलामूर्तिः परिहासरसार्णवा ।
यमुनोपवनश्रेणीविहारि व्रजनागरः ॥२२॥

गोपाङ्गनाजनासक्तो वृन्दारण्यपुरन्दरः ।
आभीरनागरीप्राणनायकःकामशेखरः ॥२३॥

यमुनानाविको गोपीपारावारकृतोद्यमः ।
राधावरुन्धनरतः कदम्बवनमन्दिरः ॥२४॥

व्रजयोषित्सदाहृद्यो गोपीलोचनतारकः।
जीवगानन्दरसिकः पूर्णानन्दकुतूहलः॥२५॥

गोपिकाकुचकस्तूरीपङ्किलः कोकिलालसः।
अलक्षितकुटीरस्थो राधासर्वस्वसम्पुटः॥२६॥

वल्लवीवदनांभोजमधुपानमधुव्रतः।
निगूढरसविद्गोपीचित्तह्लादकलानिधिः॥२७॥

कालिन्दीपुलिनानन्दी क्रीडाताण्डवपण्डितः।
आभीरिकानवानङ्गरङ्गभूमिसुधाकरः॥२८॥

विदग्धगोपवनिताचित्ताकूतविनोदवान्।
नानोपायनपाणिस्वगोपनारीगणावृतः॥२९॥

वांच्छाकल्पतरुः कामकलारसशिरोमणिः।
कन्दर्पकोटिलावण्यः कोटीन्दुललितद्युतिः॥३०॥

नवीनमधुरस्नेहः प्रेयसीप्रेमसंचयः।
गोपीमनोरथाक्रान्तो नाट्यलीलाविशारदः॥३१॥

जगत्रयमनोमोहकरो मन्मथमन्मथः।
गोपसीमन्तिनीशश्वद्भावापेक्षापरायणः॥३२॥

प्रत्यङ्गरभसावेशप्रमदाप्राणवल्लभः।
रासोल्लासमदोन्मती राधिकारतिलम्पटः॥३३॥

खेलालीलापरिश्रान्तः स्वेदाङ्कुरचिताननः।
गोपिकाङ्कलसच्छ्रीमान्मलयानिलसेवितः॥३४॥

इत्येवं प्राणनाथस्य प्रेमामृतरसायनम्।
यः पठेच्छ्रावयेद्वापिसप्रेम्णि प्रमिलेद्ध्रुवम्।।३५।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं प्रेमामृतं संपूर्णम्।

अथ श्रुतिगीता

प्राकृताः श्रुतयः सर्वा भगवन्तमधोक्षजम्।
स्तुवन्ति दोषनाशाय तत्राविष्टो भवेद्यथा।।१।।
सत्यो हरिः समस्तेषु भ्रमभातेष्वपि स्थिरः।
अतः सन्त समस्तार्थे कृष्णमेव विजानते।।२।।
कथानन्त्योक्तिहृदयाः साधनानि न कुर्वते।
साक्षात्ते पादसंश्लिष्टास्ते किं वाच्या महाशयाः।।३।।
कृष्ण एव सदा सेव्यो निर्णीतः पञ्चधा बुधैः।
शरीरदः प्रेरकश्च सुखदः शेषसत्पदः।।४।।
कर्मरूपं हरिं केचित् सेवन्ते योगरूपिणम्।
तेभ्योऽप्यक्षररूपस्य सेवकाः सम्मताः सताम्।।५।।
सर्वत्र भगवांस्तुत्यः सर्वदोषविवर्जितः।
क्रीडार्थमनुकुर्वन्हि सर्वत्रैव विराजते।।६।।
गुप्तानन्दा यतो जीवा निरानंदं जगद्यतः।
पूर्णानन्दो हरिस्तस्माज्जीवैः सेव्यः सुखार्थिभिः।।७।।

कृष्णे हरौ भगवति परमानन्दसागरः।
वर्तते नात्र संदेहः कथा तत्र नियामिका।।८।।

असत्सङ्गो न कर्तव्यो भक्तिमार्गस्य बाधकः।
देहे ह्यनुगुणे कृष्णे नेन्द्रियाणां प्रियं चरेत्।।९।।

सर्व एव हरेर्भक्तास्तुल्या यान्मन्यते हरिः।
अतः कृष्णो यथात्मीयान्मन्यते भजनं तथा।।१०।।

ज्ञानमार्गो भ्रान्तिमूलमतः कृष्णं भजेद् बुधः।
प्रवर्तकं ज्ञानकाण्डं चित्तशुद्ध्यै यतो भवेत्।।११।।

भ्रान्तिमूलतया सर्वसमयानामयुक्तितः।
न तद्विरोधात्कृष्णाख्यं परं ब्रह्म त्यजेद्बुधः।।१२।।

जीवानां ब्रह्मरूपत्वाद्दोष अपि च मानसाः।
जगच्च सकलं ब्रह्म ततो दोषः कथं हरौ।।१३।।

सर्वथा सर्वतः शुद्धा भक्ता एव न चापरे।
अतः शुद्धिमभीप्सद्भिःसेव्या भक्ता न चापरे।।१४।।

सुवर्णप्रतिमावासौ सर्वान्दमयोधिराट्।
सर्वसेव्यो नियन्ता च निर्दुष्टः सर्वथैव हि।।१५।।

सर्वभावविनिर्मुक्तः पूर्णः क्रीडार्थमुद्गतः।
निमित्तं तं समाश्रित्य जायन्ते जीवराशयः।।१६।।

नियन्ता जीवसङ्घस्य हरिस्तेनाणवो मताः।
जीवा न व्यापकाः क्वापिचिन्मया ज्ञानिनो मताः।।१७।।

नामरूपप्रपञ्चं हि देवतिर्यङ्नरात्मकम्।
कृष्णादेव समुद्भूतं लीनं तत्रैव तन्मयम्।।१८।।
नृणां दुर्गतिमालोक्य ये सेवन्ते दृढव्रताः।
कृष्णं तद्भ्रूकुटिः कालो न तान् हन्ति कदाचन।।१९।।
अदान्ते मनसि ज्ञानयोगार्थं न यतेद् बुधः।
गुरुसेवापरो भूत्वा भक्तिमेव सदाभ्यसेत्।।२०।।
सर्वलोकोपकारार्थं कृष्णेन सहितास्तु ते।
परिभ्रमन्ति लोकानां निस्ताराय महाशयाः।।२१।।
पुत्रादीन्सम्परित्यज्य कृष्णः सेव्यो न तैः सह।
तत्सुखं भगवान् दाता ते तु क्लिष्टेऽतिदुःखदाः।।२२।।
परिभ्रमंस्तीर्थनिष्ठो गुरुलब्धहरिस्मृतिः।
न सेवेत गृहान्!दुष्टान् सद्धर्मात्यन्तनाशकान्।।२३।।
सद्बुद्ध्या सर्वथा सद्भिर्नसेव्यमखिलं जगत्।
भ्रान्त्या सद्बुद्धिरत्रेति सन्तं कृष्णं भजेद् बुधः।।२४।।
खपुष्पादिसमत्वाद्धि मिथ्याभूतं जगद्यतः।
अधिष्ठानाच्चसद्भानं तं कृष्णं नियतं भजेत्।।२५।।
कालादितृणपर्यन्ता न सेव्या मुक्तिमिच्छता।
दोषत्याजनशक्तो हि सेव्यो दाता गणस्य च।।२६।।
जीवेषु भगवानात्मा संच्छन्नस्तेन तत्र न।
भजनं सर्वथा कार्यं ततोऽन्यत्रैव पूजयेत्।।२७।।

सुखसेवापरो यस्तु सदानन्दं हरिं भजेत्।
अन्यथा सुखमप्रेप्सुः सर्वथा दुःखमाप्नुयात्।।२८।।

कृष्णानन्दः परानन्दो नान्यानन्दस्तथाविधः।
वेदा अपि न तच्छक्ताः प्रतिपादयितुं स्वतः।।२९।।

इत्येव श्रुतिगीतायाः संक्षेपेण निरूपितः।
अर्थराशिसमुद्रो हि यथांगुल्या निरूप्यते।।३०।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचिता श्रुतिगीता सम्पूर्णा।

अथ श्रीस्वामिन्यष्टकम्

रहस्यं श्रीराधेत्यखिलनिगमानामिव धनम्,
निगूढं यद्वाणी जपत सततं जातु न परम्।
प्रदोषे दृग्मोषे पुलिनगमनायातिमधुरं
बलत्तस्याश्श्रञ्चच्चरणयुगमास्तां मनसि मे।।१।।

अमन्दप्रेमार्द्रप्रियकरतलं कुंकुमपिष-
त्कुचद्वन्द्वे वक्षस्यपि च दधती चारु सततम्।
कृपां कुर्याद्राधा मयि रुचिरहेमाद्रिशिखरो-
दितप्रावृण्मेघस्मरहरहरी चूचुकमिषात्।।२।।

निमन्त्र्य प्रातर्या निजहृदनाथं निरुपमा
सुकौमार्यैकाकिन्यतिघनवनादात्मभवने ।

वधायान्नं स्वादु स्वयमतिमुदा भोजयति सा
मयि प्रीता राधा भवतु हरिसङ्गार्पितमनाः।।३।।

विधाय श्यामांसे निजभुजलतामिन्दुवदनं
कटाक्षैः पश्यन्ती कुवलयदलाक्षी मधुपतेः।
मुदा गायन्ती या मधुरमुरलीजातनिन्दा-
नुसारं तारं सा फलतु मम राधवदनयोः।।४।।

अमन्दप्रेमार्द्रात्किसलयमयात्कोलशयना-
दुषस्युत्थायाब्जारुणतरकपोलातिरुचिरा ।
गृहं यान्ती श्रान्तिस्थगितगतिरास्याम्बुजगतं
घनीभूतं राधा रसमनुदिनं मे वितरतु।।५।।

प्रियेणाक्ष्णा संसूचितनवनिकुञ्जेषु विविध-
प्रसूनैर्निर्मायातिशयरुचिरं केलिशयनम्।
दिगत्येषा गुञ्जन्मधुपमुखरे धारपवनी-
श्रिते क्रीडन्ती मे निजचरणदास्यं वितरतु।।६।।

कदम्बारूढं या निजपतिमजानन्त्यहनि त-
त्त्ले कुर्वन्ती स्वप्रियतमसखीभिः सह कथाम्।
अकस्मांदुद्वीक्ष्य स्फुटतरलहारोरसमिति
स्मितस्मेरव्रीडाननमुदिरदृक् सा मम गतिः।।७।।

न मे भूयान्मोक्षो न पुनरमराधीशसदनम्
न योगो न ज्ञानं न विषयसुखं दुःखकदनम्।

त्वदुच्छिष्टं भोज्यं तव पदजलं पेयमपि त-
द्रजो मूर्ध्नि स्वामिन्यनुसवनमस्तु प्रतिभावम्।।८।।

इति श्रीमग्द्रोपीजनचरणपङ्केरुहयुगा-
नुगत्यानन्दाम्भोनिधिविभृतवाक्कायमनसा।
मयेदं प्रदुर्भावितमतिसुखं विट्ठलपदा-
भिधेये मय्येव प्रतिफलतु सर्वत्र सततम्।।९।।

इति श्रीविट्ठलेश्वरविरचितं स्वामिन्यष्टकम्।

अथ दानलीलाष्टकम्

सदा चन्द्रावल्या कुसुमशयनीयादि रचितुं
सहासं प्रोक्ताः स्वप्रणयिग्रहचर्यः प्रमुदिताः।
निकुञ्जेष्वन्योन्यं कृतविवधतल्पेषु सरसां
कथास्वस्वामिन्यासपदि कथयन्ति प्रियतमाम्।।१।।

अशेषसुकृतोदयैरखिलमङ्गलैर्वेधसा
मनोरथशतैः सदा मनसि भावितैर्निर्मिते।
अहन्यतिमनोहरे निजगृहाद्विहारेच्छया
सखीशतवृताऽचलद्व्रजवनेषु चन्द्रावली।।२।।

समुद्ग्रथितमालतीकुबकादिपुष्पावली-
गलत्परिमलोन्मदभ्रमरयूथसन्नादितम् ।

उदारमतिचित्रितं मृगमदादिभिर्बिभ्रती
मनोभवमदापहं किमपि केशपाशं सखी॥३॥

श्यामेन्दोरनुरूपां विधिरचितां तारकामहं मन्ये।
यत्तत्करनखकिरणो न जातु सख्यस्त्यजन्तीमाम्॥४॥

कुंकुममृगमदमलयजचित्रितकुसुमं तदीयधम्मिल्लम्।
नो किन्तु कुसुमधनुषस्तूणीरं सर्जितं विधिना॥५॥

न धम्मिल्लो मौग्ध्यामृतजलमुचामेष निचयो
न पुष्पाणीमानि त्रिदशपतिमौर्वीपरिणतिः।
न मुक्तागुच्छानि प्रकटसुखगात्रः करतरो
न काश्मीरोद्भूतासुभगतररेखा तडिदियम्॥६॥

निसर्गसुन्दरोऽप्यालिसूक्ष्मचित्राम्बरान्तरे ।
गूढो भाव इवैतस्याः सोऽदृश्यत विलक्षणः॥७॥

मत्समर्पितसिन्दूररेखोपरि परिस्थिता।
मुक्ताफलावलीमाला सीमान्ते विभ्रती बभौ॥८॥

इति श्रीविट्ठलेश्वरविरचितं दानलीलाष्टकम्।

अथ द्वितीया चतुःश्लोकी

सदा सर्वात्मभावेन भजनीयो व्रजेश्वरः।
करिष्यति स एवास्मदैहिकं पारलौकिकम्॥१॥

अन्याश्रयो न कर्त्तव्यः सर्वथा बाधकस्तु सः।
स्वकीये स्वात्मभावाच्च कर्तव्यः सर्वथा सदा।।२।।

सदा सर्वात्मना कृष्णः सेव्यः कालादिदोषनुत्।
तद्भक्तेषु च निर्दोषभावेन स्थेयमादरात्।।३।।

भगवत्येव सततं स्थापनीयं मनः स्वयम्।
कालोऽयं कठिनोऽपि श्रीकृष्णभक्तान्न बाधते।।४।।

इति श्रीविट्ठलेश्वरोक्ता द्वितीया चतुःश्लोकी समाप्ता।

अथ वृत्रचतुःश्लोकी

अहं हरे! तव पादैकमूल-
दासानुदासो भविताऽस्मि भूयः।
मनः स्मरेतांसुपतेर्गुणांस्ते
गृहीतवाक् कर्म करोतु कायः।।१।।

न नाकपृष्ठं न च पारमेष्ठ्यं
न सार्वभौमं न रसाधिपत्यम्।
न योगसिद्धीरपुनर्भवं वा
समञ्जस! त्वा विरहय्य काङ्क्षे।।२।।

अजातपक्षा इव मातरं खगाः
स्तन्यं यथा वत्सतराः क्षुधार्त्ताः।

प्रियं प्रियेवव्युषितं विषण्णा
मनोऽरविन्दाक्ष! दिदृक्षते त्वाम्।।३।।
ममोत्तमश्लोकजनेषु सख्यं
संसारचक्रे भ्रमतः स्वकर्मभिः।
त्वन्माययाऽऽत्मात्मजदारगेहे-
ष्वासक्तचित्तस्य न नाथ! भूयात्।।४।।

।।इति श्रीमद्भगवतस्था वृत्रासुरचतुःश्लोकी समाप्ता।।

अथ वृत्रचतुःश्लोकीकारिकाः

पूर्वमिन्द्रं प्रति प्राहततो भक्त्याऽग्रतो हरिम्।
दृष्ट्वा तत् प्रार्थयामास पुष्टिर्दृष्टफला यतः।।१।।
आद्ये तु पुष्टिमार्गीयो धर्मः स्मरणकीर्तने।
सेवा चेति त्रयं तेन प्रार्थितः स निरूप्यते।।२।।
आत्मनश्चाधिकारित्वमुत्तमं दीनभावतः।
प्रार्थनीयतया तस्य साधनं च कृपोच्यते।।३।।(१)
लौकिको वैदिकश्चार्थस्त्रिविधः प्राकृतैर्गुणैः।
क्रमेण ते भगवतो गुणैः षड्भिर्निराकृतः।।१।।
स्वर्गभूमिरसैश्वर्यं सात्त्विकादि तु लौकिकम्।
मोक्षश्च पारमेष्ठ्यं च सिद्धयश्चेति वैदिकम्।।२।।

प्रवृत्तिधर्मसाध्यत्वात् सामान्यं तत्तु लौकिकम्।
निवृत्तिधर्मसाध्यत्वाद्विशेषाद्वैदिकं परम्।।३।।

प्रत्येकमेव ते चार्था न तु सम्भूय कुत्रचित्।
भावत्यखिलात्मत्वाद् भवन्त्येव तथा हि ते।।४।।

अतोऽर्थो भगवानेव पुष्टिमार्गेऽङ्गमन्यतः।
सर्वतो नैरपेक्ष्यं च तथाऽत्रापि निरूप्यते।।५।।(२)

पुष्टिमार्गे हरे रूपदिदृक्षा मनसो हृदि।
कामो निरूप्यते तत्र दृष्टान्तत्रितयं यथा।।१।।

द्वितीयं लौकिकं प्रोक्तमेकं शास्त्रीयमुत्तमम्।
लौकिकस्त्रिगुणीभूय दृष्टान्तः स्यादलौकिके।।२।।

अन्यथैकतरेणापि सिद्धेऽर्थे त्रितयेन किम्।
क्षुद्रूपो लौकिकः कामो रसरीत्या तु शास्त्रतः।।३।।

प्रभोस्तु रसरूपत्वात् स्वस्यैकत्वेन चोत्तमः।
अयमेव हि दृष्टान्तस्तेनान्ते चैकतोदितः।।४।।(३)

इति श्रीविट्ठलदीक्षितविरचितवृत्रचतुःश्लोकी-
स्थाद्यश्लोक-त्रयटीकाकारिकाः समाप्ताः।।

पुष्टिमार्गे हरेर्दास्यं धर्मोऽर्थो हरिरेव हि।
कामो हरेर्दिदृक्षैव मोक्षः कृष्णस्य चेद्ध्रुवम्।।१।।(४)

इति श्रीमद्वल्लभाचार्यविरचिता वृत्रचतुःश्लोकी-
स्थान्तिमश्लोकटीकाकारिका समाप्ता।।

(एवं वृत्तचतुःश्लोकीटीकास्थाः कारिकाः सन्ति।
स्वतंत्रतया श्रीमद्विट्ठलेश्वरविरचिता वृत्रचतुःश्लोकी
नास्त्येवेति विज्ञेयं स्वमार्गीयग्रन्थविद्भिर्विद्वद्भिः।)

अथ विट्ठलेशस्तवः

न मन्त्रे न तन्त्रे न च ज्ञानसिद्धी-
न वैकुण्ठबुद्धिस्तु वैकुण्ठलोके।
गतिर्विट्ठलेशे रतिर्विट्ठलेशे
मतिर्विट्ठलेशे सदा वै ममास्तु।।१।।

पदाम्भोरुहाम्भोविभिन्नार्तितापे
कृपादृक् स्वकैतादृशोदारशीले।
गतिर्विट्ठलेशे रतिर्विट्ठलेशे
मतिर्विट्ठलेशे सदा वै ममास्तु।।२।।

न नाके वराके न राकेशयाने
पिनाकेशलोके न वा केलिरम्ये।
गतिर्विट्ठलेशे रतिर्विट्ठलेशे
मतिर्विट्ठलेशे सदा वै ममास्तु।।३।।

यदालोकतस्तोकतोऽपि क्षणेन
प्रमुक्तो भवेल्लोकतः शोकतोऽयम्।

श्रीमद्विट्ठलनाथजी (श्रीगोसाईंजी)

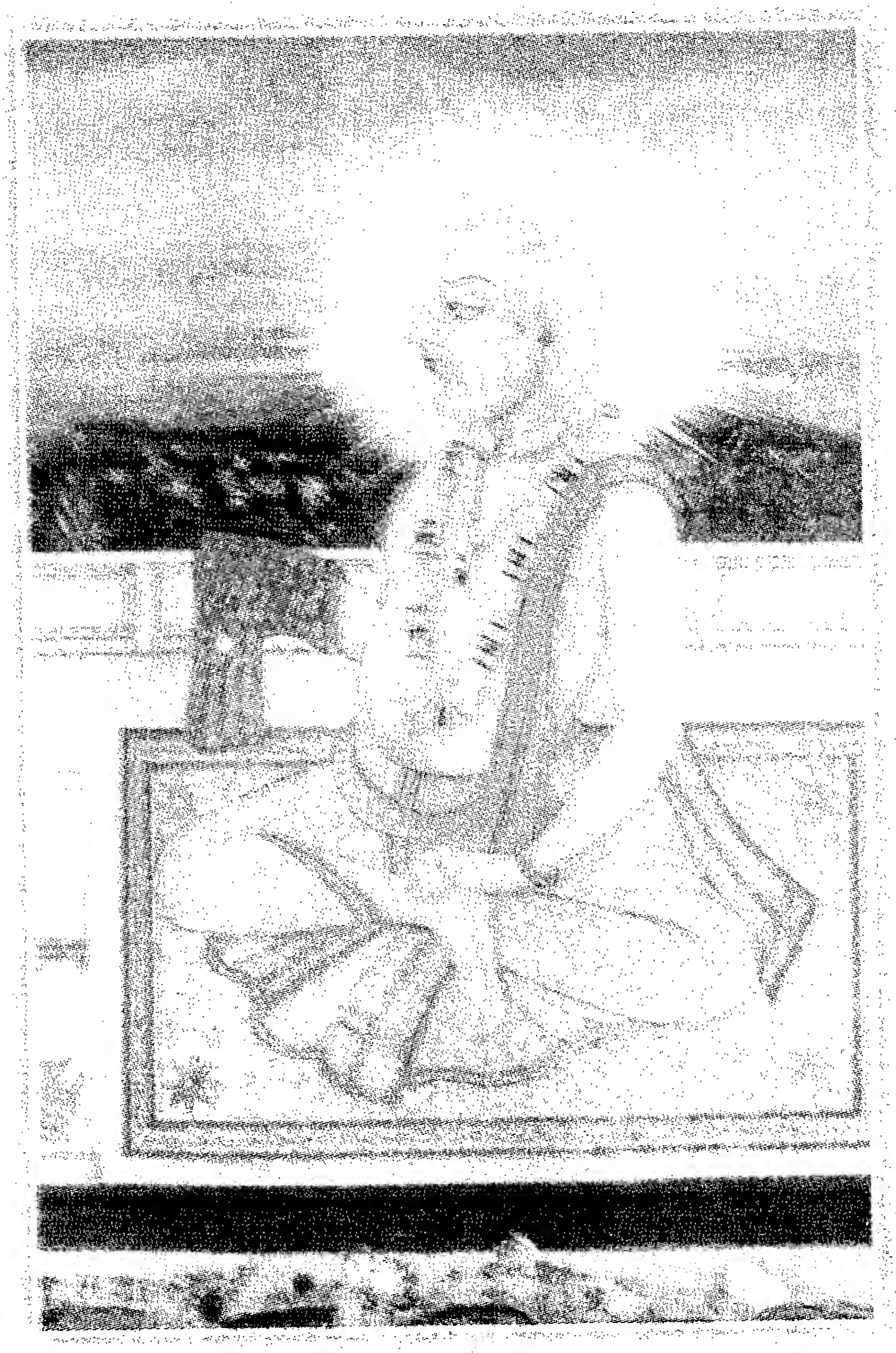

गतिर्विट्ठलेशे रतिर्विट्ठलेशे
मतिर्विट्ठलेशे सदा वै ममास्तु।।४।।

स्मृतिर्वा मतिर्वा कदा वा यदा वा
यथा वा तथा स्यात्पदार्थाः कियन्तः।
गतिर्विट्ठलेशे रतिर्विट्ठलेशे
मतिर्विट्ठलेशे सदा वै ममास्तु।।५।।

महामोहदग्धोऽपि कालाग्निदग्धो
विदग्धा भवेत्स्नेहदृष्ट्याऽपि यस्य।
गतिर्विट्ठलेशे रतिर्विट्ठलेशे
मतिर्विट्ठलेशे सदा वै ममास्तु।।६।।

यदङ्गीकृतं जीवमङ्गीकरोति
त्रिभङ्गी स्वयं वेणुरङ्गी प्रभुर्यत्।
गतिर्विट्ठलेशे रतिर्विट्ठलेशे
मतिर्विट्ठलेशे सदा वै ममास्तु।।७।।

शरण्योऽतिधन्यो धरण्यां वरेण्यो
वरीवर्ति गण्यो यदन्यो न कोऽपि।
गतिर्विट्ठलेशे रतिर्विट्ठलेशे
मतिर्विट्ठलेशे सदा वै ममास्तु।।८।।

सदानन्दरूपः सदानन्दरूपा-
त्मनाऽऽनन्दलीलारसं यो ददाति।

गतिर्विठ्ठलेशे रतिर्विठ्ठलेशे
मतिर्विठ्ठलेशे सदा वै ममास्तु।।९।।
न भक्तिर्न मुक्तिर्न वै सर्वशक्ति-
र्विरक्तिर्न युक्तिस्ततो भक्तिरुक्ता।
गतिर्विठ्ठलेशे रतिर्विठ्ठलेशे
मतिर्विठ्ठलेशे सदा वै ममास्तु।।१०।।

इति श्रीरघुनाथजीकृतो विठ्ठलेशस्तवः समाप्तः।

अथ वह्निसूनुस्तवः

यः कृष्णसेवार्थमगाधबोधं
जगाद शास्त्रं भगवत्प्रणीतम्।
निश्चित्य तद्भावमनन्यभावं
तं वह्निसूनुं शरणं प्रपद्ये।।१।।
यः प्रार्थितो भक्तजनैः समस्तं
करोति कार्यं करुणाकटाक्षः।
क्षणं विना कृष्णकथां न चास्ति
तं तह्निसूनुं शरणं प्रपद्ये।।२।।
यो गोकुलं गोपपतिर्यथा पुरा
पुराणपुंसं प्रियमेत्य सादरम्।

चकार वासं कमलानिवासं
तं तह्निसूनुं शरणं प्रपद्ये।।३।।

यो रासलीलाकुमुदौषधीशो
भक्तार्थमाविष्कृतगोकुलेशः ।
तिरस्कृतानेकपहासुरेश-
स्तं वह्निसूनुं शरणं प्रपद्ये।।४।।

यः संस्मृतः क्लेशमशेषमस्तं
करोति सुस्थं निजभृत्यवर्गम्।
तद्दुःखविध्वंसकृतोद्यमः सदा
तं तह्निसूनुं शरणं प्रपद्ये।।५।।

यः सर्वदाऽऽस्ते हरिदासवर्ये
गोगोपगोपीजनराजिराजिते ।
शृण्वन् सुगीतानि यशोयुतानि
तं वह्निसूनुं शरणं प्रपद्ये।।६।।

यो धर्मरक्षार्थमतिप्रबुद्धै-
र्यज्ञैः समीजे जनकं कृशानुम्।
भक्त्यैककामः श्रुतितन्त्रविज्ञ-
स्तं वह्निसूनुं शरणं प्रपद्ये।।७।।

योरासलीलामृतसिन्धुवृद्धिं
करोति पूर्णेन्दुगणेस्तु पूर्णः।

भक्तेङ्गितज्ञः शुभवाञ्छितप्रद-
स्तं वह्निसूनुं शरणं प्रपद्ये।।८।।
इमं स्तवं यः प्रपठेत्त्वदंघ्रि-
ध्यानैकनिष्ठः शरणप्रलिप्सुः।
तं भावय श्रेष्ठतमं स्वभक्तं
प्रार्थ्यं त्विदं त्वद्रघुनायकस्य।।९।।

इति श्रीरघुनाथजीकृतो वह्निसूनुस्तवः समाप्तः।

अथ श्रीकृष्णचन्द्राष्टकम्

महानीलमेघातिभव्यं सुहासं
शिवब्रह्मदेवादिभिः संस्तुतं च।
रमामन्दिरं देवनन्दापदाहं
भजे राधिकावल्लभं कृष्णवन्द्रम्।।१।।
रसं वेदवेदान्तवेद्यं दुरापं
सुगम्यं तदीयादिभिर्दानवघ्नम्।
चलत्कुण्डलं सोमवंशप्रदीपं
भजे राधिकावल्लभं कृष्णचण्द्रम्।।२।।
यशोदादिसंलालितपूर्णकामं
दृशो रञ्जनं प्राकृतस्थस्वरूपम्।

दिनान्ते समायान्तमेकान्तभक्तै-
भर्जे राधिकावल्लभं कृष्णचन्द्रम्।।३।।

कृपादृष्टिसम्पातसिक्तस्वकुञ्जं
तदन्तः स्थितास्वीयसम्यग्दयार्द्रम्।
पुनस्तत्र तैः सत्कृतैकान्तलीलं
भजे राधिकावल्लभं कृष्णचन्द्रम्।।४।।

गृहे गोपिकाभिर्धृते चौर्यकाले
तदक्ष्णोश्च निक्षिप्त दुग्धं चलन्तम्।
तदा तद्वियोगादिसम्पत्तिकारं
भजे राधिकावल्लभं कृष्णचन्द्रम्।।५।।

चलत्कौस्तुभव्याप्तवक्षःप्रदेशं
महावैजयन्तीलसत्पादयुग्मम्।
सुकस्तूरिकादीप्तभालप्रदेशं
भजे राधिकावल्लभं कृष्णचन्द्रम्।।६।।

गवां दोहने दृष्टराधामुखाब्जं
तदानीं च तन्मेलनव्यग्रचित्तम्।
समुत्पन्नतन्मानसैकान्तभावं
भजे राधिकावल्लाभं कृष्णचन्द्रम्।।७।।

अदः कृष्णचन्द्रष्टकं प्रेमयुक्तः
पठेत्कृष्णसान्निध्यमाप्नोति नित्यम्।

कलौ यः स संसारदुःखातिरिक्तं
प्रयात्येव विष्णोः पदं निर्भयं तत्।।८।।

इति श्रीरघुनाथजीकृतं श्रीकृष्णचन्द्राष्टकम्।

अथ श्रीगोपालस्तवः

येन मीनस्वरूपेण वेदाः संरक्षिताः पुरा।
स एव वेदसंहर्ता गोपालः शरणं मम।।१।।

पृष्ठे यः कूर्मरूपेण दधार धरणीतलम्।
स एव सृष्टिसंहर्ता गोपालः शरणं मम।।२।।

वराहरूपः सम्भूय दंष्ट्राग्रे यो महीं दधौ।
स भूमिभारहरणो गोपालः शरणं मम।।३।।

जग्राह यो नृसिंहस्य रूपं प्रह्लादहेतवे।
स योद्धुमुद्यतः सम्यग्गोपालः शरणं मम।।४।।

येन वामनरूपेण वंचितो बलिभूमिपः।
स एव गोपनारीभिर्गोपालः शरणं मम।।५।।

येनेयं जामदग्न्येन पृथ्वी निःक्षत्रिया कृत।
स एव गोपनारीभिर्गोपालः शरणं मम।।५।।

येनेयं जामदग्न्येन पृथ्वी निःक्षत्रिया कृता।
स एव क्षत्रियहितो गोपालः शरणं मम।।६।।

दशास्यो दाशरथिना येन रामेण मारितः।
स पञ्चास्यप्राप्तबलो गोपालः शरणं मम।।७।।
कालिन्दी कर्षिता येन रामरूपेण कौतुकात्।
तज्जलक्रीडनासक्तो गोपालः शरणं मम।।८।।
येन बौद्धस्वरूपेण लोकः पाखण्डमर्पितः।
स एव पाखण्डहरोगोपालः शरणं मम।।९।।
गमिष्यन्तिक्षयं येन राक्षसाः कल्किरूपिणा।
स राक्षसगतिर्दाता गोपालः शरणं मम।।१०।।
गोवर्धनो गिरिर्येन स्थापितः कुञ्जवत्करे।
उलूखलेन स सितो गोपालः शरणं मम।।११।।
एकादशरूपनाम्नामावलीं यो लिखेद्धृदि।
कृष्णप्रसादयुक्तश्च सयाति परमां गतिम्।।१२।।

इति श्रीरघुनाथजीकृतो गोपालस्तवः समाप्तः।

अथ श्रीयमुनाष्टकम्

यया तमीशवंशजः समापितो बृहद्धनं
मरुच्चलञ्जलप्रभूतवीचिविप्रुषां मिषात्।
तदङ्घ्रिकञ्जभक्तियुक्तया सुदत्तमार्गया
कलौ कलिन्दनन्दिनी कृपाकुलं करोतु नः।।१।।

यदम्बुपानमात्रतोऽतिभक्तियुक्तचेतसां
कृतैनसामहो निजस्वभावतः कृपायुता।
प्रधाव्य धर्मराजतो महद्भयं निवर्त्य सा
कलौ कलिन्दनन्दिनी कृपाकुलं करोतु नः।।२।।

यदीयनीरकेलितो दधार नन्दनन्दनः
समस्तसुन्दरीजने स्वभावमद्भुतं मुदा।
परस्परावलोकनं विवर्धयन् सुदृष्टितः
कलौ कलिन्दनन्दिनी कृपाकुलं करोतु नः।।३।।

यदंघ्रिफुल्लपङ्कजेऽवनप्रभावतः सदा
समस्तभक्तसंग्रहं पुनाति सा जगत्रयम्।
गिरीशधारिसङ्गमप्रबोधसत्सुखासदं
कलौ कलिन्दनन्दिनी कृपाकुलं करोतु नः।।४।।

यथाऽऽपदश्च दूरतो ज्वलन्ति सम्पदः सदा
वसन्ति नन्दनन्दने दृढा रतिश्च जायते।
महाष्टसिद्धिदाऽप्यशेषघोरपापसंक्षयः
कलौ कलिन्दनन्दिनी कृपाकुलं करोतु नः।।५।।

यदङ्कतो विनिःसृतस्य पापिनोऽपि शोभया
जगत्त्रयं विमोहितं तदीयकान्तियुक्तया।
प्रफुल्लसारसा प्रभूतरुद्रदेवसंस्तुता
कलौ कलिन्दनन्दिनी कृपाकुलं करोतु नः।।६।।

यदीयभक्तसेवने कृते हरिः प्रसन्नता-
मवाप गोपिकापतिः समस्तकामदायिनी।
तदम्बुमध्यखेलनप्रभूतभावलज्जितः,
कलौ कलिन्दनन्दिनी कृपाकुलं करोतु नः।।७।।

यदन्तिकस्थवालुकाः प्रयान्ति यत्र भूतले
गृहे गृहे वसन्त्यसौ हरिस्तदन्वगश्च सा।
यदा तदा सदैव तत्र भक्तवृन्दवन्दिता
कलौ कलिन्दनन्दिनी कृपाकुलं करोतु नः।।७।।

हरिप्रिये तवाऽष्टकं सदा पठेत्स शुद्धधी-
र्य एव गोकुलाधिपस्य लेढि सङ्गमं शुभम्।
पुनः प्रयाति तत्सुखं तटस्थरासमण्डल-
स्थितास्त्रिभङ्गिमोहनं दधाति तद्विचेष्टितम्।।८।।

इति श्रीरघुनाथजीकृतं यमुनाष्टकं समाप्तम्।

अथ श्रीविट्ठलस्तोत्रम्

श्रीमद्वल्लभसागरसमुदितकुन्दौघजीवदो नरः।
विश्वसमुद्धृतदीनो जगति श्रीविट्ठलो जयति।।१।।

मायावादमःकुलनाशनकरणे प्रसिद्धदिननाथः।
अपरःकृष्णाऽवतारो जगति श्रीविट्ठलो जयति।।२।।

श्रीमद्गिरिधरपदयुगसेवनपरिनिष्ठहृत्सरोजश्च ।
वंशस्थापितमहिमा जगति श्रीविट्ठलो जयति।।३।।

श्रीमद्गोकुलहिमरुचिरुचिकरलब्धैकसच्चकोरपदः।
परिलसदद्भुतचरितो जगति श्रीविट्ठलोजयति।।४।।

शारदचन्द्रसमानःशिशिरीकृतदग्धसकललोकः।
विद्याजितसुरवन्द्यो जगति श्रीविट्ठलो जयति।।५।।

गोवर्धनधरमिलनत्यागविधानेऽतिकातरः सुभगः।
प्रकटितपुष्टिजभक्तिर्जगति श्रीविट्ठलो जयति।।६।।

यज्ञविधायकचेताः सकलप्रतिपक्षसिन्धुवडवाग्निः।
कुण्डलशोभितगल्लो जगति श्रीविट्ठलो जयति।

पालितभक्तसमाजो व्रजभुवि विशदीकृतैकनवरत्नः।
वासितगोकुलनगरो जगति श्रीविट्ठलो जयति।।८।।

नित्यं स्तोत्रवरंतद्भक्तिःनियुक्तः
पठन्स्वकीयाष्टकम् ।
परमपदंलभते स च यः किलः
निष्ठोऽपि विट्ठलस्येदम् ।।

इति श्रीमद्देवकीनन्दनात्मजश्रीरघुनाथजीकृतं
श्रीविट्ठलस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

अथ श्रीकृष्णशरणाष्टकम्।

द्विदलीकृतदृक्स्वास्यः पन्नगीकृतपन्नगः।
कृशीकृतकृशानुश्च श्रीकृष्णः शरणं मम।।१।।

फलीकृतफलार्थी च कुत्सितीकृतकौरवः।
निर्वातीकृतवातारिः श्रीकृष्णः शरणं मम।।२।।

कृतार्थीकृतकुन्तीजः प्रपूतीकृतपूतनः।
कलङ्कीकृतकंसादिः श्रीकृष्णः शरणं मम।।३।।

सुखीकृतसुदामा च शंकरीकृतशंकरः।
सितीकृतसरिन्नाथः श्रीकृष्णः शरणं मम।।४।।

छलीकृतबलिद्यौर्यो निधनीकृतधेनुकः।
कन्दर्पीकृतकुब्जादिः श्रीकृष्णः शरणं मम।।५।।

महेन्द्रीकृतमाहेयः शिथिलीकृतमैथिलः।
आनन्दीकृतनन्दाद्यः श्रीकृष्णः शरणं मम।।६।।

वराकीकृतराकेशो विपक्षीकृतराक्षसः।
सन्तोषीकृतसद्भक्तः श्रीकृष्णः शरणं मम।।७।।

जरीकृतजरासन्धः कमलीकृतकार्मुकः।
प्रभ्रष्टीकृतभीष्मादिः श्रीकृष्णः शरणं मम।।८।।

श्रीकृष्णः शरणं ममाष्टकमिदं प्रोत्थाय यः सम्पठेत्स
श्रीगोकुलनायकस्य पदवीं संयाति भूमीतले।
पश्यत्येव निरन्तरं तरणिजातीरस्थकेलिप्र्भोः
सम्प्राप्नोति तदीयतां प्रतिदिनं गोपीशतैरावृताम्।।१।।

इति श्रीदेवकीनन्दनात्मज श्रीरघुनाथजीकृतं
श्रीकृष्णशरणाष्टकं सम्पूर्णम्।

अथ श्रीवल्लभचरणविज्ञप्तिः

निजाचार्यपदाम्भोजद्वयं सर्वसुखावहम्।
वहामि शिरसा तेन फलं मे सकलं ध्रुवम्।।१।।

दुनोमि दीनदीनोऽहं भयाद्यनवद्यसम्भवात्।
ततो निवर्तयास्माँस्त्वमार्तानामार्तिनाशन।।२।।

न स्थातुं शक्यते नैव गन्तुं वा गोकुलेश्वर।
मीनस्येव गतिर्जाता ह्यस्माकं करुणाप्रभो।।३।।

खेदे कृतहृदुद्भेदे सुखसम्भेदवर्जिते।
विगतस्वीयसम्भेदे भवानेव गतिः प्रभो।।४।।

न सोढुंशक्यते नाथ धैर्यादिरहितैः स्वकैः।
दुःखं भयसमुद्भूतं प्रभो त्वं संनिवर्तय।।५।।

नाथ त्वत्स्मरणोपायः सर्वपापनिवारकः।
नेदानीं सम्भवत्येतद्भयात्काऽत्र गतिर्मम।।६।।

इति श्रीहरिदासोक्ता श्रीमद्वल्लभचरणविज्ञप्तिः।

अथ स्वस्वामियुगलाष्टकम्

आसातामेकशरणे विहिताकरणे हृदि।
स्वामिनौ वल्लभाधीशविट्ठलेशाभिधौ सदा।।१।।

कृपां प्रकुरुतां दीने स्वत एक कृपाकरौ।
स्वामिनौ वल्लभाधीशविट्ठलेशाभिधौ सदा।।२।।

प्रसीदेतां मयि श्रीमद्व्रजेशचरणाश्रये।
स्वामिनौ वल्लभाधीशविट्ठलेशाभिधौ सदा।।३।।

दास्यं प्रयच्छतां मह्यं समस्तफलमूर्धगम्।
स्वामिनौ वल्लभाधीशविट्ठलेशाभिधौ सदा।।४।।

कदाऽपि मामनन्यं मा त्यजेतां निजसेवकम्।
स्वामिनौ वल्लभाधीशविट्ठलेशाभिधौ सदा।।५।।

प्रमेयबलमात्रेण गृह्णीतां मत्करं दृढम्।
स्वामिनौ वल्लभाधीशविट्ठलेशाभिधौ सदा।।६।।

आर्तिं निवारयेतां मे मस्तके हस्तधारणैः।
स्वामिनौ वल्लभाधीशविट्ठलेशाभिधौ मम।।७।।

मन्मूर्द्धनि विराजेतां प्रभू लोकविलक्षणौ।
स्वामिनौ वल्लभाधीशाविट्ठलेशाभिधौ मम।।८।।

इति श्रीमद्धरिदासोदितं स्वस्वामियुगलाष्टकं सम्पूर्णम्।

अथ श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकम्

सरोजनेत्राय कृपायुतायमन्दारमालापरिभूषिताय।
उदारहासाय लसन्मुखाय नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय।।१।।

आनन्दकन्दादिकदायकाय बकीबकप्राणविनाशकाय।
मृगेन्द्रहस्ताग्रजभूषणाय नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय।।२।।

गोपाल-लीला-कृतकौतुकाय
गोपालकाजीवनजीवनाय ।
भक्तैकगम्याय नवप्रियाय
नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय।।३।।

मन्थानभाण्डाखिलभञ्जनाय
हैयङ्गवीनाशनरञ्जनाय ।
गोस्वादुदुग्धामृतपोषिताय
नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय।।४।।

कलिन्दजाकूलकुतूहलाय
किशोररूपाय मनोहराय।

पिशङ्गवस्त्राय नरोत्तमाय
नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय।।५।।

धराधराभाय धराधराय
शृङ्गारहारावलिशोभिताय।
समस्तगर्गोक्तिसुलक्षणाय
नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय।।६।।

इभेन्द्रकुम्भस्थलखण्डनाय
विशेषवृन्दावनमण्डनाय।
हंसाय कंसासुरमर्दनाय
नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय।।७।।

श्रीदेवकीसूनुविमोक्षणाय
क्षत्रुद्धवाक्रूरवरप्रदाय।
गदासिशङ्खाब्जचतुर्भुजाय
नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय।।८।।

इति श्रीहरिदासोक्तं गोपीजनवल्लभाष्टकं सम्पूर्णम्।

अथ श्रीस्मरणाष्टकम्

यदीयसौभाग्यभरेण गोकुल-
स्त्रियो न योग्यानि वचांसि सत्पतेः।

न मानयामासुरुदारमानसा-
स्तदङ्घ्रिसेवासमयं स्मरामि।।१।।

यद्रूपसौन्दर्यवशीकृताशया
मृगीगणाः पूजनमादधुर्मुदा।
हित्वा समीपस्थितभर्तृभीतिं
तदङ्घ्रिसेवासमयं स्मरामि।।२।।

यद्वेणुनादश्रवणैकजात-
भावाङ्कुरा देववधूसमूहाः।
प्रवृद्धभावा मुमुहुः सभर्तृ-
कास्तदङ्घ्रि सेवासमयं स्मरामि।।३।।

यत्पादसंचारणजातकाम-
भावा यदंकेन नयत्यतल्पाम्।
शान्तिं विचित्रा व्रजभूमिरेषा
तदङ्घ्रिसेवासमयं स्मरामि।।४।।

यद्बाललीलाकृतचौर्यजात-
संतोषभावा व्रजगोपवध्वः।
उपालभन्ते समयं यमर्भकं
तदङ्घ्रिसेवासमयं स्मरामि।।५।।

यं गोपनारीगणदर्शनीयलीलं
मुदा गोसुतपुच्छकर्षुकम्।

प्रेक्षन्त्य एवोज्झितगैहकृत्याः
तदङ्घ्रिसेवासमयं स्मरामि।।६।।

यद्बाहुसंस्पर्शनजातभाव
रसालवावर्तुलभूत विग्रहः।
गोवर्धनो वेद न वृष्टपातं
तदङ्घ्रिसेवासमय स्मरामि।।७।।

यदधरसङ्गतवेणनिनादं
विहितविषयसुखभरनिर्वादम्
श्रुतवत्यो मुखभक्ष्या गावः
किं न हि कुरुते तद्गतभावः।।८।।

इति श्रीहरिदासोदितं स्मरणाष्टकं समाप्तम्।

अथ स्वप्रभुविज्ञप्तिः

कृपानाथ कृपाकाले किमित्यस्मानुपेक्षसे।
पदलग्नानार्तिमग्नान् दुष्टभग्नान् विशेषतः।।१।।

त्वदुपेक्षावशादेव कालकर्मादयोऽखिलाः।
विदित्वा निर्बलानस्मान् पीडयन्ति क्षणे क्षणे।।२।।

येषां विराजते मूर्ध्नि पतिर्युष्मद्विधः सदा।
भवन्ति तेऽपि चेद्दीना हीनता महती प्रभो।।३।।

मा विचारय चित्तेऽस्मद्दोषान् दीनदयानिधे।
सहजो दीनदोषस्तु निवर्त्यो भवतैव हि।।४।।

नसाधनैस्त्वदीयाः स्मः किं त्वनुग्रहतस्तव।
साधनं वा फलं वापि केवलाचार्यसंश्रयः।।५।।

गृहदासेषु नैवास्ति गुणदोषविचारणम्।
प्रभूणामुचितं कर्तुं यतस्तेषां मतिः प्रभुः।।६।।

कुसेवका भवन्त्येव न हि स्वामी तथाविधः।
अतो विधेयमखिलं स्वामित्वमवलोकय।।७।।

कं प्रार्थयेयुः कृपणाः पतिं हित्वाखिलेश्वरम्।
दासाः स्वदुःखसन्तप्तावनन्यगतयो यतः।।८।।

यद्यप्यनुचिता कर्तुं प्रार्थना सवर्वकर्तरि।
स्वतस्तथाऽपि कार्पण्यं दर्शयामो निजं हरे।।९।।

आचार्यं शरणं यातान् सदारातान् स्वतस्त्वया।
तद्वंशजातानधुना मोपेक्षाविषयान् कुरु।।१०।।

इति श्रीहरिदासविरचिता स्वप्रभुविज्ञपप्तिः समाप्ता।

अथ श्रीपञ्चाक्षरमन्त्रगर्भस्तोत्रम्

दुष्टतमोऽपि दयारहितोऽपि
विधर्मविशेषकृतिप्रथितोऽपि ।

दुर्जनसङ्गरतोऽप्यवरोऽपि
कृष्णतवास्मि नचास्मि परस्य।।१।।

लोभरतोऽप्याभिमानयुतोऽपि
परहितकारणकृत्यकरोऽपि ।
क्रोधपरोऽप्याविवेकहतोऽपि
कृष्ण तवास्मि न चास्मि परस्य।।२।।

काममयोऽपि गताश्रयणोऽपि
पराश्रयाशयचञ्चलितोऽपि ।
वैषयिकादरसम्बलितोऽपि
कृष्ण तवास्मि न चास्मि परस्य।।३।।

उत्तमधैर्यविभिन्नतरोऽपि
स्वोदरपोषणहेतुपरोऽपि ।
स्वीकृतमत्सरमोहमदोऽपि
कृष्ण तवास्मि न चास्मि परस्य।।४।।

भक्तिपथादरमात्रकृतोऽपि
व्यर्थविरुद्धकृतिप्रसृतोऽपि ।
त्वत्पदसन्मुखतापतितोऽपि
कृष्ण तवास्मि न चास्मि परस्य।।५।।

संसृतिगेहकलत्ररतोऽपि
व्यर्वधनार्जनखेदसहोऽपि ।

उन्मदमानससंश्रयणोऽपि
कृष्ण तवास्मि न चास्मि परस्य।।६।।

कृष्णपथेतरधर्मरतोऽपि
स्वस्थितविस्मृतिसध्दृदयोऽपि ।
दुर्जनदुर्वचनादरणोऽपि
कृष्ण तवास्मि न चास्मि परस्य।।७।।

वल्लभवंशजनः सबलोऽपि
स्वप्रभुपादसरोजफलोऽपि ।
लौकिकवैदिकधर्मखलोऽपि
कृष्ण तवास्मि न चास्मि परस्य।।८।।

पञ्चाक्षरमहामन्त्रगर्भितस्तोत्रपाठतः ।
श्रीमदाचार्यदासानां तदीयत्वं भवेद्ध्रुवम्।।९।।

इति श्रीहरिदासोदितं पञ्चाक्षरमंत्रगर्भस्तोत्रम्।

अथ श्रीमद्राधाष्टकम्

निकुञ्जे मञ्जूषद्विविधमृदुपुष्पैकनिचयैः
समाकीर्णं दान्तं सुमणिजटितं केलिशयनम्।
हृदि प्रादुर्भूतोद्भटविरहभावैः सपदि यत्
करे कृत्वा पत्रव्यजनमु पविशन्तीं हृदि भजे।।१।।

विदित्वा गोपीशं श्रमविहितनिद्रं हृदि भिया
रणत्कारैर्भूयान्न खलु गतनिद्रः परमिति।
द्वितीयेन स्तब्धाचलनचपलं कंकणचयं
वितन्वन्तीं मन्दं व्यजनमथ राधां हृदि भजे।।२।।

विधायाच्छैः पुष्पैर्विविधरचनां चारुमृदुलां
पदप्रान्तालम्बां स्वकरकमलाभ्यां पुनरसौ।
स्थितं स्वप्राणानां प्रियतममनन्यं निजपुरो-
ऽवगत्यातन्वन्तीमुरसि वनमालां हृदि भजे।।३।।

पुरा रासारम्भे शरदमलरात्रिष्वपि हरि-
प्रभावाद्युल्लीस्मरणकृतचिन्ताशतयुताम् ।
हृदि प्रादुर्भूतं बहिरपि समुद्वीक्षितुमिव
स्वतो वारंवारं विकसितदृगब्जां हृदि भजे।।४।।

विचिन्वन्तीं नाथं निरतिशयलीलाकृतिरतं
प्रपश्यन्तीं चिह्नं चरणयुगसम्भूतमतुलम्।
प्रकुर्वन्तीं मूर्धन्यहह पदरेणूत्करमपि
प्रियां गोपीशस्य प्रणतनिजनाथां हृदि भजे।।५।।

निजप्राणाधीशप्रसभमिलनानन्दविकस-
त्समस्ताङ्गप्रेमोद्गतमतनुरोमावलिमपि ।
स्फुरत्सीत्कारान्तः स्थितसभयभावैकनयनां
पुनः पश्चात्तप्तामतुलरसपात्रं हृदि भजे।।६।।

लसद्गोपीनाथाननकमलसंयोजितमुखां
मुखाम्भोधिप्रादुर्भवदमृतपानैकचतुराम् ।
परीरम्भप्राप्तप्रियतमशरीरैक्यरसिकां
तृतीयार्थप्राप्तिप्रकटहरिसिद्धिं हृदि भजे।।७।।

न मे वाञ्छ्यो मोक्षः श्रुतिषु चतुरात्मा निगदितो
न शास्त्रीया भक्तिर्न पुनरपि विज्ञनमपि मे।
कदाचिन्मां स्वामिन्यहह मयि दासे कृपयतु
स्वतः स्वाचार्याणां चरणशरणे दीनकरुणा।।८।।

अथ श्रीयमुनाविज्ञप्तिः

कृष्णां कृष्णसमां कृष्ण-रूपां कृष्णरसात्मिकाम्।
कृष्णालीलामृतजलां कृष्णसम्बन्धकारिणीम्।।१।।

कृष्णप्रियां कृष्णमुख्यरससङ्गमदायिनीम्।
कृष्णक्रीडाश्रयां कृष्णपदवीप्रापिकामपि।।२।।

कृष्णस्थितां कृष्णवासहृदयां कृष्णकामुकाम्।
कृष्णप्रियाप्रियां कृष्णस्थायिभावसमुद्भवाम्।।३।।

कृष्णैकमिलनस्थान-भूतां कृष्णसुखार्थिनाम्।
कृष्णगोपीसहचरीं कृष्णसन्मानवर्धिनीम्।।४।।

कृष्णकार्यपरीं कृष्णलीलास्थलविशोधिकाम्।
कृष्णक्रीडाकुंकुमादियुतां कृष्णरसान्तराम्।।५।।

कृष्णगोपीपूज्यदेवीं कृष्णव्रतफलप्रदाम्।
कृष्णलीलार्थमायान्तीं कृष्णनीरधिसङ्गताम्।।६।।

कृष्णपादस्पर्शकामां कृष्णमानससंश्रिताम्।
कृष्णासक्तां कृष्णभक्तकृष्णप्रीतिप्रसाधिनीम्।।७।।

कृष्णांघ्रिरेणुबहुलां कृष्णसेवकसन्मुखाम्।
कृष्णभावाविरोधिस्वदासप्रकृतिनाशिनीम्।।८।।

नमामि यमुनां कृष्णतुर्यप्रियतमामहम्।
निजाचार्यपदाम्भोजदासे भावं प्रयच्छतु।।९।।

इति श्रीहरिदासोदिता श्रीयमुनाविज्ञप्तिः समाप्ता।

अथ गर्वापहाराष्टकम्

स्थूलं विलोक्य वपुरात्मभुवां समूहं
जायां धनानि कुपथे पतितानि भूम्रः।
किं तोषमेषि मनसा सकलं समाप्ते
पुण्ये वृथा तव भविष्यति मूढबुद्धे।।१।।

ईशं भजान्ध विनियुङ्क्ष्व धनानि तत्र
साधून् समर्च परिपूजय विप्रवृन्दम्।

दीनान् दयायुतदृशा परिपश्य नित्यं
नेयं दशा तव दशाननतो विशिष्टा।।२।।

धनानि संगृह्य रसं विगृह्य
निगृह्य लोकं परिगृह्य मोहम्।
देहं वृथा पुष्टमिमं विधाय
न साधवो मूढ सभाजिताः किम्।।३।।

न नम्रता कृष्णजनेऽतिकूर्म-
धने परं नैव दयाऽतिदीने।
कुटुम्बपोषैकमते सदा ते
विधेहि बुद्ध्यैव विमर्षयन्तः।।४।।

नैते हया नैव रथा न चोष्ट्रा
न वारणा नेतरवाहनानि।
विहाय देहं समये गते ते
परं प्रतापस्य तु साधनानि।।५।।

कृष्णस्य मायामवगत्य माया-
समूढतान्तं हृदये विधाय।
तदर्थमेवाखिललौकिकं ते
विधेहि रे वैदिकमप्यशेषम्।।६।।

आयुः प्रयाति न हि याति सुतादिरात्मा-
रामाऽखिला अपि विहाय मृतं व्रजंति।

इत्थं विचिन्त्य विषयेषु विसृज्य शक्तिं
भक्तिं हरेः कुरु परां करुणार्णवस्य।।७।।

विधाय महदाश्रयं समवहाय सक्तिं सुते-
निधाय चरणाम्बुजं हृदि हरेः सुखं संविश।
किमर्थमतिचञ्चलं प्रकुरुषे मनः सम्पदो
विलोक्य न हि ताश्चलाः सुखयितुं क्षमा दुर्मद।।८।।

इति श्रीहरिदासविरचितं गर्वापहाराष्टकम्।

अथ श्रीवैश्वानराष्टकम्

समुद्भूतो भूमौ भगवदभिधानेन सदयः
समुद्धारं कर्तुं कृपणमनुजानां कलियुगे।
चकार स्वं मार्गं प्रकटमतुलानन्दजननं
स मे मूर्धन्यास्तां हरिवदनवैश्वानरविभुः।।१।।

निजानन्दे मग्नः सततमथ लग्नश्च मनसा
हरौ भग्नासक्तिर्जगति जगदुद्धारःकरणः।
कृपापारावारः परहृदयशोकापहरणः
स मे मूर्धन्यास्तां हरिवदनवैश्वानरविभुः।।२।।

महामायामोहप्रशमनमना दोषनिचया-
प्रतीतः श्रीकृष्णः प्रकटपदविद्वेषसयुजाम्।

मुखध्वंसं चक्रे निगमवचनैर्मायिकनृणां
स मे मूर्धन्यास्तां हरिवदनवैश्वानरविभुः।।३।।

प्रसिद्धैस्तैर्दोषैः सहजकलिदोषादिजनितो-
यतः स्वीयैर्धर्मैरपि च रहितः सर्वमनुजः।
कृतः सम्बन्धेन प्रभुचरणसेवादिसहितः
स मे मूर्धन्यास्तां हरिवदनवैश्वानरविभुः।।४।।

विभेदं यश्चक्रे हरिभजनपूजादिविधिषु
स्वमार्गीयप्राप्यं फलमपि फलेभ्यः समधिकम्।
विना वैराग्यादेरपि परममोक्षैकफलदः
स मे मूर्धन्यास्तां हरिवदनवैश्वानरविभुः।।५।।

परिक्रान्ता पृथ्वीचरणकमलैस्तीर्थमहिम-
प्रसिद्ध्यर्थं स्वीयस्मरणसमवाप्त्यै निजनृणाम्।
तथा दैवाञ्जीवाञ्जगति च पृथक्कर्तुमखिलान्
स मे मूर्धन्यस्तां हरिवदनवैश्वानरविभुः।।६।।

हरिं भावात्मानं तदखिलविहारानपि तथा
समस्तां सामग्रीं मनुजपशुपक्ष्यादिसहितान्।
कृपामात्रेणात्र प्रकट्यति दृक् पारकरुणः
स मे मूर्धन्यास्तां हरिवदनवैश्वानरविभुः।।७।।

परेषामासक्तिं सुतधनशरीरादिषु दृढां
द्रुतंभस्मी चक्रे बहुलमपि तूलं ज्वलन इव।

स्वसान्निध्यादेव व्यसनमपि कृष्णोऽपि विदधत्
स मे मूर्धन्यास्तां हरिवदनवैश्वानरविभुः।।८।।

इति श्रीमत्प्रोक्तं हरिचरणदासेन हरिणा-
ऽष्टकं स्वाचार्यणां पठति परमप्रेमसहितः।
जनस्तस्य स्याद्वै हरिवदनवैश्वानरपदे
परो भावस्तूर्णं सकलफलरूपस्तदधिकः।।९।।

इति श्रीहरिरायजीविरचितं श्रीवैश्वानराष्टकम्।

अथ श्रीबालकृष्णाष्टकम्

यत्कृपादृष्टिसद्वृष्टिसिक्ता भक्ता निरन्तरम्।
भवन्ति सुखिनः स्निग्धास्तं श्रीबालहरिं भजे।।१।।

प्रतिपक्षक्षयात् क्षोण्यामङ्क्षु जातं महद्यशः।
यत्कृपालेशमात्रेण तं श्रीबालहरिं भजे।।२।।

स्वीयविश्लेषजक्लेशो नष्टः पुष्टः सुखोदधिः।
यत्कृपालेशमात्रेण तं श्रीबालहरिं भजे।।३।।

सुस्थिरं सुदृढं पूर्णं प्रियं प्राप्येत सत्वरम्।
यत्कृपालेशमात्रेण तं श्रीबालहरिं भजे।।४।।

सुसम्पदा सत्कलया सद्विद्यावृद्धिगामिनी।
यत्कृपालेशमात्रेण तं श्रीबालहरिं भजे।।५।।

अनन्याऽहैतुकी पूर्णा स भक्तिः सुदृढा भवेत्।
यत्कृपालेशमात्रेण तं श्रीबालहरिं भजे।।६।।

इयत्तारहितो नित्य आनन्दः प्राप्यतेऽनिशम्।
यत्कृपालेशमात्रेण तं श्रीबालहरिं भजे।।७।।

श्रीवल्लभेशपादाब्जे रतिः स्याद्विमला परा।
यत्कृपालेशमात्रेण तं श्रीबालहरिं भजे।।८।।

अष्टकं श्रीबालहरेरिदं मङ्गलकृत्प्रियम्।
पठेद्वा शृणुयाद्भक्त्या फलं विन्देत्स वांछितम्।।९।।

इति श्रीमद्वल्लभाचार्यचरणैकतानश्रीमद्गोकुलोत्स-वात्मजश्रीजीवनलजीविरचितं श्रीबालकृष्णाष्टकम्।

अथ श्रीबालकृष्णप्रार्थनाष्टकम्

श्रीमद्यशोदाङ्कविहारदक्षे
तत्स्तन्यसक्ते निजभक्तरक्ते।
गोवर्धनप्रीतिकरे परेऽस्मिन्
श्रीबालकृष्णे रतिरस्तु नित्यम्।।१।।

श्रीनन्दराजांगणरत्नरश्मि
किर्मीरितांगद्युतिरम्यरम्ये ।

तत्रानिशं क्रीडनतत्परेऽस्मिन्
श्रीबालकृष्णे रतिरस्तु नित्यम्।।२।।

मुखामृतं प्राश्य पदामृतं किं
वाञ्छन्ति निश्चेतुमतीव भक्ताः।
आस्ये पदाङ्गुष्ठधरे ममास्मिन्
श्रीबालकृष्णे रतिरस्तु नित्यम्।।३।।

नानामणिव्रातविभूषणानां
चापल्यतो मञ्जुलसिञ्जितैस्तैः।
स्थिताञ्जितास्ये कृतमुग्धलास्ये
श्रीबालकृष्णे रतिरस्तु नित्यम्।।४।।

घोषेषु गोपंकयुतेषु गत्या
प्रत्यङ्गमालिन्यविशेषहृद्यो।
बाल्यात्कलालापमनोहरेऽस्मिञ्
श्रीबालकृष्णे रतिरस्तु नित्यम्।।५।।

स्निग्धामलाकुञ्चितकुन्तलस्पृग्
वक्त्रेण भृङ्गावृतपद्मशोभाम्।
जहंति तस्मिन् मम नन्दसूनौ
श्रीबालकृष्णे रतिस्तु नित्यम्।।६।।

दन्तद्वयेनार्जितकुन्दकोशे
द्वन्द्वोत्थशोभे नवनीरदाभे।

हैयंगवीनांकलितैकहस्ते
श्रीबालकृष्णे रतिरस्तु नित्यम्।।७।।

हस्तेन नेत्रादपसारितेन
स्निग्धाञ्जनेनाक्तकपालदेशे।
व्रजांगनास्नेहसुधासुपात्रे
श्रीबालकृष्णे रतिरस्तु नित्यम्।।८।।

इति श्रीबालकृष्णस्य वर्णनप्रार्थनाष्टकम्।
वर्णितं जीवनाख्येन गोकुलोत्सवसूनुना।।

इति श्रीवल्लभचरणैकतानश्रीमद्गोकुलोत्सवतनूद्भव-श्रीजीवनेशविरचितं श्रीबालकृष्णाशरणाष्टकं सम्पूर्णम्।

अथ गङ्गाद्विपदी

जय जय त्वं सदानन्ददे जह्नुजे
शशिशिखरशिरसि सितकुसुममाले।
भक्तजनहृदयालवालगत-
हरि-चरणसुरतरुप्रसवभूते रसाले।।१।।

शिखरितनयानयनरोलम्बचुम्बिते
दूरीकृतदुरितदौर्गन्ध्यजाले ।

जीवनं भक्तजनजीवनं तव
यतस्त्रिविधतापापहं मुक्तिशाले।।२।।

इति श्रीगोकुलोत्सवात्मजगोस्वामिश्रीजीवनजी-
महाराजकृता गङ्गाद्विपदी सम्पूर्णा।

अथ यमुनाचतुष्पदी

जयति तरणितनया सदा कृष्णहृदयगमा
सुरासुरमनुजप्रथितस्वभूमा ।
तरललहरीलाभलुलितकलिकलितमति-
पतितततिं-निरयसूद्धरणकामा ।।१।।

कमलनिलयानिलयकमलनयनानयन-
पृथुसुखदशुचिसरणीनीलधामा ।
सुरऋषभदृषत्समभुवननवकञ्ज-
मकरन्दरसप्राययिमधुपाभिरामा ।।२।।

कृतसलिलमज्जनमपनोहृत-
भ्रममिनचयभवचलावर्तदामा ।
तटनिकटविस्फालनोच्छलितविमल-
जलफेनकुलसिताऽपि द्विधा श्यामा।।३।।

कृष्णजीवनवहा त्वमसि प्रतिदिनमत-
स्त्रपावशवर्तिनी खलु सदामा।
मम ममेति विचिंत्य मनसि घनशर्मदा
मामवतु भवभयाच्छौरि-वामा।।४।।

इति श्रीमद्गोकुलोत्सवात्मजश्रीजीवनजीविरचिता
श्रीयमुनाचतुष्पदी समाप्ता।

अथ नैवेद्यसमर्पणप्रार्थना

यशोदायाः स्तन्ये तदनुनवनीते व्रजगवां
विहारे दध्यन्ने व्रजयुवतिदत्ते बहुगुणे।
तथा मित्रात्प्राप्ते पृथुकवरमुष्टौ मुरहरे
यया प्रीतिस्तां मे प्रकटय सुनैवेद्यनिचये।।१।।

विदुरस्य गृहे प्रीत्या यथा भुक्तं व्रजेश्वर।
तथैव भुङ्क्ष्व नैवेद्यं मयि नाथ कृपां कुरु।।२।।

ब्रह्माद्यैर्यः परित उरुभी रूपवेषैः सुवेषो
लक्ष्म्या सिञ्जद्वलयकरया सादरं वीज्यमानः।
नर्मक्रीडाप्रहसितमुखो भोजयन् भक्तियुक्तान्
भुङ्क्ते पात्रे कनकघटितं षड्रसं श्रीरमेशः।।३।।

नायिकाष्टकयुक्तोऽत्र भोजनं कुरु माधव।
षड्रसामृतनैवेद्यं स्वर्णपात्रे समर्पितम्।।४।।

यथा त्वं गोपिकादीनां निजानन्दं प्रयच्छसि।
तथैव भुक्तान्नशिष्टं भक्तेभ्यो यच्छ पुष्कलम्।।५।।

ब्रह्माद्याः सनकाद्याश्च नारदाद्या महत्तमम्।
हरिभुक्तावशिष्टान्नं सर्वे गृह्णन्ति वैष्णवाः।।६।।

इति श्रीनैवेद्यसमर्पणप्रार्थना समाप्ता।।

अथ अष्टपदी

राग भैरव

जयति निजघोषभुवि गोपमणिभूषणम्।
युवतिकलधौतरतिजटितमविदूषणम्।।ध्रुवप०।।

विकचशरदम्बुरुहरुचिरमुखतोऽनिशम् ।
जिघ्रतादमलमधुमदशालिनी भृशम्।।१।।

तरलदलसापांगविभ्रमभ्रामितम् ।
निःस्थिरीभवितुमिच्छतु हृदितकामितम्।।२।।

मधुरमृदुहासकलिताधरच्युतरसम् ।
पिबतु रसनाऽपि मुहुरुदितरतिलालसम्।।३।।

अमृतमयशिशिरवचनेषु नवसूत्सुकम्।
श्रवणपुटयुगलमनुभवतु चिरसूत्सुकम्।।४।।
विपुलवक्षस्थले स्पश्नरसपूरितम्।
तुंगकुचकलशयुगमस्तु मदनेरितम्।।५।।
मृदिततमकाय-देवद्रुमालम्बिता ।
हर्षमतिशयितमुपयातु तनुलता।।६।।
पुष्परसपुष्टपरपुष्टभृंगीमये ।
वसतिरपि भवतु मम निभृतकुञ्जालये।।७।।
गीतमिदमेवमुरुभावगर्भितपदम् ।
रोचयतु कृष्णमिह सरससम्पदम्।।८।।

इति श्रीदेवकीनन्दनजीकृताऽष्टपदी।

अथ श्रीयमुनाष्टकम्

या गोकुलागमनसम्भ्रमदत्तमार्गा
कृष्णाय शौरिमुदकैरविभावयन्ती।
स्त्रष्टुं तदङ्घ्रिकमलेऽभवदुत्तरङ्गा
सा मन्मनोरथशतं यमुना विधत्ताम्।।१।।
या नन्दसूनुमुरलीरवलीलयोद्यद्-
भावप्रभावगलदश्रुपरागमङ्घ्रिम् ।

उन्मीलिताब्जनयनाऽस्पृशदूर्मिदोर्भिः
सा मन्मनोरथशतं यमुना विधत्ताम्।।२।।

या गोकुलेशमुषितांशुकलज्जितान्त-
राकण्ठमग्ननवनन्दकुमारिकाणाम् ।
कम्पोद्गमं विदधती न विलम्बमैच्छत्
स मन्मनोरथशतं यमुना विधत्ताम्।।३।।

या राधिकाऽधरपयोधरकामुकाय
तस्मै निकुञ्जनिलयं स्वकरैश्चकार।
स्वच्दोचितातिमृदुवालुकभूवितानं
सा मन्मनोरथशतं यमुना विधत्ताम्।।४।।

या रासकेलिजनितश्रमहारिवारि-
क्रीडासु घोषवनितोच्छलदम्बुराशिः।
नन्दात्मजं सुखयति स्म कृताभिषेकं
सा मन्मनोरथशतं यमुना विधत्ताम्।।५।।

भा चञ्चदञ्चलदृशः सभयं व्रजस्त्रीः
पीनोन्नतस्तनतटीः परिरभ्य मन्दम्।
पारे नयन्तमुपलक्ष्य हरिं समासीत्
सा मन्मनोरथशतं यमुना विधत्ताम्।।६।।

या विभ्रमद्भ्रमरपङ्क्तितदङ्गसङ्ग-
लग्नाङ्गरागरुचिरद्युतिदामनेत्री ।

तत्पादपङ्कजरजोपचिताङ्गदात्री
सा मन्मनोरथशतं यमुना विधत्ताम्।।७।।

या सेविताऽनिशमशेषजनैर्व्रजेश-
पादाम्बुजेऽतिरतिमाशु ददाति तेभ्यः।
संस्तूयते शिवविरञ्चिमुनीन्द्रवर्यैः
सा मन्मनोरथशतं यमुना विधत्ताम्।।८।।

उक्तं मयाऽष्टकमिदं तव सूरसूते
यः सादरं त्वयि मनः प्रपठेन्निधाय।
तस्याचला व्रजपतौ रतिराविरास्तां
नित्यं प्रसीद मयि देवकिनन्दनेऽपि।।९।।

इति श्रीदेवकीनंदनकृतौ यमुनाष्टकं सम्पूर्णम्।

अथ श्रीवल्लभाष्टकम्

प्रथयितुमच्युचरणाम्बुजरवसपानैकसंश्रयं वर्त्म।
श्रीमल्लक्ष्मणतनुजो जगति **श्रीवल्लभो** जयति।।१।।

यदनुग्रहेण जन्तून् व्रजमतिरप्यात्मनो मनुते।
निःसाधनानसाध्यो जगति श्रीवल्लभो जयति।।२।।

विश्वोद्धारविचारप्रकटितकरुणोत्तरङ्गपाथोभिः।
दिशिदिशि विदितविभूतिर्जगति श्रीवल्लभो जयति।।३।।

मायामताद्रिपक्षं सर्वं ब्रह्मेति वादवज्रेण।
चिच्छेदाद्‌भुतवीर्यो जगति श्रीवल्लभो जयति।।४।।

वितरति कृष्णकथामृतधनमविनाश्यं सुदुर्लभं बहुलम्।
अर्थिषु तदुदितकीर्तिर्जगति श्रीवल्लभो जयति।।५।।

कमलाकरयुगलालितविमलाशयसेविताङ्‌घ्रियुगः।
अचलाचलबहुचरितो जगति श्रीवल्लभो जयति।।६।।

नाशयति शब्दसृष्टेर्यत्तज्ज्ञनांशुमांस्तमोऽज्ञानम्।
अघतूलराशिदहनो जगति श्रीवल्लभो जयति।।७।।

सहजासुरजनताया दुःखोदर्काय वक्रतर्केण।
अविदितमार्गदिगर्को जगति श्रीवल्लभो जयति।।८।।

इति श्रीदेवकीनन्दनजीकृतं श्रीवल्लभाष्टकम्।

अथ नन्दकुमाराष्टकम्

सुंदरगोपालम् उरवनमालम् नयनविशालं दुःखहरं
वृन्दावनचन्द्रम् आनंदकन्दं परमानन्दं धरणिधरम्।
वल्लभघनश्यामं पूर्णकामं आत्यभिरामं प्रीतिकरं
भजनन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम्।।१।।

सुन्दरवारिजवदनं निर्जितमदनं आनन्दसदनं मुकुटधरं
गुञ्जाकृतिहारं विपिनविहारं परमोदारं चीरहरम्।

वल्लभपटपीतं कृतमुपवीतं करनवनीतं विबुधवरम्।
भजनन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम्।।२।।

शोभितमुखधूलं यमुनाकूलं निपट अतूलं सुखदतरम्
मुखमण्डितरेणुं चारितधेनुं वाजितवेणुं मधुरसुरम्।
वल्लभअतिविमलं शुभपदकमलंनखरुचिअमलंतिमिरहरं
भजनन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम्।।३।।

शिरमुकुटसुदेशं कुञ्चितकेशं नटवरवेषं कामवरं,
मायाकृतमनुजं हलधरसहजं प्रतिहतदनुजं भारहरम्।
वल्लभव्रजपालं सुभगसुचालं हितमनुकालं भाववरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम्।।४।।

इन्दीवरभासं प्रकटसरासं कुसुमविकासं वंशिधरं
जितमन्मथमानं रूपनिधानं कृतकलगानं चित्तहरं।
वल्लभमृदुहासं कुञ्जनिवासं विवधविलासं केलिकरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारंब्रह्मपरम्।।५।।

अतिपरमप्रवीणं पालितदीनं भक्ताधीनं कर्मकरं
मोहनमतिधीरं फणिबलवीरं हतपरपीरं तरलतरं।
वल्लभव्रजरमणं वारिजवदनं दलधरशमनं शैलधरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपुरम्।।६।।

जलधरद्युतिअङ्गं ललितत्रिभंगं बहुकृतिरंगं रसिकवरम्
गोकुलपरिवारं मदनाकारं कुंजविहारं गूढनरम्।

वल्लभव्रजचन्द्रं सुभगसुदन्दं परमानन्दं भ्रान्तिहरम्
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम्।।७।।

वंदितयुगचरणं पावनकरणं जगदुद्धरणं विगलधरम्
कालियशिरगमनं कृतफणिनमनं घातितयमनं मृदुलतरम्।
वल्लभदुःखहरणं निर्मलचरणं अशरणशरणं मुक्तिकरम्
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्त्वविचारं ब्रह्मपरम्।।८।।

इति श्रीभाषाभूषितं श्रीनन्दकुमाराष्टकं सम्पूर्णम्।।

अथ श्रीगिरिराजधार्यष्टकम्

भक्ताभिलाषाचरितानुसारी
दुग्धादिचौर्येण यशोविसारी।
कुमारतानंदितघोषनारी
मम प्रभुः श्रीगिरिराजधारी।।१।।

व्रजाङ्गनावृन्दसदाविहारी अङ्गैर्गुहाङ्गस्य तमोपहारी।
क्रीडारसावेषतमोभिसारी मम०।।२।।

वेणुस्वनानन्दितपन्नगारी रसातलानृत्यपदप्रचारी।
क्रीडन् वयस्याकृतिदैत्यमारी मम०।।३।।

पुलिन्ददाराहितशम्बरारी रमासमोदारदयाप्रकारी।
गोवर्द्धने कन्दफलोपहारी मम०।।४।।

कलिन्दजाकूलदुकूलहारी कुमारिकाकामकलावितारी।
वृन्दावने गोधनवृन्दचारी ममo।।५।।

व्रजेन्द्रसर्वाधिकशर्मकारी महेन्द्रसर्वाधिकगर्वहारी।
वृन्दावने कन्दफलोपहारी ममo।।६।।

मनःकलानाथतमोविदारी वंशीरवाकारिततत्कुमारिः।
रासोत्सवोद्वेल्लरसाब्धिसारी ममo।।७।।

मत्तद्विपोद्दामगतानुकारी लुण्ठत्प्रसूनाप्रपदीनहारी।
रामारसस्पर्शकरप्रसारी ममo।।८।।

इति श्रीवल्लभाचार्य विo श्रीगिरिराजधार्यष्टकम्

अथ श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकम्

नवाम्बुदानीकमनोहराय प्रफुल्लराजीवविलोचनाय
वेणस्वनैर्मोदितगोकुलायनमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय।।१।।

किरीटकेयूरविभषिताय ग्रैवेयमालामणिरञ्जिताय।
सफुरच्चलत् काञ्चनकुण्डलाय नमोo।।२।।

दिव्याङ्गनावृन्दनिषेविताय स्मितप्रभाचारुमुखाम्बुजाय।
त्रैलोक्यसम्मोहनसुन्दराय नमोo।।३।।

रत्नादिमूलालयसीश्रताय कल्पद्रुमच्छायसमाश्रिताय।
हेमस्फुरन्मण्डलमध्यगाय नमोo।।४।।

श्रीवत्सरोमावलिरञ्जिताय वक्षःस्थले कौस्तुभभूषिताय।
सरोजकिञ्जल्क निभांशुकाय नमो०।।५।।

दिव्याङ्गुलीयाङ्गुलिरञ्जिताय मयूरपिच्छच्छविशोभिताय।
वन्यस्त्रजालङ्कृतविग्रहाय नमो०।।६।।

मुनीन्द्रवृन्दैरभिसंस्तुताय क्षरत्पयोगोकुलगोकुलाय।
धर्मार्थकामामृतसाधकाय नमो०।।७।।

एनस्तमःस्तोमदिवाकराय भक्तस्य चिन्तामणिसाधकाय।
अशेषदुःखामयभेषजाय नमोऽस्तु गोपीजनवल्लभाय।।८।।

इति श्रीवह्निसूनुविरचितं श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकं समाप्तम्।

श्रीकृष्णाष्टकम्

श्रीगोपगोकुलविवर्धननन्दसूनो
राधापते व्रजजनार्तिहरावतार।
मित्रात्मजातटविहारणदीनबन्धो
दामोदराच्युत विभो मम देहि दास्यम्।।१।।

श्रीराधिकारमण माधव गोकुलेन्द्र-
सूनो यदूत्तम रमार्चितपादपद्म।

श्रीश्रीनिवास पुरुषोत्तम विश्वमूर्ते
गोविन्द यादवपते मम देहि दास्यम्।।२।।

गोवर्द्धनोद्धरण गोकुलवल्लभाद्य-
वंशोद्भटालय हरेऽखिललोकनाथ।
श्रीवासुदेव मधुसूदन विश्वनाथ
विश्वेश गोकुलपते मम देहि दास्यम्।।३।।

रासोत्सवप्रियबलानुज सत्त्वराशे।
भक्तानुकम्पितभवार्तिहराधिनाथ ।
विज्ञानधाम गुणधाम किशोरमूर्ते
सर्वेश मङ्गलमतो मम देहि दास्यम्।।४।।

सद्धर्मपाल गरुडासन यादवेन्द्र
ब्रह्मण्य देव यदुनन्दन भक्तिदान।
संकर्षणप्रिय कृपालय देव विष्णो
सत्यप्रतिज्ञ भगवन् मम देहि दास्यम्।।५।।

गोपीजनप्रियतम क्रिययैकलभ्य
राधावरप्रिय वरेण्य शरण्यनाथ।
आश्चर्यबाल वरदेश्वर पूर्णकाम
विद्वत्तमाश्रय विभो मम देहि दास्यम्।।६।।

कन्दर्पकोटिमदहारण तीर्थकीर्ते
विश्वैकवन्द्य करुणार्णव तीर्थपाद।

सर्वज्ञ सर्ववरदाश्रयकल्पवृक्ष
नारायणाखिलगुरो मम देहि दास्यम्।।७।।

वृन्दावनेश्वर मुकुन्द मनोज्ञवेष
वंशीविभूषितकराम्बुज पद्मनेत्र।
विश्वेश केशव व्रजोत्सव भक्तिवश्य
देवेश पाण्डवपते मम देहि दास्यम्।।८।।

श्रीकृष्णास्तवरत्नमष्टकमिदं सर्वार्थदं शृण्वतां
भक्तानां च प्रियं हरेश्च नितरां यो वै पठेत् पावनम्।
तस्यासौ ब्रजराजसूनुरतुलां भक्तिं स्वपादाम्बुजे
तत्सेव्ये प्रददाति गोकुलपतिः श्रीराधिकावल्लभः।।९।।

इति श्रीवल्लभाचार्यविरचितं
श्रीकृष्णाष्टकं समाप्तम्।

श्रीगुसाईंजीकृतदण्डकः

व्रजराजविराजितघोषवरे
वरणीयमनोहररूपधरे ।
धरणीरमणीरमणैकपरे
परमार्तिहरस्मितविभ्रमके।।१।।

मकराकृतिकुण्डलशोभिमुखे
मुखरीकृतनूपुरहृद्यगते ।
गतिसङ्गतभूतलतापहरे
हरसक्तविमोहनगानपरे ।।२।।

परमप्रियगोपवधूहृदये
दययाऽमिततापहरे सुहृदाम्।
हृदयस्थितगोकुलवासजने
जनहृद्यविहारपरे सततम्।।३।।

ततवेणुनिनादविनोदपरे
परचित्तहरे स्मितमात्रकथे।
कथनीयगुणालयपादयुगे
युगले युगले सुदृशां सुरते।।
रतिरस्तु मम व्रजराजसुते।।४।।

इति श्रीगुसाईजीकृतदण्डकः।

अथ श्रीरघुनाथजीकृतगोपालस्तवः

धिक्कुलं धिक्कुटुम्बं च धिग्गृहं धिक्सुतं च धिक्।
आत्मानं धिक् शरीरं च श्रीगोपालपराङ्मुखम्।।१।।

धिक्सम्मतं च पाण्डित्यं महत्त्वं धिग् यशश्च धिक्।
धिक्कर्म धिक् फलं चैव श्रीगोपालपराङ्मुखम्।।२।।

धिग्भोगं भोगिवर्गं धिग् धिक्कामं कामिनं च धिक्।
धिग्यज्ञं धिक् कलत्रं च श्रीगोपालपराङ्मुखम।।३।।

धिग्धर्मं धिक्मुखं चैव धिक्स्वान्तं धिक्च जीवनम्।
धिग्वचो धिक् श्रमं चैव श्रीगोपालपराङ्मुखम्।।४।।

धिङ्मातरं च पितरं धिक् शिष्यं धिग् बलं च धिक्-।
भोक्तारं भरणं धिक् च श्रीगोपालपराङ्मुखम्।।५।।

धिक् पालकं च राजानं धिग्दातारं धिगिन्द्रियम्।
धिक् प्रेम धिग् विलासं च श्रीगोपालपराङ्मुखम्।।६।।

धिङ्नाट्यं धिक्तपः पुण्यं धिग्लाभं धिग्व्ययं च धिक्।
धिक् स्थलं धिग् प्रियं चैव श्रीगोपालपराङ्मुखम्।।७।।

धिक्कालं धिक् प्रियं चैव धिग्व्रतं भ्रातरं च धिक्।
धिक् सत्यं धिङ् मनुष्यत्वं श्रीगोपालपराङ्मुखम्।।८।।

यः पठेच्छुद्धधीर्भूत्वा गोपालस्तवमद्भुतम्।
भक्त्या विचार्यापापो यः स याति ब्रह्मसन्निधिम्।।

इति श्रीरघुनाथजीकृतो गोपालस्वतः।

अथ सन्नामभूषणस्तोत्रम्

गोपालाय धराधरेन्द्रपतये स्वीयार्तिहत्रे सुर-
त्रासाम्भोधिनिमग्नदेवनिचयोद्धर्त्रे यशोदात्मने।
श्रीमन्नन्दसुताय गोपवनितासंलालिताय ध्रुवं
कण्ठस्थापितकौस्तुभाय जलदस्यामाय तुभ्यं नमः।।१।।

यन्नामलवसंस्पशान्न तिष्ठति पराश्रयः।
तं गोपीहृदयानन्ददायकं प्रभुमाश्रये।।२।।

यन्नामसम्भावनया गजेन्द्रो
ग्राहाद्विमुक्तः परमं पदं च।
जगाम तन्नामशतं च साष्टकं
वदाम्यहं भक्तियुतो यथामति।।३।।

पूर्वं श्रीवासुदेवेन नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
कृतं यस्य क्रमात् तस्य तत्तन्नामानुसारतः।।४।।

छन्दोऽनुष्टुवृषिः कर्त्ता देवो गोवर्द्धनाधिपः।
सर्वेष्टफलसिद्ध्यर्थे विनियोग उदाहृतः।।५।।

गोपालः परमानन्दो यशोदानन्दनन्दनः।
वसुदेवात्मजः श्रीशो वासुदेवः सनातनः।।६।।

पीताम्बरो जगत्त्राता माधवो भक्तवत्सलः।
अनन्तकीर्तिर्यज्ञेशः सर्वज्ञः सर्वमङ्गलः।।७।।

वनमाली सूर्यकोटिप्रतीकाशो महाबलः।
विश्वम्भरः कृपासिन्धु पुरुषः पुरुषोत्तमः।।८।।
कौस्तुभोद्भासितोरस्कः कृपालुर्जगतां पतिः।
मथुरागमनोद्भूतमङ्गलाक्रांतगोकुलः ।।९।।
कालीयस्य फणोत्पन्नमणिभूषितविग्रहः।
पद्मनाभः शेषशायी गोगोपगोपिकापतिः।।१०।।
निरञ्जनः प्रतापी च जगदानन्दकारकः।
नटाकृतिर्यदूनां च कुलचूडामणिर्विभुः।।११।।
कन्दर्पकोटिलावण्यः परमाद्भुतरूपधृक्।
कमलाधिपतिः स्वामी सर्वदेवेशनायकः।।१२।।
चतुर्भुजश्चतुर्मूर्तिश्चतुर्वर्गविशारदः ।
नारायणः सर्वरूपः सर्वदा पूतमानसः।।१३।।
श्रीकृष्णः केशिसंहर्त्ता मुरारिर्देवकीसुतः।
सर्वारिष्टान्तकः सर्वपूरकः सर्वभाववित्।।१४।।
खरदुष्टिनिराकर्त्ता तुलसीदासवल्लभः।
पूरिताखिलभक्तादिहृद्युत्पन्नमनोरथः ।।१५।।
उपेन्द्रः सर्वशक्तिश्च वरदेशो महोदधिः।
सोमवंशोद्भवो विष्णुः सर्वात्मा सद्गुणार्णव।।१६।।
गोपिकाग्रहसम्भूतनवनीतलवप्रियः ।
धूलिधूसरिताङ्गश्च कमलारुणलोचनः।।१७।।

गोवर्द्धनाद्रिधारी च तत्स्थिताखिलरक्षकः।
प्रमेयोत्पन्नसद्भावसफलीकृतगोपिकः ।।१८।।

तिरस्कृतहरीणाक्षः पूतनाप्राणघातकः।
देवोऽच्युतो व्रजेशश्च सर्वधर्म्मपरायणः।।१९।।

वृन्दावनप्राणपतिः सत्यवक्ता धुरंधरः।
कृतरासादिसंनृत्यसादी भूतवपुर्जनः।।२०।।

नंदापदश्च संहर्त्ता बालगोपालचेष्टितः।
दामोदरो विश्वमूर्तिर्धेनुकारिप्रलम्बहा।।२१।।

वातासुरारिर्गोविन्दः कंसघ्नो गोकुलोत्सवः।
देवेन्द्रदर्पसंहर्त्ता रुक्मिणीप्राणवल्लभः।।२२।।

समस्तदुष्टहर्त्ता च मोक्षदो गरुडध्वजः।
योगीश्वरो जगत्पूज्यो महोदारचरित्रवान्।।२३।।

उद्वहः श्रीयशोदादिलालितो मधुसूदनः।
समुद्रकोटिगम्भीरः सप्तलोकैकमण्डनः।।२४।।

जगदेकस्फुरत्ख्यातिर्धरासद्गतिनाशनः ।
सत्यभामाप्राणपतिर्यमुनाजलकौतुकी ।।२५।।

सन्नामभूषणाख्यं वै स्तोत्रं यः प्रपठेत्सुधीः।
कण्ठे लिखित्वा संस्थाप्य सोऽपि विष्णुर्न संशयः।।२६।।

गोकुलेशं मनस्कृत्य स्तुत्या भक्त्या विचारितम्।
तस्माद्गोपालभक्तानामस्तु बुद्धिप्रसारणम्।।२७।।

प्रोक्तानि यानि नामानि भूषारूपाणि तानि सः।
दध्यादङ्गेषु सर्वेषु त्रैलोक्यविजयी भवेत्।।२८।।

इति सन्नामभूषणं स्तोत्रम्।

अथ बालमुकुन्दस्तोत्रम्

करारविन्देन पदारविन्दम्
मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानम्
बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।१।।

वटस्य पत्रे शयनं मुरारे-
र्वस्त्रं कषायं परिधानकाले।
कल्पान्तकाले शिशुरूपरूपम्
बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।२।।

स्वाङ्गकृष्णे कलये विचित्र-
मुग्रं त्रिरेखाकरणेषु रम्यम्।
सिन्दूरवर्णं दृशिकं च सिंहं
बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।३।।

अर्धं शरीरं नररूपदृष्टम्
अर्धं च सिंहं वदनं करालम्।

दैत्यस्य पक्षं हि विदारयन्त्रम्

बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।४।।

गोवर्धनोद्धारकवशालबालम्

गोपोपगोपीजनमध्यसंस्थम् ।

गोपांश्च मध्ये परिवेष्टयन्तम्

बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।५।।

श्यामं शरीरं जलदैः सवर्णम्

मयूरपिच्छैः शिरशोभयंतम्।

वाद्यन्तवेणुं वदने सलीलम्

बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।६।।

ब्रह्मात्मबालं भुवनैकपालम्

यशोविशालं शिशुपालकम्।

संसारमायामतिमोहजालम्

बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।७।।

लीलाकराग्रे धृतपर्वतेन्द्रम्

इन्द्रं महावृष्टिमदं जयन्तम्।

गोपीभुजैर्लालितपादपद्ममम्

बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।८।।

मुकुन्दाष्टकमिदं पुण्यं

त्रिसन्ध्ये च शुचिः पठेत्।

स एव लभते मोक्षं
दारिद्र्यं चैव नश्यति।।९।।

इति श्रीभाषामिश्रितं बालमुकुन्दस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

अथ विट्ठलविरचिताऽऽरार्तिका

शरणागतभीतिनिवृत्तिपरम्
परपक्षतमोनिकरांशुनिधिम्।
निधिसेवितपादसरोजयुगम्
युगधर्मनिवर्त्तककालफलम्।।१।।

करजोल्लिखितप्रमदोच्चकुचम्
कुचकुंकुमलिप्तयशोहृदयम्।
हृदयस्थितगोकुलवासिजनम्
जनसञ्चितपुण्यचयैकफलम्।।२।।

फलदानपरातिसमर्थभुजम्
भुजदण्डगृहीतकुचाग्रमणिम्।
मणिशोभितहस्तधृताद्रिवरम्
वरगोपवधूचयसंवलितम् ।।३।।

वलितप्रमदायुतरासकरम्
करपद्मयुगाहितवेणुवरम् ।

वरभक्तिशिरःस्थितपद्मकरम्
करमर्दितयादवयूथरिपुम् ।।४।।
रिपुयूथभुजङ्गमदर्पहरम्
हरपूजितरम्यसरोजपदम् ।
पदपद्मयुगार्चनदत्तपदम्
पदपद्मनखस्थितभक्तिरसम्।।५।।
रसपूरितगोपवधूशरणम्
शरणागतघोषजनाभयदम् ।
भयदाधशिरोहरखड्गधरम्
धरणीकृतपुण्यचयैकफलम्।।६।।
फलहेतुविमर्द्दितदुष्टखरम्
खरमुक्तिदपादसरोजवरम् ।
वरबर्हिशिखण्डिकयुक्तकचम्
कचपाशिनिवेशितपुष्पचयम्।।७।।
घोषधिपतिं कमलाधिपतिम्।
वन्दे तमहं मथुराधिपतिम्।।८।।

इति श्रीविट्ठलेशविरचिताऽऽरार्त्तिका समाप्ता:।

अथ श्रीमदाचार्यचरणानां सकलावतारसाम्यरूपं निरूप्यते।

(श्रीहरिरायचरणाः)

यथा श्रीमद्वराहेण दंष्ट्रया चोद्धृता मही।
हिरण्याक्षश्च निहतो गोद्विजामरदुःखदः।।१।।

तथा श्रीवागधीशेन नष्टा भक्तिः समुद्धृता।
निहत्य भक्तद्वेष्टारं दुष्टसंघं भयप्रदम्।।२।।

यतोऽथं वल्लभाधीशो विख्यातः पृथिवीतले।
'रोषदृक्पातसंप्लुष्टभक्तद्विडि'ति नामतः।।३।।

इति वाराहसाम्यम् ।।१।।

सनन्दनादयो देवा ब्रह्मचर्यप्रकाशकाः।
बभवुर्ब्रह्मणः पुत्राः शुद्धमार्गप्रवर्तकाः।।४।।

तथायमपि वागीशो ह्यन्यस्त्रीसंगमत्यजत्।
अत एवास्य नामास्ति 'सुपूरितः' रहःप्रियः'।।५।।

'पतिव्रतापतिश्चेति' तेन तद्वद् बभूव सः।
ब्रह्मचर्यत्वसंसिद्धिस्तेन जाता महाप्रभोः।।६।।

इति सनकादिसाम्यम् ।।२।।

यथा श्रीनारदः पंचरात्रं व्यरचयत्प्रभुः।
यस्मिन्सेवाप्रकारश्च स्फुटं श्रीमानकल्पयत्।।७।।

'भक्त्याचारोपदेष्टा' भूत्कर्ममार्गप्रवर्त्तकः।।८।।
येनाचारश्च यज्ञश्च पुष्टिमार्गः प्रवर्त्तितः।
ततोयं 'यज्ञकर्ता' च 'यज्ञभोक्ते' ति विश्रुतः।।९।।

इति नारदसाम्यम्।।३।।

यथा नारायणो देवो गन्धमादनवासभाक्।
कामसेनां विजित्याशु तिष्ठत्येकान्त ईश्वरः।।१०।।
तथायमपि दुष्टौघं विजित्य करुणानिधिः।
कृष्णप्रिये व्रजेऽवात्सीद्यतोऽयं 'श्रीव्रजप्रियः'।।११।।

इति नारायणसाम्यम्।।४।।

यथा श्रीकपिलः सांख्यमुक्त्वाऽज्ञानमपाहरत्।
जीवानां दुष्टमनसां देवहूतीप्रियावहः।।१२।।
तथाणुभाष्यव्याख्यानादयमप्यखिलेश्वरः।
विनाश्याज्ञानपटलं चरतां निजवर्त्मनि।।१३।।
बभौ सर्वत्र विजयी श्रीइलम्माप्रियावहः।
अत एवास्य नामोक्तं 'सूत्रभाष्यप्रवर्त्तकः'।।१४।।

इति कपिलसाम्यम्।।५।।

आन्वीक्षिकीं यथा दत्तः प्रह्लादादिभ्य उक्तवान्।
नानावाक्यप्रचारेण दृढीकृत्य सतां मतम्।।१५।।
तथायमपि 'वागीशः' समाश्रित्य सतां मतम्।
'भक्त्याचारोपदशार्थं' 'नानावाक्यनिरूपकः'।।१६।।

तदर्थमेव भगवान् कथयामास वै बहून्।
स्तवान् कृष्णाश्रयाद्यांश्च प्रभुः 'श्रीकृष्णहार्दवित्'।।१७।।

इति दत्तसाम्यम् ।।६।।

यथा यज्ञावतारश्च यामादिद्वादशात्मजैः।
सार्द्धं गुणगणाब्धिश्चारक्षत्स्वायंभुवान्तरम्।।१८।।
तथा श्रीवल्लभाधीशः कुमाराभ्यां च नप्तृभिः।
दूरीकृत्यासुरान् सर्वानपात्सारस्वतान्तरम्।।१९।।

इति यज्ञावतारसाम्यम् ।।७।।

यथा श्रीऋषभो देवः पुत्राणां ज्ञानदोऽभवत्।
अज्ञानान्तर्द्धिरमलः पुंसां मोहाब्धिमज्जताम्।।२०।।
तथायं चाज्ञातंलीलो नाम्ना ख्यातश्च भूतले।
स्ववंशे स्थापिताशेषस्वमाहात्म्यश्च सोऽभवत्।।२१।।

इति ऋषभदेवसाम्यम्।।८।।

यथा श्रीपृथुराजा च गोरूपोर्वीं दुदोह वै।
सर्वजीवार्थमनघो महाराजोवसेवितः।।२२।।
तथा महेन्दिरास्वामी सामवेदसमुद्भवः।
ऋग्धेनूः संदुदोहाथ 'भक्तेच्छापूरका'ह्वयः।।२३।।
पुष्टिमार्गप्रचारार्थं शुद्धाद्वैतमताप्तये।
'लीलामृतरसौघार्द्रीकृताखिलशरीरभृत्' ।।२४।।

इति पृथुसाम्यम्।।९।।

भक्तं यथैकं मत्स्यस्तु सत्यवन्तमपात्प्रभुः।
जलात्प्रलयकालीनात् मात्स्यं संश्रावयञ्जनान्।।२५।।

तथा श्रीवल्लभेशस्तु संसारभयवारिधेः।
भक्तानपात् बहुञ् श्रीशःश्रावयित्वा सुबोधिनीम्।।२६।।

सुरासुराणामुदधिं मथ्नताममृतं यदा।
भूतोऽप्ताप्तामृतानां च क्लिश्यतां तेन कर्मणा।।२७।।

इति मत्स्यसाम्यम्।।१०।।

यथा श्रीकमठः साक्षाद्दधे मंदरपर्वतम्।
पुष्टे च हाटकमयं लक्षयोजनविस्तृते।।२८।।

तथैव दैवजीवानामासुराणां च वाक्पतिः।
क्लिश्यतां भवसिन्धौ च मोक्षपीयूषहेतवे।।२९।।

गृहीत्वा ज्ञानसर्पस्य मुखपुच्छौ महाप्रभुः।
तदा प्रलुप्तं निगमपर्वतं चोद्दधार ह।।३०।।

दुष्टोत्थापितपाखण्डविषं भूरि पराक्रमम्।
पत्रावलंबनशिवरूपेणाथ पपौ मुदा।।३१।।

इति कमठसाम्यम्।।११।।

यथा धन्वंतरिः पुंसां स्मृतिमात्रार्त्तिनाशनः।
तथा सतामयमपि 'स्मृतिमात्रर्त्तिनाशकः'।।३२।।

इति धन्वतरिसाम्यम्।।१२।।

यथा श्रीमोहिनी दैत्यान् मोहयित्वाऽथ चाक्षुषैः।
दैत्योत्संगगतं पात्रं सुधायाः प्राप्य निर्मलम्।।३३।।
सुरेभ्यश्चामृतं भूयो ददौ दैत्येभ्य एव न।
पुरुषोपि महाविष्णुर्धृत्वा स्त्रीरूपमद्भुतम्।।३४।।
एवं श्रीवल्लभोऽपीशो नष्टं वेदमनुत्तमम्।
उद्धृत्य जगतां नाथो निजभक्तार्थमादरात्।।३५।।
विरुद्धाश्रयतो दुष्टान् मोहयित्वा महाप्रभुः।
तेन संमथ्य निगमगिरिणास्मिन्भवे शुभम्।।३६।।
पुष्टिरूपामृतमयं निष्कास्य गुणवारिधिः।
देवभ्योऽदादसुरेभ्यो न ददौ भक्तवत्सलः।।३७।।
पूर्वमासीत् स्वयमपि वल्लभोऽथ द्वितीयके।
अवतारे संबभूव वाक्पतिः पुरुषाकृतिः।।३८।।

इति मोहिनीसाम्यम्।।१३।।

अथ सकलजगदार्त्तितटिनीपतिवारको भगवान्नृसिंहो यथा स्तंभादाविर्भूय हिरण्यकशिपुं कराग्रेण विदार्य निजभक्तं प्रह्लादं ररक्षैवं भगवान् श्रीवल्लभाधीशोपि चंपकारण्ये वीतिहोत्रात्प्रकटीभूयाखिलदुःखदातारं जीवाज्ञानरूपमहादैत्यं सद्वाक्यप्रचारनखैर्भित्तवा प्रह्लादरूपवैष्णववृन्दमरक्षदित्यत एव उग्रप्रताप इति नामनिर्देश इति।।३९।।

इति नृसिंहसाम्यम्।।१४।।

अथ च यथाऽखिलगीर्वाणकदम्बसमीडितगरिष्ठ-गुणगणपटलो भगवान् वामनः कश्यपसुतं आदौ भिक्षुरूपं गृहीत्वा बलेः सर्वस्वमाच्छिद्य ववृधे पुनश्च तेन संपूजितस्तमनुगृह्यान्तर्दधे, तथैव भगवान् इलापतिः श्रीलक्ष्मणराजकुमारः शुद्धः भिलुकवद्रूपं समाश्रित्य तत्र च महाभिमानिनं पण्डितसमूहं विजित्याचार्य पदवीं च प्राप्य विद्यानगराधीश्वरमनुगृह्य तेषां निरुतराणां जयेन पुष्टिमार्गमार्त्तण्डोदयं कृत्वा मातुलाभिमानं चाहत्य कनकाभिषेकाप्तयशःप्रसारेण वृद्धिं प्राप्य पृथिवी पर्यक्रामदिति।।४०।।

इति वामनसाम्यम्।।१५।।

यथा द्विजद्रोहकाराञ् जघान क्षत्रियान् बहून्।
परश्वधेन तीक्ष्णेन रेणुकानन्दवर्धनः।।४१।।

तथा श्रौतद्रोहकरान् यः स्मार्तानसुरान् प्रभुः।
पत्रावलंबखण्डेन जित्वा चक्रे निरुत्तरान्।।४२।।

इति परशुरामसाम्यम्।।१६।।

कलिकालमलग्रस्तान् जीवानालोक्य दुर्मतीन्।
मन्दभाग्यांस्तथा दुष्टाञ् श्रीमान् सत्यवतीसुतः।।४३।।

श्रीमद्भगवतालापा-दुद्दधार दयापरः।
पाषण्डतिमिराक्रान्तजीवजालं द्विधाऽकरोत्।।४४।।

तथा महाप्रभुरपि दुष्टाध्वार्णवमज्जितान्।
जीवानालोक्य भगवान् पुष्टिमार्गोपदेशतः।।४५।।

अङ्गीकृत्य मंत्रदानाच्चक्रे भयविवर्जितान्।
पुत्रपौत्रप्रपौत्राद्यैः करोति च करिष्यति।।४६।।

इति वेदव्याससाम्यम् ।।१७।।

अयोध्याधिपती रामः सेतुं कृत्वा यथार्णवे।
स्वसेनां स्थापयामास जिग्येऽसुरचमूर्द्धुतम्।।४७।।

तथेलम्माकुमारोपि श्रीमद्भागवतार्णवे।
सेतुं सुबोधिनीरूपं विधायातारयज्जनान्।।४८।।

जिगायासुरवर्गं च वैष्णवद्वेषकारकम्।
'श्रीभागवतपीयूषसमुद्रमथनक्षमः' ।।४९।।

इति दाशरथिरामसाम्यम्।।१८।।

अथ यथा सकलजगदभीष्टसंपादकः श्रीभगवान् श्रीनन्दराजकुमारो निजसहोदरेण श्रीरेवतीरमणेन पूर्णारेवतीरमणसदृशेन सारस्वतकल्पेऽवतीर्य दुष्ट-कदम्बरूपं भूभारमुञ्जहार, स्वहस्तमारणेन च तन्मोक्षं चकारैवमसावपि भगवान् पुरुषोत्तमो नारायणादि-

दीक्षितानां सोमयागफलस्वरूपः श्रीलक्ष्मणांगजः कलाववतीर्य पुत्राभ्यां श्रीगोपीनाथविट्ठलाभ्यां सहाष्टाक्षरदानेन निगददानेन च केनचिदपराधविशेषेण विनष्टमतीन् अत एव गोलोकच्युतान् जीवानुद्दधारेति।।५०।।

इति श्रीकृष्णसाम्यम्।।१९।।

यथा हलधरः श्रीमान् निजानन्दाब्धिमज्जितः।
कृष्णसौख्यप्रयत्नात्मा रोहिण्यानन्दवर्धनः।।५१।।

किञ्च-

निजभाण्डकारकाणामभीष्टदाताऽथ रेवतीश्रेष्ठः।
श्रीपुष्टिमार्गसंस्थैः सद्भिःसेव्यो व्रजेशवन्नित्यम्।।५२।।

तथायमपि वागीशो नामभिस्तत्सद्रक्षकैः।
विख्यातस्त्रिषु लोके कृष्णानुग्रहभोजनः।।५३।।

'आनन्दः' 'परमानन्दः' 'पूर्णानन्दो' जगद्गुरुः।
'स्वानन्दतुन्दिल'श्चेति इलम्मानन्दवर्धनः।।५४।।

'अदेयदानदक्ष'श्च श्रीअक्काप्राणवल्लभः।
'भक्तेच्छापूरकः' 'कृष्णभक्तिकृन्निखिलेष्टदः'।।५५।।

इति हलधरसाम्यम् ।।२०।।

अथ च यथा भगवान् बुद्धो देवकार्यार्थं सर्वान् विनिन्द्य विश्ववैपरीत्यं कर्माचरन् सर्वान् दैत्यान्

मोहयामास, तथयमपि भगवान् श्रीकृष्णाख्यः 'प्राकृतानुकृतिव्याजमोहितासुरमानुषः,' इति नामानुकरणसम्पन्नो वैष्णवानां वैपरीत्यं कर्म प्रकाशयन् 'निगूढहृदयत्त्वं' च दर्शयन् संन्यासधारणमङ्गीकृत्यासुरस्य मोहलीलामाचचारेति।।५६।।

इति बुद्धसाम्यम्।।२१।।

हयग्रीवो यथा नष्टवेदाविर्भावकारकः।
तथायमपि वेदोक्तं नष्टमार्गमदशर्यत्।५७।।

इति हयग्रीवसाम्यम्।।२२।।

हंसो यथा च महतां पुत्राणां ब्रह्मणः पुरा।
ज्ञानदः सम्बभूवेह ब्रह्मानुग्रहकारकः।।५८।।
तथा महाप्रभुरपि महतां ज्ञानदोऽभवत्।
हनुमत्सदृशानां च रामसन्तोषकारकः।।५९।।

इति हंससाम्यम् ।।२३।।

कल्किर्यथा कलेरन्ते जीवाज्ञानं विनाशयन्।
भद्रप्रदश्च जीवानां सम्भविष्यति सर्वतः।।६०।।
एवं वैश्वानरोऽपीशः कलिनष्टं च दुर्बलम्।
पुष्टिमार्गं पुनः श्रीमान् द्योतयिष्यति निर्मलम्।।६१।।
पुष्टिमार्गं तु भगवान सर्वकाले तु रक्षति।
पुत्रपौत्रादिरूपैश्च 'दुर्लभाङ्घ्रिसरोरुहः'।।६२।।

भूतेषु च भविष्येषु वर्त्तमानेष्वपीश्वरः।
चतुर्युगेषु कृतभुग् मार्गं रक्षति रक्षति।।६३।।

इति कल्किसाम्यम्।।२४।।

एवं सर्वावताराणां गुणकर्मपराक्रमान्।
दधाति नितरां सन्तः श्रीमाँल्लक्ष्मणनन्दनः।।६४।।

तस्मात् सर्वैर्वैष्णवैश्च त्रैलोक्ये विबुधेश्वरः।
प्रकीर्तितः कृष्णरूपः श्रीपूर्णपुरुषोत्तमः।।६५।।

अतः स एव संसेव्यो वैष्णवैः पापभीरुभिः।
ध्यातव्यः स्मरणीयश्च तैलंगतिलकः प्रभुः।।६६।।

आर्या-

अस्य श्रवणात् पाठात् प्रभवेत् पुंसामभेदत्वम्।
श्रीमन्नन्दकुमारवाक्यत्योश्चापि नूनमुर्व्यां वै।।६७।।

एतन्मदुदितं बालस्वभावाद्वंशवत्सलः।
श्रीवल्लभाचार्यनामा प्रभुः क्षाम्यतु सर्वथा।।६८।।

स्वकीयं श्रीवल्लभीयं मामानन्दनिर्धिर्हरिः।
निःसाधनं च वृणुते स कृष्णः शरणं मम।।६९।।

इति श्रीहरिदासविरचितं श्रीमहाप्रभुसर्वा-
वतारसाम्यनिरूपणं सम्पूर्णम्।

।।श्रीमद्विठ्ठलेशचरणकमलेभ्यो नमः।।

।। श्रीमद्गोकुलेशो जयति।।

अथ मङ्गलाचरणम्

निजमुरलिकानादाह्वानागतव्रजसुन्दरी-
निरुपमनवस्नेहाऽम्भोधेर्विचित्ररोर्मिभिः ।
किमपि परितश्चार्द्रार्द्रोऽस्तु प्रभुः प्रकटीभवन्
प्रतियुवतिसम्भेदेनास्मद्दृशां विषयः सदा।।

(२)

मायावादिकरीन्द्रदर्पदलनेनास्येन्दुराजोद्गत-
श्रीमद्भागवताख्यदुर्लभसुधावर्षेण वेदोक्तिभिः।
राधावल्लभसेवया तदुदितप्रेम्णोपदेशैरपि
श्रीमद्वल्लभनामधेयसदृशो भावी न भूतोऽस्त्यपि।।

(३)

सायङ्कुञ्जालयस्थासनमुपविलसत्स्वर्णपात्रं सुधौतं
राजद्यज्ञोपवीतम्परितनुवसनङ्गौरमम्भोजवक्त्रम् ।
प्राणानायम्य नासापुटनिहितकरङ्कर्णराजद्विमुक्तं
वन्देऽर्घोन्मीलिताक्षं मृगमदतिलकं विट्ठलेशं सुकेशम्।।

(४)

नमामि श्रीपतिं देवं वल्लभं विट्ठलात्मजम्।
यः करोति सदारण्ये मङ्गलं जनवर्जिते।।

(५)

वन्देऽहं गोकुलाधीशं भगवन्तं कृपानिधिम्।
पावनो यामुने जातः कलौ घोरे द्विजेषु यः।।

(६)

नमामि गोकुलाधीशं लीलामानुषविग्रहम्।
व्रजाधीशं विश्वविभुं पार्वतीप्राणवल्लभम्।।

(७)

राक्षिता स्रग् जहांगीराद्-ध्यधर्माद्रक्षिता जनाः।
विद्रूपाद्रक्षितो धर्मः पातु वः पार्वतीपतिः।।

(८)

मायावादिचिद्रूपादि-प्रतिबन्धनिवारकः।
दर्पहा दुर्मदान्धानां पायाद्वो भक्तभूषणः।।

श्री वल्लभस्तोत्रम्

पुरुषोत्तममुखाब्जाधिकसौभाग्यपद्रजाः।
गोकुलेन्दुमुखीवृन्दजीवनं यन्नतोऽस्म्यहम्।।१।।

निजप्रकाशप्रसरावधूत-तमःकृतार्थीकृतजीववृन्दम्।
स्फुरत्मुखश्रीजितशारदेन्दुं श्रीगोकुलेन्दुं शरणं प्रपद्ये।।२।।

श्रीमद्वल्लभसत्कुल-निर्मलकमलप्रकाशमार्तण्डः।
सज्जनकुमुदकुलेन्दु-र्गोकुलनाथो हरिर्जयति।।३।।

सम्पूर्णः पुरुषोत्तम-भावाभिव्यक्तिसुखदमधुरश्रीः।
अङ्गीकृतद्विजवपु-र्गोकुलनाथो हरिर्जयति।।४।।

चन्द्रमुखो नलिनाक्ष-स्तुलसीमणिमालिकां दधत्कण्ठे।
स्मितमधुराधरबिम्बो-गोकुलनाथो हरिर्जयति।।५।।

निर्मलशारदहिमकर-करनिकरक्षीरहीरसत्कीर्तिः।
श्रीविट्ठलेशतनुजो गोकुलनाथो हरिर्जयति।।६।।

आहृतवरवेदगणो-मथितक्षीरनीरधिः परमः।
उद्धृतवरगिरिराजो-गोकुलनाथो हरिर्जयति।।७।।

श्रवणेन स्मरणेन च नमनेन च संकथावलोकाभ्याम्।
स्ययमेव च स्वरसदो गोकुलनाथो हरिर्जयेति।।८।।

संन्यासिवेशमोहित-साधुगणःसोऽसुरो हरिद्रोही।
येन निराक्रियतासौ गोकुलनाथो हरिर्जयति।९।।

क्लेशमहोदधिमग्नः कल्याणो नाममात्रकल्याणः।
स्वयमुदधारि स येन गोकुलनाथो हरिर्जयति।।१०।।

इति श्रीमठपति-कल्याणभट्ट-विरचितं
श्रीवल्लभस्तोत्रं समाप्तम्।

श्रीगोकुलेशाष्टकम्

प्राणाधिकप्रेष्ठभवज्जनानां
त्वद्विप्रयोगानलतापितानाम्।
समस्तसन्तापनिवर्तकं यद्
रूपं निजं दर्शय गोकुलेश।।१।।

भवद्वियोगोरगदंशभाजां
प्रत्यङ्गमुद्यद्विषमूर्च्छितानाम्।
सञ्जीवनं सम्प्रति तावकानां
रूपं निजं दर्शय गोकुलेश।।२।।

आकस्मिकत्वद्विरहान्धकार-
संछादिताशेषनिदर्शनानाम्।
प्रकाशकं त्वज्जनलोचनानां
रूपं निजं दर्शय गोकुलेश।।३।।

स्वमन्दिरास्तीर्णविचित्रवर्ण
सुस्पर्शमृद्वास्तरणे निषण्णम्।
पृथूपधानाश्रितपृष्ठभागं
रूपं निजं दर्शय गोकुलेश।।४।।

सन्दर्शनार्थागतसर्वलोक-
विलोचनासेचनकं मनोज्ञम्।

माला तिलक के रक्षक श्रीमद्गोकुलेश प्रभुचरण

वृन्पावलोकहिततत्प्रसादं
रूपं निजं दर्शय गोकुलेश।।५।।

यत्सर्वदाचर्वितनागवल्ली-
रसप्रियं तद्रसरक्तदन्तम्।
निजेषु तच्चर्वितशेषदं च
रूपं निजं दर्शय गोकुलेश।।६।।

प्रतिक्षणं गोकुलसुन्दरीणा-
मतृप्तिमल्लोचनपानपात्रम्।
समस्तसौन्दर्यरसौधपूर्णं
रूपं निजं दर्शय गोकुलेश।।७।।

क्वचित्क्षणं वैणिकदत्तकर्णं
कदाचिदुद्गानकृतावधानम्।
सहासवाचः क्व च भाषमाणं
रूपं निजं दर्शय गोकुलेश।।८।।

श्री गोकुलेशाष्टकमिष्टदातृ
श्रद्धान्वितो यः पठितीति नित्यम्।
पश्यत्यवश्यं स तदीयरूपं
निजैकवश्यं कुरुते च हृष्टः।।९।।

इति श्रीकृष्णरायविरचितं श्रीगोकुलेशाष्टकं समाप्तम्।

श्रीरुचिराष्टकम्

सर्वत्र यः प्रकटयन् भुवि सद्गुणान् स्वान्
श्रीविट्ठलो हरिरिह स्वयमेव योऽभूत्।
तं नित्यकान्तमथ सर्वगुणैकरूपं
श्रीवल्लभं प्रभुमहं सततं स्मरामि।।१।।

रूपामृतानि निजसेविजनाय दातुं
यः सन्दधार स हि लौकिकचारुदेहम्।
आनन्दमात्रनिखिलावयवस्वरूपं
भूयोभजामि सुभगं भुवि गोकुलेशम्।।२।।

पष्योचितस्मितलसल्ललनालताभिः-
रालिङ्गितं निजजनेप्सितसत्फलाढ्यम्।
शृङ्गारकल्पतरुमत्र कमप्यनल्पं
श्रीगोकुलोदितमहं सततं भजामि।।३।।

योषिद्भिरद्भुतमशेषहृषकिपात्रैः-
पेपीयमानपरिपूर्णरसस्वरूपम्।
ब्रह्मादिदुर्लभमनन्यजनैकलभ्यं
श्रीवल्लभं तमनिशं सुभगं भजामि।।४।।

सौभाग्यभूमिजनितं त्रिजगद्वधूनां
लावण्यसिन्धुलहरीपरिषिक्तगात्रम्।
शृङ्गारशेखरमनन्तयशःस्वरूपं
श्रीगोकुलेश्वरमेव सदा भजामि।।५।।

सौन्दर्यपद्ममधुवञ्चितमानसैस्तु
संसेवितं मधुकरैः क्षितिसुन्दरीणाम्।
आनन्दकन्दमरविन्ददलायताक्षं
तं गोकुलावनिगतं निभृतं भजामि।।६।।

शृङ्गारसारनिजरूपरसं पदाब्जं
भृङ्गायितेभ्य इह पाययितुं जनेभ्यः।
सौन्दर्यसीमनिकषं दधतं स्ववेशं
श्रीगोकुलेशमनिशं तमहं भजामि।।७।।

शृङ्गारमेव वनितोत्सवमूर्मिन्तं
भाग्येन केनचिदिहावतरन्तमुर्व्याम्।
श्रीविट्ठलाङ्गजनुपं स्वकुलावतंसे
सन्तं भजामि सततं प्रभुगोकुलेशम्।।८।।

इत्थं प्रभोर्निजप्रभातुलमातुलस्य
श्रीवल्लभस्य रुचिराष्टकमादरेण।
श्रीकृष्णरायकृतमिष्टदमेतदीय-
पादारविन्दयुगलस्मरणेन जप्यम्।।९।।

इति श्रीकृष्णरायविरचितं
रुचिराष्टकं समाप्तम्।

श्रीगोकुलेशशयनाष्टकम्

प्रातः स्मरामि गुरुगोकुलनाथसंज्ञं
संसारसागरसनुत्तरणैकसेतुम् ।
श्रीकृष्णचन्द्रचरणाम्बुजसर्वकाल-
संशुद्धसेवनविधौ कमलावतारम् ।।१।।

प्रस्वाप्य नन्दतनयं प्रणयेन पश्चा-
दानन्दपूर्णनिजमन्दिरमभ्युपेतम् ।
स्थूलोपधानसहितासनसंन्निषण्णं
श्रीगाकुलेशमनिशं निशि चिन्तयामि।।२।।

अभ्याग्रभक्तकरदत्तसिताभ्रयुक्तं
ताम्बूलपूर्णवदनं सदनं रसाब्धेः।
आवेष्टितं परित आत्मजनैरशेषैः
श्रीगोकुलेशमनिशं निशि चिन्तयामि।।३।।

जाते तथा प्रभुकथाकथने तदानी-
मुत्थापिते परिचयेण पृथूपधाने।
गन्तुं गृहाय सुहृदः स्वयमुक्तवन्तं
श्रीगोकुलेशमनिशं निशि चिन्तयामि।।४।।

नित्योल्लसन्नवरसौघनिवासरूपं
सौन्दर्यनिर्जितजगज्जयिकामभूपम् ।

स्वप्रेयसीजनमनोहरचारुवेषं
सञ्चिन्तयामि शयने निशि गोकुलेशंम्।।५।।

कस्तूरिकादितनुलेपविसारिगन्धं
पुष्पस्त्रगन्तरलसत्तनुमौलिबन्धम्   ।
संवाहिताङ्घ्रियुगलं निजमुख्यभक्तैः
सञ्चिन्तयामि शयने निशि गोकुलेशम्।।६।।

सप्रेमहास्यवचनैः कतिचित् स्वकीयान्
स्थित्वा क्षणं निजगृहाय निदिष्टवन्तम्।
शय्योपवेशसमयोचित्तवेषभाजं
सञ्चिन्तयामि शयने निशि गोकुलेशम्।।७।।

निद्रागमात् प्रथमतो निजसुन्दरीभिः
संसेवितं   तदखिलेन्द्रियवृत्तिभाग्यम्।
श्रङ्गारसारमधिराजमुदारवेषं
सञ्चिन्तयामि शयने निशि गोकुलेशम्।।८।।

स्वच्छोपरिच्छदलसच्छयनोपविष्टं
सस्नेहभक्तसुखसेवितपादपद्मम्   ।
निद्रावधूस्वसमयेप्सितसङ्गसौख्यं
सञ्चिन्तयामि शयने निशि गोकुलेशम्।।९।।

श्रीगोकुलेशशयनाष्टकमादरेण
श्रीकृष्णरायरचितं   सरसार्थपद्यम्।

सञ्चिन्तिताखिलफलप्रदमिष्टसिद्ध्यै
सञ्चिन्तयन्तु निशि तच्चरणैकचित्ताः।।१०।।

इति श्रीकृष्णारायविरचितं श्रीशयनाष्टकं सम्पूर्णम्

श्रीगोकुलेश-द्वात्रिंशन्नामाष्टकम्

श्रीगोकुलेशो जयति नमस्ते गोकुलाधिप।
नमस्ते गोकुलाराध्य नमस्ते गोकुलप्रभो।।१।।

नमस्ते गोकुलमणे नमस्ते गोकुलोत्सव।
नमस्ते गोकुलैकाश नमस्ते गोकुलोदय।।२।।

नमस्ते गोकुलपते नमस्ते गोकुलात्मक।
नमस्ते गोकुलस्वामिन् नमस्ते गोकुलेश्वर।।३।।

नमस्ते गोकुलानन्द नमस्ते गोकुलप्रिय।
नमस्ते गोकुलाह्लाद नमस्ते गोकुलव्रज।।४।।

नमस्ते गोकुलोत्साह नमस्ते गोकुलावन।
नमस्ते गोकुलोद्गीत नमस्ते गोकुलस्थित।।५।।

नमस्ते गोकुलाधार नमस्ते गोकुलाश्रय।
नमस्ते गोकुलश्रेष्ठ नमस्ते गोकुलोद्भव।।६।।

नमस्ते गोकुलोल्लास नमस्ते गोकुलप्रिय।
नमस्ते गोकुलध्येय नमस्ते गोकुलोडुप।।७।।

नमस्ते गोकुलश्लाध्य नमस्ते गोकुलोत्सुक।
नमस्ते गोकुलश्रीमन् नमस्ते गोकुलप्रद।।८।।

इति श्री गोकुलनाथानां द्वात्रिंशन्नामाष्टकं
नामस्तोत्रं समाप्तम्!

श्रीगोकुलेशाष्टकम्

(मालिनी वृत्तम्)

यतिवशधरणीशे धर्मलोपप्रवत्ते
हरिचरणसहायो यः स्वधर्मं जुगोप।
विहितभजनभारो धर्मरक्षावतारः
स जगति जयति श्रीवल्लभो गोकुलेशः।।१।।

असदुदितविदारी वेदवादानुसारी
यदुचितहितकारी भक्तिमार्गप्रचारी।
रुचिरतिलकधारी मालधारी तुलस्याः
स जयति जयति श्रीवल्लभो गोकुलेशः।।२।।

बहुविधिजननर्मप्रोक्तिबाणैरधर्मः
प्रकटमयति मर्मस्फोटमाराद्विधाय।
वपुषि भजनवर्म प्राप्य कल्याणधर्मः
स जयति नवकर्मा गोकुले गोकुलेशः।।३।।

निगमजनितधर्मद्रोहिणि क्षोणिनाथे
सकलसहजवेशस्तत्समीपं समेत्य।
तदुचितमदमत्या दत्तवानुत्तरं यः
स जयति जनचित्तानन्दको गोकुलेशः।।४।।

अधिकृतयुगधर्मे वर्धमाने समन्ता-
दनितशरणोऽसौ वेदधर्मो सदाऽभूत्।
तदिह शरणमागाद् यः सदैकः शरण्यं
स जयति जनवन्द्यो गोकुले गोकुलेशः।।५।।

कलिवृषलभयाप्तौ तत्कलिं सन्निगृह्य
क्षितिपतिरविताऽऽसीद्यस्य पूर्व परीक्षित्।
इह हि नृपतिभीतौ तस्य धर्मस्य नित्यं
स जयति भुवि गोप्ता गोकुले गोकुलेशः।।६।।

प्रथममिह परीक्षिद्रक्षितो वर्णधर्मः
पुनरपि कलिकल्पक्षुद्रभिक्षुक्षतोऽभूत्।
अभयपदमिदं यं शाश्वतं चाभ्युपेतः
स जयति निजभक्ताह्लादको गोकुलेशः।।७।।

य इह सकललोके केवलं न स्वकीये
प्रभुजननबलेन स्थापयामास धर्मम्।
सकलसुखविधाता गोकुलानन्ददाता
स जयति निजताताराधको गोकुलेशः।।८।।

श्रीवल्लभाष्टकमिदं पठति प्रपन्नो
य: कृष्णरायकृतमित्युषसि स्वचित:।
सोऽयं सुदुर्लभतमानपि निश्चयेन
प्राप्नोति वै विनिहितानखिलान् पदार्थान्।।९।।

इति श्रीकृष्णरायविरचितं
श्रीगोकुलेशाष्टकं सम्पूर्णम्।

श्रीबाललीलाष्टकम्

(भक्तसुखदमंजरी ग्रन्थ से)

भज विट्ठलबालं गोकुलपालं रसिकरसालं देहधरम्।
भज रुक्मिणिगोदं परमविनोदं प्रकटप्रमोदं मोहकरम्।।१।।

भल सुन्दरवक्त्रं बालचरित्रं परमपवित्रं मनहारि।
भज जयरसरूपं गोकुलभूपं परमअनूपं सुखकारि।।२।।

जय मंगल मंगल सहज सुमंगल,
दुरितअमंगल जनत्राता।
जय आनंदकारक बहुसुखदायक
ईक्षणसायकरसदाता ।।३।।

भजकण्ठाभरणं परमसुवरणं अंगदधरणं रुचिकर्ता।
भजलीलाकरणं बहुरसभरणं आधिसुहरणं भयहर्ता।।४।।

भजलीलाललितं सुफलं फलितं
कामसुदलितं जयकारी
जय श्रीवल्लभ क्रीडारसभर
कामयुद्धकर वपुधारी।।५।।

भज रुचिरं बालं प्रीतिप्रपालं-
नयनसुचालं शयनकरम्।
भज पूरणवरणं भक्ताभरणं-
शिशुतनुधरणं सिद्धिवरम्।।६।।

भज क्रीडालोलं केलिकलोलं-
अर्धसुबोलं पूर्णफलम्।
जय उत्सवकारक तापनिवारक
लीलास्मारक यशअमलम्।।७।।

भजपूर्णानंदं आनन्दकंदं
रमितसुछंदं परसिन्धुम्।
जय अनुरक्तं भक्तसंयुक्तं
अव्यक्तं हरिदासविभुम्।।८।।

इति श्रीबाललीलाष्टकं सम्पूर्णम्।

श्रीपादुकाष्टकम्

गोकुलेशपादपद्ममण्डनैकमण्डिते
सुरेशशेषसर्व देशवासिवृन्दवन्दिते।
अनन्यभक्तवाञ्छिताखिलार्थसिद्धिसाधिके
नमो नमोस्तु वां सदैव गोकुलेशपादुके।।१।।

महार्हरत्ननिर्मिते सुहेमपीठसंस्थिते
स्वसेवकैकसेविते सुपुष्पवासवासिते।
स्वरूपबुद्धिहीनजीवसत्स्वरूपबोधिके
नमो नमोस्तु वां सदैव गोकुलेशपादुके।।२।।

स्वसेवनैकचेतसामनन्यभक्तिदायिके
कृपासुधैकसिक्तभक्तकाममोहनाशिके।
महान्धकारलीनजीवहृत्प्रकाशचन्द्रिके
नमो नमोस्तु वां सदैव गोकुलेशपादुके।।३।।

निजाश्रयस्थिताखिलापदां सदा विदारके
ह्यनेकतापतप्तजीवगाङ्गवारिवीचिके ।
समागतस्य सन्निधौ दुरन्तमोहभञ्जिके
नमो नमोस्तु वां सदैव गोकुलेशपादुके।।४।।

सुदुःखदाववह्निदग्धमुग्धजीवसौख्यदे
चण्डकालव्यालग्रस्तत्रस्तविश्वमोचिके।

स्वभक्तशुद्धमानसे विराजमानहंसिके
नमो नमोस्तु वां सदैव गोकुलेशपादुके।।५।।

सुपादुकेतिकीर्तनाद् भवाब्धितोऽपि तारिके
स्वसेवनात्सदा नृणां सुखैकवृद्धिकारिके।
महेन्द्रचन्द्रब्रह्मभानुमोलिहेममालिके
नमो नमोस्तु वां सदैव गोकुलेशपादुके।।६।।

महर्षिदेवसिद्धवृन्दचामरप्रवीजिते
चतुर्दिगन्तवारिधौ निजप्रतापगर्जिते।
भवाब्धिमग्नजीवजातशोकमोहहारिके
नमो नमोस्तु वां सदैव गोकुलेशपादुके।।७।।

यथोद्धवाय भक्तिभावभाविताय चार्पिते
तथैव गोकुलेश्वरेण सेवकाय चार्पिते।
निरस्य मायिकं वचः स्वपुष्टिमार्गदर्शिके
नमो नमोस्तु वां सदैव गोकुलेशपादुके।।८।।

ये पादुकाष्टकमिदं नियतं पठन्ति
'विप्रोद्धवेन रचितं महतां प्रसादात्।
ते यान्ति गोकुलपतेश्चरणारविंदं
सान्निध्यमुक्तिगतिमत्र च तत्प्रसादात्।।९।।

इति श्रीउद्धवरचितं श्रीपादुकाष्टकं सम्पूर्णम्।

श्रीगोकुलेशोत्सव-वर्णनम्

नन्दालयान्ते निगमैरगम्यं
सनातनं ब्रह्म यदिस्त भूम्या।
गोरूपया प्रार्थित एव कृष्णो
वारत्रयं चाविरभूत् स एव।।१।।

तदा हि भूमावजनिष्ट पूर्वं
श्रीवल्लभाचार्य इति प्रसिद्धः।
श्रीविट्ठलेशोपि तथोत्तरस्माच्-
श्रीवल्लभोऽभूत् कुलनामदीपः।।२।।

पुराभिषिक्तः पयसा सुरभ्या
कृतः पतित्वे निज गोकुलस्य।
सर्वेन्द्रियस्वामितयापि नाम्ना
भक्तैर्निरुक्तोपि स गोकुलेशः।।३।।

यस्मिन्प्रभुः प्रादुरभूत्स भूमौ
कालो महाशोभन एव जातः।
तदा हि सर्वत्र जगज्जनानां
सुखाय तज्जन्मदिनं बभूव।।४।।

यज्जन्मनि जगज्जातं मङ्गलैकातिमङ्गलम्।
गोकुलं सकलं चासीन्नवमङ्गलपूरितम्।।५।।

प्रतिसंवत्सरं तस्मिन् गोकुलेशजनुर्दिने।
महामहोत्सवा आसन् सकला गोकुलौकसः।।६।।
आबालवृद्धमखिला धन्या गोकुलवासिनः।
नित्योत्सवास्तदा ह्यासन्नत्युत्सवसमुत्सुकाः।।७।।
वादित्राणि विचित्राणि वादयन्ति स्म वादकाः।
जगुर्मङ्गलगीतानि सुस्वराण्यङ्गनागणाः।।८।।
प्रतिद्वारमगाराणां नवपल्लवतोरणम्।
बबन्धु सेविनोऽन्योन्यं चक्रुः कुङ्कुममञ्जनम्।।९।।
अभूत्तस्मिन् मनोहारिशुभकारिजनुर्दिने।
गोकुलेशगृहद्वारि भूरिवाद्यान्यवादिषुः।।१०।।
तत्र दुन्दुभयो धीरं मधुरध्वनि दध्वनुः।
गोमुखानि सुखान्यासन्नखंडं डिण्डिमोनदद्।।११।।
भेर्यश्च भूरिशो नेदुर्गम्भीरा भैरवारवाः।
पणवाश्च तथा विप्रा प्रणवाद्याशिषोऽभवन्।।१२।।
वैणविका अनणीयांसो वीणाः कलभरीणान्(?)।
नवीना वेणवो रेणुः प्रवीणा आपणादिषु।।१३।।
अमन्दानन्दसंदोहदायका गायका जगुः।
मृदङ्गा वृन्दशो नेदुर्नृत्यो तालक्रमानुगाः।।१४।।
तदा शृङ्गारभोगान्ते गोकुलेशः स्वयं प्रभुः।
मन्दिरान्मङ्गलं स्नातुमाजगाम निजं गृहम्।।१५।।

तत्र स्थित्वाङ्गणे भद्रं कर्तुं स्नानं प्रचक्रमे।
स्नानीयसाधनं सर्वमानिन्युर्निजसेवकाः।।१६।।

केचन मस्तके तैलं सिषिचुः पुष्पवासितम्।
केचिन्मृगमदैः केचिद् घुसृणैः केपि चन्दनैः।।१७।।

सुगन्धोद्वर्त्तनैस्सर्वे जिजिषुस्तस्य विग्रहम्।
तत उष्णोदकैः सस्नौ तदा तद्दर्शनोत्सुकैः।।१८।।

तदाङ्गणगतैर्भक्तैरनुरक्तैस्ससम्भ्रमैः ।
प्रासादशिखरारूढः स घोषोऽतिमहानभूत्।।१९।।

संव्याय वासती पीते गत्वा स्वप्रभुमन्दिरम्।
ततोऽसौ राजभोगान्ते प्रभोर्नीराजनं व्यधात्।।२०।।

अथ तत्राङ्गणे सोयं चतुष्कोपरि शोभने।
पुत्रपौत्रप्रपौत्रैः स्वैर्निषसाद सहासने।।२१।।

पुरपीठस्थितानष्टमुष्टितण्डुलकल्पितान् ।
सखिबन्धूदितैर्मन्त्रैरुपचारैरपूपुजत् ।।२२।।

तदन्ते गोकुलेशस्य स्वसृपुत्र्यादयः स्त्रियः।
पतिमत्यः सतिलकं मौक्तिकारार्तिकं व्यधुः।।२३।।

निजभक्तस्त्रियोप्यस्य कृत्वा नीराजनं तथा।
तन्मूर्ध्नि मौक्तिकस्वर्ण-पुष्पाञ्जलिमवाकिरन्।।२४।।

ततोऽनुरक्तैर्भक्तैः स्वै रत्नाभरणभूषितः।
बन्धुभिः सह विप्रैश्च भोजनस्थानमाययौ।।२५।।

ब्राह्मणान् भोजयित्वा स सबन्धुर्बुभुजे स्वयम्।
भोजिकाः सेवकाः सर्वे स्वहस्तपरिवेषणैः।।२६।।

भोजनान्ते सताम्बूला ब्राह्मणा ददुराशिषः।
ततः स्वमन्दिरास्तीर्णनवासनसुखस्थितः।।२७।।

पुत्रपौत्रप्रपौत्रैश्च वृतोऽसौ सुशुभेतराम्।
नृत्यवादित्रगीताढ्यं नानोपायनसम्भृतम्।।२८।।

महामहोत्सवं चक्रुस्तदासन्ध्यं स्वसेवकाः।
दिव्यानि परिश्रेयानि पट्टवस्त्राण्यनेकधा।।२९।।

मौक्तिकानि सरत्नानि सौवर्णाभरणानि च।
सुकुटुम्बं गोकुलेशं प्रीतितः पर्यधापयन्।।३०।।

अनन्याः सेविनो धन्या द्रव्याण्यन्यान्यनेकशः।
उपायनान्यमी निन्युरन्योन्येभ्योऽधिकाधिकम्।।३१।।

रराज गोकुलेशोऽसौ सकुटुम्बोऽतिभूषितः।
पुष्पितः फलितो मूर्त्तः श्रृङ्गारद्रुरिवाद्भुतः।।३२।।

गोकुले गोकुलेशस्य सदा जन्मदिनोत्सवः।
दृष्ट आसन्ध्यमाधिक्यं कृष्णरायेण वर्णितः।।३३।।

इति श्रीकृष्णरायविरचितं
श्रीगोकुलेशोत्सववर्णनं सम्पूर्णम्।

श्रीगोकुलेशाष्टकम्

उद्धर्तुं धरणीतले निजबलेनैव स्वकीयाञ् जनान्
आविर्भूय तथा कृपापरवशः श्रीविट्ठलेशालये।
यः श्रीभागवतस्य तत्त्वविवृतेश्चक्रे प्रवाहं वचः
पीयूषैरतिपोषणाय सततं श्रीगोकुलेशोऽवतु।।१।।

यः पुष्टिमार्गगतभावविभावनैकं
दक्षः समक्षमपि सन्निधिसेवकानाम्।
यो ज्ञानगूढहृदयः सदयः सदैव
सेवासुखं मम तनोतु स गोकुलेशः।।२।।

यः सेव्यः सततं सतां निजफलप्रेप्सावदाविर्तना-
माचार्योदितशुद्धपुष्टिसुपथे नित्यानुकम्पाधरः।
यद्दृष्ट्यैव हृदन्धकार निचयो यायात् क्षणात् क्षीणता-
मानन्दं मुहुरातनोतु मधुराकारः प्रभुर्वल्लभः।।३।।

यो मायामतवर्तिदुष्टवदनध्वंसं वचोभिर्निजैः
कुर्वन् सेवकसर्वलोकहृदयानन्दं सदा पोषयन्।
तद्भावं सुदृढं करोति कृपया दासैकहृद्यातया
यातानां शरणं हृदा समनसा मोदं सदा यच्छतु।।४।।

हसद्वदनपङ्कजस्फुरदमन्दभावार्द्रदृक्
कपोलविलसद्रजोद्वयविमिश्रताम्बूलदः ।

समुन्नतसुनासिकः सरसचारुबिम्बाधरो
हरत्वखिलसेविनां चिरवियोगतापं क्षणात्।।५।।

मनोजमधुराकृतिर्निजमनोविदोदोद्‌गति
कृते जनमनोहृतौ विरतिकारकः संसृतौ।
स्वभावपरिपोषको भवसमुद्रसंशोषकः
करोतु वरणं सदा सफलमत्र वै वल्लभः।।६।।

गोधूममेचकमनोहरवर्णदेहो
य: केशकृष्णनिचयोल्लसदुत्तमाङ्गः
सूक्ष्मोत्तरीयकटिवस्त्रविराजिताङ्गः
संगं तनोतुमुदमद्‌भुतगोकुलेशः।।७।।

तातात्रैकपरायणाशयविदां वर्यः परानन्ददो
माला येन सुरक्षिता निजमहायत्नेन कण्ठेसताम्।
धर्मो येन विवर्धितः पितृपदाचारैः सदा सर्वतः
स श्रीगोकुलनायकः करुणया भूयाद्वशे सेविनाम्।।८।।

सर्वं साधनजातमत्र विफलं नूनं विदित्वा जना
नित्यं तं भजत प्रियं प्रभुमयं त्यक्त्वेतरस्याश्रयम्।
तन्नामानि जपन्तु रूपमखिलं सञ्चिन्तयन्तु स्वयं
सौख्यं तत्पदभावतोऽभिलषितं सर्वं स्वतः प्राप्स्यते।।९।।

इति श्री हरिरायविरचितं श्रीगोकुलेशाष्टकं सम्पूर्णम्।

श्रीगोकुलेशाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

यन्नामाब्जं सदापूर्णं कृपाज्योत्स्नासमन्वितम्।
पुष्टिभक्तिसुधावृष्टिकारकं च सुखाल्पदम्।।१।।

अथ नामशतं साष्टं वल्लभस्य वदाम्यहम्।
देवता वल्लभो नाम्नां छन्दोऽनुष्टुप् सुखाकरम्।।२।।

फलं तु तत्पदाम्भोजे व्यसनं सर्वदा भवेत्।
ऋषिस्तु विष्णुदासोऽत्र दासाय वरणं मतम्।।३।।

वल्लभो गोकुलेशश्च विठ्ठलेशप्रियात्मजः।
ताततुल्यस्वभावस्थो व्रजमङ्गलभूषणः।।४।।

धराधरस्नेहदान्तो बहुनिर्दोषविग्रहः।
भजनानन्दपीयूषपूर्णो मञ्जुदृगञ्चलः।।५।।

दासवृन्दचकोरेन्दुः करुणादृष्टिवृष्टिकृत्।
षट्कर्मवाञ्जनाधारः प्रतीतः पुरुषोत्तमः।।६।।

दासलीलाविष्टचित्तो गोपीवल्लभवल्लभः।
गृहस्थधर्मकर्ता च मर्यादामार्गरक्षकः।।७।।

पुष्टिमार्गस्थितो नित्यं कृष्णप्रेमरसात्मकः।
द्विजदारिद्र्यदुःखघ्नो वाञ्छाकल्पतरुर्महान्।।८।।

अनन्यभक्तभावज्ञो मोहनादिसुखप्रदः।
वल्लभेष्टप्रदो नित्यं गोकुलप्रीतिवर्धनः।।९।।

दासजीवनरूपश्च कन्दर्पादपि सुन्दरः।
पादपद्मरसस्पर्शसर्वारिष्टनिवारकः ॥१०॥

मालीरक्षणकर्ता च शुद्धसत्कीर्तिवर्धनः।
दुष्टान्दोषहन्ता यो भक्तनिर्भयकारकः॥११॥

इन्द्रादिभिर्नतो दक्षो लावण्यामृतवारिधिः।
रसिको द्विजराजाख्यो द्विजवंशविभूषणः॥१२॥

असाधारणसद्धर्मा साधारः सुजनाश्रितः।
क्षमावान् क्रोधमात्सर्यतिरस्कारादिवर्जितः॥१३॥

गोपीकान्तो मनोहारी दामोदरगुणोत्सवः।
विहारी भक्तप्राणेशो राजीवदललोचनः॥१४॥

मुकुन्दानुग्रहोत्साही भक्तिमार्गरसात्मकः।
भक्तभाग्यफलं धीरो बन्धुसज्जनवेष्टितः॥१५॥

वचनामृतमाधुर्यतृप्तसेवकसंस्तुतः ।
नित्योत्सवो नित्यश्रेयो नित्यदानपरायणः॥१६॥

भवबन्धनदुःखघ्नो महदाधिविनाशकः।
रसभावनिगूढात्मा स्वीयेषु ज्ञापिताशयः॥१७॥

नयनानन्दकर्ता च विश्वमोहनरूपधृक्।
श्रुतिस्मृतिपुराणादि-शास्त्रातत्त्वार्थपारगः॥१९॥

धनाढ्यो धनदो धर्मरक्षाकर्ता शुभप्रदः।
सर्वेश्वरः सदापूर्णज्ञानवान् विबुधप्रियः॥२०॥

ब्रह्मवादे सविश्वासो मायावादादिखण्डनः।
उग्रप्रतापवान् ध्येयो भृत्यदुःखनिवारकः।।२१।।

सतामात्माऽजातशत्रुर्जीवमात्रशुभस्पृहः।
दीनबन्धुर्विधुः श्रीमान् दयालुर्भक्तवत्सलः।।२२।।

अनवद्यसुसङ्कल्पो जगदुद्धरणक्षमः।
अनन्तशक्तिमाञ् शुद्धगम्भीरमृदुलाशयः।।२३।।

प्रणाममात्रसन्तुष्टः सर्वाधिकसुखप्रदः।
शृङ्गारादिरसोत्कर्षचातुर्यवलितास्मितः।।२४।।

पादाम्बुजरजःस्पर्शमहापतितपावनः।
पितृपालितसद्धर्मरक्षणोत्सुकमानसः।।२५।।

भक्तिसिद्धन्तमर्मज्ञो गूढभावप्रकाशकः।
पुष्टिप्रवाह-मर्यादामार्गनिर्धारकारकः।।२६।।

श्रीभागवतसारज्ञो सर्वाधिकतत्त्वबोधकः।
अनन्यभावसन्तुष्टः पराश्रयनिवारकः।।२७।।

आचार्यार्ध्यस्वरूपश्च सादाद्भुतचरित्रवान्।
तैलङ्गतिलको दैवीसृष्टिसाफल्यकारकः।।२८।।

इति श्रीगोकुलेशानां नामाब्जाभिघमुत्तमम्।
स्तोत्रं सद्ब्रह्मभट्टेन विष्णुदासेन वर्णितम्।।२९।।

यः पठेच्छृशृणुयाद् भक्त्या प्रभुस्तस्य प्रियो भवेत्।
संशयोऽत्र न कर्तव्यः समर्थो गोकुलेश्वरः।।३०।।

तत्कारुण्यबलेनैव मयैतत्प्रकटीकृतम्।
पठन्तु साधवोऽप्येतत्तद्वद्देवानुकम्पया।।३१।।
मदीयेयं तु विज्ञप्तिर्बुद्धिदोषप्रमत्तताम्।
शोधयित्वा यथायुक्तं तथा कुर्वन्तु साधवः।।३२।।

इति श्रीविष्णुदासविरचितमष्टोत्तरशतनाम्नां स्तोत्रं सम्पूर्णम्।

श्रीगोकुलेशस्तवः

स्वयं योऽवतीर्य क्षितौ विठ्ठलेशा-
दशेषं जगत्पालको गोकुलेशः।
सुवेशोऽनिशं शोभते तत्समानो
न भूतो न भावी न वा वर्तमानः।।१।।
समस्तं यतिग्रस्तधर्मं च गोप्तुं
निजोक्त्याऽवमत्या जगत्या अधीशम्।
निरस्येह यः स्तूयते तस्य तुल्यो
न भूतो न भावी न वा वर्तमानः।।२।।
सुकेशो यशोभूषितो गोकुलेशः
स्वयोषिन्मनोभोगिवेषी य एषः।

अशेषज्ञलोकोऽपि तस्माद्विशेषो
न भूतो न भावी न वा वर्तमानः।।३।।

समेतार्थविश्वानीतानन्तवित्तः
सुपुण्यैर्गुणैः सर्वदा शोभमानः।
धरण्यामिहैतत्समोदारचित्तो
न भूतो न भावी न वा वर्तमानः।।४।।

स्वरूपात्मकानन्ददानैकदक्षो
वधूवक्त्रचन्द्रानुरज्यत्कटाक्षः।
तदीयाधरस्थामृतास्वादकोऽन्यो
न भूतो न भावी न वा वर्तमानः।।५।।

व्रजानन्दकन्दो निजानन्दपूर्णः
सदानन्दरूपः सदा राजते यः।
सदा भक्तकानन्ददाता ततोऽन्यो
न भूतो न भावी न वा वर्तमानः।।६।।

समस्तै रसैरुल्लसन् गोकुले यो
जयत्येष पूर्णः पुमानेव नित्यम्।
स्वकीयाङ्गनाकामनापूरकोऽन्यो
न भूतो न भावी न वा वर्तमानः।।७।।

सदानन्दयन् सेविनः सद्रसौघैः
श्रियो वल्लभो दुर्लभो गोकुलेशः।

य एवंविधो राजते तं विनाऽन्यो
न भूतो न भावी न वा वर्तमानः॥८॥
नवं गोकुलेशस्तवं सुश्रवं यः
शिवं सर्वदा कृष्णरायोक्तमेतम्।
पठेदष्टपद्यं स सद्योऽनवद्यं
स्वरूपं तदीयं प्रपद्येत हृद्यम्॥९॥

इति कृष्णरायोक्तः श्रीगोकुलेशस्तवः समाप्तः।

श्रीगोकुलनाथाष्टकम्

भवभीतजनाखिलभीतिहरं
हरवन्दितनन्दतनूजरतम्।
रतवृद्धगुरुद्विजभृत्यजनं
जनदुर्लभमार्गसुबोधकरम्॥१॥
करपद्मसुसेवितशैलधरं
धरणीतलविश्रुतसाधुगुणम्।
गुणसिन्धुविमर्दितदुष्टमुखं
मुखकल्पितमार्गनिवृत्तिपरम्॥२॥
परमप्रियमङ्गलवेषधरं वरबन्धुसुहृत्सुतलब्धसुखम्।
सुखसागरमम्बुजचारुमुखंमुखपंकजकीर्तितकृष्णकथम्॥३॥

कथनीयगुणामृतवारिनिधिं निधिसेवितमर्चितपद्मपदम्।
पदपङ्कजसंश्रितविज्ञबुधंबुधविट्ठलनाथचतुर्थसुतम्।।४।।

सुतरां करुणाब्धिमनन्तगुणं गुणरत्नविराजितशुद्धतनुम्।
तनुरत्नवशीकृतनन्दसुतं सुतमित्रकलत्रसुसेव्यपदम्।।५।।

पदपङ्कजपावितसाधुजनं जनहेतुगृहीतमनुष्यतनुम्।
तनुकान्तितिरस्कृतपञ्चशरं शरणागतरक्षितभक्तजनम्।।६।।

जनतोषणपोषणदत्तहृदं हृदयार्पित-गोपवधूरमणम्।
रमणीयतरामलभक्तिकृतं कृतकृष्णकथामृततृप्तजनम्।।७।।

जनवाञ्छितकामदरत्नगुणं गुणभूषणभूषितलोकगुरुम्।
गुरुगोकुलनाथमुपास्यमहं महतां परिसेवितमाकलये।।८।।

श्रीमद्गोकुलनाथानामष्टकं य: पठेन्नर:।
गोकुलेशपदाम्भोजभक्तिं स लभते पराम्।।९।।

इति सिंहावलोकयमकगर्भ श्रीगोकुलनाथाष्टकंसम्पूर्णम्

श्रीवल्लभाष्टकम्

मन्दिरं सुन्दरं सुन्दरीशोभितम्
दर्शय गोकुलाधीश मे नित्यम्।
कोटिसौन्दर्यता अङ्ग आनन्दमयी
सेवियं श्रीपदाम्बुजं वल्लभस्य।।१।।

केशशोभामरे भालरेखा उभय
दीर्घता नासिका लोलता ईक्षणम्।
माधुरीमत्तता श्रीमुखावलोकने
सेवियं श्रीपदांम्बुजं वल्लभस्य।।२।।

कुण्डलोद्योतता कर्णभामयी
हेममुक्तामणि शुभ्रता भूषणम्।
चित्तचिन्तामणि नयन शृङ्गार ये
सेवियं श्रीपदाम्बुजं वल्लभस्य।।३।।

रङ्गबिम्बाधरे नागवेलीयुतम्
दानरूपामृते पानप्रेमामृते।
चारुहास्ये कृपाभावलोभिन्नता
सेवियं श्रीपदाम्बुजं वल्लभस्य।।४।।

मालग्रीवालसे स्वेतधोतीधरे
मुद्रिका अङ्गुली राजते मुद्रितम्।
प्रियप्रेमावली सिञ्जने सर्वदा
सेवियं श्रीपदाम्बुजं वल्लभस्य।।५।।

भोगरागे रसे भामिनीसंयुतम्
भोग्यतानित्य ये दक्षहानाधिपम्।
केलिलीलारसोद्बोधभावप्रदे
सेवियं श्रीपदाम्बुजं वल्लभस्य।।६।।

लग्नता चित्त मे विस्मृता सर्वत:
प्राप्तितो भावये दीनता निश्चितम्।
रूक्षता नन्दता सत्त्वता तत्फलम्
सेवियं श्रीपदाम्बुजं वल्लभस्य।।७।।

तप्त आसक्तता विप्रयोगे स्थिति-
जीवते दुर्लभा सिद्धयोगे मति:।
सत्यसङ्कल्प अङ्गीकृतौ नाथ ये
सेवियं श्रीपदाम्बुजं वल्लभस्य।।८।।

इति भाई गोकुलदासकृतं
वल्लभाष्टकं सम्पूर्णम्।

श्रीरुचिराष्टकम्

प्रभुवक्त्रं रुचिरं केशं रुचिरम्
तिलकं रुचिरं चलनं रुचिरम्।
रुचिराधिपते: सकलं रुचिरम्।।१।।

द्विजवर्णं रुचिरं कर्णं रुचिरम्
कुण्डलं रुचिरं मण्डलं रुचिरम्।
रुचिराधिपते: सकलं रुचिरम्।।२।।

गलस्थलं रुचिरं भ्रूचलं रुचिरम्
नासा रुचिरा श्वासो रुचिरः।
रुचिराधिपतेः सकलं रुचिररम्।।३।।

नयनं रुचिरं शयनं रुचिरम्
दानं रुचिरं मानं रूचिरम्।
रुचिराधिपतेः सकलं रुचिरम्।।४।।

वदनं रुचिरं अमलं रुचिरम्
अधरं रुचिरं मधुरं रुचिरम्।
रुचिराधिपतेः सकलं रुचिरम्।।५।।

दन्तं रुचिरं पंक्ती रुचिरा
रेखा रुचिरा वाणी रुचिरा।
रुचिराधिपतेः सकलं रुचिरम्।।६।।

वचनं रुचिरं रचनं रुचिरम्
आस्यं रुचिरं हासं रुचिरम्।
रुचिराधिपतेः सकलं रुचिरम्।।७।

ग्रीवा रूचिरा सेवा रूचिरा।
माला रूचिरा लक्षणं रूचिरं।
रूचिराधिपतेः सकलं रूचिरम्।।८।।

करयुग्मं रुचिरं गमनं रुचिरम्
हृदयं रुचिरं नाभी रुचिरा।
रुचिराधिपतेः सकलं रुचिरम्।।९।।

कटितटं रुचिरं पृष्ठं रुचिरम्
वसनं रुचिरं रसनं रुचिरम्।
रुचिराधिपतेः सकलं रुचिरम्।।१०।।

त्रिवली रुचिरा जघनं रुचिरम्
सघनं रुचिरं चलनं रुचिरम्।
रुचिराधिपतेः सकलं रुचिरम्।।११।।

चरणं रुचिरं वरणं रुचिरम्
भरणं रुचिरं करणं रुचिरम्।
हरिदासमते सकलं रुचिरम्
रुचिराधिपतेः सकलं रुचिरम्।।१२।।

इति श्रीरुचिराष्टकं हरिदासनाथभाईकृतं सम्पूर्णं।

अथ नामरत्नमालावलिस्तोत्रम्

नत्वा श्रीवल्लभाचार्यान्नौमि श्रीविठ्ठलं प्रभुम्।
ततः श्रीवल्लभं स्तौमि तन्नामाष्टशतोदितैः।।१।।

ऋषिर्निरूपितश्चात्र विठ्ठलेशात्मजासुतः।
छन्दोपि च तथाऽनुष्टुब्देवता गोकुलेश्वरः।।२।।

महाकारुणिकाधीशो बीजं चात्र निरूप्यते।
विनियोगो भक्तियोगे सिद्धिः स्वप्रभुसङ्गमः।।३।।

श्रीवल्लभार्यरूपः श्रीमद्विट्ठलनन्दनः।
श्रीवल्लभः सदानन्दः सच्चिदानन्दविग्रहः।।४।।

रुक्मिणीनन्दनः श्रीमान् पार्वतीप्राणवल्लभः।
सर्वसद्गुणसम्पन्नः पुत्रविट्ठलराययुक्।।५।।

पौत्रगोवर्द्धनेशाढ्यस्तदतिप्रीतिकारकः।
संलालितव्रजपतिर्व्रजाधीशेक्षणोत्सुकः।।६।।

पुत्रपौत्रप्रपौत्रदिसमस्तकुलमोदकः।
भूयो निजकुलाधारः सर्वस्वकुलपोषकः।।७।।

निजाश्रिताखिलज्ञातिप्रीतिपूर्वकपालकः।
याचनोचित - सम्प्राप्तप्राणिमात्रप्रपोषकः।।८।।

सर्वाधारो महोदारः सदानन्दप्रवाहवान्।
सम्प्राप्तपण्डितव्रातमानपूर्वकदानकृत।।९।।

गोकुलावासकर्ता च भूयो गोवर्द्धने स्थितः।
गोस्वामी गोकुलाधीशो गोप्रियो गोकुलेश्वरः।।१०।।

गोकुलानन्दकर्ता च गोकुलाधिकभूषणम्।
गोवल्लभो गोकुलेशो गोकुलप्रीतिकारकः।।११।।

आचार्यकृतसिद्धान्तग्रन्थव्याख्यानकारकः।
पितामहपदासक्तः पितृपादाब्जभक्तिमान्।।१२।।

पितामहस्वरूपत्वज्ञापकैकस्वनामधृक्।
पितृपूर्णकरूपत्वख्यापकात्मस्थषड्गुणः।।१३।।

अतिमानुषकर्मादिकृतिः श्रीकृष्णरूपधृक्।
धर्मग्लानिकृताधर्मनाशनार्थवतारवान् ।।१४।।

पाषण्डिदण्डिसम्प्रोक्तप्रचण्डाधर्मखण्डनः।
स्वधर्मस्थापकोऽखण्डधरामण्डलमण्डनम्।।१५।।

योऽतिकोपितपृथ्वीशाकारितस्तत्समीपगः।
उल्लंघिततदीयाज्ञः सत्यसन्धो व्रजे स्थितः।।१६।।

आबालवृद्धतुलसीमालातिलकधारकः ।
कालिन्दीपतिरीशस्तद्विरहानुभवप्रदः ।।१७।।

क्ष्मेशोक्तिव्याजवाराहक्षेत्रगङ्गासमीपगः ।
पुनस्तदाहुतिव्याजत्वरितप्राप्तगोकुलः ।।१८।।

कालिन्दीसङ्गमोत्सुक्यतदीयविरहाक्षमः ।
नित्यं श्रीगोकुलस्थानयमुनारसभोगकृत्।।१९।।

आनन्दकन्दसंदोहश्रृङगररसमूर्त्तिमान् ।
सर्वेन्द्रियसुखासाद्यरसरूपफलात्मकः ।।२०।।

मुखनिक्षिप्तताम्बूलचर्वितारुणसद्द्विजः ।
पक्वबिम्बाधरोऽनन्यभक्तदत्ताधरामृतः ।।२१।।

सुमुखः सुन्दरग्रीवः सुकपोलः सुनासिकः।
सुकर्णयुगविन्यस्तसुवर्णमणिकुण्डलः ।।२२।।

तिलकातिलसद्भाली राजीवदललोचनः।
स्निग्धनीलालकवृतः सुन्दरभ्रूयुगान्वितः।।२३।।

शुभलक्षणसर्वाङ्ग सर्वावयवसौष्ठवः।
सम्फुल्लपद्मवक्त्रश्रीदर्शनाकृष्टभक्तहृत्।।२४।।
सुस्निग्धमधुरालापो वचनामृतपोषकः।
महाकारुणिकाधीशः कटाक्षाकृष्टमानसः।।२५।।
चरणप्रणताशेषलोकशरणदाग्रणीः ।
त्रैलौक्याभरणीभूतः संसारतरणाश्रयः।।२६।।
लक्ष्मीविलासनिलयस्तातपादाब्जसेवकः ।
गिरिधारिपदाम्भोजसञ्चारिभ्रमरायितः ।।२७।।
हरिगानप्रियो दानशीलः सन्मानकारकः।
नित्योत्सवमनाः प्रीतो वनितानयनोत्सवः।।२८।।
निजजन्मोत्सवकरः स्वजनाजिहतमङ्गलः।
द्विजभोजनसुप्रीतो व्रजमङ्गलदायकः।।२९।।
ऋषिपूजादिपूर्वोक्तमङ्गलाचारकारकः ।
सुवासिनीसुमुक्ताक्तपात्रनीराजनाञ्चितः ।।३०।।
नारायणकुलोत्पन्नरत्नाभरणभूषितः ।
तत्कुलस्त्र्यञ्जलिक्षिप्तहेमपुष्पप्रपूजितः ।।३१।।
निजालयकृतानेकगीतवाद्यमहोत्सवः ।
सुगन्धिकुङ्कुमालेपकारिताशेषमङ्गलः ।।३२।।
महानुभावः परमो भव्यमूर्तिर्महाद्युतिः।
शुभस्मृतिः शुभध्यानः शुभकृन्नामकीर्तनः।।३३।।

अष्टोत्तरशतश्रीमन्नाममालेयमद्भुता ।
श्रीवल्लभगणेष्वेवं कृष्णरायेण गुम्फिता।।३४।।

धार्या कण्ठगता नित्यं प्रभुसङ्गरसप्रदा।
विशेषतस्तु जप्येयं तदीयानन्यसेवकैः।।३५।।

इति श्रीकृष्णरायेण विरचितं श्रीनामरत्नमाला-वलिस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

चतुरशीति (८४) वैष्णवनामावलीस्तोत्रम्

श्रीविट्ठलमहं वन्दे स्वकीयजनवल्लभम्।
चतुरशीतिभक्तानां, व्यक्तिं कुर्वे यथार्थतः।।१।।

दामोदरः, कृष्णदासः, पुनर्दामोदरस्तथा।
पद्मनाभश्च, तुलसा, पार्वती, रघुनायकः।।२।।

रजो पुरुषोत्तमो रुक्मिणी, गोपालदासकः।
सारस्वतो रामदासो, गदाधर, महांस्तथा।।३।।

वेणीमाधवदासश्च, अम्माक्षत्राणी वैष्णवी।
हरिदासश्च, गोविन्दो, क्षत्री, गजनधावनः।।४।।

नारायणो ब्रह्मचारी, क्षत्राणी जीवदासकः।
देवाकपूर क्षत्री च, दिनकर-पुरुषोत्तमः।।५।।

मकुन्दः प्रभुदासश्च, प्रभु त्रिपुरादासकौ।
पूर्णमल्लो यादवेन्द्र, काश्मीरो माघवस्तथा।।६।।
गुसाईदास-गोपालौ पद्मरावलकस्तथा।
जोशी पुरुषोत्तमो ज्ञेयो, जगन्नाथःसमान्वयः।।७।।
नरहरी राणाव्यासः क्षत्राणी-रामदासकौ।
गोपालो, कृष्णदासश्च, प्रहितो रामदासकः।।८।।
बुलामिश्र-रामानन्दौ, विष्णु-जीवनदासकौ।
सारस्वतो भगवान, भगवान्मुक्षसेवकः।।९।।
गौडो ह्यच्युतदासश्च, अच्युतश्चक्रतीर्थकः।
कन्हैयालालक्षत्री च, नरहरिदासकस्तथा।।१०।।
लघुपुरुषोत्तमो, गोपालदास जनार्दनौ।
कविराजो गडुस्वामी; उत्तमश्लोकदायकः।।११।।
ईश्वरोत्तम-श्लोकाख्यो, राजामाधवकौ तथा।
सिंहेनन्दे सासुबहू, परमानन्द, सूरको।।१२।।
बाबावेणु कृष्णदासी, छकड़ा वासुदेवकः।
एका क्षत्राणी आनन्दास, विश्वम्भरस्तथा।।१३।।
ब्रह्माणी रथकाईश्च, नारायणीस्त्रीयरस्तथा।
अन्यमार्गीय कायस्थदासो दामोदरस्तथा।।१४।।
सिंहनन्दे च क्षत्राणी, जगतानन्दकस्तथा।
इन्द्रप्रस्थे चैकक्षत्री, जटा गोपालदासकः।।१५।।

कृष्णदासो, रामदासो, वाडवो बादरायणः।
वैष्णवो सन्तदासश्च, सुन्दरदास, मावजी।।१६।।
नरहरिदास संन्यासी, पाडे सदुभवानिका।
श्रीमदाचार्यभक्तानां नामानि बहुशस्तथा।।१७।।
तथापिस्वात्मपाठार्थे लिखतानीति क्षम्यताम्।
दार्तायां परिबोध्ध्यानि सर्वदा वैष्णैवैर्जनैः।।१८।।

इति श्रीमद्वल्लभाचार्यचतुरशीतिभक्तानां श्रीमद्-गोकुलनाथजीकृत- नामावली सम्पूर्णा।

श्रीगोकुलेशनामावलिः

श्रीगोकुलेश मत्स्वामिन्नामानि तव तुष्टये।
कथ्यन्ते तव दासेन सर्वकामफलप्रद।।

१ श्रीगोकुलेशाय नमः। २ श्रीवल्लभाय नमः। ३ श्रीकृष्णाय नमः। ४ श्रीविट्ठलेशात्मजाय नमः। ५ श्रीरुक्मिणीनन्दनाय नमः। ६ श्रीगिरिधरप्रियाय नमः। ७ श्रीगोविन्दमनरञ्जनाय नमः ८ श्रीबाल-कृष्णानुजाय नमः। ९ श्रीगोकुलनाथाय नमः। १० श्रीरघुनाथाग्रजाय नमः। ११ श्रीयदुनाथप्रीतिकर्त्रे

नमः। १२ श्रीघनश्यामपोषकाय नमः। १३ श्रीपार्वती-प्राणपतये नमः। १४ श्रीविट्ठलरायजनकाय नमः। १५ श्रीगोवर्द्धनेशलालिताय नमः। १६ श्रीव्रज-पतिलाडकर्त्रे नमः। १७ श्रीधर्मस्थापकाय नमः। १८ श्रीगोकुलपतये नमः। १९ श्रीगोवर्द्धनगम-नोत्सुकाय नमः। २० श्री गिरिधरनमनकर्त्रे नमः। २१ अति-प्रसन्नमुखारविन्दाय नमः। २२ भक्त-नयनाह्लादकाय नमः। २३ भक्तमनोरथपूरकाय नमः। २४ गोकुलागतये नमः २५ स्वप्रभुनमनकर्त्रे नमः। २६ भक्तिप्रियाय नमः २७ आचार्यनामार्थप्रकटी-करणाय नमः। २८ पिता-महचरणासक्तये नमः। २९ पितामहस्वरूपज्ञापकाय नमः। ३० पितृपाद-सरोजनामिने नमः। ३१ पितृदत्त-तुलसीमालाधारकाय नमः। ३२ ऊर्ध्वपुंड्रधारकाय नमः। ३३ षणमुद्राङ्कित-विग्रहाय नमः। ३४ भव्यमूर्तये नमः। ३५ विशालनेत्राय नमः। ३६ कर्णशोभित-कुण्डलाय नमः। ३७ श्रीहस्ते जटितकङ्कणधारकाय नमः। ३८ अङ्गुलिषु मणि-जटितमुद्रिकाधारिणे नमः। ३९ श्रीकण्ठेमुक्तामाल-विराजिताय नमः। ४० कृष्ण-दासीप्रियाय नमः। ४१ निजजन्मोत्सवकर्त्रे नमः। ४२ स्वजनहित-मङ्गलचरित्रे नमः। ४३ व्रजमङ्गल-दायकाय नमः।

४४ पूर्वोक्तर्षिपूजादिकर्त्रे नमः। ४५ महोदाराय नमः। ४६ सकलद्विजदक्षिणादात्रे नमः। ४७ निजजनहृदयानन्दाविर्भावकर्त्रे नमः। ४७ निराजनवाटिकभक्तनिदीर्क्षकाय नमः। ४९ ताम्बूलदात्रे नमः। ५० हृष्टमानसाय नमः। ५१ आचार्यकृतिव्याख्यानकर्त्रे नमः। ५२ स्वमतस्थापकाय नमः। ५३ श्रीभागवतार्थविचारिताय नमः। ५४ पित्राज्ञया यमुनाष्टकशेषव्याख्यानकर्त्रे नमः ५५ पितृवाक्यपरिपालकाय नमः ५६ शान्तमूर्तये नमः। ५७ महाकारुणिकाय नमः। ५८ निजजनोपिर कृपादृष्टिर्त्रे नमः। ५९ अत्युदाराय नमः। ६० याचितजनमनोरथपूरकाय नमः। ६१ गोकुलनायकाय नमः। ६२ गोवल्लभाय नमः। ६३ गोवर्द्धनप्रियाय नमः। ६४ श्रीमद्वल्लभकुलमण्डनाय नमः। ६५ गोस्वामिने नमः। ६६ वाक्सुधावरवृष्टिकर्त्रो नमः। ६७ चर्वितताम्बूलभक्तदात्रे नमः। ६८ सकलभूषणभूषिताय नमः। ६९ मनोहररूपाय नमः। ७० निजजनप्राणवल्लभाय नमः। ७१ अग्निहोत्रादिकर्मकर्त्रे नमः। ७२ त्रिवारसन्ध्यावन्दनाय नमः। ७३ कर्ममार्गप्रवर्तकाय नमः। ७४ भक्तिमार्गतात्पर्यताय नमः। ७५ ठकुराणीघाटस्नानकर्त्रे नमः। ७६ ज्येष्ठभ्रात्राज्ञयैव दीर्घधारे

स्नानकर्त्रे नमः। ७७ निजमन्दिरगताय नमः। ७८ भगवद्गुणगानश्रवणकर्त्रे नमः। ७९ सारङ्गीवाद्यप्रियाय नमः। ८० निराजनवारिणे नमः। ८१ चिद्रूपमतखण्डनाय नमः। ८२ मालादृढस्थापकाय नमः ८३ ताताज्ञापरिपालकाय नमः। ८४ स्वधर्मपालकाय नमः। ८५ पृथ्वीशाज्ञोल्लङ्घनाय नमः। ८६ तत्समीपेकाश्मीरगताय नमः। ८७ काश्मीरपावनकर्त्रे नमः। ८८ तदाज्ञासोरमवासनिद्धारकर्त्रे नमः। ८९ पुनः। गोकुलागताय नमः। ९० सपरिवार वाराहक्षेत्रगङ्गासमीपताय नमः। ९१ स्वभ्रात्रासुरव्यामोहश्रवणगोकुलागताय नमः। ९२ दामोदरादिसमाधानकर्त्रे नमः। ९३ आशौचनिवृत्त्यै शुद्धस्नानकर्त्रे नमः। ९४ श्रीनवनीतप्रियामन्दिरगताय नमः। ९५ साष्टाङ्ग-दण्डवत्कर्त्रे नमः। ९६ प्रभुचरणे तुलसीदलस्थापकाय नमः। ९७ भ्रातृपादुका पितामहपितुः-समीपस्थापकाय नमः। ९८ गूढभावप्रकटीकर्त्रे नमः। ९९ महानुभावाय नमः। १०० पुनः सोरमपादधारिणे नमः। १०१ किञ्चित्-कालं तत्र वासकर्त्रे नमः। १०२ सकुटुम्बत्वरितगोकुलागताय नमः। १०३ यमुनास्नानकर्त्रे नमः। १०४ गोदानकर्त्रे नमः। १०५ यमुनारसभोगकर्त्रे नमः। १०६ आनन्दपूरिताय नमः।

१०७ आबालवृद्धतुलसीमालातिलकाधारिणे नमः।
१०८ नित्यश्री-गोकुलस्थानविराजिताय नमः।

इति श्रीगोकुलाधीश-शुभनामशताधिकम्।
अष्टोत्तरं सदा चिन्त्यं सर्वचिन्तानिवृत्तये।।

इति श्रीदासदासेन विरचिता
श्रीगोकुलेशाष्टोत्तरशतनामावली समाप्ता।

अथा विज्ञप्तिश्लोकाः

यद्दैन्यं त्वत्कृपाहेतुर्न तदस्ति ममाण्वपि।
तां कृपां कुरु राधेश यथा ते दैन्यमाप्नुयाम्।।१।।
सर्वेषां जीवितं लोके दृष्टं सर्वार्थसाधकम्।
ग्लान्येकफलकं जातमधुना मम जीवितम्।।२।।
कर्तुं पुनरथाकर्तुमन्यथा कर्तुमीश्वरे।
सामर्थ्यं यन्मया दृष्टं त्वय्येवातो न संशयः।।३।।
तं न पश्यामि यस्याग्रे वार्तां स्वस्य मनोगताम्।
उक्त्वा तदुत्तरं लब्ध्वा मनो विश्रामये क्षणम्।।४।।

अतीव नीचा मत्प्राणा मूर्खा अपि गतत्रपाः।
स्वस्थित्ययोग्यकालेऽपि यतस्तिष्ठन्ति साम्प्रतम्।।५।।

शास्त्रं नियामकं तावद्यावत् पूर्णकृपा न ते।
कृपया ते सूपूर्णस्य नैव कोऽपि नियामकः।।६।।

सुभगा एवं जानन्ति प्रियसौभाग्यजं सुखम्।
तद्धीनायास्तदीयेति प्रसिद्धिः शरणं सखि?।।७।।

प्रियसङ्गमराहित्याद् व्यर्थाः सर्वे मनोरथाः।
निरपत्रपतासिद्ध्यै जीवामि सखि साम्प्रतम्।।८।।

न लब्धस्तादृशः कोऽपि यस्याग्रे स्वमनोगताम्।
वार्तामुक्त्वा स्वमात्मानं क्षणं विश्रामयाम्यहम्।।९।।

श्रीमुखालोकने तस्य प्रियस्य च बहिर्गतौ।
पक्ष्मापकारोपकारौ निर्णेतुं नैव शक्नुमः।।१०।।

अद्य श्वो वा परश्वो वा कदाचित्कृपयिष्यति।
नाथ इत्याशया सर्वं गतं जन्म करोमि किम्।।११।।

तथापि त्वत्कृपाकाङ्क्षां मनो मे निरपत्रकम्।
कं वा हेतुं सुनिश्चित्य करोतीति न वेद्म्यहम्।।१२।।

स्वभावतः सदा मेघः सर्वेषां जीवनप्रदः।
जानेऽर्कस्यैव दौर्भाग्यं सोऽपि यत्तमुपेक्षते।।१३।।

त्वदीयत्वमपि ज्ञात्वा मयि कालादयः प्रभो।
प्रभवन्ति ततो मन्ये त्वत्कृपाशून्यतां मयि।।१४।।

एतेषामहमेवास्मि सर्वस्वमिति सुन्दर।
जानास्यस्माकमज्ञानेऽप्यतः कर्ता स्वतोऽखिलम्।।१५।।

विज्ञप्तौ वाऽपराधे वा पाखण्डे वा मदुक्तयः।
पर्यवस्यन्ति कुत्रेति न जानेऽहं विमूढधीः।।१६।।

दुर्भगासि तथापि त्वं मा त्यज स्वप्रियान्तिकम्।
कदाचित्कृपया पश्येत् प्रियस्त्वद्भाग्ययोगतः।।१७।।

विरहेणातितप्तां मां स्मरेच्चेत् प्राणवल्लभः।
तथापि द्विगुणं दुःखं सोढुं नैवालि! पारये।।१८।।

राज्यायोग्ये तदाकाङ्क्षा दण्डप्राप्त्यै यथा भवेत्।
त्वत्सेवायामहं तादृक् तद्वदाप्ता दशामिमाम्।।१९।।

स्वीयं कृतागसं चेत्त्वं दूरस्थं कुरुषे यदि।
इतः परोऽधिको दण्डस्त्वदीयस्य न विद्यते।।२०।।

वियोगो बाधते तावद् यावद्धृद्येव ते स्थितिः।
यदा बहिस्तदा नेति विचित्रेयं स्थितिः सखे।।२१।।

भूर्जत्वगिव मे दोषा निःसरन्त्येव सर्वशः।
तथाप्यनन्यगतिके त्वत्क्षमेति न मे भयम्।।२२।।

बलिष्ठा अपि मद्दोषास्त्वत्क्षमाग्रेऽतिदुर्बलाः।
तस्या ईश्वरधर्मत्वाद्दोषाणां जीवधर्मतः।।२३।।

मत्प्राणानां स्वतोलज्जा नैवास्ति परतोऽपि च।
स्थितिं प्राप्यापि नो यान्ति इहामुत्र च गर्हिताम्।।२४।।

त्वद्दर्शनविहीनस्य त्वदीयस्य तु जीवितम्।
व्यर्थमेव यथा नाथ! दुर्भगाया नवं वयः।।२५।।

गतः स कालो यत्रासीत् सुदुर्लभकृपा मयि।
इदानीमीदृशः कालो यत्र त्वं गोचरोऽपि न।।२६।।

त्वदीयानां सुखं दुःखं न लोकसदृशं भवेत्।
त्वत्सेवायां सुखं सर्वं नो चेत्तस्य विपर्ययः।।२७।।

मत्वा स्वकीयतां नाथ! रोषेण कृपया तव।
ताडनं लालनं वापि परमानन्ददं मम।।२८।।

त्वद्वियुक्तस्य जीवस्य त्वदीयस्यापि नित्यता।
सङ्गं विना न चैवास्तु विज्ञापनमिदं मम।।२९।।

यादृग्भाग्यं पुरा मेऽभूत्तन्महत्त्वं न वेद्म्यहम्।
येनासीत्त्वत्कृपा पूर्णा सुदुर्लभतरा मयि।।३०।।

मा जीवतात्त्वदीयो यस्तव सेवाविवर्जितः।
सत्या विज्ञप्तिरेषा मे नाथ! त्वं मनुषे यदि।।३१।।

स्वस्थित्ययोग्यं मत्वापि मच्छरीरं ममासवः।
यन्न त्यजन्ति तेनाहं मन्ये तान्निरपत्रपान्।।३२।।

त्वत्कृपातः पुरा नाथ! मया कालादयः प्रभो।
तुच्छीकृताः साम्प्रतं मां बाधन्ते त्वत्कृपां विना।।३३।।

त्वत्सेवायामयोग्यस्य त्वदीयस्य मम प्रभो।
इत्येव हि पराकाष्ठा अभाग्यस्येति मे मतिः।।३४।।

तुच्छीकृतास्त्वत्कृपातः पूर्वं कालादयो मया।
स्मृत्वा तद्वैरमधुना बाधन्ते त्वत्कृपां विना।।३५।।

महानसकुरुक्षेत्रे कवलार्कग्रहे सति।
सत्पात्रे स्वोदरे दत्ते तस्य वृद्धौ किमद्भुतम्।।३६।।

कुरुक्षेत्रे दानवृद्धिः श्रूयते नानुभूयते।
दानस्य मत्कुरुक्षेत्रे वृद्धिः सद्योऽनुभूयते।।३७।।

इति श्रीमठपति-कल्याणभट्टविरचिताः
श्रीविज्ञप्तिश्लोकाः सम्पूर्णाः।।

अथ श्रीतात्पर्यबोधः

(श्रीतात्पर्यबोधग्रन्थांशः)

श्रीमच्छ्रीवरगोकुलायतिविलो-लाक्षीकदम्बाम्बुज-
श्रेणीसन्मकरन्दपानकुशल-श्रीषट्पदालीश्वरः।
स्वीयानां हि सतामनन्यमनसां सम्पूरयन् कामनाः।
सोऽयं श्रीवरगोकुले विजयते श्रीगोकुलेशः सदा।।१।।

नत्वा वैं चरणाम्बुजं सुसुखदं ध्येयं सतां सर्वदा
पद्मागारधरेन्दिरा-मृडभवानीनाद्यगम्यं वरम्।
श्रीश्रीगोकुलनायकस्य विमलं तात्पर्यबोधं करो-
तीमं वल्लभपादपद्मसुमना-स्तस्याज्ञया माहवः।।२।।

एकस्मिन् समये स्थितौ शुभमती कौचिज्जनौ गोकुले-
शांघ्र्यम्बूद्भवयुग्मसक्तमनसौ श्रीवल्लभातिप्रियौ।
श्रेष्ठो वल्लभदास एव च तयो-र्वै कृष्णदासोऽपरः
प्रप्रच्छाथ विचार्य प्रश्नममलं तं श्रेष्ठभक्तं सुधीः।।३।।

कृष्णदास उवाच-

श्रेष्ठस्त्वं भक्तवर्येषु हरेर्वल्लभदास हि।
दयासिन्धो ज्ञानसिन्धो कृपां कुरु मयि प्रिय!।।४।।

श्रीवल्लभाङ्गचिह्नानि दृश्यमानानि सर्वतः।
पृच्छाम्याशुद्धभावेन कथयस्व सुबुद्धिमन्!।।५।।

द्विजरूपधरः साक्षाद् वल्लभः पुरुषोत्तमः।
जयत्यतिशयं भूमौ स्वीयानां मुदमावहन्।।६।।

तुलसीकाष्ठसम्भूतां कण्ठे मालां धरत्यसौ।
तिलकं सान्तरालं च रदानम्बुदसन्निभान्।।७।।

उदरे चिह्नमानीलं वामभागे सुवर्तुलम्।
बहूपवीतकं कण्ठे सव्यभागे तु सूत्रयम्।।८।।

श्रोत्रप्रवरयोरङ्गीकारस्तत्र सुलक्ष्म हि।
मकराकारमारक्तं तत्र किं कारणं प्रिय!।।९।।

वेदादिग्रहणं कस्मात् सन्ध्यायास्तु विशेषतः।
चक्रादिग्रहणं कस्मात् कुण्डले चक्रसन्निभे।।१०।।

कृष्णः श्यामस्त्वयं गौरस्तत्र किं कारणं प्रिय!।
पुराणपुरुषः साक्षाद् वल्लभो द्विजरूपभाक्।।११।।

विभुर्मानवरूपी न तत्र कारणं सखे!।
शयनं दिवसे भूमावाचाराचरणं महत्।।१२।।

अतदन्यच्च सर्वं मे पृच्छते कृपया सखे!।
कथनीयं त्वया स्वस्थ बुद्धितः श्रोतुमिच्छते।।१३।।

त्वं श्रीवल्लभपादाब्जासक्तोऽसि हरिवल्लभः।
त्वदाब्जाश्रितं मां हि कथयस्व कृपानिधे!।१४।।

इति तस्योदितं श्रुत्वा वल्लभंघ्रिसरोरुहम्।
ध्यात्वा चोवाच वचनं तं श्रीवल्लभसेवकः।।१५।।

इति श्रीमाहवदासविरचितः श्रीतात्पर्यबोधः

ग्रन्थांशः सम्पूर्णः।

श्रीवल्लभनामस्तोत्रम्

यत्प्रसादादनायासं सिध्यन्त्यर्था मनीषिणाम्।
तन्निजाचार्यनामानि प्रवक्ष्यामि यथामति।।१।।

श्रीवल्लभः सदानन्दः सच्चिदानन्दविग्रहः।
दैवोद्धारप्रयत्नात्मा प्राकट्यानन्ददायकः।।२।।

देवश्रीलक्ष्मणसुतः परमानन्दवर्धनः।
श्रीमदिल्लमगारुप्राक् पुष्पकलेन्दुरखण्डितः॥३॥

चम्पारण्यवनस्थानाविर्भावानन्दकारकः।
अग्निर्लीलाब्धिजनकः श्रीकृष्णास्यं कृपानिधिः॥४॥

अद्भुतस्वीयशिशुताजनन्यानन्दकारकः।
बाललीलातिसुखदो जनन्युत्सङ्गलालितः॥५॥

परमोदारचरितो जनतारतिवर्धनः।
स्वलीलाश्रवणात्यन्तशुद्धाशयवशंवदः॥६॥

स्वयशोगानसंहृष्टहृदयाम्भोजविष्टरः।
अतिसौन्दर्यनिकरप्राप्तकौमारशोभनः॥७॥

पञ्चमाब्दोपनयनो गायत्रीव्रतधारकः।
गुरुब्रह्मकुलावासज्ञापिताखिलसत्क्रियः॥८॥

सकृन्निगदसम्प्राप्तसर्वविद्याविशारदः।
महातेजः प्रकटनो महामाहात्म्यदर्शकः॥९॥

सर्वरभ्यो भावगम्यः पितृकीर्तिविवर्धनः।
ब्रह्मानन्दरसासक्ततातभक्तिपरायणः॥१०॥

भक्तिमार्गप्रचारार्थविद्यानगरपावनः।
कृष्णदेवाख्यसद्राजसभाचरणधारकः॥११॥

स्वरूपानन्तशोभाढ्यः सर्वलोककैकपावन।
स्वदर्शनसुधासिक्तराजसौभाग्यवर्धनः॥१२॥

अत्युत्तममणिव्रातहेमसिंहासनस्थितः ।
उग्रप्रतापः सर्वेशो नमन्नृपतिमण्डलः ॥१३॥

अनेकभूतिशोभाढ्यश्चराचरनमस्कृतः ।
विद्वज्जनपरीवारमण्डितोऽखिलमण्डितः ॥१४॥

अनल्पसङ्कल्पजल्पवादश्रवणसादरः ।
अनेकमतसन्देहनिराकर्ता निराकुलः ॥१५॥

नवनीरदगम्भीरध्वनिरुल्लसिताखिलः ।
अखण्डपण्डितव्रातप्रोद्यत्पाखण्डखण्डनः ॥१६॥

निवारिततमः पुञ्जजगदान्ध्यनिवर्तकः ।
मायावादनिराकर्ता सर्ववादनिरासकृत् ॥१७॥

साकारब्रह्मवादैकस्थापको वेदपारगः ।
सर्वस्तुत्योऽभिसङ्गम्यो वेदमूर्तिः शिवङ्करः ॥१८॥

व्रज योत्सवसाद्यन्तदेवराजप्रसादकृत् ।
अत्यादरसमानीतकनकस्नानशोभितः ॥१९॥

जयादिमङ्गलोद्घोषविद्वज्जनसमादृतः ।
अदेयदानदक्षश्च महोदारचरित्रवान् ॥२०॥

पुण्डरीकवरेण्यश्रीविट्ठलप्रेक्षणोत्सुकः ।
तद्दर्शनमहानन्दः प्राप्ताऽन्योन्यमनोरथः ॥२१॥

चन्द्रभागोपकण्ठस्वस्थिततत्कीर्तिवर्धनः ।
पाण्डुरङ्गेशपरमोदारेक्षणकृतक्षणः ॥२२॥

स्वानन्दतुन्दिलः पद्मदलायतविलोचनः।
अचिन्त्यानन्तरूपः सन्मतुष्याकृतिरच्युतः॥२३॥
भक्तेच्छापूरकः सर्वाज्ञातलीलोऽतिमोहनः।
स्वार्थोज्झिताखिलप्राणप्रियस्तादृशवेष्टितः॥२४॥
अनेकदेशसञ्चारपवित्रीकृतभूतलः।
ध्वजवज्राङ्कुशादिश्रीकृतभूमिमहोत्सवः॥२५॥
त्रिलोकीभूषणं भूमिभाग्यं सहजसुन्दरः।
भक्तिमार्गाङ्गशरणमन्त्रतत्त्वोपदेशकः॥२६॥
अन्याश्रयनिराकर्ता भक्तिक्षेत्रविशुद्धिकृत्।
ब्रह्मसम्बन्धकृज्जीवसर्वदोषनिवारकः॥२७॥
पञ्चाक्षरमहामन्त्रविरहात्मफलप्रदः।
पृथक्शरणमार्गोपदेष्टा श्रीकृष्णहार्दवित्॥२८॥
दिङ्मूढजनताभीतिनिवारणपरो गुरुः।
भक्तरक्षार्थश्रीकृष्णभक्तिकृन्निखिलेष्टदः॥२९॥
स्वसिद्धान्तप्रबोधार्थानेकग्रंथप्रवर्तकः।
व्याससूत्राणुभाष्योक्तिवेदान्तार्थप्रकाशकः॥३०॥
भक्तिमार्गाविरुद्धैकसिद्धान्तपरिशोधकः।
जैमिनीयसूत्रभाष्यवक्ता वेदार्थदर्शकः॥३१॥
वैयासजैमिनीयोक्तप्रमेयैकार्थ्यवित्तमः।
पत्रावलम्बनकृतिर्वादिसन्देहवारकः॥३२॥

काशीस्थलालङ्करणं विश्वेशप्रीतिकारकः।
श्रीभागवततत्त्वार्थदीपप्राकट्यकारकः ॥३३॥
स्वान्तध्वान्तनिराकर्ता प्रकाशसुखदायकः।
सच्चिदानन्दसन्दोहशास्त्रार्थविनिरूपकः ॥३४॥
मनोवाक्कायकर्तव्यसेवातत्त्वप्रकाशकः ।
मुख्यसिद्धान्तशुद्ध्यर्थसर्वनिर्णयदर्शकः ॥३५॥
प्रमाणादितत्त्वरूपपदार्थपरिशोधकः ।
भक्तिमार्गीयभगवत्सेवारीतिप्रकाशकः ॥३६॥
श्रीभागवतरूपाख्यप्रक्रियाविनिरूपकः ।
शास्त्रस्कन्धप्रकरणाध्यायार्थपरिशोधकः॥३७॥
श्रीभागवतसारार्थनामसाहस्त्रदर्शकः ।
त्रिधालीलाप्रकाशश्रीकृष्णनामावलीप्रियः ॥३८॥
निरोधार्थानुसन्धानकृतेऽनुक्रमदर्शकः ।
कलिदोषाप्रवेशार्थकृष्णाश्रयनिरूपकः ॥३९॥
प्रतिबन्धनिरासार्थयमुनाष्टकदर्शकः ।
समस्तसिद्धान्तमुक्तावलीग्रन्थनिरूपकः ॥४०॥
सेवोपयिकसिद्धान्तरहस्यप्रतिपादकः ।
भक्तचिन्तानिरासार्थनवरत्नप्रकाशकः ॥४१॥
अन्तः करणबोधोक्तिस्वीयशिक्षाप्रदर्शकः।
कृष्णाङ्गीकारविषयोत्कटसन्देहवारकः ॥४२॥

सेवोत्कर्षप्रकाशार्थसेवाफलनिरूपकः ।
सेव्यनिर्धारसिद्ध्यर्थबालबोधप्रकाशकः ।।४३।।

सेव्यस्वरूपोत्कषर्थिमधुराष्टकदर्शकः ।
पुष्टिप्रवाहमर्यादामार्गत्रयविवेचकः ।।४४।।

सर्वेन्द्रियनिरोधार्थं तल्लक्षनिरूपकः।
बीजदार्ढ्यप्रकारेण भक्तिवर्धिन्युपायकृत्।।४५।।

विवेकधैर्याश्रयकृद्-बाहिर्मुख्यनिवाकः ।
सदसद्भावबोधार्थजलभेदनिरूपकः ।।४६।।

दुःसङ्गाभावसत्सङ्गकारकः करुणालयः।
विरहानुभवार्थैकसंन्यासाचारदर्शकः ।।४७।।

भजनावश्यकत्वार्थचतुःश्लोकीप्रकाशकः।
यशोदोत्सङ्गललितप्रभुसेवैकतत्परः ।।४८।।

विस्फूर्जद्रासलीलादिरसामृतमहार्णवः ।
निर्दोषगुणरत्नाढ्यो भावान्तमहोर्मिमान्।।४९।।

कृष्णेन्दुविशदालोकपरमानन्दवर्धनः ।
स्वदासार्थकृताशेषसाधनः सर्वशक्तिधृक्।।५०।।

प्रियव्रजस्थितिनित्यं व्रजनाथो व्रजार्तिभित्।
व्रजीयजनजीवातुर्व्रजमाहात्म्यदर्शकः ।।५१।।

व्रजलीलाभावनात्मा श्रीगोपीजनवल्लभः।
गोगोपगोपीषु प्रीतो गोकुलोत्सव उद्धवः।।५२।।

गोवर्द्ध		नाद्रिप्रवरप्रेक्षणातिमहोत्सवः।
गोवर्द्धनस्थित्युत्साहस्तल्लीलाप्रेमपूरितः		॥५३॥

शृङ्गद्रोणीकन्दरादिकेलीस्थानप्रकाशकः		।
द्रुमपुष्पलतागुल्मदर्शनप्रीतमानसः		॥५४॥

गह्वरप्रायदेशाढ्यगिरिकेलीकलोत्सवः		।
गोवर्द्धनाचलसखोऽनेकधाप्रीतिकारकः		॥५५॥

हरिदाससर्वसेवासादरो		हार्दवित्तमः।
गोवर्द्धनाचलारूढः		स्मृताचलशिरोमणि॥५६॥

सन्मुखस्वागतश्रीमद्गोवर्द्धनधरः		प्रियः।
अन्योन्ययोजितकरो		हसद्वदनपङ्कजः॥५७॥

सूक्तिसारसुधावृष्टिस्वानन्दितव्रजाधिपः		।
श्रीगोवर्द्धनानुमतोत्तमाधिष्ठानकारकः		॥५८॥

प्रसन्नाम्बुजसङ्काशकलशानन्दिताखिलः		।
कुङ्कुमारुणरागातिविलक्षणरसप्रदः		॥५९॥

चतुर्दिग्दृष्टिमृगराङ्बद्धस्थपनतत्त्ववित्		।
सुदर्शननिरस्तातिप्रतिपक्षमहासुरः		॥६०॥

समुल्लसत्प्रेमपूरनानाध्वजवरप्रियः		।
निगूढनिजकुञ्जस्थमन्दिरस्थापितप्रभुः		॥६१॥

वृन्दावनप्रियतमो		वृन्दारण्यपुरन्दरः।
वृन्दावनेन्दुसेवैकप्रकारसुखदायकः		॥६२॥

कृष्णकुम्भनदासादिलीलापरिकरावृतः ।
गानस्वानन्दितश्रीमन्नन्दराजकुमारकः ।।६३।।

सप्रेमनवधाभक्तिप्रचाराचरणक्षमः ।
देवाधिदेवस्वप्रेष्ठप्रियवस्तूपनायकः ।।६४।।

बाल्यकौमारपौगण्डकैशोरचरितप्रियः ।
वशीकृतनिजस्वामीप्रेमपूरपयोनिधिः ।।६५।।

मथुरास्थितिसानन्दो विश्रामस्वाश्रमप्रियः ।
यमुनादर्शनान्दो यमुनानन्दवर्धनः ।।६६।।

यमुनातीरसंवासरुचिस्तद्रूपवित्तमः ।
यमुनानन्तभावात्मा तन्माहात्म्यप्रदर्शकः ।।६७।।

अनन्यसेवितपदःस्वानन्यजनवत्सलः ।
सेवकानन्तसुखदोऽनन्यभक्तिप्रदायकः ।।६८।।

कृष्णाज्ञापालनार्थं स्वगृहस्थाश्रमदर्शकः ।
महालक्ष्मीप्राणपतिः सर्वसौभाग्यवर्धनः ।।६९।।

श्रुतिस्मृतिसदाचारपालनैकपरायणः ।
मर्यादास्थापनपरः कर्ममार्गप्रवर्तकः ।।७०।।

कर्मस्वरूपवक्ताऽनुष्ठानकृज्जशिक्षकः ।
आधिदैविकसर्वाङ्गयज्ञकृद्यज्ञपूरुषः ।।७१।।

मूलमाहात्म्यबोधार्थविभूत्युत्कर्षपोषकः ।
ब्रह्मण्यदेवो धर्मात्मा सर्वधर्मप्रवर्तकः ।।७२।।

स्वाविर्भावितसन्मार्गप्रचारार्थस्ववंशकृत्।
श्रीगोपीनाथजनको विश्वमङ्गलकारकः।।७३।।

दयानिधिविभुश्रीमद्विट्ठलप्रियपुत्रवान् ।
जन्मोत्सवमहोत्साहः स्मार्तसंस्कारसादरः।।७४।।

प्रदर्शितनिजाचारः सर्वधर्मैकपालकः।
स्वेकीयापरमूर्तिः श्रीविट्ठलेशकृतिप्रियः।।७५।।

भाष्यादिशेषसम्पूर्तिपरमोत्कर्षमोदकः।
सुबोधिनीदुरुहोक्तिव्याख्यानप्रीतमानसः।।७६।।

निगूढस्वाशयगतस्वतन्त्रार्थप्रियप्रियः ।
स्वरूपगुणनामोक्तिस्वीयसौभाग्यवर्द्धनः।।७७।।

विद्वन्मण्डनवादोक्तिपरपक्षनिरासकृत् ।
सोपाधिब्रह्मवादार्थनिराकरणपण्डितः ।।७८।।

अप्राकृतानन्तगुणाधार ब्रह्मस्वरूपवित्।
सामान्यप्राकृतगुणानाश्रयत्वप्रकाशकः।।७९।।

विरुद्धधर्माधारत्वस्थापनैकप्रयत्नकृत् ।
असम्भवनिरासार्थानन्तानिर्वाच्यशक्तिवित्।।८०।।

प्राकृतेन्द्रियसामर्थ्याव्यवहार्यत्वदर्शकः ।
भगवद्दत्तसामर्थ्यसुखवेद्यत्ववित्तमः ।।८१।।

तर्कशास्त्रोक्तसिद्धान्तनिरासवरयुक्तिमान्।
सोपाधिजीववादैकनिराकर्ता महाशयः।।८२।।

आत्मव्यापकतातर्कपराहतविचक्षणः ।
श्रुतिसूत्रादिसंसिद्धजीवाणुत्वप्रदर्शकः ॥८३॥

चिद्रूपब्रह्मधर्मात्मजीवनित्यदर्शकः ।
भेदवादनिराकर्ता ब्रह्मांशत्वनिरूपकः ॥८४॥

नित्यानन्तब्रह्मधर्मधर्म्यभेदप्रकाशकः ।
सद्रूपब्रह्मधर्मात्मजगन्नित्यत्वदर्शकः ॥८५॥

मिथ्यात्वजन्यतावादावैदिकत्वप्रकाशकः ।
अविद्याकार्यसंसारमिथ्यात्वपरिदर्शकः ॥८६॥

प्रपञ्चसंसारभिदाप्रदर्शनसुयुक्तिमान् ।
आविर्भावतिरोभावसिद्धान्तपरिशोधकः ॥८७॥

मूलेच्छाशक्तिसर्वार्थसामञ्जस्यप्रदर्शकः ।
कार्यप्रपञ्चभगवद्विभूत्यात्मत्वदर्शकः ॥८८॥

लीलाप्रपञ्चभगवत्स्वरूपात्मत्ववित्तमः ।
द्वारिकामथुरागोष्ठलीलानित्यत्वदर्शकः ॥८९॥

वृन्दावनगोवर्द्धनकालिन्दीकेलिकौतुकः ।
अन्यथाभानसंजातसन्देहविनिवारकः ॥९०॥

श्रुतिदृष्टान्तरचनाविस्पष्टार्थनिरूपकः ।
श्रुतिस्मृतिवरप्राप्तिप्रकारपरिदर्शकः ॥९१॥

शृङ्गाररसरूपत्वस्थापनातिविशारदः ।
अनेकनित्यनामात्मक्रियावद्ब्रह्मदर्शकः ॥९२॥

अत्यनुग्रहवद्भक्तनित्यलीलाप्रवेशवित् ।
आसुरव्यामोहलीलावश्यकत्वनिदानवित् ।।९३।।

मायैकमूलभगवद्विमोहकचरित्रवित् ।
निर्दोषानन्दरूपैककृष्णतत्त्वप्रकाशकः ।।९४।।

स्फुरद्विरहतिनित्यत्वभावनानन्ददायकः ।
भक्त्युपास्तिविवेकार्थ भक्तिहंसप्रकाशकः।।९५।।

मन्त्राद्यगम्यभक्त्येकगम्यश्रीकृष्णरूपवित् ।
अनुग्रहविमर्शार्थभक्तिहेतुप्रकाशकः ।९६।।

कृष्णानुग्रहलभ्यैकभक्तितत्त्वप्रकाशकः ।
मर्यादानुगृहीतात्मभक्त्यर्थाचारदर्शकः ।।९७।।

पुष्ट्यनुग्रहवद्भक्तधर्मान्तरनिषेधवित् ।
भक्तिमार्गीयभगवत्प्रतिष्ठारीतिबोधकः ।।९८।।

कृष्णजन्माष्टमीरामनवमीव्रतशोधकः ।
मुक्तावलीप्रकाशोक्तिसिद्धान्तपरिशोधकः ।।९९।

नवरत्नप्रकाशोक्तिचिन्तासन्ताननाशकः ।
न्यासादेशीयविवृतिधर्मत्यागोक्तिचिन्तकः ।।१००।

जीवन्मुक्तितारतम्यसिद्धान्तपरिशोधकः।
गीतातात्पर्यसद्वक्ता गायत्र्यर्थप्रकाशकः।।१०१।

मुख्यश्रीस्वाममिनीकेलीशृङ्गारोल्लासदर्शकः।
स्वामिनीप्रार्थनास्तोत्रनानाभावविभावकः।।१०२।।

स्वामिन्यष्टकगूढोक्तिमार्गतत्त्वप्रकाशकः ।
प्रेमामृतरसास्वादाऽनुपानपरिदर्शकः ॥१०३॥

उक्तान्यपूर्वाशृङ्गारदानलीलाप्रकाशकः ।
कुमारिकाऽनन्यसिद्धव्रतचर्यानिरूपकः ॥१०४॥

तदेकरससर्वस्वनिभृतात्मा रसार्णवः ।
यमुनास्तोत्रविवृतिर्यशक्तिप्रकाशकः ॥१०५॥

सकृष्णयमुनाभाववर्द्धिन्यष्टपदीप्रियः ।
चौरचर्यागुप्तरसाऽनन्तभावनिरूपकः ॥१०६॥

रूपामृतैकचषकत्रिभङ्गललिताप्रियः ।
दशावताराष्टपदीशृङ्गारार्थत्वदर्शकः ॥१०७॥

शृङ्गाररससन्दर्भाऽसङ्गतत्वनिरासकः ।
प्रबोधगद्यरचनाप्रत्यहश्रवणोत्सुकः ॥१०८॥

मङ्गलाखिललीलाब्धिकृष्णगानरसप्रदः ।
प्रेङ्खपर्यङ्कशयनगीतनृत्यप्रियङ्करः ॥१०९॥

सदारप्रेष्ठरतिकृत्प्रार्थनागीतभाववित् ।
असकृद् गोविन्ददासप्रभृत्यार्यसमन्वितः ॥११०॥

गीपीपरिवृढस्तोत्रव्रजाशीधरतिप्रदः ।
व्रजराजार्यतनयप्रीतिकृस्तोत्रकीर्तनः ॥१११॥

गोकुलोत्कर्षबोधार्थगोकुलाष्टकदर्शकः ।
श्रीगोकुलसुखावासस्वकीयानन्दवर्द्धनः ॥११२॥

श्रीमन्नन्दालयक्रीडत्कृष्णलीलाप्रकाशकः।
पुत्रपौत्रादिसौभाग्यसेवर्द्धिपरिदर्शकः ॥११३॥

श्रीकृष्णसेवाचातुर्यसीमा सर्वशिरोमणिः।
संसारसागरोत्तारनौकासत्कर्णधारकः ॥११४॥

शरणस्थानन्तजीवाऽपराधदलनक्षमः ।
कृष्णसेवाशिक्षणार्थं भक्तिमार्गप्रदर्शकः॥११५॥

मर्यादामार्गविधिना गृहस्थाश्रममास्थितः।
दारागारसुताप्तादिसर्वस्वात्मनिवेदकः ॥११६॥

वैदिकाचारनिपुणो दीक्षिताख्याप्रसिद्धिमान्।
षड्गुणैश्वर्यसम्पत्तिराजमानः सतां पतिः॥११७॥

विट्ठलेशप्रभावज्ञः कृतकृत्यतमो हरिः।
निवृत्तिधर्माभिरतो निजशिक्षापरायणः॥११८॥

भगवद्भक्त्यनुगुणसंन्यासाचारदर्शकः ।
अलौकिकमहातेजः पुञ्जरूपप्रकाशकः॥११९॥

नित्यलीलाविहरणो नित्तरूपप्रकाशवान्।
अदभ्रसौहार्दनिधिः सर्वोद्धारविचारकः॥१२०॥

शुकवाक्सिन्धुलहरीसारोद्धारविशारदः ।
श्रीभागवतपीयूषसमुद्रमथनक्षमः ॥१२१॥

श्रीभागवतप्रत्यर्थमणिप्रवरभूषितः ।
अशेषभक्तसम्प्रार्थ्यचरणाब्जरजोधनः ।
शरणस्थसमुद्धारः कृपालुस्तत्कथाप्रदः ।।१२२।।

इति 'मथुरा' निवासि गोस्वामि
श्रीरमणलालजी महाराज विरचितं
श्रीवल्लभनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्

श्रीवल्लभनामावली

अविर्भाव-प्रकरणम्

१. श्रीवल्लभाय नमः
२. सदानन्दाय नमः
३. सच्चिदानन्दविग्रहाय नमः
४. दैवोद्धारप्रयत्नात्मने नमः
५. प्राकट्यानन्ददायकाय नमः
६. देवश्रीलक्ष्मणसुताय नमः
७. परमानन्दवर्द्धनाय नमः
८. श्रीमदिल्लमगारुप्राक्पुष्पलेन्दवे नमः
९. अखण्डिताय नमः
१०. चम्पारण्यवनस्थानाविर्भावानन्दकारकाय नमः

११. अग्नये नमः
१२. लीलाब्धिजनकाय नमः
१३. श्रीकृष्णास्याय नमः
१४. कृपानिधये नमः
१५. अद्भुतस्वीयशिशुताजनन्यानन्दकारकाय नमः
१६. बाललीलातिसुखदाय नमः
१७. जनन्युत्सङ्गलालिताय नमः
१८. परमोदारचरिताय नमः
१९. जनतारतिवद्र्धनाय नमः
२०. स्वलीलाश्रवणात्यन्तशुद्धाश्यायवशंवदाय नमः
२१. स्वयशोगानसंहृष्टहृदयाम्भोजविष्टराय नमः
२२. अतिसौन्दर्यनिकरप्राप्तकौमारशोभनाय नमः
२३. पंचमाब्दोपनयनाय नमः
२४. गायत्रीव्रतधारकाय नमः
२५. गुरुब्रह्मकुलावासंज्ञापिताखिलसत्क्रियाय नमः
२६. सकृन्निगदसम्प्राप्तसर्वविद्याविशारदाय नमः
२७. महातेजः प्रकटनाय नमः
२८. महामाहात्म्यदर्शकाय नमः
२९. सर्वरम्याय नमः
३०. भावगम्याय नमः
३१. पितृकीर्तिविवर्द्धनाय नमः

३२. ब्रह्मानन्दरसासक्ततातभक्तिपरायणाय नमः

विजय-प्रकरणम्

३३. भक्तिमार्गप्रचारार्थविद्यानगरपावनाय नमः
३४. कृष्णदेवाख्यसद्राजसमाचरणधारकाय नमः
३५. स्वरूपानन्तशोभाढ्याय नमः
३६. सर्वलोकैकपावनाय नमः
३७. स्वदर्शनसुधासिक्तराजसौभाग्यवर्द्धनाय नमः
३८. अत्युत्तममणिव्रातहेमसिंहासनस्थिताय नमः
३९. उग्रप्रताप नमः
४०. सर्वेशाय नमः
४१. नमन्नृपतिमण्डलाय नमः
४२. अनेकभूतिशोभाढ्याय नमः
४३. चराचरनमस्कृताय नमः
४४. विद्वज्जनपरीवारमण्डिताय नमः
४५. अखिलमण्डिताय नमः
४६. अनल्पसंकल्पजल्पवादश्रवणसादराय नमः
४७. अनेकमतसन्देहनिराकर्त्रे नमः
४८. निराकुलाय नमः
४९. नवनीरदगम्भीरध्वनये नमः
५०. उल्लसिताखिलाय नमः
५१. अखण्डपण्डितव्रातप्रोद्यत्पाखण्डनाय नमः

५२. निवारिततम:पुञ्जजगदान्ध्यनिवर्तकाय नमः
५३. मायावादनिराकर्त्रे नमः
५४. सर्ववादनिरासकृते नमः
५५. साकारब्रह्मवादैकस्थापकाय नमः
५६. वेदपारगाय नमः
५७. सर्वस्तुत्याय नमः
५८. अभिसङ्गम्याय नमः
५९. वेदमूर्तये नमः
६०. शिवङ्कराय नमः
६१. विजयोत्सवसाद्यन्तदेवराजप्रसादकृते नमः
६२. अत्यादरसमानीतकनकस्थानशोभिताय नमः
६३. जयादिमङ्गलोद्घोषविद्वज्जनसमादृताय नमः
६४. अदेयदानदक्षाय नमः
६५. महोदारचरित्रवते नमः

भक्तिप्रस्तावप्रकरणम्

६६. पुण्डरीकवरेण्यश्रीविट्ठलप्रेक्षणोत्सुकाय नमः
६७. तद्दर्शनमहानन्दाय नमः
६८. प्राप्तान्योन्यमनोरथाय नमः
६९. चन्द्रभागोपकण्ठस्वस्थितितत्कीर्तिवर्द्धनाय नमः
७०. पाण्डुरङ्गेशपरमोदारेक्षणकृतक्षणाय नमः
७१. स्वानन्दतुन्दिलाय नमः

७२. पद्मदलायतविलोचनाय नमः
७३. अचिन्त्यानन्तरूपाय नमः
७४. सन्मनुष्याकृतये नमः
७५. अच्युताय नमः
७६. भक्तेच्छापूरकाय नमः
७७. सर्वाज्ञातलीलाय नमः
७८. अतिमोहनाय नमः
७९. स्वार्थोज्झिताखिलप्राणप्रियाय नमः
८०. तादृशवेष्टिताय नमः
८१. अनेकदेशसञ्चारपवित्रीकृतभूतलाय नमः
८२. ध्वजवज्राङ्कुशादिश्रीकृतभूमिमहोत्सवाय नमः
८३. त्रिलोकीभूषणाय नमः
८४. भूमिभाग्याय नमः
८५. सहजसुन्दराय नमः
८६. भक्तिमार्गाङ्गशरणमन्त्रतत्त्वोपदेशकाय नमः
८७. अन्याश्रयनिराकर्त्रे नमः
८८. भक्तिक्षेत्रविशुद्धिकृते नमः
८९. ब्रह्मसम्बन्धकृतज्जीवसर्वदोषनिवारकाय नमः
९०. पञ्चाक्षरमहामन्त्रविरहात्मफलप्रदाय नमः
९१. पृथक्शरणमार्गोपदेष्ट्रे नमः
९२. श्रीकृष्णहार्दविदे नमः

९३. दिङ्मूढजनताभीतिनिवारणपराय नमः
९४. गुरुवे नमः
९५. निजशिक्षार्थश्रीकृष्णभक्तिकृते नमः
९६. निखिलेष्टदाय नमः
९७. स्वसिद्धान्तप्रबोधार्थानेकग्रन्थप्रवर्तकाय नमः
९८. व्याससूत्राणुभाष्योक्तिवेदान्तार्थप्रकाशकाय नमः
९९. भक्तिमार्गाविरुद्धै कसिद्धान्तपरिशोधकाय नमः
१००. जैमिनीयसूत्रभाष्यवक्त्रे नमः
१०१. वेदार्थदर्शकाय नमः
१०२. वैयासजैमिनीयोक्तप्रमेयैकार्थ्यवित्तमाय नमः

वादग्रन्थः

१०३. पत्रावलम्बनकृतये नमः
१०४. वादिसन्देहवारकाय नमः
१०५. काशीस्थलालङ्करणाय नमः

श्रीभागवतविषयकसाहित्यम्

१०६. विश्वेशप्रीतिकारकाय नमः
१०७. श्रीभागवततत्त्वार्थदीपप्राकट्यकारकाय नमः
१०८. स्वान्तध्वान्तनिराकर्त्रे नमः
१०९. प्रकाशसुखदायकाय नमः
११०. सच्चिदानन्दसन्दोह-शास्त्रार्थविनिरूपकाय नमः
१११. मनोवाक्कायकर्तव्यसेवातत्त्वप्रकाशकाय नमः

११२. मुख्यसिद्धान्तशुद्ध्यर्थसर्वनिर्णयदर्शकाय नमः
११३. प्रमाणादितत्त्वरूपपदार्थपरिशोधकाय नमः
११४. भक्तिमार्गीयभगवत्सेवारीतिप्रकाशकाय नमः
११५. श्रीभागवतरूपाख्यप्रक्रियाविनिरूपाकय नमः
११६. शास्त्रस्कन्धप्रकरणाध्यायार्थपरिशोधकाय नमः
११७. श्रीभागवतसारार्थनामहसाहस्त्रदर्शकाय नमः
११८. त्रिधालीलाप्रकाशश्रीकृष्णनामावलीप्रियाय नमः
११९. निरोधार्थानुसन्धानकृतेऽनुक्रमदर्शकाय नमः

षोडशग्रन्थाः

१२०. कलिदोषाप्रवेशार्थकृष्णाश्रयनिरूपकाय नमः
१२१. प्रतिबन्धनिरासार्थयमुनाष्टकदर्शकाय नमः
१२२. समस्तसिद्धान्तमुक्तावलीग्रन्थनिरूपकाय नमः
१२३. सेवोपयिकसिद्धान्तरहस्यप्रतिपादकाय नमः
१२४. भक्तचिन्तानिरासार्थनवरत्नप्रकाशकाय नमः
१२५. अन्तःकरणबोधोक्तिस्वीयशिक्षाप्रदर्शकाय नमः
१२६. कृष्णाङ्गीकारविषयोत्कटसन्देहवारकाय नमः
१२७. सेवोत्कर्षप्रकाशार्थसेवाफलनिरूपकाय नमः
१२८. सेव्यनिर्द्धारसिद्ध्यर्थबालबोधप्रकाशकाय नमः
१२९. सेव्यस्वरूपोत्कर्षार्थमधुराष्टकदर्शकाय नमः
१३०. पुष्टिप्रवाहमर्यादामार्गत्रयविवेचकाय नमः
१३१. सर्वेन्द्रियनिरोधार्थतल्लक्षणनिरूपकाय नमः

१३२. बीजदार्ढ्य प्रकारेण भक्तिवर्द्धिन्युपायकृते नमः
१३३. विवेकर्धर्याश्रयकृते नमः
१३४. बाहिर्मुख्यनिवारकाय नमः
१३५. सदसद्भवबोधार्थ-जलभेदनिरूपकाय नमः
१३६. दुःसङ्गाभावसत्सङ्गकारकाय नमः
१३७. करुणालयाय नमः
१३८. विरहानुभवार्थैकसंन्यासाचारदर्शकाय नमः
१३९. भजनावश्यकत्वार्थचतुःश्लोकीप्रकाशकाय नमः
१४०. यशोदोत्संगललितप्रभुसेवैकतत्पराय नमः
१४१. विस्फूर्जद्रासलीलादिरसामृतमहार्णवाय नमः
१४२. निर्दोषगुणरत्नाढ्याय नमः
१४३. भावनान्तमहोर्मिमते नमः
१४४. कृष्णेन्दुविशदालोकपरमानन्दवर्द्धनाय नमः
१४५. स्वदासार्थकृताशेषसाधनाय नमः
१४६. सर्वशक्तिधृते नमः

फलप्रदर्शकप्रकरणम्

१४७. नित्यं प्रियव्रजस्थितये नमः
१४८. व्रजनाथाय नमः
१४९. व्रजार्तिभिदे नमः
१५०. व्रजीयजनजीवातवे नमः
१५१. व्रजमाहात्म्यदर्शकाय नमः

१५२. व्रजलीलाभावनात्मने नमः
१५३. श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः
१५४. गो-गोप-गोपीषु प्रीताय नमः
१५५. गोकुलोत्सवाय नमः
१५६. उद्धवाय नमः
१५७. गोवर्द्धनाद्रिप्रवरप्रेक्षणातिमहोत्सवाय नमः
१५८. गोवर्द्धनस्थित्युत्साहाय नमः
१५९. तल्लीलाप्रेमपूरिताय नमः
१६०. शृङ्गद्रोणीकन्दरादिकेलीस्थानप्रकाशकाय नमः
१६१. द्रुमपुष्पलतागुल्मदर्शनप्रीतमानसाय नमः
१६२. गह्वरप्रायदेशाढ्यगिरिकेलिकलोत्सवाय नमः
१६३. गोवर्द्धनाचलसखाय नमः
१६४. अनेकधा प्रीतिकारकाय नमः
१६५. हरिदाससर्वसेवासादराय नमः
१६६. हार्दवित्तमाय नमः
१६७. गोवर्द्धनाचलारूढाय नमः
१६८ स्मृताचलशिरोमणये नमः
१६९. सन्मुखस्वागतश्रीमद्गोवर्द्धनधराय नमः
१७०. प्रियाय नमः
१७१. अन्योन्ययोजितकराय नमः
१७२. सहद्वदनपङ्कजाय नमः

१७३. सूक्तिसारसुधावृष्टिस्वानन्दितव्रजाधिपाय नमः
१७४. श्रीगोवर्द्धनानुमतोत्तमाधिष्ठानकारकाय नमः
१७५. प्रसन्नाम्बुजसङ्काशकलशानन्दिताखिलाय नमः
१७६. कुङ्कुमारुणरागातिविलक्षणरसप्रदाय नमः
१७७. चतुर्दिग्दृष्टिमृगराड्बद्धस्थापनतत्त्वविदे नमः
१७८. सुदर्शननिरस्तार्तिप्रतिपक्षमहासुराय नमः
१७९. समुल्लसत्प्रेमपूरनानाध्वजवरप्रियाय नमः
१८०. निगूढनिजकुञ्जस्थमन्दिररस्थापितप्रभवे नमः
१८१. वृन्दावनप्रियतमाय नमः
१८२. वृन्दारण्यपुरन्दराय नमः
१८३. वृन्दावनेन्दुसेवैकप्रकारसुखदायकाय नमः
१८४. कृष्णाकुम्भनदासादिलोलापरिकरावृताय नमः
१८५. गानस्वानन्दितश्रीमन्नन्दराजकुमारकाय नमः
१८६. सप्रेमनवधाभक्तिप्रचाराचरणक्षमाय नमः
१८७. देवाधिदेवस्वप्रेष्ठप्रियवस्तूपनायकाय नमः
१८८. बाल्यकौमारपौगण्डकैशोरचरितप्रियाय नमः
१८९. वशीकृतनिजस्वामिने नमः
१९०. प्रेमपूरपयोनिधये नमः
१९१. मथुरास्थितिसानन्दाय नमः
१९२. विश्रान्तस्वाश्रमप्रियाय नमः
१९३. यमुनादर्शनानन्दाय नमः

१९४. यमुनानन्दवर्द्धनाय नमः
१९५. यमुनातीरसंवासरुचये नमः
१९६. तद्रूपवित्तमाय नमः
१९७. यमुनानन्तभावात्मने नमः
१९८. तन्माहात्म्यप्रदर्शकाय नमः
१९९. अनन्यसेवितपदाय नमः
२००. स्वानन्यजनवत्सलाय नमः
२०१. सेवकानन्तसुखदाय नमः
२०२. अनन्यभक्तिप्रदायकाय नमः

जीवनप्रवृत्तिः

२०३. कृष्णाज्ञापालनार्थस्वगृहस्थाश्रमदर्शकाय नमः
२०४. महालक्ष्मीप्राणपतये नमः
२०५. सर्वभौभाग्यवर्द्धनाय नमः
२०६. श्रुतिस्मृतिसदाचारपालनैकपरायणाय नमः
२०७. मर्यादास्थापनपराय नमः
२०८. कर्ममार्गप्रवर्तकाय नमः
२०९ कर्मस्वरूपवक्त्रे नमः
२१०. अनुष्ठानकृते नमः
२११. जनशिक्षकाय नमः
२१२. आधिदैविकसर्वाङ्गयज्ञकृते नमः
२१३. यज्ञपूरषाय नमः

२१४. मूलमाहात्म्यबोधार्थविभूत्युत्कर्षपोषकाय नमः
२१५. ब्रह्मण्यदेवाय नमः
२१६. धर्मात्मने नमः
२१७. सर्वधर्मप्रवर्तकाय नमः
२१८. स्वाविर्भावितसन्मार्गप्रचारार्थस्ववंशकृते नमः
२१९. श्रीगोपीनाथजनकाय नमः
२२०. विश्वमङ्गलकारकाय नमः
२२१. दयानिधिविभुश्रीमद्विट्ठलप्रियपुत्रवते नमः
२२२. जन्मोत्सवमहोत्साहाय नमः
२२३. स्मार्तसंस्कारसादराय नमः
२२४. प्रदर्शितनिजाचाराय नमः
२२५. सर्वधर्मैकपालकाय नमः

श्रीगोसाईजी-ग्रन्थप्रवृत्तिः

२२६. स्वकीयापरमूर्तिश्रीविट्ठलेशकृतिप्रियाय नमः
२२७. भाष्यादिशेषसम्पूर्तिपरमोत्कर्षमोदकाय नमः
२२८. सुबोधिनीदुरुहोक्तिव्याख्यानप्रीतमानसाय नमः
२२९. निगूढस्वाशयगतस्वतन्त्रार्थप्रियप्रियाय नमः
२३०. स्वरूपगुणनामोक्तिस्वीयसौभाग्यवर्द्धनाय नमः
२३१. विद्वन्मण्डनवादोक्तिपरपक्षनिरासकृते नमः

ब्रह्मस्वरूपनिर्णयः

२३२. सोपाधिब्रह्मवादार्थनिराकरणपण्डिताय नमः
२३३. अप्राकृतानन्तगुणाधारब्रह्मस्वरूपविदे नमः
२३४. सामान्यप्राकृतगुणानाश्रयत्वप्रकाशकाय नमः
२३५. विरुद्धधर्माधारत्वस्थापनैकप्रयत्नकृते नमः
२३६. असम्भवनिरासार्थानन्तानिर्वाच्यशक्तिविदे नमः
२३७. प्राकृतेन्द्रियसामर्थ्यसुखवेद्यत्ववित्तमाय नमः
२३८. भगवद्दत्तसामर्थ्यसुखवेद्यत्ववित्तमाय नमः
२३९. तर्कशास्त्रोक्तसिद्धान्तनिरासवरयुक्तिमते नमः

जीवनस्वरूप-निर्णयः

२४०. सोपाधिजीववादैकनिराकर्त्रे नमः
२४१. महाशयाय नमः
२४२. आत्मव्यापकतातर्कपराहतिविचक्षणाय नमः
२४३. श्रुतिसूत्रादिसंसिद्धजीवाणुत्वप्रदर्शकाय नमः
२४४. चिद्रूपब्रह्मधर्मात्मजीवनित्यत्वदर्शकाय नमः
२४५. भेदवादनिराकर्त्रे नमः
२४६. ब्रह्मांशत्वनिरूपकाय नमः
२४७. नित्यानन्तब्रह्मधर्मधर्म्यभेदप्रकाशकाय नमः

जगत्स्वरूपनिर्णयः

२४८. सद् रूपब्रह्मधर्मात्मजगन्नित्यत्वदर्शकाय नमः
२४९. मिथ्यात्वजन्यतावादाऽवैदिकत्वप्रकाशकाय नमः

२५०. अविद्याकार्यसंसारमिथ्यात्वपरिदर्शकाय नमः
२५१. प्रपञ्चसंसारभिदाप्रदर्शनसुयुक्तिमते नमः
२५२. आविर्भावतिरोभावसिद्धान्तपरिशोधकाय नमः
२५३. मूलेच्छाशक्तिसर्वार्थसामाञ्जस्यप्रदर्शकाय नमः
२५४. कार्यप्रपञ्चभगवद्विभूत्यात्मत्वदर्शकाय नमः

लीलासृष्टिनिरूपणम्

२५५. लीलाप्रपञ्चभगवत्स्वरूपात्म्त्ववित्तमाय नमः
२५६. द्वारिकामथुरागोष्ठलीलानित्यत्वदर्शकाय नमः
२५७. वृन्दावनगोवर्द्धनकालिन्दीकेलिकौतुकाय नमः
२५८. अन्यथाभानसञ्जातसन्देहविनिवारकाय नमः
२५९. श्रुतिदृष्टान्तरचनाविस्पष्टार्थनिरूपकाय नमः
२६०. श्रुतिस्मृतिवरप्राप्तिप्रकारपरिदर्शकाय नमः
२६१. शृङ्गाररसरूपत्वस्थापनातिविशारदाय नमः
२६२. अनेकनित्यनामात्मक्रियावद्ब्रह्मदर्शकाय नमः
२६३. अत्यनुग्रहवद्भक्तनित्यलीलाप्रवेशविदे नमः
२६४. आसुरव्यामोहलीलावश्यकत्वनिदानविदे नमः
२६५. मायैकमूलभगवद्विमोहकचरित्रविदे नमः
२६६. निर्दोषानन्दरूपैककृष्णतत्त्वप्रकाशकाय नमः
२६७. स्फुरद्विहृतिनित्यत्वभावनानन्ददायकाय नमः

भक्तिहंसोक्त-सिद्धान्त-निरूपणम्

२६८. भक्त्युपास्तिविवेकार्थभक्तिहंसप्रकाशकाय नमः

२६९. मंत्राद्यगम्यभक्त्येकगम्यश्रीकृष्णारूपविदे नमः

भक्तिहेतुग्रन्थ-निरूपणम्

२७०. अनुग्रहविमर्शार्थभक्तिहेतुप्रकाशकाय नमः
२७१. कृष्णानुग्रहलभ्यैकभक्तितत्त्वप्रकाशकाय नमः
२७२. मर्यादानुगृहीतात्मभक्त्यर्थाचारदर्शकाय नमः
२७३. पुष्ट्यनुग्रहवद्भक्तधर्मान्तरनिषेधविदे नमः

पुरुषोत्तमप्रतिष्ठाप्रकारादि-ग्रन्थनिरूपणम्-

२७४. भक्तिमार्गीयभगवत्प्रतिष्ठारीतिबोधकाय नमः
२७५. कृष्णजन्माष्टमीरामनवमीव्रतशोधकाय नमः
२७६. मुक्तावलीप्रकाशोक्तिसिद्धान्तपरिशोधकाय नमः
२७७. नवरत्नप्रकाशोक्तिचिन्तासन्ताननाशकाय नमः
२७८. यासादेशीयविवृतिधर्मत्यागोक्तिचिन्तकाय नमः
२७९. जीवन्मुक्तितारतम्यसिद्धान्तपरिशोधकाय नमः
२८०. गीतातात्पर्यसद्वक्त्रे नमः
२८१. गायत्र्यर्थप्रकाशकाय नमः
२८२. मुख्यश्रीस्वामिनीकेलीशृङ्गारोल्लासदर्शकाय नमः
२८३. स्वामिनीप्रार्थनास्तोत्रनानाभावविभावकाय नमः
२८४. स्वामिन्यष्टकगूढोक्तिमार्गतत्त्वप्रकाशकाय नमः
२८५. प्रेमामृतरसास्वादानुपानपरिदर्शकाय नमः
२८६. उक्तान्यपूर्वशृङ्गारदानलीलाप्रकाशकाय नमः
२८७. कुमारिकानन्यसिद्धव्रतचर्यानिरूपकाय नमः

२८८. तदेकरससर्वस्वनिभृतात्मने नमः
२८९. रसार्णवाय नमः
२९०. यमुनास्तोत्र[१]विवृतितुर्यशक्तिप्रकाशकाय नमः
२९१. सकृष्णयमुनाभाववर्द्धिन्यष्टपदीप्रियाय नमः
२९२. चौरचर्यागुप्तरसानन्तभावनिरूपकाय नमः
२९३. रूपामृतैकचषकत्रिभङ्गललितप्रियाय नमः
२९४. दशावताराष्टपदीशृङ्गारार्थत्वदर्शकाय नमः
२९५. शृङ्गाररससन्दर्भासङ्गतत्त्वनिरासकाय नमः
२९६. प्रबोधगद्यरचनाप्रत्यहश्रवणोत्सुकाय नमः
२९७. मङ्गलाखिललीलाब्धिकृष्णगानरसप्रदाय नमः
२९८. प्रेङ्खपर्यङ्कशयनगीतनित्यप्रियङ्कराय नमः
२९९. सदारप्रेष्ठरतिकृत्प्रार्थनागीतभावविदे नमः
३००. असकृद्गोविन्ददासप्रभृत्यार्यसमन्विताय नमः
३०१. गोपीपरिवृढस्तोत्रव्र जाधीशरतिप्रदाय नमः
३०२. व्रजराजार्यतनयप्रीतिकृत्स्तोत्रकीर्तनाय नमः
३०३. गोकुलोत्कर्षबोधार्थगोकुलाष्टकदर्शकाय नमः
३०४. श्रीगोकुलसुखावासस्वकीयानन्दवर्द्धनाय नमः
३०५. श्रीमन्नन्दालयक्रीडत्कृष्णलीलाप्रकाशकाय नमः
३०६. पुत्रपौत्रादिसौभाग्यसेवर्द्धिपरिदर्शकाय नमः
३०७. श्रीकृष्णसेवाचातुर्यसीम्ने नमः
३०८. सर्वशिरोमणये नमः

३०९. संसारसागरोत्तारनौकासत्कर्णधारकाय नमः
३१०. शरणस्थानन्तजीवापराधदलनक्षमाय नमः
३११. कृष्णसेवाशिक्षणार्थ भक्तिमार्गप्रदर्शकाय नमः
३१२. मर्यादामार्गविधिना गृहस्थाश्रममास्थिताय नमः
३१३. दारागारसुताप्तादिसर्वस्वात्मनिवेदकाय नमः
३१४. वैदिकाचारनिपुणाय नमः
३१५. दीक्षिताख्याप्रसिद्धिमते नमः
३१६. षड्गुणैश्वर्यसम्पत्तिराजमानाय नमः
३१७. सतां पतये नमः

स्वतन्त्रनामानि

३१८. विट्ठलेशप्रभावज्ञाय नमः
३१९. कृतकृत्यतमाय नमः
३२०. हरये नमः
३२१. निवृत्तिधर्माभिरताय नमः
३२२. निजशिक्षापरायणाय नमः
३२३. भगवद्भक्त्यनुगुणसंन्यासाचारदर्शकाय नमः
३२४. अलौकिकमहातेजःपुञ्जरूपप्रकाशकाय नमः
३२५. नित्यलीलाविहरणाय नमः
३२६. नित्यरूपप्रकाशवते नमः
३२७. अदभ्रसौहार्दनिधये नमः
३२८. सर्वोद्धारविचारकाय नमः
३२९. शुकवाक्सिन्धुलहरीसारोद्धारविशारदाय नमः

३३०. श्रीभागवतपीयूषसमुद्रमथनक्षमाय नमः
३३१. श्रीभागवतप्रत्यर्थमणिप्रवरभूषिताय नमः
३३२. अशेषभक्तसम्प्रार्थ्यचरणाब्जरजोधनाय नमः
३३३. शरणस्थसमुद्धाराय नमः
३३४. कृपालवे नमः
३३५. तत्कथाप्रदाय नमः

इति मथुरावासि-गोस्वामि श्रीरमणलालजी-महाराजविरचिता श्रीवल्लभानामावली समाप्ता।

श्रीसुदर्शन-कवचम्

श्रीकृष्णाय नमः।। श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः।।

अथ विनियोगः

ॐ अस्य श्रीसुदर्शनकवचमहामंत्रस्य नारायणऋषिः। श्रीसुदर्शनो देवता।। गायत्री छन्दः।। दुष्टं दारयतीति कीलकम्।। हन हन द्विष इति बीजम्।। सर्वशत्रुक्षयार्थे सुदर्शनस्तोत्रपाठे विनियोगः।।

अथ न्यासः

ॐ नारायणऋषये नमः शिरसि।। ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे।। ॐ दुष्टं दारयतीति कीलकाय

नमः हृदये।। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ द्विष इति बीजाय नमः गुह्ये।। ॐ सुदर्शने ज्वलत्पावकसंकाशेति कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।। इति ऋष्यादिः।।

अथ हृदयादिन्यासः

ॐ नारायणऋषये नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः।। ॐ गायत्रीछन्दसे नमः तर्जनीभ्यां नमः। ॐ दुष्टं दारयतीति कीलकाय.नमः मध्यमाभ्यां नमः।। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ द्विष इति बीजाय नमः अनामिकाभ्यां नमः।। ॐ सर्वशत्रुक्षयार्थे श्रीसुदर्शनदेवतेति करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।। ॐ नारायणऋषये नमः हृदयाय नमः।। ॐ गायत्रीछन्दसे नमः शिरसे स्वाहा।। ॐ दुष्टं दारयतीति कीलकाय नमः शिखायै वषट्।। ॐ दुष्टं दारयतीति कीलकाय नमः शिखायै वषट्।। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ द्विष इति बीजाय नमः कवचाय हुम्।। ॐ सुदर्शनज्वलत्पावक संकाशेति नेत्रत्रयाय वौषट्।। ॐ सर्वशत्रुक्षयार्थे सुदर्शन देवतेति अस्त्राय फट्।। इति न्यासं विधाय ध्यानं कुर्यात्।

अथ ध्यानम्

सुदर्शनं महावेगं गोविन्दस्य प्रियायुधम्।
ज्वलत्पावकसंकाशं सर्वशत्रुविनाशनम्।।१।।

कृष्णप्राप्तिकरं शश्वद् भक्तानां भयभंजनम्।
संग्रामे जयदं तस्माद् ध्यायेदेवं सुदर्शनम्।।२।।

अथ मंत्रः

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ नमो भगवते भो भो सुदर्शन चक्र दुष्टं दारय दारय दुरितं हन हन पापं मथ मथ आरोग्यं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा।।

अथ सुदर्शन-कवचम्

श्री कृष्णाय नमः।। श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः।।

ॐ वैष्णवानां हि रक्षार्थं श्रीवल्लभनिरूपितः।
सुदर्शनमहामंत्रो वैष्णवानां हितावहः।।१।।

यंत्रमध्ये निरूप्यन्ते चक्राकारं च लिख्यते।
उत्तरागर्भरक्षा च परीक्षितहिते रतः।।२।।

ब्रह्मास्त्रवारणं चैव भक्तानां भयभंजनः।
वधं च दुष्टदैत्यानां खण्डं खण्डं च कारकः।।३।।

वैष्णवानां हितार्थाय चक्रं धारयते हरिः।
पीताम्बरः परब्रह्म वनमाली गदाधरः।।४।।

कोटिकन्दर्पलावण्यो गोपिकाप्राणवल्लभः।
श्रीवल्लभः कृपानाथो गिरिधृक् शत्रुमर्दनः।।५।।

दावाग्निपानकर्ता च गोपीभयनिवारकः।
गापालो गोपकन्याभिः समावृत्तोऽधितिष्ठते।।६।।

व्रजमण्डलप्रकाशी च रामकृष्णजगन्मयः।
गो-गोपिकासमाकीर्णो वेणुवादनत्परः।।७।।

कामरूपी कलावाँश्च कामिन्यां कामदो विभुः।
मन्मथो मथुरानाथो माधवो मकरध्वजः।।८।।

श्रीधरः श्रीकरश्चैव श्रीनिवासः सतां गतिः।
भुक्तिदो मुक्तिदो विष्णुर्भूधरो भूतभावनः।।९।।

सर्वदुःखहरो वीरो दुष्ट दैत्यविनाशकः।
श्रीनृसिंहो महाविष्णुः श्रीनिवासः सतां गतिः।।१०।।

चिदानन्दमयो नित्यः पूर्णब्रह्मसनातनः।
कोटिभानुप्राकाशी च निश्चितार्थस्वरूपकः।।११।।

भक्तप्रियः पद्मनेत्रो भक्तानां वांछितप्रदः।
हृदि कृष्णो मुखे कृष्णो नेत्रे कृष्णश्च कर्णयोः।।१२।।

भक्तिप्रियश्च श्रीकृष्णः सर्वं कृष्णमयं जगत्।
कालमृत्युयमाहूतं भूतप्रेतो न दृश्यते।।१३।।

पिशाचा राक्षसाश्चैव हृदि रोगाश्च दारुणाः।
भूचराः खेचराः सर्वे डाकिनी शाकिनी तथा।।१४।।

नाटकं चेटकं चैव छलं छिद्रं न दृश्यते।
अकाले मरणं तस्य शोकदुःखं न लभ्यते।।१५।।

श्री मुकुन्दराय जी

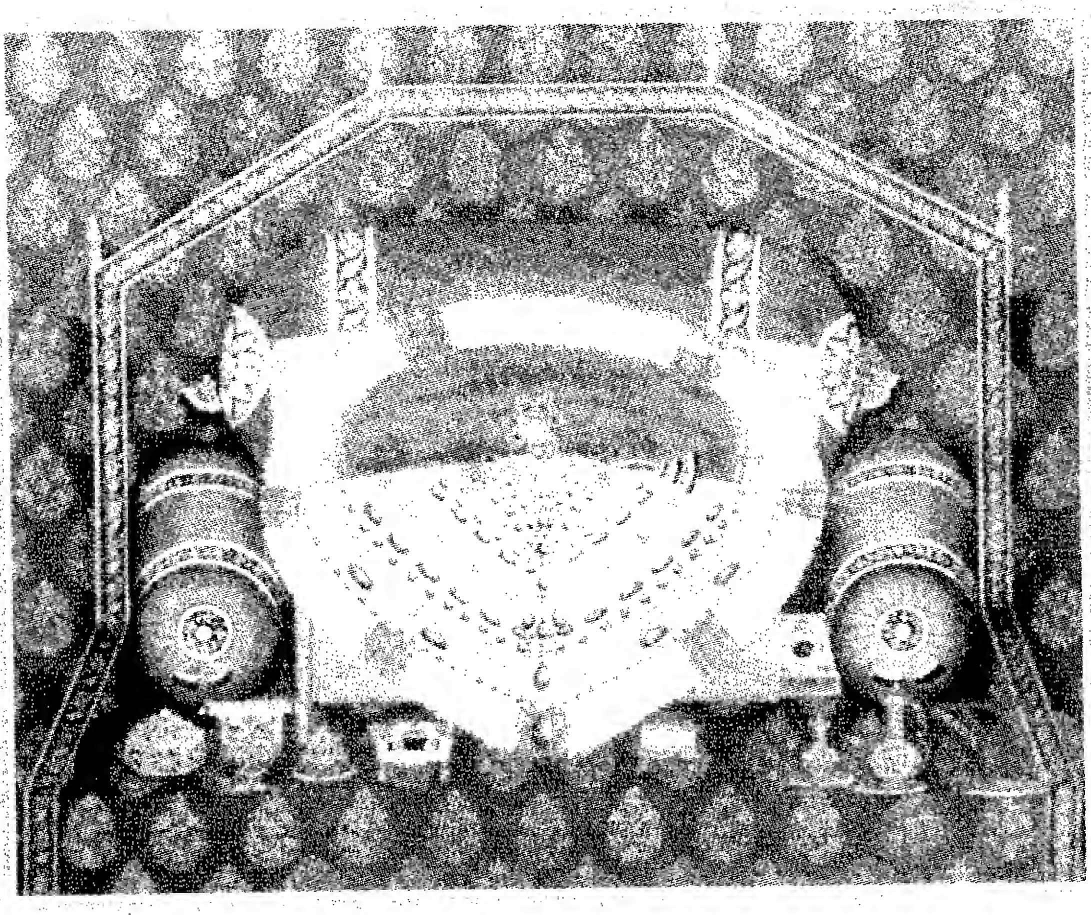

पाटोत्सव माघ शु. ४

यः स्वीयान् गतसाधनानगणयन् नानापराधान् परा–
नेकेनैव कृपा सुधाजलधरासारेण संसिञ्चति।
श्यामत्वं निजशोभयाऽपरवपुर्ध्यानेन यद्गौरतां
तं रायोत्तर–शद्वमुद्धृतनिजं श्रीमन्मुकुन्दं भजे॥

सर्वविघ्नं क्षयं याति रक्ष मे गोपिकाप्रिय।
भयदावाग्निचौराणां विग्रहे राजसंकटे।।१६।।

व्याल-व्याघ्र-महाशत्रु-वैरिबन्धो न लभ्यते।
आधिव्याधिहरश्चैव ग्रहपीडा-विनाशनम्।।१७।।

इमे सप्तशश्लोका यंत्रमध्ये च लिख्यते।
वंशवृद्धिर्भवेत्तस्य श्रोता च फलमाप्नुयात्।।१८।।

कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत्कृष्णाष्टमी भवेत्।
देवं ध्यात्वा जपेन्मंत्रमयुतानां चतुष्टयम्।।१९।।

वैष्णवानां हि रक्षार्थं वैष्णवानां हिताय च।
सुदर्शनमहामंत्रों लभते जयमङ्गलम्।
सर्वपापहरः कृष्ण! त्वामहं शरणं गतः।।२०।।

इति श्रीमद्वल्लभाचार्यचरणविरचितं
श्रीसुदर्शन-कवचम्-सम्पूर्णम्।

श्रीमुकुन्दरायाष्टकम्

(रामकली-गणेश गीयते)

वनितोपहासनृत्यत्स्मितवनदनानन्दजोषतोषदायिन्।
श्रीमन्मुकुन्दराय त्वय्यासक्तं मनो मऽस्तु।।१।।

श्री गोपाललाल जी

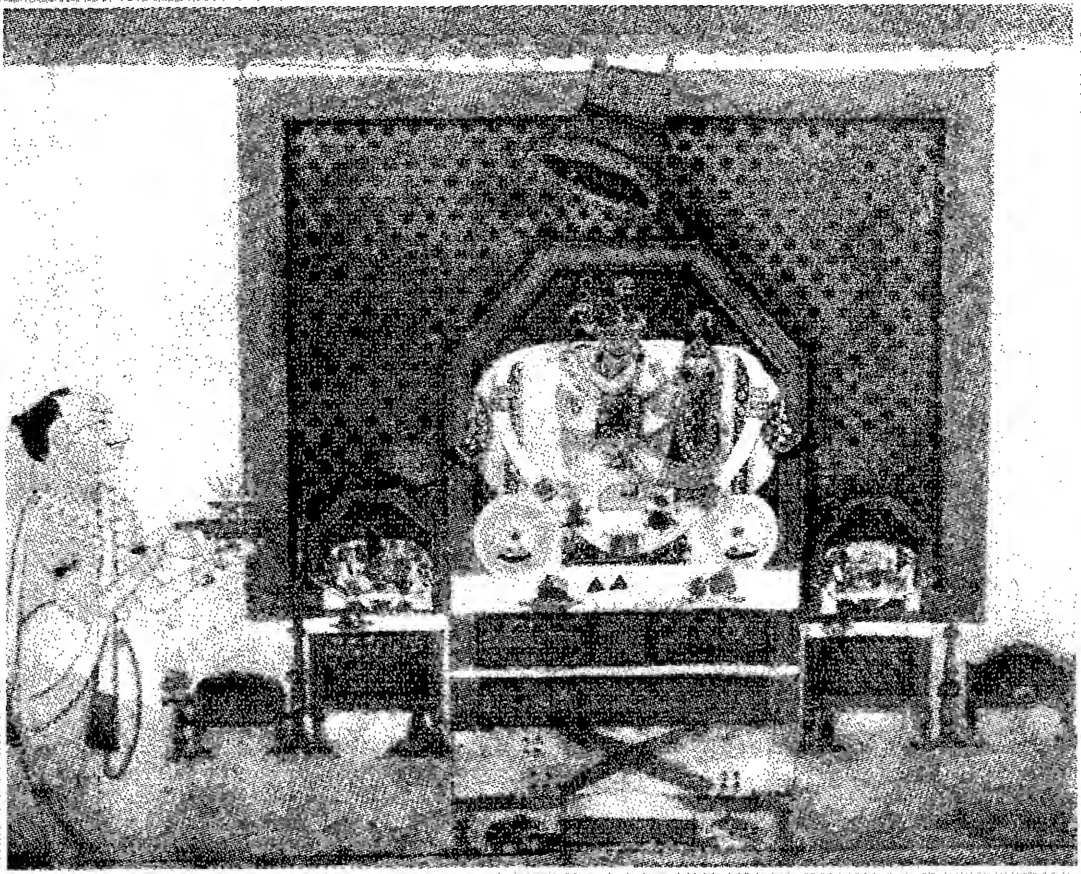

पाटोत्सव भाद्रपद कृष्ण ५

श्रीमद्गोपाललालं मृगमदविलसद्भालमालं कृतस्व
स्वामिन्या सुस्मितास्यं–ललित–गति–लसन्मबाल गोपाललालम्।
वेणौ विन्यस्तहस्तं रतिपति–मदहृत्स्वर्णगात्रं सुनेत्रं
रास–क्रीडादिलोलं सुललित–वसनं राधिकेशं नमामि॥

मणिमयनन्दावासे कुमारिकावृन्दशोभिसद्धास्ये।
नवनीतलोभितास्ये (सततं त्वयि हरौ) मतिर्मेऽस्तु।।२।।

परिधृतहीरकहारं व्रजाङ्गनादर्शनीयकौमारम्।
कृतगोपुच्छ विहारं जितमारं प्रणौमि हृत्सारम्।।३।।

सकलोपनिषत्सारं स्वानन्दाप्राकृताकारम्।
वन्दे नन्दकुमारं वारं वारं स्वदातारम्।।४।।

किङ्किणीनूपुररणितं (सततं) सिंहावलोकनं कर्त्रे।
व्रजजनमानसहर्त्रे निजार्तिहर्त्रे नमस्कुर्मः।।५।।

अलकसमावृतवदनं सुकुन्दकलिकासुशोभितं स्वास्यम्।
गोपयुवतीरतिसदनं जितमदनं नन्दनन्दनं नौमि।।६।।

व्रजकर्दमलिप्ताङ्ग करघृतनवनीतमोहितानङ्गम्।
वन्दे लोलविलोचनासक्ताङ्गनासङ्गम्।।७।।

नर्तनलीलाकरणं मनोहरणं वपुषा नन्दविस्तरणम्।
(सेवकजन) भवतरणं यामि (तमहं सदैव) शरणम्।।८।।

(तव) लीलारसलुब्धाः श्रीमुकुन्दरायाष्टकंप्रेम्णा।
साधनजालसहस्त्रं त्यक्त्वाजस्त्रं पठध्वं वै।।९।।

इति श्रीमद्यदुनाथकुलोद्भवश्रीगोपालात्मजश्रीगिरधरेण विरचितं श्रीमुकुन्दरायाष्टकं समाप्तम्।

श्रीगोपाललालाष्टकम्

श्रीमदाचार्यचरणौ साष्टांगं प्रणिपन्यतौ।
विरच्यतेऽष्टकमिदं श्रीमद्गोपालपुष्टिदम्।।१।।

यस्यानुकंपावशतः सुदुर्लभं
मानुष्यमाप्तं परमस्य पुंसः।
सर्वार्थदं दीनदयालुमेकं
गोपाललालं शरणं प्रपद्ये।।२।।

योदात्स्वसेवोपयिकं शरीरं
सांगं समर्थं शुभमर्थदं च।
सेवाऽनभिज्ञः परमस्य तस्य
गोपाललालं शरणं प्रपद्ये।।३।।

निजांगसंदर्शनयोगयोग्यता
योऽदाद्दृशं मे परमोदयालुः।
तदंगसौंदर्य्यरसावभिज्ञो
गोपाललालं शरणं प्रपद्ये।।४।।

श्रीमत्कथासंश्रवणोपयोगि-
श्रोत्रं ददौ यः करुणारसाब्धि ।
कथामृतास्वादनमूढ़चेता
गोपाललालं शरणं प्रपद्ये।।५।।

वाचं ददौ श्रीगुणज्ञानयोग्यां
ब्रजांगनांगाभरणांगमूर्तिम् ।
तथापि नाम्नामनुकीर्तनेऽलसो
गोपाललालं शरणं प्रपद्ये।।६।।

घ्राणेद्रियं मे तुलसीविमिश्रपादा
ब्जसन्दिग्धपरागयोग्यम् ।
ददौ कृपालुर्ह्यपराधिने यो
गोपाललालं शरणं प्रपद्ये।।७।।

शिरश्चपादाम्बुजसन्प्रणाम
योग्यं ददौ यो यदुवंशचंद्रः।
स्तुत्या च नत्या विनयेन हीनो
गोपाललालं शरणं प्रपद्ये।।८।।

जनोपराधानसकृद्विकुर्वन्
श्रोतोभवेद्यस्तु मनाक्षमायाम्।
नवालसस्तं करुणैकबंधुं
गोपाललालं शरणं प्रपद्ये।।९।।

इति श्रीमद्गोस्वामिश्रीगिरधरजी कृत
श्रीगोपाललाष्टकं सम्पूर्णम्।

अथ श्रीवल्लभगीतम्

(अथ श्रीवल्लभगीतग्रन्थांश:)

श्रीमद्गोकुलमण्डनं वरतनुं कल्याणवारांनिधिं
विघ्नोधोन्मदनागकुम्भदलनातिप्रौढसिंहाक्रमम्।
भक्तापत्तिम:समूहहरणे श्रीसूर्यकोटिप्रभं
वन्देऽहं कमलाधवं द्विजवरं श्रीवल्लभं सत्प्रियम्।।१।।

यो भक्तप्रियमामादरेण कुरुते विन्दन्ति यं नामरा
येनैवापहृतं जनस्य कलुषं तस्मै नमो नित्यश:।
यस्मात्सौख्यपदं गता हिह सुजना यस्यास्त्यनन्ता गति
स्तस्मिन्मे मतिरस्तु गोकुलपतौ श्रीवल्लभे सर्वदा।।२।।

नाहं काव्यविचक्षण: सुविमला बुद्धिर्न मे स्वोद्भवा
नालङ्कारगतिर्न मे गणिगतिर्नैवान्यदेवाश्रय:।
श्रीमद्गोकुलनाथ विट्ठलसुत श्रीविप्ररूपाकृते
श्रीमद् वल्लभनाथ ते पदसरोजस्यास्ति वै मे बलम्।।३।।

क्वाहं मन्दमतिस्तथाल्पविषयासक्तो मनुष्योऽप्यथ
क्वेदं क्षीरसमुद्रकस्य मथनं सद्रत्नकोत्पादकम्।
पङ्गुर्मेरुगिरेस्तु हीच्छति यथाप्युल्लङ्घनं मन्दधी:
श्रीमद्वल्लभवर्णनं खलु तथेतीच्छामि मोहाश्रित:।।४।।

तथापि वै गोकुलनाथपादपङ्केरुहस्यातिबलं प्रगृह्य च।
तस्याज्ञया वल्लभगीतमुद्रसं करोति संक्षेपत एव माहबः।।५।।

अथ प्रथमः प्रबन्धः कल्याणरागेण गीयते।

श्रीमल्लोलविलोचनलोकनलज्जितकोटिमनोजम्।
आनन्दितममराजभवादिविनम्यसुपादसरोजम् ।।१।।
नमामि श्रीवल्लभमेकरसं रमते सततं वै सरसम् ।।ध्रु०।।

श्रीगोकुलमण्डितललितान-
हासविमोहितविश्वमजम् ।
आनन्दाम्बुजमुखवचनामृत-
जीवितकलिग्रसिताखिलमनुजम्।।२।।
नमामि श्रीवल्लभमेकरसं रमते सतत वै सरसम्।।घ्रू०।।

आजनुभुयुगजनाभयदं शरणागतकालभयापहरम्।
स नकलिमलतूलकदम्बसमग्रविदाहकरं नृवरम्।।३।।
नमामि श्रीवल्लभमेकरसं रमते सततं वै सरसम्।।घ्रु०।।

श्रीवल्लभकुलकुमुदावलिसुखराशिकरामलचन्द्रमसम्।
कोटिमदनबलदर्पहरं मधुराधरहासविलासरसम्।।४।।
नमामि श्रीवल्लभमेकरसं रमते सततं वै सरसम्।।ध्रु०।।

हीरकमणिगणजटितकुण्डल-
रुचिशोभितलोलकपोलवरम्।

कलिकालार्तिजनितभवताप-

जनामृतपूरकपद्मकरम् ।।५।।

नमामि श्रीवल्लभमेकरसं रमते सततं वै सरसम्।।०ध्रु।।

वेदागम्यमनङ्गालय-

हृदयाम्बुजमद्भुतकेलिकरम्।

त्रिभुवननिरूपमविमलोदरहृत-

मानिनीमानसमतिमधुरम्।।६।।

नमामि श्रीवल्लभमेकरसं रमते सततं वै सरसम्।।ध्रु०।।

शीतलसुभगचरणकमलाश्रित-

वल्लभनिजसुखराशिमलम्।

निर्मलचामीकरवरकलेवर-

रूपविमर्दितकामखलम् ।।७।।

नमामि श्रीवल्लभमेकररसं रमते सततं वै सरसम्।।ध्रु०।।

मनुजाकृतिधारिणमतिललितं

द्विजकुलमण्डनमङ्गनिवासम्।

मन्मथमन्मथललितगतिं

चरणाम्बुजरक्षितमाहवदासम्।।८।।

नमामि श्रीवल्लभमेकरसं रमते सततं वै सरसम्।।ध्रु०।।

श्रीमद्वल्लभवारिधिं ह्यगणिता-
नन्दोदकालङ्कृतम् ।
वागूर्भिं खलु मुक्तिशुक्तिममलोद्-
भ्रवाहुसद्धोगिनम् ॥१॥

मुक्ताभक्तिमलं हि मीननयनं
चावर्तनाभिं दीम्।
भक्तश्रेणिममोघनामतरणं
स्वेच्छागतिं तं भजे॥२॥

इति श्रीमाहवविरचितं श्रीवल्लभगीतं सम्पूर्णम्।

श्रीवल्लभाष्टकम्

प्रगटित गोकुलमण्डन मणि कुण्डल ए;
भक्तहेतुधृतकाय जय श्रीवल्लभ ए॥१॥

दुःखितकरुणासागर जितनागर ए;
मायामानुषवेष जय श्रीवल्लभ ए॥२॥

रत्नजटिकनकासन शुभशासन ए;
गिरिधरभक्तिनिधान जय श्रीवल्लभ ए॥३॥

सरसिजसुन्दरलोचन भवमोचन ए;
त्रिभुवनवन्दितनाम जय श्रीवल्लभ ए॥४॥

द्विजकुलमस्तकभूषण जितदूषण ए;
सदसि विजितबुधवृन्द जय श्रीवल्लभ ए।।५।।

निजजनकल्मषखण्डन कुलमण्डन ए;
पदजलपावितलोक, जय श्रीवल्लभ ए।।६।।

गुरुकुलवल्लभ वल्लभजनवल्लभ ए;
वल्लभवंशावतंस, जय श्रीवल्लभ ए।।७।।

तव चरणे स्मरतो मम निगमागम ए;
तव भजने रतिस्तु जय श्रीवल्लभ ए।।८।।

श्रीवल्लभपदाम्भोज-भृत्यताराभिधिन हि।
गुरुस्तोत्राष्टपद्युक्ता गीतापाठफलप्रदा।।९।।

इति श्रीवल्लभाष्टपदी तारासेवककृता समाप्ता

श्रीमधुराष्टकम्

चरण धरण मधुरं, नखमणि वर्ण मधुरं;
पद सुकुमार मधुरं, चञ्चल चाल मधुरम्।
केसरी कटि मधुरं, नाभि तट मधुरं;
स्तन उर स्थल मधुरं, करकमल मधुरम्।
सुन्दर वदन मधुरं, वलण अधर मधुरं;
उदर अति मधुरं हृदय गति मधुरम्।

गण्डस्थल वर्ण मधुरं कुंडल रविकिरण मधुरं;
नासिका नवल मधुरं, नयनकमल मधुरम्।
केसर तिलक मधुरं, कपोल फलक मधुरं;
ऊर्ध्व रेखा मधुरं, नवल वेष मधुरम्।
वेणि विशाल मधुरं, अम्बोडो रसाल मधुरं;
वाक् हास्य मधुरं, रसना रसनी मधुरम्।
चलण बलण मधुरं, मुसकनी मनहरण मधुरं;
चपलता अङ्ग मधुरं, चम्पक रंग मधुरम्।
श्रीगोकुलपति नख शिख सुन्दर मधुरम्।

इति श्रीरूपावाईकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम्।

श्राजी नू निर्मल रस

चरणनिर्मल, शरणनिर्मल, भाग्यनिर्मल,
भजननिर्मल; पार्वतीपति सर्व निर्मल।।१।।
चरणामृत निर्मल, मकरन्द निर्मल,
पान निर्मल, ध्यान निर्मल
पार्वतीपति सर्व निर्मल।।२।।

हृदय निर्मल, कान्ति निर्मल,
भांति निर्मल, रीत निर्मल,
पार्वतीपति सर्व निर्मल।।३।।

मन निर्मल, तन निर्मल,
दया निर्मल दान निर्मल
पार्वतीपति सर्व निर्मल।।४।।

रसना निर्मल, वचन निर्मल,
वेष निर्मल, वर्ण निर्मल
पार्वतीपति सर्व निर्मल।।५।।

रूप निर्मल, गान निर्मल,
विद्या निर्मल, हास्य निर्मल
पार्वतीपति सर्व निर्मल।।६।।

पुत्र निर्मल, पुत्री निर्मल,
मार्ग निर्मल कर्म निर्मल
पार्वतीपति सर्व निर्मल।।७।।

नाम निर्मल, धाम निर्मल,
सेवा निर्मल, सकल कृत्य निर्मल
पार्वती पति सर्व निर्मल।।८।।

इति श्रीविट्ठलेश नन्द, निर्मलरसकन्द,
ए अगाध क्यम कहुँ निपट मत्य मँनी मन्द।।९।।

इति निर्मलाष्टकं सम्पूर्णम्।

भक्ति का डंका भारत में

भक्ति का डंका भारत में,
बजवाया श्रीमहाप्रभुजी ने।
पुष्टिका झंडा सृष्टि में,
फहराया श्रीमहाप्रभुजी ने।।१।।

भूतल में कलियुग आय बसा,
अरु घोर तिमिर घनछाय रहा।
कर नष्ट तिमिर भक्ति रोशन,
प्रकटाया श्रीमहाप्रभुजीने।।२।।

छोटीवय में संकट सहकर,
भारत में परिभ्रमण किया।
विश्वको अपना उग्रतेज,
दिखलाया श्रीमहाप्रभुजीने।।३।।

ग्यारह वर्षमें शास्त्र और,
वेदादि विद्याभ्यास किया।
भारतके सब पण्डितगनको,
अपनाया श्रीमहाप्रभुजीने।।४।।

विद्यानगरीमें देश-देश विप्र,
विबुधवर आय रहे।

सब अपने मत बतानेमें,
मिथ्या शोर मचाय रहे।।५।।
जाकर वहाँ मायावाद तिमिरको,
ब्रह्मवादसे नष्ट किया।
कर विश्वविजय साकार ब्रह्म,
दिखलाया श्रीमहाप्रभुजी ने।।६।।
दीक्षा देकर दैवीजनको,
शरणागतिका उपदेश दिया।
शुद्धाद्वैत सिद्धान्त सरस,
समझाया श्रीमहाप्रभुजी ने।।७।।
वेदभागवतगीता प्रेम की,
दिव्य ज्योत प्रकटाय दिया।
विजयध्वज धर्म सनातनका,
फहराया श्रीमहाप्रभुजी ने।।८।।

भक्ति का दुन्दुभि

भारत में दुन्दुभि भक्तिका, बजवाया श्रीविट्ठलवरने।
मारग ब्रजपतिकी सेवाका, दिखलाया श्रीविट्ठलवरने।।
वे भारतेके उद्धारक है, दैवी जनताके तारक है।
सिद्धान्त निजात्मनिवेदनका, सिखलाया श्रीविट्ठलवरने।।

फैला था भारतभूमिपर, अधिकार यवन-सत्ताओंका।
भीषण युग में भी भक्ति को, विकसाया श्रीविट्ठलवरने।।
संगीतललित कलाओंका, उनने ही पुनरुद्धार किया।
परधर्मीभक्तजनोंको भी, अपनाया श्रीविट्ठलवरने।।
रक्षक आर्योकी संस्कृतिके, स्थापक वैदिक मर्यादाके।
मायामत घोरतिमिर भरको, हटवाया श्रीविट्ठलवरने।।
गावे 'गोवर्धन' गुणगणको, पावक पतितों के पालकको।
विजयध्वज पुष्टिभक्तिका, फहराया श्रीविट्ठलवरने।।६।।

राग विलावल

प्रकटे श्रीविट्ठलनाथजू जग भयो उजियार।
पौषकृष्ण नौमीदिनां प्रभु लियो अवतार।।१।।
निरख पूरण चन्द्रमा कुमुदिनी विकसानी।
सरिता सिन्धु सरोवर भयो उज्वल पानी।।२।।
भक्तन मन आनंद भयो गावें मृदु बानी।
चढ़ विमान सुर देखहीं जय जय सुखदानी।।३।।
गोकुल में आनन्द भयो सब करत कलोलें।
नर नारी मिल गावहिं लज्जा पट खोलें।।४।।

कलियुग में द्वापर कियो सब जीव उद्धारे।
गुण अवगुण प्रभुना गिने किये एकसारे।।५।।
सेवारीति दिखाइकें निरभय करि डारे।
योग यज्ञ जप तप नहीं या कलियुग मारे।।६।।
बहे जात जीव देखके राखे गहि बाँहीं।
कृष्णदास अपनी कियो चरणन की छाँहीं।।७।।

श्री यमुनाजी को स्वरूप

श्रीयमुनाजी तिहारो दरस मोहे भावे।
श्रीगोकुलके निकट बसत है लहरनकी छवि आवै।।
दुःखहरनि सुखदेनी यमुनाजी जोजन प्रात उठिनहावै।
मदनमोहन जुकी प्राणप्यारी पटरानी जु कहावै।।
श्रीवृन्दावन में रास रच्यो है मोहन मुरली बजावै।
सूरदास प्रभु तिहारे मिलनकू वेद विमल यश गावै।।

श्रीवल्लभकुल

जय जय जय श्रीवल्लभ प्रभु श्रीविट्ठलेश साथे। निज जन पर करत कृपा धरत हाथ माथे।

दोष सब दूर करत भक्ति भाव हिये में धरत गावत सदा गुण गाथे।।१।।

काहे के देह दमत मूरख जन साधन करि विद्यमान आनन्द त्यजि चलत क्यों कुपाथे। रसिक चरन शरण सदा रहत बडभागी जन आपुनो करि गोकुलपति धरत ताहि माथे।।२।।

श्री यमुनाजी के पद

पिय संग रंग भर कलोलें। सबनकुं सुखदेन पिय संग करत चित मे जब परत चेन तबही बोलें।।१।।

अतिही विख्यात सब बात इनके हाथ नाम लेत कृपा कर अतोले। दरस कर परस कर ध्यान हिये से धर सदा ब्रजनाथ इन संग डोले।।२।।

अतिहि सुखकरन दुःख सबनके हरन येही लीनो परमानंद झकोलें। ऐसो श्रीयमुने जान तुम करो गुण गान रसिक प्रीतम पावे नग अमोले।।३।।

(१) स्याम सुखधाम जहाँ नाम इनके। निश दिन प्राणपति आय हिय में बसे जोई गावे सुयश भाग्य तिनके।।१।।

येही जगमें सार कहत बारबार सबन के आधार धन गिरधनके। लेत यमुने नाम देत अभयपद धाम रसिक प्रीतम पिया वशजु इनके।।२।।

(२) कहते श्रुतिसार निरधार करके। इन बिन कोन ऐसी करे हे सखी हरत दुःख द्वंद सुख कदंबराखे।।१।।

ब्रह्मसम्बन्ध जब होत यह जीव को तबही इनकी भुजा बाम फरकें। दोर कर सोर कर जाय पिय सो कहे अतिही आनन्द मन में जो हरखें।।२।। नाम निरमोल नग नहीं कोऊ लेसके भक्त राखत हिये हार करके। रसिक प्रीतमजूकी होत जापर कृपा सोई श्रीयमुनाजूको रूप परखें।।३।।

(३) नयन भर देख अब भानुतनया। केलि पियसों करें भ्रमर तबही परे श्रम जलन भरत आनन्द मनया।।१।। चलत टेढ़ी होहि लेत पिय कों मोहि इन बिना रहत नही एक छिनया। रसिक प्रीतम रास करत श्रीयमुना पास मानो निरधन की है जुधनया।।२।।

(४) श्याम सङ्ग श्यामह्वै रही श्रीयमुने। सुरत श्रम बिन्दुतें सिन्धुसी बहिचली मानो आतुर अली

रही न भवने।।१।। कोटिकाम बारों रूप नयनन निहारों लाल गिरिधरन संग करते रमने। हरख गोविन्दप्रभु निरख इनकी ओर मानो नव दुलहनी आई गवने।।२।। (५) श्रीयमुनासी नाहिं कोऊ ओर दाता। जो इनकी शरण जातहें दोरकें दाहिको तेहि क्षण कर सनाथा।।१।।

एही गुणगान रसखान रसना एक सहस्त्र रसना क्यों न दई विधाता। गोविन्दबल तन मन धन वारने सब हिनकी जीवन इनहिंकेजु हाथा।।२।। (६) श्रीयमुनायश जगत में जोई गावें। ताके आधीन ह्वै रहतहें प्राणपति नयन अरु वेनमें रस जुछावें।।१।।

वेद पुराणतें बात यह अगम है प्रेम को भेद कोऊ न पावें। कहत गोविन्द श्रीयमुनेकी जापर कृपा सोई श्रीवल्लभकुल शरण आवें।।२।। (७) चरण पंकज रेणु यमुने जु देनी। कलियुग जीव उद्धारन काटत पाप अब धार पेनी।।१।। प्राणपति प्राणसुत आय भक्तन हित सकल सुखनकी है जु श्रेणी। गोविन्द प्रभु बिना रहित नहीं एकछिन अतिही आतुर चञ्चलजु नेनी।।२।।

(८) धायके जाय जो श्रीयमुना तीरे। तांकी महिमा अब कहाँ लग बरनिये जाय परसत अङ्ग प्रेम

नीरे।।१।। निश दिना केलि करत मनमोहन प्रियासङ्ग भक्तनकी हैजु भीरे। छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल इन बिना नेक नहि धरत धीरे।।२।। (९)
जा मुखतें श्रीयमुने नाम आवे। जाके ऊपर कृपा करत श्रीवल्लभप्रभु सोई श्रीयमुनाजी को भेद पावे।।१।। तन मन धन सब लाल गिरिधरनकुं देके चरण जब चित्तलावे। छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल नयनन प्रगट लीला दिखावें।।२।। (१०)
धन्य श्रीयमुने निधि देने हारी। करत गुण गान अज्ञान अध दूर कर जाय मिलवत प्रिय प्राण प्यारी।।१।। जिन कोऊ सन्देह करो बात चित्तमें धरो पुष्टिपथ अनुसरो सुख जो कारी। प्रेमके पुंजमें रासरसकुञ्जमें नाहीं राखत रस रंग भारी।।२।। यमने अरु प्राणपति प्राण अरु प्राणसुत चहूं जने जीवपर दया विचारी। छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल पतिके लिये अब संग पधारी।।३।।
(११) गुण अपार एकमुख कहालों कहिये। तजो साधन भजो नाम श्रीयमुनाजीको लाल गिरिधरवर तबही पैये।।१।। परम पुनीत प्रीति रीत सब जानके दृढ कर चरणपै चित्त लैये। छीतस्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल ऐसी निधि छाँड अब कहाँजु जैये।।२।।

(१२) चित्तमें श्रीयमुना निशदिन जो राखो। भक्तके वश कृपा करतहें सर्वदा ऐसो श्रीयमुनाजीको है जू साखो।।१।। जो मुखतें श्रीयमुने यह नाम उच्चरें संस कीजे अब जाय ताको। चतुर्भुजदास अब कहतहें सबनसों ताते श्रीयमुने यमुने जू भाखो।।२। (१३) प्राणपति विहरत श्रीयमुना कूले। लुब्ध मकरंदके भ्रमर जो वस भये रवि उदय देख मानो कमल फूले।।१।। करत गुंजार मुरलीजुले सांवरो सुनत व्रजवधू तनसुधजु भूले। चतुर्भुजदास श्रीयमुना प्रेम सिंघुमें लाल गिरिधरवर हरख झूले।।२।। (१४) बारबार श्रीयमुने गुणगान कीजे। एही रसनातें जो नाम रस अमृत भाग्य जाके सोई जु पीजे।।१।। भानुतनया दया अतिही करुणामया इनकी कर आस सदाजु जीजे। चतुर्भुजदास कहें सोई पिय पास रहे जोई श्रीयमुनाजी के रसमें भीजे।।२।। (१५) हेत कर देत श्रीयमने वास कुंजे। जहां निशवासर रासमें रसिकवर कहांलो वरनिये प्रेमपुंजे।।१।। थकित सरिता नीर थकित व्रजवधू मोंर कोऊ न धरत धीर मुरली सुनीजे। चतुर्भुजदास यमुने पंकज जांन मधुप कों न्याई चित लाय गुंजे।।२।। (१६)

भक्तपर करें कृपा श्रीयमुनेजु ऐसी। छांड निजधाम विश्राम भूतल कियो प्रकट लीला दिखाईजु तैसी।।१।। परम परमारथ करत हें सबन कों देत अद्भुत रूप आप जैसी। नंददास यों जान दृढ कर चरण गहि एक रसना कहा कहा विशेषी।।२।। (१७) नेह कारण श्रीयमुने प्रथम आई। भक्तके चित्तकी वृत्ति सब जानके तहाँ तें अति आतुर जो धाई।।१।। जाके मन जैसी इच्छा हती ताकी तैसी साध जो पुजाई। नंददास प्रभु तापर रीझ रहे जोई श्रीयमुनाजीको यश जु गाई।।२।। (१८) जाते श्रीयमुने यमुने जु गावो। शेष सहसमुख निशदिन गावत पार न पावत ताही पावो।।१।। सकल सुख देनहार तातें करो उच्चार कहतहू बारंबार जिन भुलावो। नंददासकी आस श्रीयमुने पूरण करी तातें धरी धरी चित्त जु लावो।।२।। (१९) भाग्य सौभाग्य श्रीयमुने जु देई। बास लौकिक त्यजो पुष्टि यमुने भजो लाल गिरिधरन वर ताप मिलेई।।१।। भजो लाल गिरिवर, बात इनकी लहे सदा सांनिध्य रहे केलि मेई। नंददास जापर कृपा श्रीवल्लभ करे ताके सदा श्रीयमुने बस जु हेई।।२।। (२०) नाम महिमा ऐसी जु जानो। मर्यादादिक कहे लौकिक

सुख लहे पुष्टिकों पुष्टि पथ एही जु मानो।।१।। स्वाति जलबूँद जब परत हे जाईमें ताहीमें होत तैसो जु बानो। श्रीयमुने कृपासिंधु जान रसबहुमान सूर गुण पूर कहाँलो बखानो।।२।। (२१) भक्तको सुगम श्रीयमुने अगम औरें प्रातही न्हात अघ जात ताके सकल यमहूँ रहत ताहि हाथजोरें।।१।। अनुभवी बिना अनुभव कहा जानिये जाको पिया नहिं चित्त चोरें। प्रेमके सिंधुको मरम जान्यो नहीं सूर कहे कहा भयो देह बोरें।।२।। (२२) फलफलित होय फलरूप जाने। देखी हू ना सुनी ताहीकी आपुनी काहुको आपुनी ताहुकी बात कोऊ कैसे माने।।१।। ताईके हाथ निरमोल नग दीजिये जोई नीके कर परख जाने। सूर कहे क्रूरतें दूर बसिये सदा यमुनाजी को नाम लीजे जु छाने।।२।। (२३) श्री यमुने पतिदासके चिह्न न्यारे। भगवदीकुं भगवत्सङ्ग मिल रहे तहे जाके हिये बसत प्राणप्यारे।।१।। गूढ श्री यमुने बात सोई अब जानहीं जाके मनमोहन नयन तारे। सूर सुख निरधार वे पावही जापर होहें श्रीवल्लभ कृपारे। ।।२।। (२४) श्रीयमुने रसखानको सीस नाऊँ। ऐसी महिमा जान भक्तकों सुख दान जोई मागुँ सोई जु

पाऊँ।।१।। पतित पावन करन नाम लीनो तरन दृढकर गहिचरण कहुँ न जाऊँ कुंभनदास गिरिधरन मुख निरखत यही चाहत नहीं पलक लाऊँ।।२।। (२५) यमुने अगणित गुण गने न जाइ। यमुने तट रेणु इतने हाते तनु नवीन इनके सुख देनको करों बड़ाई।।१।। भक्त भागत जोई देत तेई क्षण सो ऐसी को करे प्रण निवाई। कुंभनदास गिरिधरनमुख निरखत कहा केसें कर मन अधाई।।२।। (२६) श्रीयमुने पर तन मन प्राण वारो। ताकी कीरती विशद कोन अब कहिसके ताहि नयननते न नेकटारों।।१।। चरण कमल इनके जो चिंतत रहूं निश दिना नाम मुख ते उचारौ। कुंभनदास कहै लाल गिरिधरन मुख इनकी कृपा भई तब निहारों।।२।। (२७) भक्त इच्छा पूरण श्रीयमुने जु करता। बिना मागेहूँ देत कहाँलो कहों हेतु जैसे काहु को कोऊ होय धरता।।१।। श्री यमुना पुलिन रास व्रजवधू लिये पास मन्द मन्द हास कर मनुजु हरता। कुंभनदास लाल गिरिधर मुख निरखत यही जिय लेखत श्रीयमुने जु भरता।।२।। (२८) रासरससागर श्रीयमुने जु जानी। बहत धारा तन प्रतिदिन नौतन राखत अपने उरमाँझ ठानी।।१।।

भक्तको सह भार देत जु प्राण अधार अति ही बोलत मधुर मधुर बानी। श्री विट्ठल गिरिधरनवर बस किये कौन पे जात महिमा बखानी।।२।। (२९) भक्त प्रतिपाल जंजाल टारे। अपने रस रंगमें संग राखत सर्वदा जोई श्रीयमुने नाम उच्चारे।।१।। इनकी कृपा अब कहाँ लग वरनिये जस राखत जननी पुत्र वारे। श्री विट्ठल गिरिधरन संग विहरत भक्तको एक छिन ना बिसारे।।२।। (३०) कोन पे जात श्री यमुने जु वरणी। सबनको मन मोहत मोहन पिया सो पियाको मन ये जु हरणीं।।१।। इन बिना एक क्षण रहे न जीवन धन ब्रज चन्दमन आनंद करनी। श्रीविट्ठल गिरिधर संग आय भक्त के हेत अवतार धरनी।।२।। (३१) श्री यमुनाजीको नाम ले सोई सुहागी। इनके स्वरूप को सदा चितवन करे कल न परे जाय नेह लागी।।१।। पुष्टि मारग मरम अतिही दुर्लभ करम छाँड सगरे परम प्रेम पागी। श्री विट्ठल गिरिधरन ऐसो निधि भक्तकों देत है बिना मागी।।२।। (३२) श्री यमुना के नामते अघ दूर भाजे। जिनके गुण सुननकों लाल गिरिधरन पिय आप सन्मुख वाके विराजे।।१।। तेहि छिन काज ताके सगरे सरें जायकें मिलत व्रजवधू समाजे।

कृष्णदास कहे ताहि कोन को डर जाके ऊपर श्रीयमुने सी गाजे।।२।। (३३) श्री यमुनाजीके नाम तेई जु लहिये। जाकी लगन लागी नंदलालसों सर्वस देकें निकट जु रहिये।। जिनहीं सुगम जान बात सब मान बिना पहिचान कैसे जु पैये। कृष्णदास जो कहे श्री यमुने नामनौका भक्त भवसिंधु ते योहों जु तरैये।।२।। (३४) श्री यमुने तुमसी एक होजु तुमही करो कृपा दरस निशवासर दीजिये तिहार गुण गान को रह उद्यम ही।।१।। तिहार पाय ते सकल निधि पावही चरण कमल चित भ्रमर भ्रमहो। कृष्णदास कहे कोन यह तप कियो तिहारे ढिग रहतहे लता द्रुमही।।२।। (३५) कीजिये कृपा लीजिये नाम। श्री यमुने जगवन्दनी गुण न जात कहुँ गनी जिनके ऐसे धनी सुन्दर श्याम।।१।। देते संयोग रस ऐसे पिया हें जु वस सुनत तिहारो सुयश पूरे सब काम। कृष्णदास जो कहे भक्तहित कारने श्री यमुना एक छिन न करे विश्राम।।२।। (३६) श्रीयमुने के साथ अनघ फिरत हें नाथ। भक्त के मनके मनोरथ पूरत सब कहाँला कहिये इनकी जु गाथ।।१।। विविध शृंगार आभूषण पहिर अंग अंग शोभा बहुत भाँत। दास

परमानन्द पाये अब व्रजचंद राखे अपने शरण बहेतु जात।।२।। (३७) श्री यमुनेकी आस अब करत हे दास। मनक्रमवचन कर जोरके मागत निशदिन राखिये अपने पास।१।। तहां पिय रसिकवर रसिकनी राधिका दोऊ जन संग मिल करत रास। दास परमानन्द पाये अब व्रजचन्द देख सिराने नयन मंद हास।।२।। (३८) श्रीयमुने पियको वस तुम जु कीने। प्रेमके फंदते घेर राखे निकट ऐसे निर्मोल नगमोल लीने।।१।। तुम जो पठावत तहाँ अब धावत तिहारे रस रंगमें रहत भीने। दास परमानंद पाये अब व्रजचंद परम उदार श्रीयमुने जू दीने दान।।२।। (३९) श्रीयमुना सुखकारना प्राणपतिके। जिन ही भूले जाते पिया तिने सुधकरर देत कहाँ कला काहय इनके जु हितके।।१।। पिया संग गान कर उमंग जो रस भरें देत तारी कर लेत जतके। दास परमानंद पाये अब व्रजचंद यही जानत प्रेम गतके।।२।। (४०) शरण प्रतिपाल गोपाल रति वर्धनी। देत पति पंथ प्रिय कंत सनमुख करत अतुल करुणा मई नाथ अंग अर्धनी।।१।। दीनजन जान रसपुंज कुंजेश्वरी रमत रस रासपिय संग निश शर्दनी। भक्तिदायक सकल भवसिंधु तारिणी करत

विध्वंस जन अखिल अघ मर्दनी।।२।। रहत नंदसूनु तटनिकट निशदिन सदा गोपी रमतं मध्य रस कंदनी। कृष्ण तन वरण गुण धर्म श्रीकृष्णके कृष्णलीला मई कृष्णसुख कंदनी।।३।। पद्मजा पाय तूँ संगही मुररिपू सकल सामर्थ्य भई पापकी खंडनी। कृपारस पूर बैकुंठ पदकी सिढी जगत विख्यात शिव शेष शिर मंडनी।।४।। पयों पदकमलतर और सब छांड के देख दृगकर दया हास्य मुख मंदनी। उभय करे जोर कृष्णदास विनती करे करो अब कृपा कलिंदगिरि नंदिनी।।५।। (४१)

श्रीयमुनाजी के पद सम्पूर्ण।

आश्रय के पद

(पदराग केदार)

भूल जिन जाय मन अनत मेरो। रहो निश दिवस श्रीवल्लभाधीशपदकमलसूँ लाग बिन मोलकों चेरो।।१।। अन्य सम्बन्ध तें अधिक डरपत रहो सकल साधनहुँ ते कर निवेरो। देह निजगेह यह

लोकपरलोकलों भजो सीतल चरण छाँड अरुझेरो।।२।। इतनी मागत महाराज करजोर के जैसो हुँ तेसो कहाउ तेरो। रसिक शिर कर धरो भवदुःख परहरो करो करुणा मोहि राख नेरो।।३।। (१)

(राग विहाग)

आसरो एक श्रीवल्लभाधीशको। मानसी रीतको मुख्य सेवा व्यसन लोक वैदिक त्याग शरण गोपीशको।।१।। दीनताभाव उद्बोध गुणगानसो घोष त्रियभावना उभय जाने। श्रीकृष्णं नाम स्फरे पलन आज्ञा टरे कृति वचन विश्वास दृढचित्त आने।।२।। भगवदीय जान सत्संग को अनुसरे ना देखे दोष अरु सत्य भाखे। पुष्टिपथ मर्म दश धर्म यह विधि कहे सदा चित्तमें श्री द्वारकेश राखे।।२।। (२)
भारोसो दृढ इन चरनन केरो। श्रीवल्लभनखचंद्र छटा बिन सब जगमाँझ अँधेरो।।१।। साधनओ नही या कलिमें जासों होय निवेरो। सूर कहा कहे द्विविध आँधरो बिना मूलको चेरो।२।। (३)
भरोसो श्रीवल्लभजीको राखो। सधरे कागज सरेगे छिनमं इनहीके गु भाखो।।१।। निशदिन संगकरो

भक्तनको असमर्पित नही चाखो। वल्लभ श्रीवल्लभ पदरज बिन ओर तत्त्व सब नाखो।।२।।
(४)

आश्रय के पद सम्पूर्ण।

श्रीकृष्णः शरणं मम

श्रीकृष्णः शरणं मम। श्रीकृष्णः शरणं मम।
श्रीकृष्णः चरणं मम। जयश्रीकृष्णः शरणं मम।।

कदम्ब केरी डालो बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
यमुना केरी पालो बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
व्रज चोरासी कोस बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
कुण्ड कुण्डनी सिड़ियों बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
कमल कमल पर मधुकर बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
डाल डाल पर पक्षी बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
वृन्दावन ना वृक्षो बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
गोकुलिया नी गायो बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
कुञ्ज कुञ्ज वन उपवन बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
व्रज भूमि नां रज कण बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
रास रमंता गोपी बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
धेनु चरावता गोपों बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।

बाजा ने तबला मां बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
सहनाई ने तम्बूर मां बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
नृत्य करन्ती नारी बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
केसर केरी क्यारी बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
आकाशे पाताले बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
चउद लोक ब्रह्मांडे बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
चन्द सरोवर चोके बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
पत्र पत्र शाखाएँ बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
आम लीबू ने जांबू बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
वनस्पति हरियाली बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
जतीपुरा ना लोको बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
मथुराजी ना चोबा बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
गोवर्द्धन ने शिखरे बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
गली गली गहवर बन बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
वेणु स्वर संगीते बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
कला करंता मोर बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
पुलिन कंदरा मोर बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
श्री यमुनाजी नी ल्हेरो बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
आंबा डाले कोयल बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
तुलसीजी ना क्यारे बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
सर्व जगत मां व्यापक बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।

विरही जन ना हेंया बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
कृष्ण वियोगे आतुर बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
वल्लभी वैष्णव सर्वे बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
मधुर वीणा वार्जित्रो बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
कुमुदिनी सरोवर मां बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
चन्द्र सूर्य आकाश बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
तारलिया ना मण्डल बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
अष्ट प्रहर आनन्दे बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
रोम रोम व्याकुल थई बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
महा मन्त्र मन मोदे बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।
जुगल चरण अनुरागे बोले श्रीकृष्णः शरणं मम।

रंगीला श्रीनाथजी

मथुरामां श्रीनाथजी, गोकुलमां श्रीनाथजी।
यमुनाजी ने कांठे रमता, रंगीला श्रीनाथजी।।१।।
रंगीला श्रीनाथजी, अलवेला श्रीनाथजी।
वल्लभ कुलना व्हाला बोलो, रंगीला श्रीनाथजी।।२।।
मधुवन मां श्रीनाथजी, कुञ्जन मां श्रीनाथजी।
वृन्दावन मां रास रमन्ता, रंगीला श्रीनाथजी।।३।।

नन्दग्राम श्रीनाथजी, वरसाने श्रीनाथजी।
कामवन मां क्रीडा करता, रंगीला श्रीनाथजी।।४।।

दानगढ श्रीनाथजी, मानगढ श्रीनाथजी।
सांकडीखोरे गोरस खाता, रंगीला श्रीनाथजी।।५।।

संकेत मां श्रीनाथजी, वन वन मां श्रीनाथजी।
गहेवरवन मां रास रमन्ता, रंगीला श्रीनाथजी।।६।।

गोवर्द्धन श्रीनाथाजी, मारग मां श्रीनाथजी।
मानसीगंगा मां मन हरता, रंगीला श्रीनाथजी।।७।।

राधाकुण्ड श्रीनाथजी, कृष्णाकुण्ड श्रीनाथजी।
चन्द्रसरोवर चोके रमता, रंगीला श्रीनाथजी।।८।।

वृक्ष वृक्ष श्रीनाथजी, डाल डाल श्रीनाथजी।
पत्र पत्र ने पुष्पे रमता, रंगीला श्रीनाथजी।।९।।

रआन्योमां श्रीनाथजी, गोविन्दकुण्ड श्रीनाथजी।
अप्सराकुण्डे आनंद करता, रंगीला श्रीनाथजी।।१०।।

गली गली श्रीनाथजी, कुञ्ज कुञ्ज श्रीनाथजी।
सुरभी कुण्डे स्नान करता, रंगीला श्रीनाथजी।।११।।

मन्दिर मां श्रीनाथजी, पर्वत पर श्रीनाथजी।
जतीपुरा मां प्रकट विराजे, रंगीला श्रीनाथजी।।१२।।

बिलछूवन श्रीनाथजी, कुसमोखर श्रीनाथजी।
श्यामढाक मां छाक आरोगे, रंगीला श्रीनाथजी।।१३।।

रुद्रकुण्ड श्रीनाथजी, हरजीकुण्ड श्रीनाथजी।
कदम्बखण्डी क्रीडा करता, रंगीला श्रीनाथजी।।१४।।

गाम गाम श्रीनाथजी, ठाम ठाम श्रीनाथजी।
गुलाल कुण्डे होरी रमता, रंगीला श्रीनाथजी।।१५।।

नवलकुण्ड श्रीनाथजी, रमणकुञ्ज श्रीनाथजी।
वृन्दावन मां धेनुचराता, रंगीला श्रीनाथजी।।१६।।

गायो मां श्रीनाथजी, गोपो मां श्रीनाथजी।
गोपी मध्ये वेणु वगाडे, रंगीला श्रीनाथजी।।१७।।

वल्लभ मां श्रीनाथजी, वल्लभी मां श्रीनाथजी।
वृजवासी ना व्हाला बोलो, रंगीला श्रीनाथजी।।१८।।

मेवाड़ मां श्रीनाथजी, श्रीजोद्धार श्रीनाथजी।
भांत भांत ना भोग आरोगे, रंगीला श्रीनाथजी।।१९।।

रंगीला श्रीनाथजी, अलबेला श्रीनाथजी।
वल्लभकुल ना प्यारा बोले, रंगीला श्रीनाथजी।।२०।।

श्रीमनप्रबोध नूं पाठ

॥ दोहा ॥

प्रथम नमन करि नवकुंवर, श्रीगोकुलेश रसरास।
मम चिंता चूरहु चतुर, पूरो मन की आस।।१।।

आश एक तुम दरस की, परस परम सुख रूप।
दरश-परश रसदान के, दाता श्रीगोकुल भूप।।२।।

यह अभिलाषा मन रहे, कही कौन पें जाय;
जीवन धन संपति सुखद, मेरे श्रीगोकुलेश राय।।३।।

चरण शीष धरि चित्त धरि, धरि अन्तर्गत ध्यान।
मन प्रबोध यह ग्रन्थ कहुं देहु कृपा करि ज्ञान।।४।।

सबते चिंता अति प्रबल, ताते प्रबल स्वभाव।
उभय उग्र को विजय करि, वंदौं मृदु जुग पाय।।५।।

जाके मन चिंता रहे, भाव सुदृढ़ नहिं गात।
मनप्रबोध यह ग्रन्थ सुनि अबुध सुबुध व्है जात।।६।।

अलौकिक में व्यासंग मन, देख्यो समय विरुद्ध।
मनप्रबोध करि आपते, तब करि लियो विशुद्ध।।७।।

कबहुक अति उद्वेग मन, रहतो कछु जंजाल।
मनप्रबोध यह ग्रन्थ तब, कीनो दासगोपाल।।८।।

मनप्रबोध शुभ ग्रन्थ यह कीनो करी प्रकाश।
मन प्रकाश बोधक निपट, सबते करे उदास।।९।।

चरणकमल में मन रहे, आन रहे नहीं आश।
उद्दीपन सद्भाव करि, मनको करे प्रकाश।।१०।।

जिंहि सुनिके चिंता सकल, लौकिक अलौकिक शेष।
कोई दुःख व्यापे नहिं, दोष रहे नहिं लेश।।११।।

जामें श्रीमुख के वचन, उत्पत्ति सहित अनूप।
स्वकियनको शिक्षा निमित्त कहैहैं कारन रूप।।१२।।

मनप्रबोध यह ग्रन्थको पढ़ै सुनै जो दास।
जगत तुच्छ करि काहुकी करे न कबहु आश।।१३।।

।। कवित्त ।।

गुनीगन ज्ञानी कवि पंडित विचारि देखो,
सुनो सीख मेरी, मेरो वचन निदान है;
गोकुल के नाथ गुननाथ जो सुने प्रसिद्ध,
जाकी आदि मध्य सिद्ध सदा एक बान है;
आदि हुते आदि अनादि जासों कहियत है,
सोई यह स्वरूप उपमा न कोई आन है;
उपमा अभूत अद्भुत न को भावी भूत,
काहु समये न को इनकी समान है।।१।।

स्वरूप गोकुलेशजी को यथारथ जान्यो अरु,
आन्यो उरमांझ मन वच कर्म करि के;
प्रणय सहित रसभाव परमाविध,
स्वरूप रसपान कियो नैन भरि भरि के;
सोई मेरे मेहद महा रस के जान सोई,
वाके चरणारबिंद राखूं उर धरि के;
वाहीसों अलाप अरु मिलाप मेरे वाहीसों,
ऐसी मति मेरी वाके पद अनुसरि के।।२।।

नियामक न कृत आदि व्रत आचरण कछु,
साधन सहायक को नियामक न मानिये;
नियामक न नेम धर्म पीठिका प्रसिद्ध सिद्ध;
सोऊ-कोऊ काज आवै ऐसी मन में न आनिये;
नियामक न संग, न सुशीलता, न ग्रन्थ पाठ,
भाव भगवद नाम नियामक न मानिये;
नियामक ढरनी गोकुलेशजी की जेही भाँति,
ढरी आवै सोई पे प्रमानिये।।३।।

साधन की साधना आराधना अन्यहुं की,
परम पवित्रता को बल ना विशेष के;
गुनको न गान को न आन सम्मान को,
लीलाअवगाहन को भरोसो एक लेश के;

काहु को न त्रास है न आश काहु औरन की,
संस्कार के न बल, ना भरोसो वेष के;
मेहद कृपा के बल, डर नाहिं एक पल,
निडर सदा रहत हों भरोसे गोकुलेश के।।४।।

जिहि छिनु सुरति न आवे गोकुलेशजु की,
तिही छिनु असुर आवेश करि जानिये;
वल्लभ के रस बिनु रुचे जाहि आन रस,
सोई रस अनरस विष कर मानिये;
स्वरुप रस भाव बिनु आन भाव आवै जब,
तब हि जु मन आन आसरो हि जानिये;
इहां रुचि मान आन उपजे जे वस्तु बुद्धि,
तो तो जिय आपुने अनन्य न प्रमानिये।।५।।

जाही को स्वरुप रुच्यो वाहि को न रुचे आन,
आन रुचे तो तो ये स्वरुप रुच्यो नाहिये;
प्रथम अनन्यता, अनन्यता ताहां है स्नेह,
स्नेह तहां रस ऐसी आवे मन माहिये;
जानिके विलंब कित करत कुबुद्धि क्रूर,
शूर व्है स्वरूप दृढ़ करि अवगाहिये;
गोकुल को नाथ निज हाथ दान लिये हैं पै,
जीव की जु ओर सन्मुखता तो चाहिये।।६।।

फल की अपेक्षा तू करत प्राणवल्लभ का,
सो तो आप कह्यो सन्मुख होय दीजिये;
पै वा सन्मुखता को स्वरूप जान्यो जात नाहिं,
कौन भांति कैसे प्राण सन्मुख कीजिये;
स्वरूप दर्शन लों अयोग्य अंतराय सब,
गुनगान आन लीला में कहा लीजिये;
इन्द्रिय सकल को विलास ए स्वरूप मांझ,
आरत सों सन्मुख भये दान लीजिये।।७।।

सुरति किये ये रोम रोम सचु पैयत है,
सुरति के मान लिये दुःख पर हरिये;
रंच एक सन्मुखता में हित जान लेत,
हित करि सुख के समुद्र पार करिये;
मानस की प्रीत कैसी, मन की न जाने बात,
मन की न जाने बात तासों कहा पचि मरिये;
यह जिय जान समझाउं तोकुं बारंबार,
प्रीति करिये तो श्रीगोकुलेशजी सों करिये।।८।।

मनवृत्त जानवे को, हित पहचानवे को,
गुनगान मानवे को गोकुलेश निधि है;
योके सुख बिना रंच आन सुख मानत हैं,
सोई दुःख रूप ये तो अनुभव सिद्ध है;

यासों हेत करि धरि धीर तू निडर रहि,
याहि सों जो हित सोई हेत निरविध है;
छाड़ि तुं कलेश लेश मन में न आन कछु,
गोकुलेश भज फल आगे तेरो सिद्ध है।।९।।

नेह ते नवल गोकुलेश रस ढरि आवे,
भावे जिय नेह ऐसो नेह उरमांझ धरिये;
निर्हेतुक निरुपाधि साधन को रूप आदि,
देह गेह प्राण धन नेह पर वारिये;

रूप गुन चातुरी विवेक भाव भूषन यह,
दूषन समान लागे नेह बिन जारिये;
गेही बिन गेह जैसो प्राण बिन देह तैसो,
नेही बिना नातो कैसो होतो करि डारिये।।१०।।

सत्य संकल्प अन्यथा करें न गोकुलेश,
स्वकिय उपदेश कहें वचन जो ये नित्य है;
लौकिक अलौकिक अरु काहु भांति की,
चिंता मति करे ऐसो कह्यो जामें हित है;

ऐसी जान बुझ अनुभव करि आपु मन,
अति करत चिंता तोको अनुचित है;
होत है अवज्ञा एह आज्ञा उल्लंघन किये,
सिद्ध फल खोये एको फल की न गति है।।११।।

मन सों प्रबोधि अति मनुहार करि करि,
मान मेरो कह्यो तू तो चिंता मति कर रे;
चिंतामणि गोकुलेशजी ने चिंता करि दूर,
क्रूर तू समुझि वे वचन उर धर रे;
आप चिंता किये पावे चित्त में कलेश अति,
सोई उबरेगी ताते चिंता परिहर रे;
प्रबल अतुल बल प्यारे प्राणवल्लभ को,
सोई चित्त धरि, धीर टेक तें न टर ते।।१२।।

उद्यम किये ते न हाथ आवै कछु बात जब,
तब मन आपुने कलेश मानि लीजिये;
जीव को बुरो न कबहुँ विचारे जगदीश,
श्रीमुख वचन कह्यो सोई मानि लीजिये;
चाहत सो करत है इच्छा आपुनि केबल,
तू तो है निर्बल, बल सोई मानि लीजिये;
जीव को विचार्यो न करेंगे करे आप बल,
ये हित अपनायत को पेडो मानि लीजिये।।१३।।

प्रार्थना वर्जित कही है जगदीश हु लौं,
तू तो आशा जिय की करत निशदिन रे;
आशा को जो दास है, सो दास सब जगत को,
श्रीमुख ते श्लोक करि कह्यो ए वचन रे;

माणस की प्रीति की प्रतीत करी आशा किये,
पायो अरु पावेगो कलेश प्रतिछिन रे;
श्रीगोकुलेश जी सों रति मान रस सन्मुख व्हे के,
रिद्धि तीन लोक की तृण गिन रे।।१४।।

उद्यम करनो कहा तोहे लौकिक को ताको,
अब अलौकिक दियो तोहे सोई लिये रहि रे;
श्रीमुख ते वचन प्रगट करि कह्यो जोई,
सोई उर अंतर मों नीके करि ग्रहि रे;
उद्यम अलभ्य वस्तु ही को करनो है जीय;
सुलभ तो सुगम है येही सीख लहि रे;
गोकुलेशजी ने कियो लौकिक दूर सब,
सोई अलौकिक चित्त आनि, अब भूल जिन गहि रे।।१५।।

प्रबल प्रताप महाराज गोकुलेश जी को,
जानि उर आनि बहत तूं कित है;
लौकिक अलौकिक चिंता काहु भांति,
करे मति ऐसो यह वचन कह्यो भर हित है;
अपनी अज्ञानता तें होयके अधीर अति,
करत विचार भूल्यो डोलत जित तित है;
कौन तूं हुतो और कहा जु कियो प्रभु तोहि,
करनो हे तेहि कर, सोई तो उचित है।।१६।।

अति ही अधीर नहीं धीर कछु तोहे जीय,
कोन गति तेरी तोहे कहा भयो है;
करत विचार मन मनहि सो रैन दिन,
चैन नहीं एको पल ऐसो सोच लह्यो है;
तेरी तो अलौकिक लों चिंता सब करी दूर,
लौकिक तो तुच्छ तामें कहा बह गयो है;
गोकुलेशजी ने तेरे हित तोंसों कह्यो है जो,
तेई दृढ़ करि गहि कोन फल दियो है।।१७।।

जे तो समझावत हों ते तो फिर फिर सोंच,
करत है जिय तें यह कोन हठ ठान्यो है;
ढरत न नेकहुं लग्यो रहत याहि मांझ,
याहीते आपनो कहांलों हित मान्यो है;
तू है अज्ञान कछु लहत न लाभ हानि,
भूल्यो-भूल्यो स्वार्थ कुं फिरत अजान्यो है;
वल्लभ के वचन उलंघे नहिं सिद्ध फल,
सोई तो वह होयगो ये कहा करि जान्यो है।।१८।।

तेरो तो विचार्यो नहि होत एक छिन जीय,
होत है इच्छा को कियो, इच्छा कछु न्यारी है;
तोहें नहिं ज्ञान हित, हानि कछु जानत नहिं,
जानत है इच्छा हित तेरी अति हितकारी है;

इच्छा ही को कियो सब मान ले चढ़ाय शीष,
समझ मन ही मन, यामें सुख भारी है;
तू है इच्छा के आधीन इच्छा है आधीन वल्लभ के,
सोई सब होयगो जो वल्लभ विचारी है।।१९।।

अरे जीय! सुनि सावधान होय के मेरी बात,
मेरी सीख सुनि, मैं निदान की कहत हों;
कठिन वियोग कौन समे में जियतव्य तेरो,
भयो है अयोग छिनु छिनु ये लहत है;
अंग बिन अंगी बिन संग के सहाय बिन,
मन में विचारि दुःख काहे को सहत है;
गोकुलेश प्राणधन जीवन आधार बिन,
निर्लज्जता जाने बिन काज को रहत है।।२०।।

ते जो अपेक्षा करत स्वारथ को हित समान,
वे न होय आवत सो तेरी रक्षा करी है;
तू तो है अज्ञान, हानि आपनी न जानत है,
उपकार मान प्रभु तेरी चिंता हरी है;
कौन तू कहाँ को, कौन ठौर आनि कहा कियो,
कौन दान दियो बात मनमांझ धरी है;
गोकुलेशजी के अनुराग सों बिलस रस,
यहि रसमांझ भाँति भाँति निधि भरी है।।२१।।

सुख की अपेक्षा प्रीत स्वारथ को भोग अब,
मनोरथ करिवे को कौन समें रह्यो है?
प्रीतम से प्रीतम की प्रीत के अभाव हु ते,
प्रान राखियत ऐसो काहु कह्यो है?
तेरो अपमान हानि आप तू न जानत है,
अरे प्रान निर्लज्ज तें कौन हठ गह्यो है?
गोकुलेश जी के दर्शन बिन अनुदिन,
तें आप एंतौ दुख काहे पर सह्यो है?।।२२।।

गोकुलेशजी ने शिक्षा करी है स्वकिय हित,
रक्षा के निमित्त इच्छा प्रगट जनाय के;
इच्छा हूँ के प्रबल प्रताप को प्रगट करि,
लौकिक अलौकिक कह्यो समुझाय के;
इच्छा बिन पात नहीं डोलत है पोहोमीतल,
इच्छा जो करत सो तो कारण हि पाय के;
तू है अंगीकृत, अंगीकृत हित प्रागट्य है,
तेरो तो करत सो तो इच्छा मन भाय के।।२३।।

तू जो अपराध अति सहेगो आप ओरन को,
वाको अपराध जगदीश आपु जानि है;
अपराध जानि दोष मानि कहेगो तु,
वासो तेरो दुःख जगदीश मन में न आनि है;

तेरो दुःख तेरे मन जानि तू सहन करि,
सहन को दुःख प्रभु नीके करि मानी है;
सहन में सुख है, है सहन में तेरो काज,
सहन कर सहन ऐसी वल्लभ की वाणी है।।२४।।

जा क्लेश ते क्लेश प्रतिछिनु बढ़त है,
सो क्लेश पाये ते क्लेश हाथ आवेगो;
सो कलेश कर, जो कलेश हरे आदि हुं ते,
लेश न कलेश गोकुलेश मन भावेगो;
विप्रयोग रस अनुभव को कलेश करि,
छिनु छिनु छिनु सुख पावेगो;
या कलेश मांझ कलेश तेरो न रहेगो कछु,
जो तू यह कलेश मन नीके करि लावेगो।।२५।।

आपुने अज्ञान हूँ ते स्वारथ सुखारथ को,
विनति करत हों सो विनती न मानिये;
तुम सर्वज्ञ सब भूत भावि वर्तमान,
नित हित चित्त लहो मेरो हित ठानिये;
जोई तुम जानि हो, करि हो विचार मेरो,
ताही में है हित ऐसे जानत निदान ये;
जामे मेरो हित सोई कीनो तुम आपही ते,
करत हो, करोगे, सब ये तुम्हारी बान है।।२६।।

प्रभु की इच्छा की रुचि जामें नहीं एक लेश,
जानि के अजानि जिये को लों अब फिरि है;
जापे रुचि इच्छा होये तापे ये सहज होय,
ऐसे दिन खोय चाहे कछुए न सरि है;
जो जो तें विचार्यो सो सो भयो और भाँति,
सेवा संग छूट्यो सुख कौन गति करि है;
वल्लभ सुजान करि है सो जामे तेरो हित,
तेरे हित बिन नेक हू न टरि हैं।।२७।।

स्वारथ सुखारथ के स्वाद बहु भांतन में,
लायो मन मेरो पै न लग्यो एक पल के;
जहाँ अभिराम ताको तहाँ न विराम नेक,
वाम अरु काम ते छुड़ायो छलबल के;
आपुनो बिगारवे को आपमें अनेक भांति,
उद्यम कियो, पे रक्षा कीन्हीं आप ढल के;
आप ते निरोध करि बोध के प्रबोध करी,
केवल स्वरूप बल राख्यो मोहे बल के।।२८।।

आज लों अयोग्यता अलेखे आप करीं तें तो,
में तो समुझायो अबहुं तो कछु लज रे;
विप्रयोग रस अन्य रस रसही में कीनो,
भीनो स्वाद ही में अजहूं प्रपंच तज रे;

मन हिं सों मन समझांऊ मान कह्यो मेरो,
मरिवे को भयो अब तैसो साज सज रे;
निर्दोषता सुं दोष आपुनो विचार मन,
गोकुलेश गोकुलेश गोकुलेश भज रे।।२९।।

प्रथम हिलगन की डोरि जोर वल्लभ सों,
नीके अरुझाये आछे पाछें सब करिये;
तन मन प्राण वच कर्म भावाधीन करि,
रसही में सानि के रसीले आगे धरिये;
इन्द्रिय सकल को निरोध के प्रबोध करि,
प्रणय सहित उतही में अनुसरिये;
स्वरूप ही में रति अरु रतिहु स्वरूप ही सों,
यामें रसबस होय आन परिहरिये।।३०।।

श्रीगोकुलेशजी को जश मेरे अभिराम ये ही,
प्रमाण ग्रन्थ मति मति, कहो मेरे आगे को;
ये ही मेरे धन सर्वस मेरे ये स्वरूप,
याको रूप लीला गुन कहो मेरे आगे को;
इनहीं सो रस, अनरस और वातन में,
कान न सुहाये, जिन कहो मेरे आगे को;
यही रस ही में रस, आन रस फीको लागे,
निरस अदीठ बिन देखे पाछे लागेगो।।३१।।

प्रमेय प्रगट प्राणवल्लभ सुखद ऐसे,
स्वरूप समीप बिन सुख को न लेश है;
सबै दुःख दायक, न लायक न सहायक को,
लौकिक अलौकिक ये दुःख के विशेष है;

सेवा सुख संग भगवदिय को आठो जाम,
मन विरमायवे को, उलटो कलेश है;
जश गुन कथा ग्रन्थ पाठ भगवद् नाम,
नेही के विराम को ये वृथा उपदेश है।।३२।।

अहंकार अभिमान ईर्ष्या तूं तज सब,
भज गोकुलेश मेरी सीख मानि लीजिये;
पाखंड प्रतिष्ठा को प्रसिद्ध दोष जानत है,
आप अपराध कहो कौन काम कीजिये;

जामे हे पतन सो जतन करि नीके करि,
हित ही सुं हित करि और छाँड़ि दीजिये;
जामे प्राणवल्लभ की रुचि रसदायक है,
तामे तन सानि सानि येही रस पीजिये।।३३।।

अहंकार अभिमान ईर्ष्या कपट क्रोध,
पाखण्ड प्रतिष्ठा दंभही में घालि रच्यो हूँ;
मद अरु मत्सर कुकर्म क्रिया हीन लोभ,
द्रोह द्वेष अधम क्रिया में सानि सच्यो हूँ;

कुबुद्धि कृतघ्नता कुटिलाइ व्यापी सब,
इन्द्रिय विषय ने ज्यों नचायो तैसे नच्यो हूँ;
गोकुल के नाथ जू तुम्हारे बिछोह ऐसी गति,
काढ़िये कृपाल दोषही में आय पच्यो हूँ।।३४।।

बिगार ले विकातो, अंग को लगावे रुचि करि,
शुचि करि माने न अहित हित कुं;
करे अपराध आप, अपनो न माने दोष,
दोष कहे तासुं रोष करे अपने हि चित कुं;
हार नहि माने ये स्वभाव ऐसो नित्य कूं,
शरण संभारे नहि मरवे को डर नेक;
दीनता न करे कहा कहुं जिय कूं,
कृत्य हूँ को पक्षपात करे अहंकार लिये।।३५।।

एक मे कहत जो पे सीख मेरी मानो मीत,
हित की जो जानो तो तो आनो मन माहिये;
आन दोष कहे दोष उनको घटत जात,
आपको लगत दोष ताते न कहाइये;
स्वकियन को शिक्षा कही प्राण वल्लभ जु,
दोष काहु को न मनमांझ आन्यो चाहिये;
दोष काहु को कहे सो आप निर्दोष जाने,
आपु दोष जाने तो तो विरानो कहे नाहिये।।३६।।

जौ लों प्राणवल्लभ के दान को न ज्ञान तोहें,
तौ लों तूं अज्ञान भूल्यो फिरे जित तित कुं;
मारग की रीतही में साधन की साध रहे,
आराधन आधुनिक जानत न चित्त कुं;
यथारथ ये प्रगट स्वरूप को जो जान्यो होत,
तो तो हेत दान हु को जाने आप हित कुं;
जाने तो तो तुच्छ करि माने सब साधन कुं,
माधुरी स्वरूप की जो चाखी होय नित कुं।।३७।।

सवैया

लै मन दै मन मनमोहन कुं,
मन में धरि रूप करे रसपाने;
आरत सो आपुनो अंग आन के,
प्रान प्रिया के स्वरूप को साने;
गेह के देह सुखारथ को सुख,
नेह बिना मन में नहि आने;
गोकुल नायक की रीत सुं
रति या सुख को सुख कौन बखाने।।३८।।

कवित्त

जिय के संबंध मांझ हित की अपेक्षा किये,
मन बहेकायो पै न हाथ कछु आयो है;

विषयी कुटिल व्यभिचार मांझ हित कैसो,
नेह को न नातो जाने स्वारथ सूं खायो है;
मृगजल तृष्णा करी आशा मनमांझ धरी,
धायो धाम छाड़्यो धाम बहोत दुःख पायो है;
ताते तूं समझ शुभ आपनो विचारि मन,
गोकुलेश भज दुःख सबै बिसरायो है।।३९।।

सवैया

जामें नहीं हित के अंग एक हु;
नेक हूँ न नेह संबंध को नातो;
प्रीति की रीति लहे न रहे
कहे स्वारथ मांझ फिरे ललचातो;
नेह की कान न हानि गिने,
न डरे धर्म ते एक हूँ भाँतो;
ऐसे को संग छुड़ाय ततछिनु
ले आपनो मन राखिये हातो।।४०।।

या जग में जगतीतल मांझ
प्रवीन तेई जेई नेह को जाने,
नेही सों नेह अनेही सो अनहित,
नेही जहाँ है तहाँ मन माने;

लगे नहिं चित्त अन्यत्र कहुं
बिनु नेह रुचे नहि नेकहुं आने,
धीर धरे न अधीर रहे,
बिन प्रेम प्रियारस के रस पाने।।४१।।

कवित्त

सोई भगवदी भगवत गुनगायक है,
सोई ज्ञानी पूरो सोई परम उदार है;
सोई रसलीन है कुलीन विद्यावान सोई,
सोई प्रेमपान रूप भाग के अपार है;
वेद भागवत वेद गीता ग्रन्थ दोहन को,
जान्यो जग मांझ तिन सार हु को सार है;
गोकुलेश जू के पदरेन सनमुख रति,
वाकी मति सम कौन की वे अनुहार है।।४२।।

जामे गोकुलेश जु के नाम गुन लीला नाहिं,
सोई पद अक्षर सब कौन काम गाइये;
जैसे तृषा आतुर ते आरत समायवे को,
कहा सचु पाय मृग जल पाछे धाइये;
जाके मन बच कर्म ध्येय पुरुषारथ ये,
स्वरूप सुहातो नातो तासो ताको जाइये;

येही फल साधन अरु फल सर्वात्म को,
गोकुलेश नाम प्रति छिनु अवगाहिये।।४३।।

ये ही नाम निरभय अभयदान दायक हैं,
ये ही नाम धाम-धाम रटे आठो जाम है;
ये ही नाम उदित सुधाकर प्रभाकर है,
सागर उजागर जगत अभिराम है;
ये ही नाम भक्ति रस बोधक निरोधक है,
प्रणय रस पुष्टि रस प्रबोधक धाम है;
अखिल अलौकिक को सार सुख जीवन ये,
गोकुलेश गोकुलेश भजवे को नाम है।।४४।।

एक बार चिंतन के किये, चिंता दूरि होय,
अपूरन रहे न जो अपेक्षा रसदान की;
अक्षर ये चारि-चारि जुग में प्रसिद्ध सिद्ध,
रिद्ध हू की निधि, कोन कीजे या समान की;
भक्ति अरु लीलाजुत स्वरूप ये अक्षर में,
यामे गति मिलन वियोग रसपान की;
गोकुलेश यह नाम पूरन सकल काम,
मानि मेरो कह्यो मैं कहत हूँ निदान की।।४५।।

गोकुलेश गोकुलेश गोकुलेश यह नाम,
रसना तू आठो जाम अंतर में रट रे;

तर हूँ ते तर पटंतर नाहिं आन कोऊ,
जाने कौन कृपा हू ते आयो तेरे बट रे;
स्वरूप सहित तूं उच्चार येही भांति करि,
श्वास आवागमन में ऐसे दिन कटि रे;
समय विचारि सावधान व्है सुरति कर,
मन के स्वभाव की तू छाड़ि खट-पट रे।।४६।।

पूरण प्रगट पुरुषोत्तम प्रमेय जैसे,
तैसो निज नाम स्वप्रताप के उमंग में;
जैसे दिनमणी आप किरण सहित राजे,
प्रगट उद्योत ज्योत आभा जे तरंग में;
स्वरूप प्रभाव लीला गुन कृत वात्सल्य के,
नाम धरे प्रगट प्रमाण करे अंग में;
काहु नहीं कह्यो काहु धर्यो नहीं नाम यह,
गोकुलेश नाम आप लिये आहे संग में।।४७।।

पुष्टि पुष्टि मारग सो प्रगट दिश प्रगट,
प्रमेय स्वरूप सों जहां रस को विलास है;
संभाषन ईक्षण स्पर्श नित हाव-भाव,
सुरस परम नित नवीन हुल्लास है;
साधन स्वरूप अरु फल हूँ स्वरूप जहाँ,
विरह संयोग भोग अधरामृत आश है;

येहि शुद्ध पुष्टि, आन पूजा मर्यादा सब,
श्रीमुख ते बात कही बात ये प्रकाश है।।४८।।

नेह निरविध निरहेतुक निरन्तर है,
साधन रहित जहाँ स्वरूप सुहायो है;
आरत असही उर आतप सहित अंग,
स्वारथ न लेश सुख आपनो न भायो है;
वात्सल्य विविध रस वल्लभ के हित मांझ,
हेतु न विचारि कछु यामे हेतु पायो है;
ये हि शुद्ध पुष्टि, आन पूजा मर्यादा सब,
ग्रन्थ मति और कहो मेरे मन न आयो है।।४९।।

आरत असही प्राणवल्लभ के देखवे की,
देखेहू न चैन नैन रूप रस पाग्यो है;
जहाँ-जहाँ पलक पसारूँ तहाँ-तहाँ प्राणप्रिय,
भाव उद्बोध रसमांझ अनुराग्यो है;
ये ही रस आरत को रूप न कह्यो परत अक्षर में,
अक्षर में न आवे मनही में मन लाग्यो है;
येही शुद्धपुष्टि, आन पूजा मर्यादा सब;
ग्रन्थ मति और कहो मेरो मन त्याग्यो है।।५०।।

नखहू ते शिख लौ श्रृंगार सुख रूप करि,
अंग उपयोग भोग हित आगे धरिये;

अंतर में रमण स्वरूप सन्मुख करि,
भाव के तरंग उपजाय अंक भरिये;
हठ करि मान करि प्रतिअंग दान करि,
ये ही रसपान करि रस वस करिये;
विनय दीनता सोहाग मद सर्वात्मना,
ये ही रचना सों रचि आन परिहरिये।।५१।।

हृदयकमल बीच भाव भरि आगे धरि,
प्रार्थना करि प्राणवल्लभ सुं दान की;
आन उपयोग ये शरीर उपयोग दीजे,
रस जोग कीजे लाज गहे निज बान की;
ये ही सेवा बिनु सेवा रहित जो निशदिन,
जात छिनु छिनु कहा कहुं मेरी हान की;
तुम हो प्रवीन दीन जानि अपनाइये जु,
मान लीजे आपते ये विनति निदान की।।५२।।

काहूसों हंसत बिलसत काहुसुं रे,
काहूसुं कृपा की दृष्टि करि मुसिकात है;
काहूसुं बसिठ नैन काहु सो रचत बैन,
काहु सो जगावे मेन सेनन में बात है;
काहू को अधरपान काहू को चुंबन दान,
काहू अंक भरि परसत सब गात है;

काहु वस करि, बस होत आपु काहु साथ,
गोकुल के नाथ काहू देखे ललचात है।।५३।।

एकन को कुच करि पद अम्बुज पे लोटत है,
एकन को कुच कर अंबुज में गह्यो है;
एक विपरीत रस, आसन रचिके रति,
करत विनोद अति जामें रस रह्यो है;
एक बीरा श्रीमुख में देत चीपकारि करि,
चुंबन करत मुख जैसे मन चह्यो है;
एक पंखा करति धरति अभिलाष मन,
एकन सों प्रिय मुसिकाय कछु कह्यो है।।५४।।

नैन मेन भरे सतराये सनमुख करि,
भृकुटि मरोर में करोर दीजियत है;
वरुनी सुधारि झिझिकार दे वदन मोर,
अधर फरकन में रस पीजियत है;
भामिनी को भाव देख रीझें प्राणवल्लभ जी,
मन बस करि रस वस कीजियत है;
ये ही उभय रस अविलोके दास दासी जन,
करि अभिलाष रसही में भीजियत है।।५५।।

उत्तम मध्यम अधमादि भगवदीयहू,
सृष्टि के समान अंगीकार भेद कियो है;

जोग्यता वरन अधिकार भेद भाव भेद,
रस भेद जुत जैसो तैसो दान दियो है;
जोई जैसी भाँति को सों तैसी भाँति पर्यो आय,
ओर न सुहाय वाको वेई मान लियो है;
जिन चाखी माधुरी मधुर गोकुलेशजु की,
रूप उरझानो उन वेई रस पियो है।।५६।।

स्वकीय समाज को शृंगार सन्मुख करि,
पूछ्यो प्राणवल्लभ प्रणय रस भरि के;
कह्यो तुम्हारे पुरुषारथ कहां है,
कह्यो रावरे चरन यह स्वरूप अनुसरि के;
यह सुनि कह्यो तब, तुम तो हो अंग मेरे,
आँख नाक मुख कर हृदय सो धरि के;
निज पुरुषोत्तमता अरु निज पुष्ट रसई,
ज्ञापन स्वकिय कुं कह्यो प्रगट करि के।।५७।।

।। इति श्री गोपालदास भाई कृत
श्री मनप्रबोध ग्रंथ संपूर्ण ।।

श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्री गोपीजनवल्लभाय नमः ॥

ज्येष्ठाभिषेक:

(सुवर्णघर्मानुवाक पुरुषसूक्तात्मक:)

गोलोकनाथ, गिरिराजपते, परेश,
वृन्दावनेश, कृतनित्य विहार लील ।
राधापते, ब्रजवधूजन गीतकीर्ते,
गोविन्द, गोकुलपते, किल ते जयोऽस्तु ॥

हरिः ॐ तच्छं योरावृणीमहे। गातुं यज्ञाय। गातुं यज्ञपतये । दैवी स्वस्तिरस्तु नः । स्वस्तिर्मानुषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् । शं नो अस्तु द्विपदे। शं चतुष्पदे । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ३॥ सुवर्णं घर्मं परिवेद वेनम् । इन्द्रस्यात्मानं दशधा चरन्तम् । अन्तः समुद्रे मनसा चरन्तम् । ब्रह्माऽन्वविन्दद्दशहोतारमर्णे अन्तः प्रविष्टः शास्ता जनानाम् । एकः सन्बहुधा विचारः । शतंशु-

२

क्राणि यत्रैकं भवन्ति । सर्वे वेदा यत्रैकं भवन्ति । सर्वे होतारो यत्रैकं भवन्ति । स मानसीन आत्मा जनानाम् ।। १।। अन्तः प्रविष्टः शास्ता जनानाꣳसर्वात्मा। सर्वाः प्रजा यत्रैकं भवन्ति। चतुर्होतारो यत्र संपदं गच्छन्ति देवैः। स मानसीन आत्मा जनानाम्। ब्रह्मेन्द्रमग्निं जगतः प्रतिष्ठाम् । दिव आत्मानꣳसवितारं बृहस्पतिम्। चतुर्होतारं प्रदिशोऽनुक्लृप्तम् । वाचो वीर्यं तपसान्वविंदत्। अन्तः प्रविष्टं कर्तारमेतम्। त्वष्टारꣳरूपाणि विकुर्वतं विपश्चिम् ॥२॥ अमृतस्य प्राणं यज्ञमेतम् । चतुर्होतृणामात्मानं कवयो निचिक्युः। अन्तः प्रविष्टं कर्त्तारमेतम् । देवानां बंधु निहितं गुहासु। अमृतेन क्लृप्तं यज्ञमेतम्। चतुर्होतृणामात्मानं कवयो निचिक्युः । शतं नियुतः परिवेद विश्वा विश्ववारः । विश्वमिदं वृणाति। इन्द्रस्याऽऽत्मा निहितः पञ्चहोता। अमृतं देवानामायुः प्रजानाम् ॥३॥ इन्द्रꣳराजानꣳसवितारमेतम्। वायोरात्मानं कवयो निचिक्युः। रश्मिꣳरश्मीनां मध्ये तपन्तम्। ऋतस्य पदे कवयो

३

निपान्ति। य आण्डकोशे भुवनं बिभर्ति। अनिर्भिण्णः सन्नथ लोकान्विचष्टे । यस्याऽण्डकोशꣳ शुष्ममाहुः प्राणमुल्बम् । तेन क्लृप्तोऽमृतेनाहमस्मि । सुवर्णं कोशꣳरजसापरीवृतम् । देवानां वसुधानीं विराजम् ॥ ४ ॥ अमृतस्य पूर्णां तामु कलां विचक्षते । पादꣳषड्ढोतुर्न किलाऽविवित्से । येनर्त्तवः पञ्चधोत क्लृप्ताः। उत वा षड्धा मनसोत क्लृप्ताः। तꣳ षड्ढोतारमृतुभिः कल्पमानम् । ऋतस्य पदे कवयो निपान्ति । अन्तः प्रविष्टं कर्त्तारमेतम् । अन्तश्चन्द्रमसि मनसा चरन्तम् । सहैव सन्तं न विजानन्ति देवाः । इन्द्रस्यात्मानꣳ शतधा चरन्तम् ॥५॥ इन्द्रो राजा जगतो य ईशे । सप्तहोता सप्तधा विक्लृप्तः । परेण तन्तु परिषिच्यमानम् । अन्तरादित्ये मनसा चरन्तम् । देवानाꣳ हृदयं ब्रह्माऽन्वविंदत् । ब्रह्मैतद्ब्रह्मण उज्जभार । अर्कꣳश्चोतन्तꣳ सरिरस्य मध्ये । आ यस्मिन्त्सप्त पेरवः। मेहन्ति बहुलाꣳ श्रियम् । बह्वश्वामिन्द्र गोमतीम् ॥ ६ ॥ अच्युतां बहुलाꣳ श्रियम् । स हरिर्वसु वित्तमः।

पेरुरिन्द्राय पिन्वते । बह्वश्वामिन्द्र गोमतीम् । अच्युतां बहुलाꣳ श्रियम् । मह्यमिन्द्रो नियच्छतु। शतꣳ शता अस्य युक्ता हरीणाम् । अर्वाङायातु वसुभीरश्मिरिन्द्रः । प्रमꣳहमाणो बहुलाꣳ श्रियम्। रश्मिरिन्द्रः सविता मे नियच्छतु ॥ ७ ॥ घृतं तेजो मधुमदिन्द्रियम्। मय्ययमग्निर्दधातु । हरिः पतङ्गः पटरी सुपर्णः । दिविक्षयो नभसा य एति । स न इन्द्रः कामवरं ददातु। पञ्चारं चक्रं परिवर्तते पृथु । हिरण्यज्योतिः सरि रस्य मध्ये । अजस्त्रं ज्योतिर्नभसा सर्पदेति। स न इन्द्रः कामवरं ददातु। सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रम् ॥ ८ ॥ एको अश्वो वहति सप्तनामा । त्रिनाभि चक्रमजरमनर्वम् । येनेमा विश्वा भुवनानि तस्थुः। भद्रं पश्यन्त उपसेदुरग्रे। तपो दीक्षामृषयः सुवर्विदः। ततः क्षत्त्रं बलमोजश्च जातम् । तदस्मै देवा अभिसन्नमन्तु। श्वेतꣳ रश्मिं बोभुज्यमानम्। अपां नेतारं भुवनस्य गोपाम्। इन्द्रं निचिक्युः परमे व्योम् ॥ ९ ॥ रोहिणीः पिङ्गला एकरूपाः । क्षरन्तीः पिङ्गला एकरूपाः । शतꣳ सहस्राणि

५

प्रयुतानि नाव्यानाम् । अयं यः श्वेतो रश्मिः। परि सर्वमिदं जगत् । प्रजां पशून् धनानि । अस्माकं ददातु । श्वेतो रश्मिः परि सर्वं बभूव । सुवन्मह्यं पशून्विश्व रूपान् । पतङ्गमक्तमसुरस्य मायया ॥१०॥ हृदा पश्यन्ति मनसा मनीषिणः। समुद्रे अन्तः कवयो विचक्षते । मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसः। पतङ्गो वाचं मनसा बिभर्त्ति। तां गन्धर्वोऽवद्-दूर्भे अन्तः । तां द्योतमानां स्वर्यं मनीषाम्। ऋतस्य पदे कवयो निपान्ति। ये ग्राम्याः पश-वो विश्व रूपाः । विरूपाः सन्तो बहुधैकरूपाः। अग्निस्तां अग्रे प्रमुमोक्तु देवः ॥११॥ प्रजापतिः प्रजया संविदानः । वीतं स्तुके स्तुके । युवम-स्मासु नियच्छतम् । प्र प्र यज्ञपतिं तिर । ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपाः । विरूपाः सन्तो बहुधैकरूपाः। तेषां सप्तानामिह रन्तिरस्तु। रायस्पोषाय सुप्रजा-स्त्वाय सुवीर्याय । य आरण्याः पशवो विश्वरूपाः । विरूपाः सन्तो बहुधैक रूपाः। वायुस्तां अग्रे प्रमुमोक्तु देवः। प्रजापतिः प्रजया संविदानः । इडायै सृप्तं घृतवच्चराचरम्। देवा अन्वविन्दन्गु-

६

हाहितम् । य आरण्याः पशवो विश्वरूपाः। विरूपाः सन्तो बहुधैकरूपाः । तेषाꣳ सप्तानामिह रन्तिरस्तु। रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥ १२ ॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः । सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा । अत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् । पुरुष एवेदꣳ सर्वम् । यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहति । एतावानस्य महिमा । अतो ज्यायाꣳश्च पूरुषः ॥ १ ॥

पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि। त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः। पादोऽस्येहाऽऽभवात्पुनः। ततो विष्वङ्व्यक्रामत्। साशनानशने अभि। तस्माद्विराडजायत । विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत । पश्चाद्भूमिमथो पुरः । यत्पुरुषेण हविषा। देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्याऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः। सप्तास्याऽऽसन्परिधयः। त्रिःसप्त समिधः कृताः । देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन्पुरुषं पशुम् । तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातमग्रतः ॥ ३ ॥ तेन देवा अयजन्त। साध्या ऋषयश्च ये । तस्माद्य-

७

ज्ञात्सर्वहुतः । संभृतं पृषदाज्यम् । पशूꣳस्ताꣳश्चक्रे वायव्यान् । आरण्यान् ग्राम्याश्च ये । तस्माद्य-ज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्मात् । यजुस्तस्मादजायत ॥ ४ ॥ तस्मादश्वा अजायन्त । ये के चोभयादतः । गावो ह जज्ञिरे तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः । यत्पुरुषं व्यदधुः । कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादा वुच्येते। ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः ॥ ५ ॥ ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्याꣳशूद्रो अजायत । चन्द्रमा मनसो जातः । चक्षोः सूर्यो अजायत मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च । प्राणा-द्वायुरजायत। नाभ्या आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत । पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकाꣳ अकल्पयन् ॥६॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे। सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः । नामानि कृत्वाऽभिवदन्यदास्ते । धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार। शक्रः प्रविद्वान्प्रदिश-श्चतस्रः। तमेवं विद्वानमृत इह भवति । नान्यः पंथा अयनाय विद्यते । यज्ञेन यज्ञमयजन्तदेवाः । तानि

८

धर्माणि प्रथमान्यासन् । ते ह नाकं महिमानः
सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः संति देवाः ॥७॥ अद्भ्यः
संभूतः पृथिव्यै रसाच्च । विश्वकर्मणःसमवर्तताधि।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्व-
माजानमग्रे। वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदि-
त्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेवं विद्वानमृत इह
भवति। नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय। प्रजापतिश्चरति
गर्भे अन्तः। अजायमानो बहुधा विजायते ॥ १ ॥ तस्य
धीराः परिजानन्ति योनिम् । मरीचीनां पद मिच्छन्ति
वेधसः। यो देवेभ्य आतपति। यो देवानां पुरो-
हितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः । नमो रुचाय
ब्राह्मये। रुचं ब्राह्मं जनयन्तः । देवा अग्रे तद-
ब्रुवन् । यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्य देवा
असन् वशे। ह्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ । अहोरात्रे
पार्श्वे । नक्षत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम् इष्टं
मनिषाण ।अमुंमनिषाण।सर्वं मनिषाण॥२॥ हरिः ॐ
तच्छंयोरावृणीमहे। गातुं यज्ञाय । गातुं यज्ञपतये।
दैवी स्वस्तिरस्तुनः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः। ऊर्ध्वं
जिगातु भेषजम् । शन्नो अस्तु द्विपदे। शञ्चतुष्पदे।
ॐ शांतिः शांतिः शांतिः । अमृताभिषेकोऽस्तु ॥

॥ इति शुभम् ॥

हमारे प्रमुख ग्रन्थ

सुदर्शनकवचम्। श्रीमद्वल्लभाचार्यचरण विरचितम्। ५.००

श्रीवल्लभनामस्तोत्रम्। नामावली सहित। सम्पादक—गो. श्रीरमणलालजी १.००

गोविन्ददामोदरस्तोत्रम्। (श्रीरामरघुनन्दनस्तोत्रसहितम्)।
श्री बिल्वमङ्गलाचार्यविरचितम्। भावार्थसंदीपनी 'प्रदीप'
हिन्दी व्याख्योपेतम् व्याख्याकार—श्री प्रदीप झा 'सुमन' १०.००

पुरुषोत्तममासमाहात्म्यम्। 'शिवदत्ती' हिन्दी टीका सहित।
व्याख्या.—आचार्य पं. शिवदत्तमिश्र शास्त्री ४५.००

सरयूपारीण ब्राह्मण गोत्रावली। द्वारिकाप्रसाद शास्त्री १०.००

स्तोत्रसञ्चयः। आदिशङ्कराचार्यप्रणीतः। पदच्छेद-अन्वय-
शब्दार्थ-अनुवाद-व्याख्या सहित।
सम्पा. एवं व्याख्या—कल्याणलालशर्मा २५०.००

गायत्रीरामायणम्। ०.५०

चर्पटपञ्जरी। श्रीमदाद्यशङ्कराचार्य-विरचिता। 'प्रदीप' हिन्दी टीका
सहित। टीकाकार—श्री प्रदीप झा 'सुमन' ४.००

प्रश्नोत्तर-मणिमाला। श्रीमदाद्यशङ्कराचार्य-विरचिता। 'प्रदीप'
हिन्दी टीका सहित। टीकाकार—श्री प्रदीप झा 'सुमन' २.५०

भजगोविन्दम्। आदिशङ्कराचार्यरचित। अन्वय, शब्दार्थ, अनुवाद
एवं व्याख्या सहित। सम्पा. एवं व्या.—कल्याणलाल शर्मा ४०.००

श्रीमृत्युञ्जयस्तोत्राणि। (श्रीमृत्युञ्जयमानसिकपूजास्तोत्रम्,
मृत्युञ्जयाष्टकम्, श्रीचन्द्रशेखरराष्टकम्, शिवमंगलाष्टकम्,
तथा मृत्युसूक्तम्) (सस्वरम्) ७.५०

शिवानन्दलहरी। आदिशङ्कराचार्यरचित। पदच्छेद, अन्वय,
शब्दार्थ और अनुवाद सहित।
संपा. एवं व्याख्याकार—कल्याणलाल शर्मा ४०.००

सत्यनारायणव्रतकथा। 'हरिप्रिया' हिन्दी टीका सहित।
व्याख्याकार—आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्री १२.००

Also can be had from : Chowkhamba Krishnadas Academy, **Varanasi.**

Price : Rs. 50.00